राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 96

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

(प्रथम भाग)

सम्पादक
स्व. श्री हरिनारायणजी पुरोहित
बी. ए., विद्याभूषण

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1989

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 96

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

(प्रथम भाग)

सम्पादक
स्व. श्री हरिनारायणजी पुरोहित
बी. ए., विद्याभूषण

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1989

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डॉ. पद्मधर पाठक
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 96

भक्त-कवयित्री मीरांबाई-रचित

मीरां बृहत्पदावली

प्रथम भाग

सम्पादक
स्व. श्री हरिनारायणजी पुरोहित
बी. ए., विद्याभूषण

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
1989

140/-

द्वितीयावृत्ति 500 मूल्य रु. ~~51.00~~

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी-राजस्थानी आदिभाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक

डॉ. पद्मधर पाठक

ग्रन्थांक ९६

(द्वितीय संस्करण)

[प्रथमावृत्ति, प्रतियां १०००, सन् १९६८]

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

मुद्रक

प्रिंटिंग हाउस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर

विक्रमाब्द २०४६ * ई. सन् १९८९

मूल्य रु. ५१.००

प्रधान-संपादकीय

काव्य के निर्माण में मूलभूत अनेक प्रयोजनों में से एक है—सद्यः परनिर्वृति—अर्थात् काव्य चाहें बना लें या उसका पाठ करें—कवि या पाठक के मन में स्वयं एक अन्तः प्रेरणा जाग उठती है—अनेक से एक होने की या यों कहिये जड़ से चैतन्य में लीन होने की। काव्य के अन्य सभी कारणों से यह हेतु अधिक श्रेयस्कर है, भले ही प्रेयस्कर कम हो। जब इस हेतु से कवि काव्य सर्जना में प्रवृत्त होता है और वह भी जन-जन की भाषा को साधन बनाकर तो उसका काव्य अनन्तजीवी हो उठता है—समाज को अनन्त काल तक राह दिखाता वह अमर हो जाता है।

यही कारण है—सन्तों की वाणी अमर हो जाती है। आप कबीर को लें या दादू को या सहजो बाई अथवा मीरां को। कोई मानें या न मानें—न केवल वाणी इनके अभीप्सित अर्थ का अनुकरण करती है, अपितु शब्द में नादब्रह्म साकार हो उठता है—मन-प्राण-शरीर एक हो जाते हैं और आत्मा कहिये चिरन्तन सत्य—को अपने उद्गार निकालने का—अभिव्यक्त करने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

मीरां के पदों को पढ़ते समय इसी बात का अनुभव होता है। चाहे उसका शृंगार हो या विरह, भक्ति हो या मुक्ति, वह कृष्णमय हो गयी है—सारा संसार उसे कृष्णमय दिखाई देता है—उसके श्वास में और उच्छ्वास में, रोम-रोम में, हर काम-काज में कृष्ण-ही-कृष्ण है। इसे दीवानापन कह दीजिये या बावलापन—वह दीवानी है कृष्णप्रेम की—बावली है, सारे संसार के नियन्ता परमप्रभु को वह मानती है कि वह उसका है—उसे देखना चाहती है—पाना चाहती है और उसके न मिलने पर रूठ जाती है। मीरां के पदों की भाषा का अध्ययन करते समय उसकी इस भावना को ध्यान में रखना होगा।

प्रभु के लिये उन्मत्त हुए मन की यह अभिव्यक्ति है—इसीलिये उसके पदों की भाषा को कोई मेवाड़ी कह दें या यह कह दें कि इसमें ब्रज के पद अधिक हैं या पंजाबी आदि कई भाषाओं के शब्द आते हैं अथवा मीरां के पद गुजराती में भी मिलते हैं—तो इन शंकाओं का समाधान केवल भाषाशास्त्र के नियम-उपनियमों से नहीं होगा—उसे समझने के लिये हमें मीरां के मानसिक धरातल का स्पर्श पाना होगा—भले ही हम मीरां नहीं बन सकेंगे—उसका दास्य भाव स्वीकारना होगा—तभी हम उसके अन्तस्तल के भाव का स्पर्श कर सकेंगे।

स्व. पुरोहितजी की प्रस्तुत मीरां पदावली का महत्व यही है—वह उनके

लिए अनन्य देवी है—वे उपासक हैं। उनके लिये यह पदों की आवली न होकर प्रत्येक पद-काव्य है और इस प्रत्येक पद-काव्य का उद्देश्य और भाव साधक को साध्य से जोड़ना है।

और इस दृष्टि से यदि किसी पद में मीरां का नाम नहीं भी है—किन्तु भाव वे ही हैं—तो उसे मीरां का भक्ति-विलास मानने में आपत्ति ही क्या है? बहुत सम्भव है कि एक मीरां के बाद कई सतियां मीरां हुई हों—गुजरात में तो भक्तिभाव में तल्लीन हुई किसी भी स्त्री को मीरां कहने का रिवाज़ है—सही मायने में मीरां को केवल व्यक्तिवाचक मानकर सारा ऊहापोह करना—कम से कम उसकी भाषा और भक्ति के संदर्भ में—अधिक उचित नहीं लगता है।

डॉ. प्रभात अथवा डॉ. कल्याणसिंह शेखावत ने मीरां के ऐतिह्य की-उसकी भाषा की—भ्रमण की—पर्याप्त खोजबीन की—उनके निष्कर्ष उनके अपने हैं। मीरां की कई पदावलियां प्रकाशित हुई हैं परन्तु मीरां का सांसारिक सम्बन्धों से न तब कोई लेना देना था और न अब। इसलिये भारत के जन-जन को अपनी भक्ति-तरंगिणी से आप्लावित करने वाली मीरां का इतिहास जानना उतना महत्वपूर्ण नहीं, जितना कि उसके उद्दाम हृदय के दीवानेपन को, इसलिये डॉ. प्रभात ने ठीक ही कहा है—'कला की शाश्वत उपलब्धियाँ मीरां में नहीं है—वह आत्मा का समर्पण है।'

उस समर्पित आत्मा की यह अभिव्यक्ति जिसे लौकिक संसार में 'मीरां पदावलि' कहा जाता है—पुनर्मुद्रित रूप में विद्वज्जगत् को सौंपते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। पूर्व-संस्करण की तरह यह भी—भक्तों और विद्वानों दोनों के लिये—उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस ग्रन्थ के पुनर्मुद्रण कार्य में प्रिंटिंग हाउस, जोधपुर ने तथा प्रूफ संशोधन में श्री गिरिधरवल्लभ दाधीच ने जो तत्परता और शीघ्रता दिखाई है उसके साधुवाद के लिये शब्द-दर-शब्द प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

वि. संवत् २०४६ भाद्रपद शुक्ल गणेश चतुर्थी — पद्मधर पाठक

४ सितम्बर, १९८९ — निदेशक

प्रकाशकीय

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन करते हुए कुछ करुण व दारुण स्मृतियाँ मानस पर छा रही हैं। 'मीराँ बृहत्पदावली' राजस्थान के एक महामनीषी स्वर्गीय पंडित श्री हरिनारायणजी पुरोहित की अतिमहत्वाकांक्षी प्रयत्न का एक नन्हा-सा फल है। स्वर्गीय पुरोहितजी का विचार था कि वे भक्त-कवयित्री मीरांबाई के सभी अप्रकाशित पदों को संगृहीत करके प्रातः-स्मरणीया लेखिका के सुविस्तृत जीवन-चरित्र के साथ प्रकाशित करें। इस निमित्त उन्होंने हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्रों से ही नहीं अपितु गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल आदि अहिन्दी भाषाभाषी क्षेत्रों से भी मीराँबाई के पदों को एकत्र किया। मीराँ के व्यक्तित्व, कृतित्व और जीवन-चरित्र के विषय में भी उन्होंने अनेक लोगों से पत्र-व्यवहार किया और मीराँ के जीवन से संबंधित अनेक स्थानों पर स्वयं जाकर अथवा अपने आदमियों को भेज कर सामग्री चयन करने का प्रयत्न किया। उन्होंने प्राप्त हुए पदों में से बहुत से ऐसे पदों को छोड़ दिया जिन्हें वे मीराँ द्वारा लिखित नहीं मानते थे। प्रस्तुत संग्रह में उन्होंने मीराँ के प्रामाणिक पदों को ही स्थान दिया है। भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा के कथनानुसार पुरोहितजी ने पदों की प्रामाणिकता के लिए कोई कसौटी भी निर्धारित की थी जो उनके सुपुत्र श्री रामगोपालजी पुरोहित ने स्वर्गीय पिता द्वारा संगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थों तथा मीराँ संबंधित सभी सामग्री के साथ हमारे प्रतिष्ठान को भेट कर दी थी। खेद है कि अब वह कसौटी हमें उपलब्ध नहीं है, परन्तु उसके आधार पर पुरोहितजी ने जो पद-संग्रह तैयार किया था वह ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है। इस संग्रह में कुल मिलाकर ६६२ पद हैं जिनमें से प्रत्येक पद के पूर्व पद की क्रम संख्या, राग एवं ताल का नाम तथा वर्ण्य विषय का संकेत कर दिया गया है और आवश्यक पाद-टिप्पणियाँ भी जोड़ दी गई हैं। यह सब उसी स्वर्गीय आत्मा का कार्य है अतः उन्हीं के सम्पादकत्व में यह संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है।

ग्रन्थ की भूमिका के रूप में स्वर्गीय सम्पादक द्वारा ही लिखित कुछ सामग्री दी जा रही है। उसके पढने से पता चलता है कि उन्हें मीराँ के प्रति

कितनी ममता थी और उनके उदात्त व्यक्तित्व के प्रति कितनी श्रद्धा। उन्हें अनुस्वार युक्त मीराँ नाम ही प्रिय था और वे अनुस्वारहीन नाम को किसी प्रकार भी सहन नहीं कर सकते थे। यद्यपि वे मीराँ के प्रति अपनी श्रद्धांजलि विराट रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे, परन्तु अपने जीवन के अन्तिम चरण में उन्हें यह आभास हो चला था कि वे अपने प्रयत्न को इच्छा-नुसार मूर्त्त रूप देने के लिए अधिक दिन जीवित नहीं रह सकेंगे। इसी भावना को व्यक्त करते हुए उन्होंने एक छोटी-सी प्रस्तावना लिखी थी जिसको भूमिका के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसके साथ ही उनका वह लेख भी है जिसमें उन्होंने मीराँ के जीवन-चरित संबंधी मुख्य-मुख्य बातों की ओर संकेत किया है।

अन्त में स्वर्गीय पं. श्री हरिनारायणजी पुरोहित की महान् आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और उनके योग्य सुपुत्र श्री रामगोपाल पुरोहित (जिनके सौजन्य से इस प्रतिष्ठान कों इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि प्राप्त हुई) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यह ग्रन्थ पाठकों के हाथों में समर्पित किया जा रहा है। यद्यपि यह ग्रन्थ सन् १९५८-५९ में ही प्रेस को दे दिया गया था और सन् १९६२ में इसका मुद्रण भी हो गया था, परन्तु किन्हीं कारणों से इसका प्रकाशन अभी तक रुका रहा। अच्छा तो यह होता कि इस ग्रन्थ की भूमिका में, प्रधान सम्पादक की ओर से इस अवधि में की गई सभी शोध सामग्री को समाविष्ट कर लिया जाता, परन्तु इस विचार को छोड़ना पड़ा—प्रथम तो इस प्रतिष्ठान में संगृहीत गुटकों में से ऐसे ग्रन्थ बहुत से मीराँ-रचित पद मिल गये हैं जिनका प्रकाशन आगामो सत्र में होने जा रहा है; दुसरे मीराँ कृत 'नरसीजी रो मायरो' की भी ऐसी अनेक प्रतियां मिली हैं जो मीराँ के साहित्यिक जीवन पर कुछ नया प्रकाश डाल सकती हैं। ऐसी अवस्था में इस सभी सामग्री को प्रकाशित करके मीराँ की समस्त कृतियों के आधार पर उनके सम्पूर्ण साहित्य का मूल्यांकन ही अधिक उपादेय हो सकता है, इस दृष्टि से इस कार्य को आगे के लिए ही स्थगित कर दिया गया है। स्वर्गीय श्री पुरोहित जी द्वारा सम्पादित सामग्री को मीराँ बृहत्पदावली भाग १ के नाम से प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके भाग २ में उन सभी पदों को संगृहीत करने का प्रयत्न किया जायगा जो अभी तक किसी भी संग्रह में प्रकाशित नहीं हुए हैं। इसी के साथ समस्त मीराँ-साहित्य में प्रयुक्त प्राय: सभी उपयोगी शब्दों की अनुक्रमणी प्रस्तुत की जायगी जो अनुसन्धान कर्त्ताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी

होगी । आशा है विद्वान् पाठक हमारे इस विचार से सहमत होंगे ।

इस ग्रन्थ के मुद्रण से लेकर प्रकाशन तक प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपनिदेशक श्री गोपालनारायण बहुरा, पं. लक्ष्मीनारायण गोस्वामी तथा श्री हरिप्रसाद पारीक ने जो अथक परिश्रम किया है उसके लिए वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं । यहां हम श्री व्रजेशकुमारसिंह को भी भूल नहीं सकते जिसने प्रस्तुत ग्रन्थ के लिये सुविस्तृत शब्दानुक्रमणी तैयार की । यद्यपि उसका प्रकाशन अगले भाग के साथ करने का ही निर्णय लिया गया है, परन्तु उसके कठिन परिश्रम के लिये हार्दिक धन्यवाद देना आवश्यक है ।

—फतहसिंह

फाल्गुन शुक्ला द्वितीया सं २०२४
जोधपुर

भूमिका

भक्तशिरोमणि श्रीमती मीरांबाई का जीवनचरित्र, हमारे विशेष संग्रह के अनुसार बहुत विस्तार और समारोह के साथ, जिसमें कदाचित् ही कोई उपलब्ध विषय का वृत्तान्त नहीं छूटने पाता, और यावन्मात्र विचारणीय एवं संगृहीतव्य पदार्थ आजाते और लिखे जाते, और जिसका आकार एवं कलेवर सम्भवत: ५०० वा ६०० पृष्ठों से भी अधिक हो जाता । परन्तु अब इतना न तो समय ही रह गया है और न मेरे इस शरीर की इतनी शक्ति ही रह गई है कि मैं उस बृहत् कार्य को कर सकूं । मेरी अवस्था ८० वर्ष की हो जाने से अब तो उतना काम नहीं कर सकता । इस ही कारण से मुख्य-मुख्य विषयों को लिख देना चाहता हूं । इन संक्षेप के विषयों में भी मेरे विशेष संग्रह के अनुसार (प्राय: इस संक्षेप में भी) बहुत सी बातें देखने और विचारने योग्य आ सकेंगी । कुछ ऐसी बातें मेरे अनुसंधान के अनुसार नई मिलेंगी जिनका संग्रह मैंने परिश्रम और खोज के साथ ही किया है । मैं मेड़ते भी संवत् 19 ··· में गया था । वहां से उस समय जो भी प्राप्त हो सका, पदार्थ लिया । वहां के वृद्धपुरुषों व पूजारी वर्ग से तथा अधिकतर भक्तवर ज्ञानी श्री जोषी पूषारामजी के पत्रों से सामग्री मिली, जिसका सावधानी से मैं इस संग्रह में प्रयोग करूंगा । अतिरिक्त, बड़ी रूपाहेली के कृतविद्य इतिहासप्रेमी स्व. श्री ठाकुर साहब चतुरसिंहजी के बहुमूल्य पत्रों से, तथा "जयमलवंशप्रकाश" के लेखक विद्वद्वर श्री ठाकुर साहब बदनोराधीश गोपालसिंहजी की कृपा और पत्रादि से तथा अन्य अनेक सामग्री-प्रदायक महाशयों से, जिनके नामादि देकर उनका कृतज्ञ होकर इस संक्षिप्त संग्रह को लिखने का प्रयास करूंगा । मुझे इस बात को जानने से बड़ा आनंद हुआ है—उक्त दोनों सरदारों (ठाकुर साहिबों) और उनके वंशजों के श्री मीरांबाई के मेड़तियाकुल में होने का सौभाग्य । उनसे बढ़कर पते की बातें अधिक कौन जान सकते हैं । तथा स्वयं प्रसिद्ध मेड़ता नगर से और वहां के अवशिष्ट जानकारों से मुझे इस संग्रह में जो-जो भी बातें मिली हैं वे ऐसी हैं कि इससे पूर्व वे अनेक पुरुषों को ज्ञात नहीं थीं । इस सब ज्ञान की प्राप्ति के लिए मैं उन सब का आभारी होता हूं ।

मुझे श्रीमीरांबाईजी के अन्दर भक्ति तो मेरे बचपन से, मेरे पूज्या श्री दादीजी महामति से और परमयोगिनी मेरी पूज्यवरा श्री मोतीबाईजी से ही कुछ मिली थी। फिर शनैः शनैः ज्ञान बढ़ता गया। मैं जब जनानी ठचोढ़ी का सुपरिंटेंडेन्ट रहा था तब से इस संबंध में अधिक रुचि होती गई और अब तक तो वृद्धि ही मिलती गई। बाबू अनाथदास, कलकत्ते वाले शांतिनिकेतन से मेरे पास आये थे तब से उनके परामर्श से भी जानकारी बढ़ी। अब तक मेरे पास मीरांजी संबंधी बहुत सी लिखित और मुद्रित पुस्तकों की सामग्री का संग्रह हो गया। इन सब से पदार्थों की देखभाल की गई। जिसके लिए मैं सब का कृतज्ञ हूं।

श्रीमती मीरांजी संबंधी मुख्य २ बातें

१. मीराँजी से पूर्व रत्नसिंहजी उनके पिता के एक पुत्र हुआ था, उसका नाम गोपालजी था। वह कुछ समय पीछे मर गया। माता को शोकातुर देख माता के पीहर की एक 'आया' ने उनसे मीराँ साहिब (अजमेरी) की मिन्नत के लिए कहा। उनकी माता ने वैसा ही किया तो कुछ समय में मीरांजी का जन्म हुआ, वि. सं. १५५५ में। भक्त-जन नदी से प्रगट होना कहते हैं। अन्यमत से जन्म वि. सं. १५६१ सावण सुदि १ को हुआ।[1] (राव के मतानुसार पुत्र वा नदी से प्राकट्य पुरुषोत्तमदास 'मीराँ नाटक' से)।

२. मीराँ के पूर्वजन्म की कथाएं 'प्रपन्नामृत' में कथित हैं। वे बादशाह के यहाँ जन्मी थी। महात्मा रामानुजजी उनके लिए प्रार्थी हुए थे। (उस ग्रन्थ में देखें)।

३. 'मीराँ' नाम संभवत: 'मीराँ साहिब' (अजमेरी) के कारण ही रखा गया था। निश्चित रूप से यही व्युत्पत्ति होतो है। मीराँ नाम पर हमने एक विस्तृत लेख भी लिखा है।

४. मीराँजी की माता का स्वर्गवास (अनेक मतों से) मीराँजी के ४ थे वा ३ वा दूसरे वर्ष में ही हो गया था। उस समय दूदाजी की राणी वा वीरमजी

---

1. मीराँजी का जन्म गाँव 'बाजोली' में हुआ था। वहाँ से 'कुड़की' गाँव में आ गये थे। कुड़की में ही माता का देहान्त हुआ था। जन्म-स्थान फिर 'कुड़की' ही लिखा जाता है। (लेखक)

की कुमार-वधु (कुड़की) गाँव जाकर 'निषेध' का दस्तूर हो जाने पर वालिका मीराँजी को मेड़ते ले आये थे ।

५. मेड़ते में तो वैष्णवता का गहरा प्रचार और सत्संग था । वाल्यावस्था ही से मीराँजी को वैसे सत्संग में पाला गया । बुद्धिमती तो मीराँजी थे ही, अपने विद्यागुरु (गदाधरजी) दूदाजी, वीरमजी आदि की संगति के साथ तथा महलों में अपनी वड़ियाओं के साथ पुराणादि सुना करतीं । मीराँजी के पूर्वजन्म के प्रारब्धानुसार बहुत शीघ्र ही उपस्थिति हो गई । भक्तिभाव रात-दिन बढ़ता गया । वस्तुतः मीराँजी पूर्वजन्म की एक गोपिका तो थीं ही । इस भक्ति के सत्संग ने उनमें निरन्तर अधिकता करदी । वे तो थोड़ी-सी अवस्था में ही अनन्यता के प्रेम में मग्न रहने लग गई । प्रतिभा उनकी तीव्र थी । जो कुछ सुन-पढ़ लेती कंठाग्र ही हो जाता । गायन मधुर, प्रियकर और स्वरताल सहित होता था । संगीत में प्रवीण हो गई थीं ।

६. मीराँबाई की माता का नाम 'वीरकुँवरि' था । नाना का नाम 'सुलतान सिंहजी' था । ये जाति-गोत के झाला राजपूत 'गोगूंदा' गांव में व्याहे थे ।

७. वचपन ही से साधुसेवा बड़ी ही प्रिय थी । साधुसेवा में मस्त होकर खान-पान तक की सुधि नहीं रहती थी । साधुजन भक्ति के भजन गाते तब सुनते-सुनते वेबश होकर सुनतीं और मस्त हो जाती थीं । स्वयं भी पद बनाती थीं, क्योंकि गांधर्व विद्या में कुशल हो चली थीं ।

८. मुंशी देवीप्रसादजी (स्वर्गवासी) ने 'महिला मृदुवाणी' ग्रन्थ में मीराँजी का जन्म गाँव 'चौकड़ी' लिखा है । परन्तु इनकी जन्मभूमि का स्थान 'कुड़की' ही सर्वसम्मति से माना जाता है और सुप्रसिद्ध है । मेड़ते के राजपूतों का एक भाट 'धोलेराव' गांव के से पता चला है कि दूदाजी ने अपने चौथे वेटे रत्नसिंहजी को जागीर में चार गाँव–१. कुड़की २. बाजोली ३. नेण्याँ और ४. मांझी दिए थे । मुंशीजी ने केवल दो गाँव (कुड़की और बाजोली) लिखकर इत्यादि शब्द १२ गाँव रतनसिंहजी की जागीर में लिखे हैं ।[1] कुड़की गाँव जोधपुर की पूर्व सीमा पर मेड़ते से कोई १८ मील पर है । गाँव कुछ तो पहाड़ पर है और कुछ तलैटी पर है । छोटा-सा

1. अब हमें १२ गांवों की फहरिस्त मिल गई, ९ ये हैं—नींबड़ी, पालड़ी, आकोदिया, हफधर, नूंद, पीमणिया, मोटस, डुमांणीं, सुन्दरी (तीन ऊपर दिए-कुड़की, बाजोली और नेंण्यां ।

किला पहाड़ पर है। उसी में जागीरदार रहते थे। परन्तु अब कुड़की गाँव में रतनसिंहजी का वंशज कोई भी नहीं रहता है। वहाँ पर चांदावत खांप के राजपूत रहते हैं। (जोशी श्री पूषारामजी से यह वृत्त प्राप्त)। सं० १५१० में राव जोधाजी ने महाराणा के सबसे बड़े थाँणे 'चौकड़ी' को विजय किया था। (ओझाजी का जोधपुर का इतिहास पहली जिल्द)।

९. राव दूदाजी का जन्म जोधपुर में वि० सं० १४९७ में हुआ। वि० सं० १५१८ में मेड़ता विजय किया। यह पौराणिक राजा मान्धाता का स्थापित राज्य-स्थान था। दूदाजी का परलोकवास ७५ वर्ष की आयु में वि. सं० १५७२ में हुआ था। इनके बड़े पुत्र वीरमदेवजी का जन्म वि० सं० १५३४ में हुआ था। दूदाजी के दो राणियां व पाँच पुत्र थे। १. वीरमदेव, २. रायसल, ३. पंचायण, ४. रत्नसिंह, ५. रायमल। रत्नसिंहजी (मीराँजी के पिता) बयाने में बाबर बादशाह के साथ महाराणा संग्रामसिंहजी का जो प्रसिद्ध युद्ध हुआ था उसमें (रत्नसिंहजी) वि० सं० १५८४ में मिती चैत्र सुदि १४ को मुसलमानों से बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते हुए काम आये थे और उसी में रायमलजी भी।[1]

१०. दूदाजी ने मेड़ते में श्री चारभुजानाथजी का मन्दिर वि० सं० १५३२ में बनाया था। यही चतुर्भुजनाथ सब मेड़तियों के इष्टदेव (माँथे के ठाकुर) हैं। 'जै चारभुजानाथ की' कह कर आपस में अथवा अन्य पुरुषों के साथ बोलते हैं। सिर पर रेशमी पट्टा बांधते हैं। मेड़ते में दूदाजी ने, फिर वीरमजी ने अच्छे-अच्छे अनेक महल-महलात बनवाये थे। परन्तु महाराजा मालदेवजी (जोधपुराधीश) ने वैरभाव से सब को प्रायः नष्ट कर दिया। केवल श्री चतुर्भुजजी का मन्दिर मीराँबाई के प्रताप से, वा श्रीजी के प्रभाव से छोड़ दिया गया। जयमलजी, वीरमदेवजी आदि ने २२ बेर मालदेवजी से युद्ध किया था।

११. जयमलजी, महामहिम वीर वीरमदेवजी के बड़े बेटे थे। जन्म सं० १५६४ में हुआ। गद्दी सं० १६०० में (वीरमदेवजी के मरने पर) प्राप्त हुई। २२ युद्ध मालदेवजी से करने के पश्चात् जयमलजी प्रायः विजयी रहे। फिर

---

1. दूदाजी के पांच पुत्र थे—पांचवें 'रायमलजी' थे। ये भी बयाने के युद्ध में काम आ गये थे। प्रधान सेनापति होकर राव गांगाजी के भेजे गए थे। (लेखक)

बादशाह की फौज के साथ विरोध होने पर, मेड़ता सदा के लिए छूट गया। तब महाराणा उदयसिंहजी ने बहुत आदर से एक हजार गाँवों का पट्टा करके चित्तौड़ के प्रधान दुर्गाध्यक्ष बनाकर, वे स्वयं तो पहाड़ों में चले गये। जयमलजी अकबर बाहशाद के साथ छः महिनों तक घोर युद्ध करते ही रहे। अन्त में पांव में अकबर के हाथ की गोली लगने के पीछे सब रणवास का 'जौहर' करके, कल्ला के कंधे पर चढ़कर पत्ता अपने बहनोई के साथ वि० सं० १६२४ में वीरगति को प्राप्त हुए। अकबर ने इनकी अतुलित वीरता का अनुभव करके इनका स्मारक दिल्ली के दरवाजे पर (फिर शाहजहां आगरे ले गया) हाथियों पर सवार प्रतिमाओं के साथ बनवाया था।

१२. मीराँजी का विवाह वीरमदेवजी ने बि० सं० १५७३ में (मीराँजी की १८ वर्ष की आयु में) बड़े समारोह के साथ कर दिया (अन्य मत से १५७४ में)। दहेज भी बहुत भारी दिया गया। तीन लाख की जागीर मीराँजी को चित्तौड़ में मिली थी। घर के घर परिवार सहित डायजे वालों के मीराँजी के साथ गये थे। पण्डितों, ब्राह्मणों, गुरुओं आदि से लगाकर नाई, धोबी, धानके, भंगियों तक (स्त्री पुरुष सब) साथ ही गये थे। सैकड़ों घोड़े, ऊँट, रथ, सुखपाल, पालकी आदि दिये गये थे। मेड़ता से भी गांव दिये गये थे। विद्यागुरु गदाधरजी को मीराँजी ने चित्तौड़ में बड़ी जागीर निकाल दी थी, उनके वंश में अब तक भुगत रही है। कोई २०० आदमी विद्या-गुरु के वंश में अब भी होंगे। सुना गया है कि स्वयं राणाजी संग्रामसिंहजी भी विवाह में पधारे थे। राणाजी का बड़ा भारी सम्मान और सत्कार किया गया था। मीराँजी उस समय की, वा राजपूताने के अन्दर, अत्यन्त रूपवती बाई थी। पूर्व-संबंध के प्रभाव से ही नहीं, इन मीराँबाईजी के अनुपम रूप-लावण्यादि गुणों के कारण ही राणाजी ने मीराँजी जैसी स्त्री रत्न को अपने घर अपने बड़े युवराज के साथ संबंध करना सर्वोत्तम समझा। इधर वीरमदेवजी को भी विवाह की ताकीद थी। उन्होंने कुड़की से भाई रत्नसिंहजी को बुलवा कर चित्तौड़ भेजा कि वहाँ जाकर सगाई पक्की कर आवे। विवाह की मिति का तो पक्का निश्चय नहीं, परंतु ऐसा सुना गया है कि कार्त्तिक शुक्ला में किसी दिन यह विवाह हुआ था।

१३. विद्यागुरु गदाधरजी गूजर गौड़ ब्राह्मण काँटिया तिवाड़ी गोत वा खाँप के थे। इनको एक हजार बीघा पीवल भूमि, पांच हजार रु. वार्षिक ग्राय की कस्बापुर ग्रौर माँडल में मिली थी। दान-पत्र भी मिले थे। ये सब इनके वंशजों के पास हैं। इनके वंशजों को गजाधरे नाम से बोलते हैं। गजाधरों के ग्रब भी ४० ठिकानों की बिरत-वृत्ति है ग्रौर बदनोर रूपाहेली ग्रादिक मेड़तिये सरदारों के यहाँ इनका विशेष मान है। (ठा. चतुरसिंहजी रूपाहेली के से प्राप्त जगदीशसिंह गहलोत द्वारा)।

१४. श्री मीराँजी के चार मूर्तियों का पता (गिरधरलालजी कीका से) लगा है। वह इस प्रकार है :—

(१) जो पहली मूर्ति साधु महात्मा से बचपन में प्राप्त हुई वह तो सदा साथ रहा करती थी। कहते हैं कि श्री द्वारकाजी में मीराँजी भगवान् की मूर्ति में ही लीन हो गई ग्रौर किन्हीं के मत से प्यारी ग्रपनी सखी को मिल गई।

(२) दूसरी मूर्ति, सं. १६२४ में जो चित्तौड़ दुर्ग में राणा कुम्भाजी के कुम्भ-श्याम-मंदिर के पास के, मीराँजी के बनवाये हुए (राणा रत्नसिंह के समय में) मंदिर में विराजती थी, उसको चित्तौड़ विजय होने पर ग्रांमेर के महाराज भगवंतदासजी ग्रौर उनके महापराक्रमी राजपुत्र मानसिंहजी ने ग्रकबर से प्रार्थना करके उसे (सब सामग्री सहित) ग्रांबेर भिजवा दिया ग्रौर कुछ समय के ग्रनंतर प्रसिद्ध मंदिर श्री जगत्शिरोमणिजी का बनवाकर उसमें प्रतिष्ठा करवाई। उनकी मूर्ति के साथ प्रियाजी की मूर्ति माजी सीसोदणजी ग्रादि ने बनवाकर बड़े समारोह से विवाह किया। तब से जामाता (जँवाई) भाव ही ग्रब तक चला ग्राता है। ग्रांमेर के पुराणे महलों में बड़ा ही सुन्दर हिंडोला संगमरमर ग्रादि का बना हुग्रा है जिस पर स्व. महाराज माधोसिहजी ने उत्तम छाया का भवन बनवा दिया है। देवा पूजारी चित्तौड़ से परिवार सहित ग्राया था। उसके वंशज ग्रब भी पूजारी हैं ग्रौर उनके पास प्राचीन इतिहास ह० लि० वर्त्तमान है जिसे हमने भी खूब देखा है।

*(४) चौथी मूर्ति—नूरपुर पंजाब का राजा बासू जब चित्तौड़ पर चढ़कर बादशाह की आज्ञा से आया था, उस समय मीराँजी की महा-महिमा से मुग्ध होकर राणाजी से लड़ाई न करके मीराँबाई के इष्टदेव गिरधरलालजी की मूर्ति की याचना की। राणाजी ने वह मूर्ति राजा बासू को दे दी। उसने उसे नूरपुर में भेज दी, वहाँ बड़ी भक्ति के साथ पूजनादि होती रही। इस प्रकार 4 मूर्तियों का तो पता लगा है। सवाई जयपुर में भी सिलावटों के मुहल्ले में एक खण्डित मूर्ति रखी है, जो उक्त मूर्तियों से मिलती-जुलती है और गलताजी के नीचे के मन्दिर में भी उनके समान-सी ही मूर्ति बताई जाती है।

मीराँबाई का कोई पैतृक संबंध आंबेर के राजाओं के साथ हमें पं० प्रह्लादजी गायनाचार्य रासवालों ने बताया था, जिसकी खोज नहीं की गई है।

१५. वि० सं० १६८६ के निर्मित श्री पं० शोभालालजी शास्त्रि-वर के, "वीर भूमि" (अपर नाम 'चित्रकूट गुणमालिका') में ये श्लोक मीराँजी के बनवाए हुए मंदिर के लिए बड़े प्रमाण हैं:---

(१) श्रीनन्दनन्दन-पदाम्बुरुहस्य भृङ्गी,
मीराँ हरेर्निलय मञ्चमिमं चकार।
यस्याग्रतो लसति मण्डपिकान्तरस्थं,
तस्या गुरोश्चरणपङ्कजयुग्मचिह्नम् ।। १ ।।

श्री नन्द-नंदन के चरणारविन्दों की मधुकरी (भँवरी) श्री मीराँबाई ने यह ऊँचा विष्णु मंदिर बनवाया था जिसके सम्मुख ही छत्री के भीतर गुरु-चरणों के चिह्न शोभायमान हैं। ये चरणचिह्न उनके विद्यागुरु गदाधरजी के हैं। अन्य मत से मीराँजी के मंदिर के प्रधान पुजारी देवाजी के हैं। पत्थर-लेख नहीं होने से यथार्थ ज्ञात नहीं होता है।

---

* पुरोहितजी के स्वयं के हाथों से लिखित भूमिका में तीसरी मूर्ति का विवरण अप्राप्त है लेकिन अन्य टिप्पणियों में पुरोहितजी ने लिखा है कि 'उदयपुर के जगदीश मंदिर में महाराणा जगतसिंहजी प्रथम ने जो मूर्ति पधराई थी वह मीरां की ही थी। उनके कथनानुसार यह सूचना जन-श्रुति पर आधारित है।

(२) श्री कुम्भकर्ण-नरनाथ-विनिर्मितेऽस्मिन्-
नायाहि पापकदने सदने मुरारेः ।
भक्त्यानतं सकृदपीह यदुत्तमाङ्गं,
नित्योन्नतं भवति तज्जगतां त्रयेऽपि ।। ४० ।।

महाराणा कुम्भाजी के बनाये हुए, पाप को नाश करने वाले, इस मन्दिर में आइये । यहां जो एक बार भी भक्ति-भाव से झुक जाता है वह तीनों लोकों में सदा ऊँचा ही रहता है ।

यह मीराँजी का मन्दिर महाराणा श्री कुम्भाजी के मंदिर के समीप ही बना हुआ है । इसके समीपता ही ने और न जानने वालों के गलत बता देने ही से कर्नल जेम्स टॉड साहिब ने भी यह बड़ी भयानक भूल कर दी कि मीराँबाईजी को कुम्भाजी की स्त्री लिख दी । और फिर परदेशी एवं देशी कुछ विद्वानों ने भी (भेड़ी-धसान न्यायानुसार) वैसा ही लिख मारा। यह तो स्व. मुन्शी देवीप्रसादजी ने खोज करके, म० म० क० रा० श्री श्यामलदासजी से निश्चय करके और जोधपुर के इतिहास कार्यालय के दफ़तरों इत्यादि से तथा म० म० डॉ० श्री ओझा गौरीशंकरजी से विशेषतया पदार्थ प्राप्त कर सत्य आख्यायिकाएं बताई हैं । फिर तो स्पष्ट ही पूर्ण सही खोज हो गई ।

इस ही मीराँ के मंदिर में मीराँजी अनन्य भक्ति से श्री कृष्णचंद्र भगवान् गिरधरलालजी के आगे पूर्ण-प्रेमा भक्ति से नृत्य और गान, संगीत-वैभव-विभूति से किया करती थी, जिनके घात के लिए मूर्खों ने विष आदि के भी प्रयोग किये परन्तु मीराँजी का वाल भी बाँका नहीं हुआ जैसा कि श्लोक में है :—

(३) अत्रैव माधवपदाम्बु-सुधा-प्रमत्ता,
मीराँ ननर्त गलितस्वपराभिमाना ।
घोरं हलाहलमिहैव तदीय हस्ते
श्रीनन्दसूनुचरणामृततां प्रपेदे ।।३४।।

भगवच्चरणारविंद के सुधा का पान करके मस्त हुई मीराँ ने इसी स्थान पर अपने पराये का अभिमान त्याग कर नृत्य किया था और यहीं पर घोर हलाहल विष भी उसके हाथ में पहुंच कर श्री नन्दनन्दन का चरणामृत बन गया था ।

१६. श्री पं. पुरुषोत्तमदासजी बी. ए. (पूर्व में मेड़ते के नायब हाकिम) रचित मीराँबाई के नाटक में जो कुछ विशेष बातें हैं सो संक्षेप में देते हैं :—

[क] कर्नल टॉड साहब ने जो गलती की (राणा कुंभा की राणी मीराँजी को लीख दी) उसका खंडन ऐतिहासिक प्रमाणों से किया है।

[ख] सं. १५१८ में दूदाजी ने मेड़ता विजय कर उसे बसाया।

[ग] मीराँजी दो ही वर्ष के थे तब माता का स्वर्गवास हो गया था।

[घ] मीराँजी के हाथ से चारभुजानाथ दूध पीते थे।

[ङ] मीराँजी की उत्पत्ति भक्तजन नदी में से मिलना मानते हैं।

[च] सं. १५७३ में मीराँजी का विवाह राणा साँगाजी के ज्येष्ठ पुत्र भोजराजजी के साथ हुआ तब से वे चित्तौड़ में रहने लगी और श्री गिरधरलालजी की मूर्ति वह साथ ले गई जिसकी भक्तिपूर्वक अर्चना करती रहती थी।

[छ] विवाह के पहिले जो भजन मीराँ ने बनाये उनमें छाप दी है— "मीराँ कहै चतुर्भुज नाथा" अथवा "मीराँ कहे श्री हरि अविनाशी" इत्यादि। और विवाह के पिछे जो पद बनाये उनमें यह छाप दी है—"मीराँ कहै प्रभु गिरधर नागर।" "मीराँ के प्रभु गिरधर नागर" इत्यादि। गिरधर की मूर्ति साथ ले जाने का यह पुष्ट प्रमाण भी है।

[ज] विवाह के १० दस वर्ष उपरांत ही मीराँजी के पति का स्वर्गवास होगया था। इसके ६ महीने पीछे ही वीर राणा सांगाजी भी इस संसार को त्याग गये थे।

[झ] सं. १५९५ में जोधपुर के राव मालदेवजी ने मेड़ता को हस्तगत कर लिया और तब मीराँबाई, वीरमदेवजी बड़े बाप को और कई आदमियों को साथ लेकर तीर्थ-यात्रा को चली गई। द्वारका पहुंच गई और वहां सं. १६०३ में द्वारकानाथजी की ज्योति में लय हो गई। (कोई लोग कहते हैं कि मृत्यु से मरी)।

[ञ] भक्त-शिरोमणि प्रसिद्ध वीर जयमलजी मीराँजी के चचेरे भाई थे।

ता. २०-४-४४ ई.
जयपुर सिटी

पु. श्री हरिनारायण शर्मा,
बी. ए., विद्याभूषण

।। श्रीः ।।

मीरां बृहत्पदावली

*

पद–१ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(आकांक्षा)

अँखियां कृष्ण मिलन की प्यासी (टेर)
आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हाँसी ।। १
आम की डार कोयलिया बोलै, बोलत सबद उदासी ।। २
मेरे तो मन (अब) ऐसी आवै, करवत लेहौं कासी ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी ।। ४

○

पद–२ : राग कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(लीला वर्णन)

अच्छा लेहु व्रजवासी कन्हैया, अच्छा लेहु रे (टेर)
बरसाने से चली गुजरिया, आगे मिले महाराज रे ।
कोरी-कोरी मटुकी में दही जमाया, चाख लेहु महाराज रे ।। १
दधि मोरो खायो मटुकिया फोरी, इँडुरिया कहाँ डारी लाल रे ।
हार सिंगार सभी मेरो तोरचो, दुलरी कहाँ डारी लाल रे ।। २
जाय पुकारूँगी कंस के आगे, न्याय करो महाराज रे ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहार रे ।। ३

○

१–(या.सं.–संरा.क से)
नोट–इसका पाठान्तर–"श्याम मिलन की" और "करवत लों जाय कासी"। "बृ.रा.र." में सूरपद है–"अँखियाँ हरि दरसण की प्यासी" (टेर)। परन्तु अंतरे भिन्न हैं। फिर भी यह पद सूर-पद की ही छाया से बना होगा–सं०
२–३ (क); (बृ.रा.र.पृ.६०)

पद–३ : राग–झिंझोटी : ताल–कहरवा

(भक्त महिमा)

अच्छे मीठे चाख चाख, बोर लाई भीलणी (टेर)
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी ।। १
झूटे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत जाण ।
ऊँच नींच जाने नहिं, रस की रसीलणी ।। २
ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमान चढ़ी ।
हरिजी सूँ बाँध्यो हेत, बैकुंठ में झूलणी ।। ३
ऐसी प्रीत करै कोई, दासि मीराँ तरै जोई ।
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ।। ४

○

पद–४ : राग–काफी : ताल–कहरवा, दीपचंदी

(उत्कण्ठा)

अजी म्हारी पीर न जाने, बैरन हे थारो वीर (टेर)
चुन चुन कलियन सेज बणाई, सेजड़ियाँ सुख माँणें ।। १
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, म्हाँसूं जो रूड़ो रँग माँणें ।। २

○

पद–५ : राग-कालिंगड़ा वा कान्हड़ा : ताल–धीमा तिताला

(भगवत् लीला)

अजी ये ललाजू आज गोकुल वासी (टेर)
गोकुल वासी प्राण हमारे, हाँ ललाजी ।
श्यामसुन्दर अविनासी ।। १

३–२ (म); २ (भ)
४–३ (क); (या०–प्रति सं० ३६६/४८)
४–पा० 'छाँणें' ।

इत गोकुल उत मथुरा नगरी, हाँ ललाजी ।
बीचे नदी यमुनासी ।। २
यमुना के तीरे धेनु चरावें, हाँ ललाजी ।
हाथ लिये नौलासी ।। ३
बृन्दावन की कुंजगलिन में, हाँ ललाजी ।
सँग दुलहिन राधासी ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हाँ ललाजी ।
तुम ठाकुर मैं दासी ।। ५

○

पद–६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा

(मनस्ताप)

अपणाँ करम ही का खोट, दोष काँई दीजेरी आली (टेर)
मैं तासूँ बूझूँ कोई न बतावै, सब ही बटाऊ लोग ।
सुणजो री मोरी संग की सहेली, बाट चलत लगी चोट ।। १
अपणां दरद कूँ सब कोई जाणैं, पर दुख कूँ नहिं कोइ ।
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी, बची चरण की ओट ।। २

○

पद–७ : राग–सोरठ वा झँझोटी वा माँढ

(आत्मकथा)

अपणा गिरधर कै कारणै, (वा) मीराँ वैरागण हो गई[1] (रे) (टेर)
जबतै सिर पर जटा रखाई[2], नैणां नींद गई (रे) ।। १
दंड कमंडल और गूदड़ी, सिर पर धार लई (रे) ।। २
छापा तिलक बनाये छबि सों, माला हात रही[3] (रे) ।। ३

५–२ (म); (आ.सा.भा. १ पृ. ११३)
६–२ (म); (क.ब. १३)
७–२ (म); (मी.ली.दी.ना. पत्र २६) (मी.ली.स.मा. २२)
1 पा.–'भई रे' । 2 पा.–'बधाई' । 3 पा.–'लिई' ।

दोउ कुल छांड भई वैरागरा, हरि सों टेर दई (रे) ।। ४
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, गोविन्द सरण भई (रे) ।। ५

○

पद–८ : राग–जंगलो पीलू : ताल–तितालो

(प्रेम की दृढ़ता)

अब कोऊ कछु कहो दिल लागारै (टेर)
जाकी प्रीत लगी लालन से, कंचन मिला सुहागा रै ।
हंसा की प्रकृत हंसा जाणे, का जाणैं नर क़ागा रै ।। १
तन भी लागा मन भी लागा, ज्यों बामण गल धागा रै ।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, भाग हमारा जागा रै ।। २

○

पद–९ : राग–ईमन : ताल–इकताल

(प्रेमप्रहार)

अब कोउ कैसे कहो दिल लागा (टेर)
मेरी प्रीत लगी मोहन से, सोने मिलत सुहागा ।। १
कोउ येक निंदो कोउ येक विंदो, नाम सुधारस पागा ।। २
जन मीराँ गिरधर वर पायो, भाग हमारा जागा ।। ३

○

पद–१० : राग–झँझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम-दृढ़ता)

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई (टेर)
माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगा भाई ।
साधु संग बैठ-बैठ, लोकलाज खोई ।। १–अब०

८–१ (उ); (प्रभुनाव का गुटका सं. २६)
९–१ (उ); (सूर्यनारायणजी दाधीच से प्राप्त)
१०–(उ)
नोट–यह पद 'मेरे तो गिरधर गोपाल' पद में स्थाई के थोड़े परिवर्तन से किसी दादूपंथी द्वारा विकृत हुआ है ।

संत देख दौड आई, जगत देख रोई ।
प्रेम आँसु डार-डार, अमर बेल बोई ।। २–अब०
मारग में तारग मिले, संत राम दोई ।
संत सदा शीश राखूं, राम हृदय होई ।। ३–अब०
अंत में से तंत काढ़ी, पीछे रही सोई ।
राणे भेज्या विष का प्याला, पीवत मस्त होई ।। ४–अब०
अब तो बात फैल गई, जाणे सब कोई ।
दास मीरां लाल गिरधर, होनी हो सो होई ।। ५–अब०

○

पद–११ : राग–पीलू : ताल–कहरवा

(प्रेम-प्रवाह)

अब नहिं जाने दूं गिरधारी,
(मोहे) प्रीत लगी अति भारी (टेर)
बाँको मुकट काछनी सुन्दर, ऊपर जरद किनारी।
गल मुतियन की माल बिराजे, कुण्डल की छबि न्यारी ।। १
बाँकी भों कजरारे नैनां, अलकें छुट रही कारी ।
मंद-मंद मुरली धुन बाजत, मोही ब्रज की नारी ।। २
क्षुद्र घंटिका कटि कर सोहै, भुज पर बाजू धारी ।
कड़ा मरहटी सुघर नेवरी, नूपुर की झुँणकारी ।। ३
दुरजन लोग हँसो क्योंने मोसों, दे दे कर कर तारी ।
मीरां प्रभु की भई दिवानी, प्रेम मगन मतवारी ।। ४

○

पद–१२ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विनय)

अब तो निभायाँ बनेगी, बाँह गहे की लाज (टेर)

११–१ (उ); (पु.ना.बा.)
१२–१ (उ); (बं.पु.ष्ट.४२)

समरथ सरण तुम्हारी साँइयाँ, सरब सुधारण काज ।। १
भवसागर संसार अपर बल, जामें तुम्ही जहाज ।। २
निरधाराँ आधार जगतगुर, तुम बिन होय अकाज ।। ३
जुग-जुग भीर हरी भक्तन की, दीनो मोक्ष समाज ।। ४
मीरां सरण गही चरनन की, पैज रखो महाराज ।। ५

○

पद–१३ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(गुरु-रहस्य)

अब (तो) हरि नाम लो लागी ।
सब जग को यह माखन चोरचो, नाम धरचो वैरागी (टेर)
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी ।
मूँड मुडाइ डोरी कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ।। १
मात जसोमति माखन कारण, बाँधे जाके पाँव ।
स्याम किसोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नाँव ।। २
पीताम्बर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौर कृष्ण की दासी मीरां, रसना कृष्ण बसै ।। ३

○

पद–१४ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम-निश्चय)

अब नहिं मानांला म्हे थारी, म्हाँने बर मिलिया गिरधारी[1] (टेर)
मन कपूर की एकहि गति है, कहा कहुँ बार हजारी ।
कंकर कंचन एक गिणत है, गुंज मिरच इकसारी ।। १

१३–२ (म)
नोट–इस पद में चैतन्य महाप्रभु का स्पष्ट उल्लेख और स्मरण है ।
१४–१ (उ०); (दीना. मं.मी.प. १६)
1–पा.–'अति भारी' ।

अनँत धणी के सरणे आई, हाथ सुमरिणी धारी ।
जोग लियो जब बाद[1] तजीरी, गुर पाया निज भारी ।। २
साध संगत मेरो मन राजी, भई कुटंब सूं न्यारी ।
कोड़ बेर समझावो मोकूं, चालूं (जूं) बुद्धि हमारी ।। ३
म्हे रांणां के परत न रहस्यां, केई वेर कह-कह हारी ।
सौ बातन की एक बात है, अब तो समझ गँवारी ।। ४
रतन जडित की टोपी सिर पर, हार कंठ को भारी ।
चरण घूघरा धमस पडत हैं, (म्हे) करी स्याम सूं यारी[2] ।। ५
लाज सरम तो सभी गुमाई, यो तन शरणां धारी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारी ।। ६

○

पद–१५ : राग–काफी : ताल–जैत

(प्रेम-दृढ़ता)

अब नां रहूँगी श्याम अटकी, म्हारो मन लाग्यो गिरधर से (टेर)
म्हांने गुर मिलिया अविनासी, दई ग्यान की गुटकी ।
लगी चोट निज नांव धणी की, म्हारै हिवड़ै खटकी ।। १
माणक मोती परत न पहरूं, मैं तो कबकी नट गी ।
गहणों म्हारे माला दोवडो, और चंनण की कुटकी ।। २
राणा कुलकी लाज गमाई, साधां के संग भटकी ।
नित प्रत जाऊं गुर दरसण, नाचूं दै दै चुटकी ।। ३
परमगुरू के सरणै जाऊं, करूं प्रणाम सिर लटकी ।
जेठ बहू की काण न मानूं, पड़ो घूंघट पर पटकी ।। ४
करम लिखायो साध संगत में, हर-सागर[1] में लटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भो-सागर से छुटकी ।। ५

१४–1–पा.–'जब क्या दिलगीरी' ।
2–पा.–'मैं भई श्याम की प्यारी' ।
१५–१ (उ०); (जमा० ७)–(दीना.मं.प. १७)
1 पा.–'मारग' ।

पद–१६ : राग–कामोद, छाया : ताल–कहरवा

(मीरां लीला सम्वाद)

अब मीरां मान लीज्यो म्हारी,
हांजी थांनै सइयां वरजै सारी (टेर)
राजा बरजै राणी बरजै, बरजै सब परिवारी ।
कुँवर पाटवी सो भी बरजै, और सहेल्यां सारी ।। १
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली सोभा न्यारी ।
गले गूजरी कर में कंकण, नेवर पहिरे भारी ।। २
साधुन के संग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी ।
नित[1] प्रति उठि नींच घर जावो, कुलकूँ लगावो गारी ।। ३
बड़ा घरांकी छोरी कहावो, नाँचो दे दे तारी ।
बर पायो हिंदवाणो सूरज, अब दिल में कहा धारी ।। ४
तारयो पीहर सासरो तारयो, माय मोसाली तारी ।
मीरां ने सतगुरुजी मिलिया, चरण कमल बलिहारी ।। ५

○

पद–१७ : राग–काफी वा मांढ़ : ताल–जैत

(आत्मनिवेदन)

अब मैं शरण तिहारी जी मोहि राखो कृपानिधान (टेर)
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान ।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान ।। १
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान ।
कुबजा नीच भोलनी तारी, जाणैं सकल जहान ।। २
कहँ लग कहूँ गिनत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान ।
मीरां कहै मैं शरण रावरी, सुनियो दोनों कान ।। ३

१६–३ (क.)
1 पा०–'नित प्रति जाय नीच घर बैठो' ।
१७–१ (उ.)

पद–१८ : राग–सोरठ, विहाग : ताल–दीपचंदी

(प्रेम में त्याग)

अरी एरी ऊदाँ लागी का नाम न लेय (टेर)
जल से प्रीत करी मछली ने, बिछुरत प्राण तजे ।। १
मृगाँ की प्रीति लगी नादाँ से, सनमुख सेल सहे ।। २
दीपक से प्रीत लगी पतंग की, वार फेर जिय दे ।। ३
मीरां की प्रीति लगी है संतों से, गुरु चरणाँ चित दे ।। ४

○

पद–१९ : राग–जंगलो : ताल–कहरवा

(भगवत-स्मरण)

अरे रे मैं तो ठाडी जपूं राम माला रे (टेर)
मैं जपती नांव मेरे सायब का, आंण मिलो नँदलाला रे ।
हाथ सुमरणी कांख कूबड़ी, ओढ़ रही मृगछाला रे ।। १
मोर मुकट पीतांवर सोहै, ओढे लाल दुसाला रे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भगतन के प्रतिपाला रे ।। २

○

पद–२० : राग–आसा, मांढ : ताल–कहरवा

(राणा संवाद–प्रेम–निश्चय)

अरे रांणां पहली क्यों ना बरजी ।
लागी गिरधरिया सूं प्रीत (टेर)
मारो चाहे छाँडो राणा, नाहिं रहूँ मैं बरजी ।
सुगनां साहिब सुमरतां रे, मैं थारे कोठे खटकी ।। १

१८–२ (म.); (पुजा नाथू पु.से.)
१९–२ (म.); (प्रभुनारायणजी का गुटका सं. २९)

राणाजी भेज्यो विषरो प्यालो, कर चरणामृत गटकी ।
दीनबंधु सांवरियो हैरे, जाणत है घट-२ की ।। २
म्हारा हिरदा मांय बसी है, लटकन मोरमुकट की ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मैं हूँ नागरनट की ।। ३

○

पद–२१ : राग–सोरठ, शंकरा : ताल–तिताला

(उलहना)

अहो काँई जाणें गुवालियो बेदरदी पीड़ पराई (टेर)
(जो) जनमत ही कुल त्यागन कीनों, बन बन धेनु चराई ।। १
चोर चोर दधि माखन खायो, अबला नार सताई ।। २
सोला सैंस गोपी तज दीनी, कुबजा संग लगाई ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुंण करै थारी (रे) बड़ाई ।। ४

○

पद–२२ : राग–काफी : ताल–दीपचन्दी

(प्रेम)

आई देखन मनमोहन को, मोरे मन में छबि छाय रही (टेर)
मुख पर का आँचल दूर किया,
तब ज्योति में ज्योति समाय रही ।। १ आई०
सोच करे अब होत कहा है,
प्रेम के दुन्द में आय रही ।। २ आई०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
बूंद में बूंद समाय रही ।। ३ आई०

○

२०–२ (म.); मी.प.जमा.राम. ६
२१–१ (उ.); (दीना. मं.मी.प.९)
२२–२ (म.)

पद–२३ : राग–काफी, घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेम-लीला)

आज अनारी ले गयो सारी, बैठि कदम की डारी हे माय ।
म्हारे गैल परचो गिरधारी हे माय, आज अनारी ले गयो सारी (टेर)
मैं जल जमुना भरन गई थी, आ गयो कृष्णमुरारी हे माय ।। १
ले गयो सारी म्हारी अनारी, जल में खड़ी उघारी हे माय ।। २
सखी सयानी मोरी हँसत हैं, हँसि हँसि देवैं तारी हे माय ।। ३
सास बुरी अरु ननद हठीली, लरि लरि दे मोंहि गारी हे माय ।। ४

○

पद–२४ : राग–भैरवी : ताल--तिताला

(अपरोक्ष-प्रेमानन्द)

आज सखि मोरे अनन्द भयो है, घर में मोहन लाधो री (टेर)
बन जोई बृन्दावन जोई, जोई बिरज सब बाधो री ।। १
सतवे मलीए अजब झरोखे, वाही तें हरिजी लाधो री ।। २
म्हारा तो घर में मही घनेरो, हरि चोर चोर दधि खाधो री ।। ३
अपने द्वार में कबकी ठाढी, बाँह पकर हरि साधो री ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधर मिलियो, बिरह बाज ने बांधो री ।। ५

○

पद–२५ : राग–टोडी, जोनपुरी : ताल–कहरवा

(प्रेम-लीला)

आजु मैं देख्यो गिरधारी ।
सुन्दर बदन मदन की शोभा, चितवन अनियारी (टेर)
बजावत बंसी कुंजन में ।
गावत ताल तरंग रंग ध्वनि, नचत ग्वालगन में ।। १

२३–२ (म.)
२४–२ (म.); (सं रागकल्पद्रुम पृ. ४२)
२५–२ (म.); (भक्तनारी पृ. ४७)

माधुरी मूरति वह प्यारी ।
बसी रहै निसिदिन हिरदै बिच, टरे नहीं टारी ।। २
वाहि पर तन मन हैं वारी ।
वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी ।। ३
तुलसी बन कुंजन संचारी ।
गिरधरलाल नवल नटनागर, मीरां बलिहारी ।। ४

○

पद–२६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(मिलन-लालसा)

आज्यो आज्यो गोविन्दा म्हारै म्हैल,
निहारां थारी बाटड़ली खड़ी जी, म्हारै आज्यो (टेर)
तनका त्यागूँ कापड़ा जी, ऊगंते परभात ।
खड़ी जोवती राह में जी, सतगुरु पोंछे आय ।
पियालो लियाँ हाजिर खड़ी, जी ।। १
साधु हमारी आतमा जी, हम साधुन की देह ।
रोम रोम में रम रही जी, ज्यूं बादल में मेह ।
सुरत हरि नाम सें लगी, जी ।। २
मीरां हरि की लाडिली जी, तुम मीरां के स्याम ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, दरसण द्यो म्हारे राम ।
सुरत निज नाम से लगी, जी ।। ३

○

पद–२७ : राग–मारू व जोगिया : ताल–जैत

(इष्ट-प्राप्ति)

आँण मिल्यो अनुरागी, जोगियो, आँण मिल्यो अनुरागी ।
साँसो सोच अंग नहिं अब तो, तिस्ना दुबध्या त्यागी ।। १

२६–१ (उ)
२७–१ (उ.); (दीना सं.मी.पृ.३५)

मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, स्याम वरण बड़भागी[1] ।। २
जनम जनम को साहिब मेरो, वाही सों लौ लागी ।। ३
अपणाँ पिया संग हिल मिल खेलूं, अधर-सुधारस-पागी ।। ४
मीरां गिरधर के मन मानी, अब मैं भई सुभागी ।। ५

○

पद–२८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(विरह)

अपनी गरज हो मेटी, साँवरे हम देखी तुमरी प्रीत (टेर)
आपन जाय द्वारका छाये, ऐसे वेहद भये हो नचिंत ।
ठोर ठोर अलेव फिरत हो, फूल भँवर की सी रीत ।। १
बिन दरसन कल न परत है, सपने कै सी प्रीत ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, प्रभु चरणन परचित ।। २

○

पद–२९ : राग–मारू, सारंग वा माँझ : ताल–तिताल
(इष्ट प्राप्ति)

आये आये जी महाराज आये, निज भक्तन के काज बनाए । (टेर)
तज वैकुण्ठ तज्यो गरुड़ासन, पवन वेग उठ धाये ।। १
जब ही दृष्टि परे नंदनन्दन, प्रेम भक्ति रस प्याये ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कमल चित लाये ।। ३

○

---

1 पा. 'अनुरागी' ।
२८–१ (उ.)
२९–२ (म.); (बृ.रा.र.पृ. १७२)

पद–३० : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह)

आली री मेरे नयनन बान पड़ी । (टेर)
चित्त चढ़ी मेरै माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।। १
कब की ठाडी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ।। २
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ।। ३
मीरां गिरधर हात बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ।। ४

○

पद–३१ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(चरित्र, वृन्दावन-महिमा)

आली मोहि लागत बृन्दाबन नीको । (टेर)
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दर्शन गोविंदजी को ।। १
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को ।। २
रत्न-सिंहासन आप बिराजे, मुकुट धर्यो तुलसी को ।। ३
कुंजन कुंजन फिरत राधिके, शब्द सुनत मुरली को ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।। ५

○

पद–३२ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम-प्रवाह)

आली साँवरा की दृष्टि मानो प्रेम की कटारी है । (टेर)
लागत बेहाल भई, तन की सुधि बुधि गई ।
तन मन व्याप्यो प्रेम, मानो मतवारी है ।। १

३०–१ (उ.)
नोट—यह पद किसी भी भक्त कवि के पद से टक्कर ले सकता है ।
भाव-भाषा-शैली सभी दृष्टि से यह अत्युत्तम है । सं० ।
३१–१ (उ.); (बृ.रा.र.पृ. ५१९)

सखियां मिलि दुइचारी, बावरी सी भई न्यारी ।
हौं तो वाको नीके जानों, कुंज को विहारी है ।। २
चंद को चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै ।
जल विना मीन जैसे, तैसे प्रीत प्यारी है ।। ३
विनती करों हे श्याम, लागों मैं तुम्हारे पाम ।
मीरां प्रभु ऐसे जानो, दासी यह तुम्हारी है ।। ४

○

पद–३३ : राग–आसा-मांड : ताल–दीपचंदी

(छवि-वर्णन)

आवत मोरी गलियन में गिरधारी ।
मैं तो छुप गई लाज की मारी । (टेर)
कुसुमल पाग केसरियाँ जामा, ऊपर फूल हजारी ।
मुकुट ऊपरे छत्र बिराजे, कुंडल की छबि न्यारी ।। १
केसरी चीर दरियाई को लहँगो, ऊपर अँगियाँ भारी ।
आवत देखे कृष्ण मुरारी, छुप गई राधा प्यारी ।। २
मोर मुकुट मनोहर सोहे, नथनी की छबि न्यारी ।
गल मोतिन की माल बिराजे, चरणकमल बलिहारी ।। ३
ऊभी राधा प्यारी अरज करत है, सुणज्यो कृष्ण मुरारी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरणकमल बलिहारी ।। ४

○

पद-३४ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(मिलनोत्कण्ठा)

आवो आवो जी रँगभीना म्हारै म्हैल,
प्यालो तो लियां हाजर खड़ी । (टेर)
सतजुग में सूती रही, त्रेता लई जगाय ।

३२–२ (म.)
३ (क.)

द्वापर में समझी नहीं, कलजुग पोंहच्यो आय ।। १
सतगुरु शब्द उचारिया जी, बिनती करों सुनाय ।
मीरां नैं गिरधर मिल्या जी, निरभै मंगल गाय ।। २

○

पद–३५ : राग–तिलंग : ताल–धीमा
(विनय)

आवो जी गिरधारीजी थांसूं में बोले । (टेर)
थे तो म्हारा जनम जनम रा संगी,
थांरे लारां लारां संग में डोले ।। १
आद अंत तन मन धन मेरे,
आनंद करां कलोले ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
आन मिलो अनमोले ।। ३

○

पद-३६ : राग–तिलंग : ताल-धीमा
(विरह)

आवो मनमोहनाजी, जोऊँ थारी बाट (टेर)
खान पान मोहि नेक न भावे, नैण न लगे कपाट ।। १
तुम आयां बिन सुख नहिं मेरे, दिल में बहोत उचाट ।। २
मीरां कहे मैं भई रावरी, छाँडो नाहि निराट ।। ३

○

३४–१ (उ.)
३५–१ (उ.)
३६–१ (उ.)

पद-३७ : राग–खमाच : ताल-धीमा

(विरह)

आवो मनमोहनाजी मीठा थाँरा बोल । (टेर)
बालपने की प्रीत रमइयाजी, कदे नहिं आयो थारो तोल ।। १
दरसन बिन मोहिं जक न परत है, चित मेरो डाँवाडोल ।। २
मीरां कहे मैं भई रावरी, कहो तो बजाऊं ढोल ।। ३

○

पद-३८ : राग–देश : ताल-दीपचंदी

(उपदेश)

आवो सहेल्याँ रली कराँ हे, पर घर गवण निवारि । (टेर)
झूँठा माणिक मोतियाँ री, झूँठी जगमग जोति ।
झूँठा सब आभूषणां री, सांची पियाजी री पोति ।। १
झूँठा पाट पटंबरां री, झूँठा दिखणी चीर ।
साँची पियाजी री गूदड़ी, जामें निरमळ रहे शरीर ।। २
छप्पन भोग बुहाई देहे, इन भोगिन में दाग ।
लूँण अलूँणो ही भलो हे, अपणे पियाजी को साग ।। ३
देखि विराणे निवाँण कूँ हे, क्यूँ उपजावै खीज ।
कालर अपणो ही भलो हे, जामें निपजै चीज ।। ४
छैल विराणो लाख को हे, अपणे काज न होइ ।
ताके संग सिधारताँ हे, भलां न कहसी कोइ ।। ५
वर हीणो अपणो भलो हे, कोढी कुष्टी होइ ।
जाके संग सिधारताँ हे, भलां कहे सब कोइ ।। ६
अविनासी सो बालमा हे, जिनसूँ साँची प्रीति ।
मीरां कूँ पिरभू मिल्या हे, ये ही भगति की रीति ।। ७

○

३७–१ (उ.); (मीरांपदावली वि. कु., पृ. ८)
३८–१ (उ.)

पद-३९ : राग–काफी : ताल-दीपचंदी

(विरह)

इक अरज सुनो पिय मोरी, मैं किण संग खेलूँ होरी । (टेर)
तुम तो जाय विदेसाँ छाये, हम से रहे चित चोरी ।
तन आभूषण छोड़े सबही, तज दिये पाटपटोरी ।
मिलन की लग रही डोरी[1] ।। १
आप मिल्यां बिन कल न पड़त है, त्यागे तिलक तमोरी ।
मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी ।
दरस बिन बिरहन दोरी ।। २

○

पद ४० : राग–बरवा–ऊझाज : ताल–तिताला

(उलहना)

इतनूं कांई छै मिजाज, म्हारै मिंदर आ[व]तां ।
थांने इतनूं कांई छै मिजाज । (टेर)
तन मन धन सब अरपन कीनूं, छाड़ी छै कुल की लाज ।। १
दो कुल त्याग भई बैरागण, आप मिलण की लाग [के काज] ।। २
मीरां के प्रभु कब र मिलोगे, कुबज्या आई कांईं याद ।। ३

○

पद-४१ : राग–सारँग : तर्ज–घूमर : ताल–कहरवा

(लीला-वर्णन)

इन काना की बंसी म्हांने, लागे प्यारी माय । (टेर)
आज बिरज पर इन्दर कोप्यो, बरसे मूसलधारा ।
बाँवां नख पर गिरवर धार्यो, डूबत बिरज उबारा ।
गऊ बछड़ा भीजे री माय ।। १

३९–१ (उ.); १–पा० 'तोरी' ।
४०–२ (म.); (प्रभुनारायणजी के गुटके से पृ. ४३)

पांव पयादे सब चल आये, सुन मुरली का बाजा ।।
मृत्युलोक में टटियां छाई, जहाँ देवन का बासा ।
ब्रह्मा बिष्णु खड़े री माय ।। २
कूद पड़े कालीदह माँही, नाग ज्यो नाथ्यो काली ।
जमुनां के नीराँ तीराँ धेनु चरावे, ओढ़े कम्मल काली ।
तट जमुना कढे री माय ।। ३
मोरमुकुट पीताम्बर सोहे, गले बैजन्ती माला ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ठाकुर बंसीवाला ।।
यांकी सूरत पर बलिहारी माय ।। ४

○

पद-४२ : राग–मांढ : ताल–दीपचंदी

(लीला)

इन सरवरिया री पाल, मीरां बाई साँपड़े ।
साँपड़ किया अस्नान, सूरज सामी जप करे । (टेर)
(प्रश्न) होय बिरंगी नार, डगराँ बिच हे क्यूं खड़ी ।
काँई थारो पीहर दूर, काँई घराँ सासू लड़ी ।। १
(उत्तर) नहिं म्हारो पीहर दूर, नहीं घराँ सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ।। २
गुरु म्हारा दीनदयाल, वे हीराँ का पारखी ।
दियो म्हांने ज्ञान बताय, संगत करस्याँ साध री ।। ३
इन सरवरिया रा हंस, सुरंग ज्यांरी पाँखड़ी ।
राम मिलन कद होय, फड़के म्हारी आँखड़ी ।। ४
राम गये बनबास, साथहि सब रँग ले गये ।
ले गये (म्हारी) काया को सिंगार, तुलसी की माला दे गये ।। ५
खोई कुल की लाज, मुकंद थारे कारने ।
बेगहि लीज्यो सम्हाल, मीरां पड़ी जो बारने ।। ६

४१–२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से)
४२–२ (म.)

पद-४३ : राग–मांड वा सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

इसौ पिव जान न दीजै हो ।
स्याम सलोना लोइणां, मुख देख्यां जीजै हो । (टेर)
आवो सखी सहेलड़यो, बातां सुख लीजै हो ।
आरति अपणी कारणै, वाकै पाइ पड़ीजै हो ।। १
आतम ध्यान लगाइ कैं, वाकै चरणां चित दीजै हो ।
चन्दन केरा नाग ज्यूँ, लपटाइ रहीजै हो ।। २
कर जोड़ँ बिनती करूँ, मेरी अरज सुणीजै हो ।
मीरां व्याकुल विरहनी, अपनी कर लीजै हो ।। ३

○

पद-४४ : राग–देश मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

उड़जा रे काग बन का, मेरा स्याम गया वोहो दिन का रे । (टेर)
तेरै उड़यां सूँ राम मिलैगा, धोखा भागै मन का रे ।। १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, हरि हैं गाढे दिल का रे ।। २
आप तो जाय द्वारिका छाये, हम बासी मधुबन का रे ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चरणकँवल हरिजन का रे ।। ४

○

पद–४५ : राग–ईमन–सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रतीक्षा)

उड़ि जावो री म्हारी सोनचिड़ी (टेर)
काहे सूं मँढ़ाऊँ थारी आंख पाँखडी, काहे सूं मँढ़ाऊँ थारी चोंचजड़ी ।। १
रूपा सूं मँढ़ाऊँ थारी आँख पाँखड़ी, सोना सूं मँढ़ाऊं थारी चोंचजड़ी ।। २

४३–१ (उ.); (क. ब. २८)
४४–२ (म.); (रामस० गु० पृ० ३२३)
४५–२ (म.); (पुजा. नाथू पु. से)

कह म्हारी चिड़िया सुगन री बाताँ, कद आवेला म्हारा स्याम धणी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बाट जोऊँ थारी कदकी खड़ी ।। ४

○

पद–४६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा
(चरित्र, वृन्दावन-महिमा)

उधो म्हांनै लागै बृन्दाबन नीको रे । (टेर)
वृन्दावन में धेनु वहुत हैं, भोजन दूध दही को रे ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, सिर केसर को टीको रे ।। २
घर घर में तुलछी को विड़लो, दरसण माधवजी को रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरी बिना सब फीको रे ।। ४

○

पद–४७ : राग–जोनपुरी : ताल–कहरवा
(उद्धव संवाद, प्रेम-प्रवाह)

ऊधो भली निभाई रे, त्यागे गोपी गोकुल म्हांनैं क्यूं तरसाई रे । (टेर)
चन्दन घिस लाई वासैं प्रीतड़ी लगाई, वानैं लाज ना आई ।
देखो जी ऊधोजी आखिर चेरी की जाई रे ।। १
बहोत दिन वीत्या म्हारी सुध ना लई, नैणां से नींद गई ।
चांदणी-सी रात म्हारै वैरण भई रे ।। २
रास तो कीयो म्हाँसैं प्रीतड़ली जोड़ी, अब तुम काहेकूं तोड़ी ।
तिरवंकी प्यारी म्हांसैं हुई छै नेड़ी रे ।। ३
मीरांजी तो विना कल ना पड़ैं, पल छिन नाहीं सरे ।
छतियाँ तपै नैणां नीर झरैं रे ।। ४

○

४६–१ (उ); (राम स० गु०)
४७–२ (म.); (राम स० गु०)

पद–४८ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी
(उद्धव-गोपी संवाद)

ऊधोजी हमारे राम संगाती, उस लोभी ने भेजी है पाती । (टेर)
आप तो जाय वहां पर छाये, हमको भेजी जोग की पाती ।
झुर झुर नैन भये ओलाती, नदियाँ-सी बही जात दिनराती ।। १
आम की डार कोयलिया बोलै, हमरो मरन लोग की हांसी ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, मैं तो जनम जनम की दासी ।। २

○

पद–४९ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(उद्धव-संवाद—प्रेम प्रवाह)

ऊधो म्हारे मन की मन में रही । (टेर)
एक समैं मोहन घर आये, मैं दधि मथत रही ।
या दुनियां को झूंठो धंधो, मैं हरि कूं बिसर गई ।। १
वा कपटी की कहा कहूं, ऊधो बचन प्रतीत नहीं ।
नैंन हमारे ऐसे झूरैं, उलटी गंग बही ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में जमुना बही ।
आप मोहनजी पार उतर गया, हमसैं कछू ना कही ।। ३
व्रजवनिता कौ संग छांडिकै, कुबज्या संग लई ।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चरणां लिपट रही ।। ४

○

पद–५० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(लीला)

ए री बरजो जसोदा कान, मेरे घर नित्य आता है ।
जिधर को मैं मुड़ जाती हूँ, वगद मेरे सामा ही आता है । (टेर)

४८–२ (म.)
४९–२ (म.); (राम स० गु.)

मैं जल जमुना भरन जात हूँ, मेरे सामा ही आता है।
कंकरी दे मोरी बहियाँ मरोरी, बाराजोरी मचाता है ।। १
मैं दधि बेचन जात बृन्दाबन, चला पीछे से आता है।
दधि की मटकी फोड़, माखन मेरा लूट खाता है ।। २
रास बिलास करत गोकुल में, बंसियाँ सुनाता है।
मीरां को गिरधर मिलिया, चरणों में लगाता है ।। ३

○

पद–५१ : राग–मालकोश मुलतानी : ताल–तिताला

(लीला)

एरी तेरी कौन जाति पनिहारी। (टेर)
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच मिले गिरधारी ।।— १
सुन्दर बदन नयन मृग मानो, विधना आप सँवारी ।।—२
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीते हम हारी ।।—३

○

पद–५२ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(लीला-वर्णन)

ए री मा बंसीवारो कान ।
चंद्र बदन मृगलोचन राधे, पायो स्याम सुजान (टेर)
गोकुल से आई गूजरी, मथुरा से आयो कान ।
अधबिच झगड़ो छेड़ दियो, उन माँग्यो मही को दान ।। १
कबके तुम दानी भये जी, कब हम दीनो दान ।
बाबा नन्द की गऊ चरा कर, भये अनोखे कान ।। २
जमुना के नीरे तीरे धेनु चरावे, सब ही में सुरज्ञान ।
बंसी बजा मेरो मन हर लीन्हो, मार बिरह का बान ।। ३

५०-३ (क)
५१–१ (उ.)
५२–२ (म.); (फु. प.)

मोरमुकुट पीतांबर सोहे, कुण्डल झिलकै कान ।
साँवरी सूरत पर तिलक बिराजे, वाही से लाग्यो मेरो ध्यान ।। ४
सुरनर मुनिजन ध्यान धरत हैं, गावत वेद पुरान ।
मीरां नें प्रभु दरसण दीज्यो, वृज तज अन्त न जान ।। ५

○

पद–५३ : राग–सोरठ (मल्हार) : ताल–कहरवा
(विरह तथा प्रेम)

एरी मैं खड़ी निहारूँ बाट,
चितवन चोट कलेजे बह गई, सुन्दर स्याम सु घाट । (टेर)
मथुरा में कुबज्या कर राखी, म्हाजन की सी हाट ।
केसर चन्दन लेपन कीन्हो, मोहन तिलक लिलाट ।। १
हमरा पिलँग जड़ाऊ छोड्या, बणिया (रेसम) पीली पाट ।
क्याँ पर राजी भयो साँवरो, चेरी के नहिं खाट ।। २
अजहुँ न आयो कँवर नंद को, क्याँरी लागी चाट ।
छाँड गयो मझधार साँवरो, बिना अकल को जाट ।। ३
आप बिना गोपिन सब ब्रज की, ब्याकुल भई निराट ।
मीरां के प्रभु दरसण दीज्यो, करज्यो आनँद ठाट ।। ४

○

पद–५४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी
(प्रेम और विरह-व्यथा)

ए री[1] मैं तो प्रेम[2] दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय । (टेर)
सूली ऊपर सेज हमारी[3], किस बिध सोना[4] होय ।। १
गगन मंडल पै सेज पिया की, किस बिध मिलना होय ।। २

५३–१ (उ.); (फु. प.)
५४–१ (उ.); (शब्दावली-३) तथा (स. मा. मी. ली. १७)
पाठान्तर—1. हेरी; हेली; भई । 2. राम; कृष्ण; श्याम । 3. पिया की । 4. मिलना ।

घायल की गत घायल जानैं, कै जिन लागी होय[5] ।। ३
जौहरि[6] की गत जौहरि जानैं, कै जिन जौहर होय ।। ४
दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिल्या नहिं कोय ।। ५
मीरां की तब पीड़ मिटैगी,[7] बैद साँवलिया होय[8] ।। ६

○

पद–५५ : राग–पीलू बरवा : ताल–धीमा तिताला

(विनय-प्रेमगहनता)

एक विरियाँ मुख बोलो रे, धुतारा जोगी । (टेर)
कानन कुण्डल गल बिच सेली, अब तेरी मुख खोलो रे ।। १
रास रच्यो बंसीवट जमुना, ता दिन कीनो कोलो रे ।। २
पूरब जनम की मैं हूँ गोपिका, अधबिच पड़ गयो झोलो रे ।। ३
जगत बदीती तुम करो मोहन, अब क्यों बजाऊं ढोलो रे ।। ४
तेरे कारन सब जग त्याग्यो, अब मोहे कर सों लो रे ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चेरी भई बिन मोलो रे[1] ।। ६

○

पद : ५६ : राग–सोरठ

(विरह)

ऐसी ऐसी चांदनी में पिया घर नांई । (टेर)

---

5. और न जाणें कोइ; लाई (लागी की जगह) दूजा न जांणै कोय । 6. जोहर । 7. मीराँ को दुख तब ही मिटैगो (मिटही, मिटसी); मीराँ कै प्रभु गिरधरनागर; मीराँ को दुख तबही बीतै । ८. बैद साँमलिया होय; बैद साँवरियो होय; बैद रमीया होय । 'होय' के स्थान में 'होइ' भी है ।

नोट—एक दो प्रतियों में यह अंतरा अधिक भी है—"सुख संपत में सब कोई साथी, बिपत पड़्याँ नहिं कोय" । (रामस्नेही गुटका तथा अन्य प्रति में) । कई प्रतियों में—"सूली ऊपर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय" यही अंतरा है, "गगन मंडल पै··· ···········" यह अंतरा नहीं है ।—सं०

५५–१ (उ०); (सां. रागकल्पद्रुम–रागसागर का)
1–पाठान्तर–बोल । खोल । कोल । झोल । ढोल । सोंल । मोल ।

चार पहर दिन सोवत बीत्यो, तड़पत रैन विहाई ।। १
मैं सूती पिया अपने म्हैल में, सालूड़ा में आई सरदाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरख निरख गुण गाई ।। ३

○

पद–५७ : राग–बहार : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी । (टेर)
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, तलफ़ तलफ़ जिय जासी ।। १
तेरे खातर[1] जोगण हूंगी, करवत लूंगी कासी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल की दासी ।। ३

○

पद–५८ : राग–मांढ वा सोरठ : ताल–तिताला

(विरह)

ऐसै जन जानन दीजै हो ।
आवो मिलो सहेलड्यां, बाथां सुख लीजै हो । (टेर)
नैंन सलोने सांइयाँ, देख्यां सूँ जीजै हो ।
तन मन जोबन वार के, निछरावळ कीजै हो ।। १
अपणी आरत कारणैं, वाके, पांइ परीजै हो ।
चंदन केरा रूख ज्यौं, चरणां लीपटीजै हो ।। २
हाथ जोड़ि विनती करूँ, मेरी अरज सुणीजै हो ।
मीरां ब्याकुल विरहनी, वाकूँ दरसण दीजै हो ।। ३

○

५६–२ (म.); (फु.प.)
५७–१ (उ०)
1–पाठान्तर–कारण ।
५८–१ (उ०); (क.ब.१७)

पद—५९ : राग—मालकोश : ताल—तिताला

(विरह)

ऐसे पियै जान न दीजे हो ।
चलो री सखी ! मिलि राखिये, नैनन रस पीजे हो । (टेर)
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखत जीजे हो ।। १
जोइ जोइ भेष सों हरि मिले, सोइ सोइ कीजे हो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बड़भागन रीजे हो ।। ३

○

पद—६० : राग—देश : ताल—तिताला

(विनय)

ओ जी[1] महाराज, छोड़ मत जाजो,
मैं अबला बन नांही गुसांईं, तुमही मेरे सिरताज (टेर)
मैं गुनहीन गुन नांही गुसाईं, तुम समरथ महाराज ।। १
रावलि होइकै किनरै जाऊं, तुम हो हिवड़ा रो साज ।। २
मीरां के प्रभु और न कोई, राखै अब को[2] लाज ।। ३

○

पद—६१ : राग—काफी : ताल कहरवा

(मंगल)

ओढूं लज्या चीर, धीरजि कौ घाघरौ ।
समता कांकण हाथ, सुरति की मूंदड़ौ । (टेर)
अँगियाँ है बिसवास, चूड़ो चित ऊजलौ ।
दुलड़ी दिल दरियाव, साँच को दोवड़ो ।। १

६०–१ (उ०); (बंगा. पु. पृ. ११)
1 पाठान्तर—हो जी ।
2 पाठान्तर—के । अथवा राखो तो ।

दांताँ इम्रत-मेख, दया को बोलबौ ।
ऊबटणों गुरज्ञांन, ध्यांनकौ धोइबौ ।। २
नकवेसर हरिनांव, काजलि म्हारै धरम कौ ।
बिंदलो जग उजियार, तिलक ततसार कौ ।। ३
ग्यांन अंगूठी कान, जुगति का झूठणां ।
जेलड सील संतोष, नरत का घूघरा ।। ४
पटली ब्रह्म-ग्न्यांन, हरी बर राखड़ी ।
पहरि सुवागण नारि, झरोखै आ खड़ी ।। ५
पतिबरता की सेज, साहिबजी पधारिया ।
मीरां हरि की सरण, परम पद पाइया ।। ६

○

पद—६२ : राग—सोहनी वा विहागड़ो : ताल—तिताला

(प्रेम-प्रवाह)

ओळूं थारी आवै हो महाराजा अबिनासी
हे म्हांनैं कब दरस दिखासी । (टेर)
बिरह बियोगन बन बन डोलूं, करवत ल्यूंगी कासी ।। १
निस दिन ऊभी पंथ निहारूं, कब मोहि धीर बंधासी ।। २
कृपा करौ म्हारै भवन पधारौ, नहिं यो जिवड़ो जासी ।। ३
मैं मंदभागण काहे को सरजी, पिया मोसूं रहत उदासी ।। ४
तुम हो हमारे अंतरजामी, मैं (थारा) चरणां री दासी ।। ५
मीरां तो कुछ जाणत नांहीं, पकड़ी टेक निभासी ।। ६

○

पद—६३ : राग—सोरठ, भैरवी : ताल—तिताला

(विरह)

ओळूंड़ी लगाइ गयो हे ब्रज को बासी, कब मिलि जासी हे । (टेर)

६१—२ (म०); (राम. स. गु.)
६२—१ (उ०); (राम. स. गु.)

चंपले री डाल कोयलिया बोलै हे, बोलत बचन उदासी हे ।। १
गोकुल ढूंढ बृंदाबन ढूंढचौ, ढूंढी मथुरा कासी हे ।। २
रैणि दिवस मछली ज्यूं तलफां, तलफ तलफ जिवड़ो जासी हे ।। ३
जै कोई प्रभुजी नैं आंण मिलावै, छूटत प्राण बचासी हे ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिजी मिल्यां दुख जासी हे ।। ५

○

पद–६४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(उलहना)

कछु दोष नहीं कुबज्या ने, बीरी अपना श्याम खोटा । (टेर)
आप न आवे पतियाँ न भेजे, कागज का काँई टोटा ।। १
नौलख धेनु नन्दघर दूधे, माखन का नाँई टोटा ।। २
आपहि जाय द्वारिका छाये, ले समदर की ओटा ।। ३
कुबज्या दासी कंसराय की, वे नंदजी के ढोटा ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुबज्या बड़ी हरि छोटा ।। ५

○

पद–६५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा
(उपदेश)

कछु लेना न देना मगन रहना । (टेर)
नांहि किसी की कांनां सुणनी, नांहि किसी कूं [अपनी] कहना ।। १
गहरी नदिया नाव पुरानी, खेवटिये सूं मिलता रहना ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, साँवरिया [के] चरणां चित देना ।। ३

○

६३–१ (उ०); (राम. स. गु.)
६४–२ (म०); (भजनमंजरी पृ. १५८)
६५–२ (म०)

पद–६६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह)

कठण लगन की पीर रे, हरि लागी सोई जाने । (टेर)
प्रीत करी कछु रीत न जाणी, छोड़ चले अधबीच ।। १ क.
दुख की बेला कोई काम न आवे, सुख के सब हैं मीत ।। २ क.
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आखर जात अहीर ।। ३ क.

○

पद–६७ : राग-यमन : ताल–कहरवा

(प्रेम)

कनैयो मेरा प्राण श्रीबृन्दाबनबासी । (टेर)
साँवली सूरत पर मन वारी, कोय करे जग हांसी ।। १ कनैयो.
राधा वर के निकट बसत है, कोन जात मेरो कासी ।। २ कनैयो.
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी ।। ३ कनैयो.

○

पद–६८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(लीला-वर्णन)

कनैय्यो तेरो जमुना में कूद पर्‌यो रे । (टेर)
कालिंदी को कालो पानी रे, पेठत कछु ना डर्‌यो रे ।। १
नंद जसोदा गोप गोपी सब, निरखत नीर झर्‌यो रे ।। २
पैठ[1] पैयारी[2] काली नाग नाथ्यो रे, फण पर नृत्य कर्‌यो रे ।। ३
व्रज के काज गोवर्धन धार्‌यो रे, इन्द्र को मान हर्‌यो रे ।। ४
मथुरा में प्रभु जन्म लियो है, सुनके कंस डर्‌यो रे ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुर को काज सर्‌यो रे ।। ६

६६–१ (उ०)
६७–२ (म०)
६८ (का. गु. ५।१९५)
१. पैठ = घुसना । २. पानी में ।

पद–६९ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी
(विरह)

कबहूँ मिलैगो मोहि आई, रे तू जोगिया। (टेर)
तेरे कारण जोग लियो है, घरि घरि अलख जगाई ।। १
दिवस न भूख रैंन नहिं निद्रा, तुम बिन कछु न सुहाई ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, मिलि करि तपत बुझाई ।। ३

○

पद–७० : राग–जँगला, सारंग : ताल–तिताला
(प्रेम, उत्कंठा)

कभी गली हमारी आव रे, मोरे जिया की तपत बुझाव रे।
नँदजू के प्यारे लाला ।।
तेरे साँवरे बदन पर कई कोटि काम वारे। (टेर)
तेरियाँ जुलफाँ दिल दियाँ कुलफाँ जी दोऊ नैन है सतारे।
तेरी खूबी के दरश पै लाल नयन तरसते हमारे ।। १
पिया पिया करै पपीहरा रे निशि दिन सो याद तेरी।
मेरे साँवरे सलोने मोहन आशा दरशन केरी ।। २
घायल फिरूँ दरश की पीर जाने नहिं कोई।
मोहे लागी चोट प्रेम की जिन लागी जानै सोई ।। ३
जैसे जल के सोख हुए मीन क्या जीवै बिचारे।
कृपा कीजो दरशन दीजो मीराँ माधो नन्ददुलारे ।। ४

○

पद–७१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(विरह, विनय)

कभी म्हारी गली आव रे, जिया की तपत बुझाव रे,
म्हारे मोहना प्यारे। (टेर)

६९–१ (उ०); (वा.) मी. म. पृ. ५५ पद ११९)
७०–(वृ. रा. र. पृ. १२०)

तेरे सांवले बदन पर, कई कोटि काम वारे ।
तेरे खूबी के दरस पै, नैन तरसते म्हारे ।। १
घायल फिरूँ तड़फती, पीड़ जाने नहिं कोई ।
जिन[1] लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ।। २
जैसे जल के सोखे मीन, क्या जीवें बिचारे ।
कृपा कीजे दरस दीजे, मीरां नन्द के दुलारे ।। ३

○

पद–७२ : राग–झँझोटी, गारा : ताल–तिताला

(लीला)

कमलदल लोचना, तैंने कैसे नाथ्यो भुजंग । (टेर)
पैसि पताल कालीनाग नाथ्यो, फण फण निरत करंत ।। १
समरथ नाग महाबलि जोधा, जमना को नीर अथंग ।। २
कूद पड़्यो न डर्‌यो जल मांहीं, और काहू नहिं संग ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, श्रीबृन्दाबनचंद ।। ४

○

पद–७३ : राग–सोहनी : ताल–तिताला

(कर्म-गति)

कर्म की गत न्यारी, संतो ! कर्म की गत न्यारी । (टेर)
बड़े बड़े नैन दिये निरखण को, बन बन फिरत उघारी रे ।। १
उज्ज्वल बरन दीनी बगलन कूं, कोयल कर दीनी कारी रे ।। २
और नदियन जल निर्मल कीनो, समुदर दीनी खारी रे ।। ३
मूरख को उत्तम राज दियत हो, पंडित फिरत भिखारी रे ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, राणोजी तो कौन बिचारी रे ।। ५

७१–३ (क०);
1. पाठान्तर-जोगी पीर प्रेम की जाने बिरला जाने सोई ।
७२–२ (म०)
७३–(का. ४।१७२)

पद–७४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चेतावनी)

करनां फकीरी क्या दिलगीरी, सदा मगन मन रहना रे। (टेर)
कोई दिन बाड़ी तो कोई दिन बँगला, कोई दिन जंगल रहना रे ।।१
कोई दिन हाथी कोई दिन घोड़ा, कोई दिन पांवों से चलना रे ।।२
कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय में पड़ना रे ।।३
कोई दिन खाना तो कोई दिन पीनां, कोई दिन भूखे ही मरना रे ।।४
कोई दिन पहनाँ तो कोई दिन ओढ़ा, कोई दिन चिथरा पथरना रे ।।५
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, ऐसा कूंता करना रे ।। ६

○

पद–७५ : राग–विहाग : ताल–दीपचंदी

(विरह-विनय)

करम-गत टारे नाहिं टरे। (टेर)
सतवादी हरिचँद-से राजा, नीच घर नीर भरे ।। १
पाँच पाण्डु अरु कुन्ती द्रोपदी, हाड हिमालय गरे ।। २
जज्ञ किया बलि लेण इन्द्रासण, सो पाताल धरे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, बिष से अमृत करे ।। ४

○

पद–७६ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(वैराग्य)

करियो प्रभुजी की बात सब दिन, करो प्रभुजी की बात रे। (टेर)
हस्ती घोड़ा महल खजाना, दे दोलत पर लात रे ।। १
मा बाप और बहिन भाई, कोई नहीं आवै साथ रे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन करो दिन रात रे ।। ३

७४–२ (म.); (बं. पु. पृ. ४४)
७५–१ (उ.)
७६–२ (म.)

पद–७७ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(दर्शनाकांक्षा)

करुणा सुनि श्याम मेरी, हूँ तो होइ रही तेरी चेरी । (टेर)
दरसन कारन भई बावरी, बिरह बिथा तन घेरी ।
तेरे कारन जोगन हूँगी, देऊँ नगर बिच फेरी,
कुंज सब हेरी हेरी ।। १
अंग बिभूत गले मृगछाला, यो तन भसम करूँ री ।
अजहूँ न मिले राम अविनासी, बन बन बीच फिरूँ री,
रोऊँ नित टेरी टेरी ।। २
जन मीरां कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटन सुख दे री ।
रूम रूम साता भई उर में, मिटि गई फेरा फेरी,
रहूँ चरणन नित नेरी ।। ३

○

पद–७८ : राग–खम्माच : ताल–धीमा पीलू

(वंशी-ध्वनि)

कलेजे म्हारे बाँसुरी री धुन लागी । (टेर)
हूँ अपने गृह काज करत रही, श्रवण सुनत उठ भागी ।। १
खान पान की सुधि न सखी री, कल न पड़ै निसि जागी ।। २
रैन दिनाँ गिरधरनलाल के, मीरां रहै रंग पागी ।। ३

○

पद–७९ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी

(वंशी के प्रति)

कवन गुमान भरी, वंसी ! तू कवन गुमान भरी । (टेर)
अपने तन पर छेद परेचे, बाला तू बिछरी ।। १

७७–१ (उ.); (क. ब. ३)
७८–१ (उ.); (या.-सं. रा. सं. से)
७९–१ (उ.)

जात भात तोरी मैं जानूं, तू बन की लकरी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, राधा से क्यूं झगरी ।। ३

○

पद–८० : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(इष्ट-प्राप्ति)

कहज्यो म्हारा रमइया नै, आज्यो म्हारै देस । (टेर)
थारे कारण बन बन डोलूँ, कर जोगण को भेस ।। १
बिन साबू बिन पांणियाँ रे, ऊजळ कर गयौ केस ।। २
थारे कारण सब रंग त्यागूँ, जटा बधाऊँ [सिर] केस ।। ३
सुणत अवाज हरष भयौ जिवड़ौ, कर आयो नटवर-भेस ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, मिटगो मन को कलेस[1] ।। ५

○

पद–८१ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा
(उलहना)

कहाँ बसियो कान्हा रातरली,
अरे तेरे मुख विच आवै मोहे वासरली । (टेर)
कहा तुमारो नाम जु कहिये, कहा तुमारी जातरली ।। १
भगत बिरद मेरो नाम जु कहिये, जादौ हमारी जातरली ।। २
मोहे कहै अलमस्त दिवानी, कहा लगाओ चातरली ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आन मिलो परभातरली ।। ४

○

८०–(उ.)
1–पाठान्तर-'तज गयो नगर नरेस' ।
८१–२ (म.); (या.-प्रति सं. ३८६ । पद ४८ का)
नोट–इससे मिलता पद है-"मोहन रातड़ली कहाँ बसिया (गिरधर रातड़ली)
थाँका भँवरपटां में आवै बासड़ली ।
कै सतभामाजी रे महल पधारचा, कै कुबज्या संग साथड़ली ।।

पद–८२ : राग भैरवी : ताल–कहरवा
(लीला)

कहाँ कहाँ जाऊँ तोरे साथ कन्हैया, बंसी के रे बजैया कन्हैया । (टेर)
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, गह लीनों मेरो हाथ कन्हैया ।। १
दधि मेरो खायो मटकिया फोरी, लीनी भुज भर साथ कन्हैया ।। २
लपट झपट मोरी गागर पटकी, साँवरे सलोने लोने गात कन्हैया ।। ३
कबहूँ न दान लियो मनमोहन, सदा गोकल आत जात कन्हैया ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम के नाथ कन्हैया ।। ५

○

पद–८३ : राग–आसावरी : ताल–तिताला
(व्रजवास)

कहीं देखे री घनश्यामा । (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोहै, कुण्डल झलकै कानाँ ।
साँवरी सुरत पर तिलक बिराजै, तिससों लगे मोरे प्राना ।। १
बरसाने सों चली गुजरिया, नन्दगाम को जाना ।
आगे केशो धेनु चरावै, लगे प्रेम के बाना ।। २
सागर सूख कमल मुरझाना, हंसा कियो पयाना ।
भोंरा रह गये प्रीत के धोके, फेर मिलन को जाना ।। ३
बृन्दाबन की कुञ्जगलिन में, नूपुर रुनझुन लाना ।
मीरांबाई को दरशन दीजो, व्रज तज अनत न जाना ।। ४

○

पद-८४ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(प्रेम रहस्य)

कहो तो गुण गाऊं रे भजै राम राम सुवा ।
कहो तो गुण गाऊं रे । (टेर)

८२–२ (म.); (या.-सं. रा. क. से)
८३–१ (उ.); (बृ. रा. र. पृ. १५२)

सार की सळीया को सूवा पींजरो बणाऊं रे ।
पींजरा में आव सूवा हाथ सूं गिलाऊं रे ।। १
घीव कर घीवर सूवा सूवा लापसी रँधाऊं रे ।
आंब ही को रस सूवा घोळ घोळ पाऊं रे ।। २
कंचन कोटि महल मन्दिर मालिया झुकाऊं रे ।
मालिया में आव सूवा मोतीड़ा बधाऊं रे ।। ३
बैठक करो तो सूवा चांदणी रिळाऊं रे ।
प्रेम ही प्रताप सूवा झांझरी बजाऊं रे ।। ४
जांइ जांबू केतकी सूवा बाग भी लगाऊं रे ।
बाग ही में आव सूवा फूलड़ा सुंघाऊं रे ।। ५
केसर भरियो बाटको सूवा अंग चरचाऊं रे ।
मीरां दासी सूवा की रामराती चरणां चित्त लगाऊं रे ।। ६

○

पद–८५ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

कहो ने जोशी (म्हांरा) राम मिलण कब होसी । (टेर)
जो जोशी मोहे प्रभू मिलै तो, हीरा जडाऊं तोरी पोथी ।। १
जो जोशी मोहे प्रभु ना मिले तो, झूंठी पड़ो तोरी पोथी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, राम मिले सुख होसी ।। ३

○

पद–८६ : राग–सोरठ, देश वा माँढ़ : ताल–कहरवा

(आत्मकथा)

कांई थारो लागै छै गोपाल । (टेर)
गढ़ से तो मीरांबाई ऊतरया जी, हाथ मगद को थाल ।
औरां के तो अनगन लछमी, आप फिरो कंगाल ।। १

८४–२ (म.); (राम स. गु.)
८५–१ (उ.)

ऊँचा राणाजी रा गोखड़ा जी, नीची मीरांबाई री साळ ।
रमतां तो पायो मीरां कांकरो, कोई सेवा सालिगराम ।। २
जहर पियाला राणाजी भेजिया जी, द्यो मीरां ने जाय ।
कर चरणामृत मीरां पी गई, कोई आप जानो रघुनाथ ।। ३
साँप टिपारा राणाजी भेज्या, कोई द्यो मीरां ने जाय ।
कर खँगवालो मीरांबाई पहरियो, कोई हो गयो नोसर हार ।। ४
काढ़ कटारो राणाजी बैठिया, ल्यो मीरां ने मार ।
इत मारां उत दोष लगे, कोई छत्रीधरम घट जाय ।। ५
सांड्या सांडिया पलाणज्यो, म्हे चालां सो सो कोस ।
राणाजी का देस में कोई, जल पीबा को दोस । ६
सांड्यो फिर कर देखियो जी, दीखै मीरांबाई रो देस ।
मीरां गिरधर के रंग राची, रंच न रह्यो कलेस[1] ।। ७

○

पद–८७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(संदेस)

कागद कोण लई जाय रे, मथुरा मां लखो अे
प्रीत थोड़ी थोड़ी थाय रे[1] । (टेर)
प्रीत तमोने[2] मलवाने तलखे[2], ने जशोमती अन्न न खाय रे ।। १
वृन्दावन नी कुंजगलियन में, रोतां रजनी जाय रे ।। २
मीरांबाई के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित चाहे रे ।। ३

○

पद–८८ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(उलहना)

कानो भयो (रे) दूर को दुवारका-बासी । (टेर)

८६–२ (म); (का. ह. न. १)
1 पाठांतर–'मुख से बजावे मीरां बाँसरी नाचि रह्या मथुरेस' ।
८७–१ होना । २ आप । ३ तड़फना । (काव्यदो० भा. ७ पृ. ७१९)

निरमल जल जमुना को छाँड्यो, जन्मभूमि मथुरासी ।
गुवाल बाल बिलखत छोड्या, गउये छोड़ दई प्यासी ।। १
ये ठाकुर हैं तीन लोक के, कुबज्या कंस की दासी ।
स्याम तुमारे कारण राधा, सूक गई तिणकासी ।। २
सोलह सहस्र गोपिका त्यागी, रंग महल सेझासी ।
कुबज्या के संग बिलम रह्यो है, मात छोडी जसोदासी ।। ३
झूठी थाळी को पांणी पीयो, राणी करी कुबज्यासी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुण सुण आवे हाँसी ।। ४

○

पद–८९ : राग–तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

कान्हां तोरी रे जोवत रह गई बाट । (टेर)
जोवत जोवत इक पग ठाढ़ी, कालिन्दी के घाट ।। १
कपटी प्रीति करी मनमोहन, या कपटी की बात ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दे गयो व्रज को चाट ।। ३

○

पद–९० : राग–माँड, भीमपलासी : ताल–तिताला

(इष्टमहिमा)

कारी कामरवारे से जोडी, प्रीति मैं । (टेर)
अब मोहवत कौन कामकी, गिरधर बिनाहु नगोड़ी ।। १
लोग कहै कारी कामरीवारो, म्हारे तो लाख किरोड़ी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, तिणका ज्यूं सब तोड़ी ।। ३
कोऊ जन निन्दो कोऊ जन बन्दो, कोऊ मन मानै सो कहो री ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरो चित लियो उन चोरी ।। ५

८८–२ (म.); (पुजा नाथु. पु. से)
८९–१ (उ.); (पुजा. नाथु. पु. से)
९०–२ (म.); (दीना. मं. मी. प. ४)

पद—९१ : राग—बिहाग : ताल—तिताला
(उलहना)

कारे कारे सब से बुरे ओधव प्यारे । (टेर)
कारे को विश्वास न कीजे, अति से भूल परे ।। १
काली जात कुजात कहोजे, ताके संग उजरे ।। २
शाम रूप कियो भँवरो, फूल की बास भरे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कारे संग बिगरे ।। ४

○

पद—९२ : राग—बिहाग : ताल—दीपचंदी
(आत्मवेदना)

काहूकी मैं बरजी नाहिं रहूँ । (टेर)
जो कोइ मोकूं एक कहै, मैं एक की लाख कहूँ ।। १
सास की जाई मोरी ननद हटीली, यह दुख किनसे कहूँ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जग उपहास सहूँ ।। ३

○

पद—९३ : राग—बिहाग : ताल—दीपचंदी
(चेतावनी)

काहे को देह धरी, भजन बिन काहे को देह धरी । (टेर)
गर्भवास की त्रास दिखाई, वाकी पीठ लुरी ।। १
कोल बचन करि बाहर आयो, अब तुम भूल परी ।। २
नोबत नगरा बाजे बधाई, कुटुम सब देख डरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जननी भार मरी ।। ४

○

९१—१ (उ.)
९२—२ (म.); (फु. पद)
९३—१ (उ.)

पद–९४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

किण संग खेलूं होली, पिया तज गये हैं अकेली । (टेर)
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली ।
भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गैली ।।
मोहे दूरी क्यूं मेली ।। १
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हम से करी क्यूं पहेली ।
बहु दिन बीते अजहुं नहिं आये, लग रही तालाबेली ।।
कोण बिलमाये री हेली ।। २
श्याम बिना जिवड़ो मुरझावै, जैसे जल बिन वेली ।
मीरां कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली ।।
दरस बिन खड़ी दुहेली ।। ३

○

पद–९५ : राग–अडाना : ताल–धीमा तिताला

(चेतावनी)

कितहू गये नेह लगाइ । (टेर)
प्रीति लगाइ मेरो मन हर लीनो, रस भरि टेर सुनाई ।। १
हमसे बैर प्रीति कुवजा से, हमें न कहूँ सुहाइ ।। २
मेरे (तो) मन में ऐसी आवै, मरूँगी जहर बिष खाइ ।। ३
हम कूँ छांड़ गये बिसवासी, बिरह की नाव चढ़ाइ ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, रहे मधुपुरी छाइ ।। ५

○

पद–९६ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(चेतावनी)

कित गयो पंछी बोलतो । (टेर)

९४–१ उ.); (मीरां की प्रेमबाणी पृ. १०१)
९५–१ (उ.); (क. ब. १५)

कची रे मटी दा महल चुणाया, गोखां ही गोखां डोलतो ।। १
गुरु गोबिन्द को कह्यो न मान्यों, ऐंडो ही ऐंडो डोलतो ।। २
ऐंठी रे टेढ़ी पाग झुकातो, छाया निरखतो चालतो ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, हरि चरणां चित ल्यावतो ।। ४

○

पद–९७ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरद)

किरपा भई सतगुर अपने की, वेर वेर हरि नांव लियो री । (टेर)
हिरणाकुस प्रल्हाद सतायो, जार अगन बिच डाल दियो री ।
राज छाँड दियो नाँव न छाँड्यो, खंभ फाड़ प्रभु दरस दियो री ।। १
माता को उपदेश भयो जब, राज छाँड धूजी बन में गयो री ।
मारग में मिल गयो नारद मुनि, तब से धूजी अटल भयो री ।। २
सागर ऊपर सिला तिराई, दुष्ट रावण कूँ मार लियो री ।
सीता सहित अवधपुर आये, भगत बिभीषण राज दियो री ।। ३
सब भगतन की सहाय करी प्रभु, मेरी वेर कहाँ सोय गयो री ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बंसी बजा के मन मोहि लियो री ।। ४

○

पद–९८ (अ) : राग–भीमपलासी : ताल–तिताला

(मिलनोत्कण्ठा)

किसने[1] देखा कन्हैया प्यारा वे मुरली वाला । (टेर)
जमुना के तीराँ तीराँ गउवाँ चरावै, कांधे कमरिया काला ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, कुंडल झलकत आला ।।[2] २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारा ।। ३

९६–२ (म.); (क. ब. ६)
९७–२ (म.)
९८(अ)– 1 पा.–'काने' । 2 पा.–'हीरा' ।

पद–९८ (ब) : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विरह)

कुबज्या ने जादू डारा री, जिन मोहे श्याम हमारा । (टेर)
झरमर झरमर मेहा बरसे, झुक आये बादल कारा ।। १
निरमल जल जमुना को छाँड्यो, जाय पिया जल खारा ।। २
शीतल छाँय कदम की छोड़ी, धूप सहा अति भारा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, वोही प्राण[1] पियारा ।। ४

○

पद–९९ : राग–तैलंग : ताल–दादरा

(बाल-लीला)

कुंजवन में गोपाल, राधे ! कुंजबन में । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, निरषत श्याम तमाल ।। १
ग्वाल बाल रचि चारु मंडल, बाजत बंसी रसाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणन मन चिरकाल ।। ३

○

पद–१०० : राग–गौरी : ताल–धमार

(लीला आनन्द । होरी)

कुंजबिहारी राधा गोरी, नव निकुंज में खेलैं होरी । (टेर)
भरि भरि अरगजा लई कमोरी, छिरकत झकझोरी झकझोरी ।। १
अवीर गुलाल उडावत रोरी, डफ दुंधुभी बाजत थोरी थोरी ।। २
पहुप पराग लिये भरि झोरी, पिय पर डारति हँसि मुख मोरी ।। ३
आँखि आँजि सिर गूथत मारी, झूमक गावत अंचल जोरी ।। ४
मीरां प्रभु रससिंधु झकोरी, नवल हि गिरधर नवल किशोरी ।। ५

---

९८ (ब)–२ (म.); (भजनमंजरी, पृ. १६०)
1 पा०–'बिना भाल सुर मारा' ।
९९–(का. । उ. १।३०९)
१००–१ (उ.); या०—प्रति सं. ६९८।४५ पृ. ७५ से)

पद–१०१ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा
(विरह)

कुण बाँचै पाती, बिना प्रभु कुण वाँचै पाती । (टेर)
कागद ले ऊधोजी आये, कहाँ रहे साथी ।
आवत जावत पाँव घिसा रे, (बाला) अँखियाँ भइ राती ।। १
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती ।
नैन नीरज में अंब बहै रे, (बाला) गंगा बहि जाती ।। २
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे, (बाला) अन्न नहिं खाती ।
हरि बिन जिवड़ो यूं जलै रे, (बाला) ज्यू दीपक संग बाती ।। ३
साँचा कुल चकोर चन्दा, झोलै बहि जाती ।
व्रजनारी की बीनती रे, (बाला) राम मिले मिल जाती ।। ४
मनैं भरोसो राम को रे, (बाला) डूबत तार्यो हाथी ।
दासी मीरां लाल गिरधर, सांकडा रो वोही साथी ।। ५

○

पद–१०२ : राग–पीलू वरवा : ताल–दादरा
(विनय)

कृष्ण मेरे नजर के आगे ठाडे रहो रे । (टेर)
मैं जो बुरी श्याम और भली है, भली कि बुरी मोरे दिल रहो रे ।। १
प्रीत को पैंडो बहुत कठिन है, चार कही दस और कहो रे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, प्रीत करो तो मेरा बोल सहो रे ।। ३

○

पद–१०३ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(प्रेम विनय)

कृष्ण करो जजमान, प्रभु तुम । (टेर)

१०१–(सा०)
नोट–४ अंतरेके पूर्वार्धं में शब्द कम हैं ।
१०२–(म.)

ज्यांकी कीरत वेद बखानत, साखी देत पुरान ।। १
मोरमुकुट पीतांबर शोभित, कुण्डल झलकत कान ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दे दरसन को दान ।। ३

○

पद–१०४ : राग–जोनपुरी टोडी : ताल–धीमा

(प्रेम)

कैसी जादू डारी, (अब) तूने, कैसी जादू डारी । (टेर)
मोर मुकुट पीतांबर सोभे, कुण्डल की छबि न्यारी ।। १
वृन्दावन की कुन्जगलिन में, लूटी ग्वालन सारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ३

○

पद–१०५ : मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

कैसी रितु आई मेरो हियो लरजै हे मा । (टेर)
निस अँधियारी कारी बिजुरी चमकै, सेज चढतां जिया डरपे हे मा ।। १
नान्ही बूंदन मेहा बरसै, ऊपर सुरपति गरजै हे मा ।। २
सूनी सेज स्याम बिन लागत, कूक उठी पिया करिके हे मा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मोय बिधाता क्यूं सरजी हे मा ।। ४

○

पद–१०६ : राग–सारंग : ताल–धमाल

(प्रेम-लीला)

कैसें आवौं हो लाल तेरी ब्रज नगरी, गोकुल नगरी । (टेर)

१०३–२ (म.)
१०४–१ (उ.)
१०५–२ (म.); (फु प.)

इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहे यमुना गहरी ।
पाँव धरयाँ मेरी पायल भीजैं, कूदि परौं बहि जाऊं सगरी ।। १
मैं दधि बेचन जात बृन्दाबन, मारग में मोहन झगरी ।
बरज यशोदा अपने लालकौं, छीन लई मेरी गगरी ।। २
रहु रहु ग्वालिनि झूंठ न बोलो, कान्ह अकेलो तुम सगरी ।
मेरो कन्हैयो पाँच बरस को, तुम ग्वालिन अलमस्त तगरी ।। ३
जाय पुकारौं कंस राजा के, न्याय नहीं गोकुल नगरी ।
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, बांह पकर राधे झगरी ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, साधु संग करि हम सुधरी ।। ४

○

पद–१०७ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

कैसे जीऊं री माई, हरि बिन कैसे जीऊँ री । (टेर)
उदक दादुर मीनवत है, जल से उपजाई ।
एक पल जल (जो) मीन बिसरे, तलफत मर जाई ।। १
पिय बिना पीली भई, (बाला) ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरै, (बाला) बैद फिर जाई ।। २
बन बन होय उदास फिरूँ (रे), बिथा तन छाई ।
दास मीरां लाल गिरधर, मिलि हैं सुखदाई ।। ३

○

पद–१०८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम-प्रवाह)

कोई कछु कहै, मन लागा । (टेर)
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूँ सोने में सुहागा ।। १

१०६–२ (म.); (भ. र. मा. २–७)
१०७–१ (उ.)
१०८–१ (उ.)

जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुरु शब्द सुणा जागा ।। २
मात पिता सुत कुटँब कबीला, टूट गया ज्यूँ तागा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भाग हमारा जागा ।। ४

○

पद–१०९ : राग–आसावरी : ताल–कहरव।

(विरह-व्यथा)

कोई कहियौ रे प्रभु[1] आवन की, आवन की मन भावन की । (टेर)
आप न आवै लिख[2] नहिं भेजै, बाँण पड़ी ललचावन की ।। १
ए दोई नैण कह्यो नहिं मानैं, नादियाँ बहै जैसे सावन की ।। २
कहा[3] करूँ कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की ।। ३
मीरां कहै प्रभु कब रै मिलोगे, चेरी भई हूँ तेरे दावन की[4] ।। ४

○

पद–११० : राग–भैरवी व सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह-व्यथा)

कोई कहियो रे बिनती जाईकैं, म्हारा प्राण पीया नाथ नैं । (टेर)
जा दिनके बिछुरे मनमोहन, कल न परे दिन रात नैं ।। १
देस बिदेस संदेस न पूगे, बिरहिन तलफै साथ नैं ।। २
प्यारा महरम दिल की जाणैं, और न जाणैं कोई बात नैं ।। ३
मीरां दरसन कारण झूरै, ज्यूँ बालक झूरै मात नैं ।। ४

○

१०९–१ (उ.)
1. पा०–'मोहन' ।
2. पा०–'पतियां न भेजै ।
3. पा०–'कहा करूँ कित जाऊं मोरी सजनी' ।
4. पा० 'विनि दामन की' ।
११०–२ (म.); (रा. स. गु. पृ. १४९)

पद–१११ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम-विनय)

कोई तो बोलो महीडां मेरो लूटे । (टेर)
छोड कनैया ईंडोणी हमारी, माट मही की काना मेरी फूटे ।। १
छोड कनैया बहियाँ हमारी, लड़ बाजू की काना मेरी टूटे ।। २
छोड़ दे कनैया चीर हमारो, कोर जरी की काना मेरी छूटे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, लागी लगन काना नहिं छूटे ।। ४

○

पद–११२

(प्रेम-रहस्य)

कोई दिन याद करोगे, रमता राम ग्रतीत । (टेर)
ग्रासण माँड ग्रडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ।। १
मैं तो जाणूं जोगी संग चलेगा, छांड गयो ग्रधबीच ।। २
ग्रात न दीसे जात न दीसे, जोगी किसका मीत ।। ३
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, चरणन लागो चीत ।। ४

○

पद–११३

(प्रेम-तन्मयता)

कोई स्याम मनोहर ल्यो री, सिर धरै मटकिया डोलै । (टेर)
दधि को नाँव बिसर गई ग्वालनि, हरि ल्यो हरि ल्यो बोलै ।। १
कृष्ण रूप छाकी है ग्वालनि, चालै होलै होलै ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चेली भई बिन मोलै ।। ३

○

१११–२ (म.)
११२–१ (उ.)
११३–३ (उ.) : (रा.स.गु से)

पद–११४ : राग–हमीर : ताल–तिताला

(प्रेम)

क्या करूं मैं बन में गई, घर होती तो श्याम को मनाई लेती । (टेर)
गोरी गोरी बहियाँ हरि हरि चुडियाँ, झाला देके बुला लेती ।। १
अपने श्याम सँग चोपड़ रमती, पासा डालके झिला लेती ।। २
बडी बडी अखियाँ झीणा झीणा सुरमा, ज्योत सी ज्योत मिला लेती ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल लपटा लेती ।। ४

○

पद–११५ : राग–मांड व सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम-उलाहना)

क्यूंकर म्हे दिन काटाँ ।
थे म्हाँसूं अंतर राखौ, राखौ कपटी आँटाँ । (टेर)
कुबज्या दासी कंसराइ की, फिरती कपड़ा फाटाँ ।
वाकूं तो पटराणी कीन्हीं, पहरै रेसम पाटाँ ।। १
बाजूबंद मूंदड़ी अँगुली,नखसिख गहणाँ साटाँ ।
पहर कूबड़ी न्हावण चाली, जल जमुना कै घाटाँ ।। २
धाँन न भावै नींद न आवै, चिंता लगी निराटाँ ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, देख देख हियो फाटाँ ।। ३

○

पद–११६ : राग–सोरठ : ताल–तिताला ठांह

(चरित्र और दृढ़ता)

खेलत पायो मीरां काँकरो,
सेवा सालिगराम, भक्ति करां जी हरिनांम की । (टेर)
रमस्यां साधां री लार संताँ री लार, भक्ति करां जी दीनानाथ की ।। १

११४–१ (उ.)
११५–१ (उ.) : (राम.स.गु.)

जोसीजी मनावै मीरां थे मानो, पतड़ा री पण राख,
भक्ति छोड़ो जी हरिनाम की ।। २
थे घर जावो जोसी आपणे, पत राखैलो दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। ३
पिताजी मनावै मीरां थे मानो, पगड़ी री पत राख,
भक्ति छोड़ो हरिनाम की ।। ४
बैठो राण्यां रे मांय महलां रे मांय, भक्ति छोड़ो जी सालिगराम की ।। ५
थे घर जावो बाबल आपने, पत राखैलो दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। ६
वीराजी मनावै मीरां थे मानो, भैया री पत राख,
भक्ति छोड़ो हरिनाम की ।। ७
बैठो राण्यां रे मांय महलाँ रे मांय, भक्ति छोडो रघुनाथ की ।। ८
माताजी मनावै मीरां थे मानो, दूधड़ला री पत राख,
भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की ।। ९
थे घर जावो माता आपणे, पत राखैला दीनानाथ,
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। १०
राणाजी मनावै मीरां थे मानो, बैठो राण्यां रे माय, महलां रे मांय,
भक्ति छोड़ो रघुनाथ की ।। ११
एक कुल लाजै मीरां आपणो, दूजो बंस राठोड़,
तीजा लाजैजी मीरां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तोड़,
भक्ति छोड़ोजी हरिनाम की ।। १२
एक कुल त्यारां राणां आपणो, दूजो बंस राठोड़,
तीजो त्यारांजी राणां मेड़तो, चोथो गढ़ चित्तोड़,
भक्ति करांजी भगवान की ।। १३
यो मन लाग्यो वैराग से, रमस्याँ साधां री लार, संता री लार
भक्ति न छूटै हरिनाम की ।। १४

○

पद–११७ : राग–काफी : ताल–जैत

(ज्ञान, प्रेम और रहस्य)

गली तो चारों बंद हुई, मैं हरि से मिलूं कैसे जाय । (टेर)
ऊँची नीची राह रपटणी, पाँव नहीं ठहराय ।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाय ।। १
ऊँचा नींचा महल पिया का, हमसे चढ़चा न जाय ।
पिया दूर पंथ म्हारा झीणाँ, सुरत झकोला खाय ।। २
कोस कोस पर पहरा बैठचा, पैंड पैंड बटमार ।
हे विधना कैसी रच दीन्हीं, दूर वस्यो घरवार ।। ३
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरां, घर लीन्हां मैं पाय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सतगुर दिया बताय ।। ४

○

पद–११८ : राग–टोडी व झिंझोटी : ताल–दादरा

(प्रेम)

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । (टेर)
हँस हँस मुख मोर मोर, गागर छिटकाई ।
घूंघट पट खोल खोल, साँवरो कन्हाई ।। १
यशुमति तैं भली वात, लाल को सिखाई ।
अगर बगर झगर करत, रार तो मचाई ।। २
हौं तो बीर यमुना तीर, नीर भरन धाई ।
गिरिधर के चरणन पर, मीरां बलि जाई ।। ३

○

पद–११९ : राग–मांड व वेस : ताल–दीपचंदी

(ऊदां सम्वाद-प्रेमोत्सुकता)

गिरधर आवणां हे, ऊदांबाई सेजड़ली सँवार । (टेर)

११७–१ (उ.)
११८–१ (उ.) : (बृ.रा.र.पृ. ३३)

आवरण री बिरियाँ भई जी, अब महलां ढोल्यो ढार ।। १
अतर सुगंध मिलायके जी, घी भर दिवला वार ।। २
जाई जूही केतकी जी, चंपाकली सुधार ।। ३
पलकां सूं करां पाँवडा जी, अँचलां सूं मग झार ।। ४
गिरधर म्हारो परम सनेही, मीरां उनकी नार[1] ।। ५

○

पद–१२० : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(करुण-विनय)

गिरधर दुनियाँ दे छै बोल । (टेर)
गिरधर मेरो मैं गिरधर की, कहो तो बजाऊं ढोल[1] ।। १
आप जो जाय द्वारिका छाये, हमको पड गये झोल[2] ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पिछले जनम के कोल ।। ३

○

पद–१२१ : तर्ज–घूमर : ताज–कहरवा
(प्रेम-दृढ़ता)

गिरधर म्हारा साँचा पति छै, मैं गिरधर की दासी हे माय । (टेर)
राणोजी म्हासूं रूस रह्यो छै, कूड़ा वचन निकासै हे माय ।। १
राणो कहै सो एक न माँना म्हे, साध दुवारे नित आसी हे माय ।। २
मीरां के प्रभु सेज चढ़े जव, ठाडी करै खवासी हे माय ।। ३

११९–१ (उ.) : (स.मा.मी.ली. १०) (मी.ली.प. दूधू १३)
1. पाठान्तर = दोहा–पुष्पन सों झोली भरी, रुचि रुचि सेज सँवारि ।
चारूं दिस फिरती फिरै, ऊदां चमेली नार ।।
(यह दोहा मा. हरिना. ह.लि.पु. के पद के अन्त में है ।)
१२०–१ (उ.) : (पु.नाथू.पु. से) (मीरांबाई भजन नं. ११)
1. पाठान्तर–'दुनियाँ क्यों दे बोल' । 'थे करमन के भोग' ।
2. पाठान्तर–'हमको लिख दिया जोग' ।
१२१–२ (म)

पद–१२२ : राग–देस व सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

गिरधर म्हारे मन भाया, मोरी माय, राणू ंजी म्हारे दाय न आवे । (टेर)
राणाजी म्हांसे रूस रह्या छै, कूड़ा बचन सुणाया ।। १
गुरु कृपा से संत पधारया, संतां स्याम मिलाया ।। २
मीरां की प्रभु आस पुराई, गिरधर सेजाँ आया ।। ३

○

पद–१२३ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम का उलाहना—पूर्वजन्म-संकेत)

गिरधर रूसणू ंजी कोंण गुन्हां[1] । (टेर)
कछु इक ओगुण काढो म्हांमैं, म्हे भी कानां सुणां ।। १
मैं तो दासी थारी जनम जनम की, थे साहिब सुगणां ।। २
कांई बातसू ं करचो रूसणू ं, क्यों दुख पावो छो मनां ।। ३
किरपा करि मोहि दरसण दीज्यो, बीते दिवस घणां ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, थारो ही नांव भणां ।। ५

○

पद–१२४ : राग–परज : ताल–कहरवा

(दर्शनानंद)

गोकुल के बासी भले ही आये, गोकुल के बासी । (टेर)
गोकुल की नारी देखत, आनन्द सुखरासी ।
एक गावत एक नाचत, एक करत हांसी ।। १
पीताम्बर के फेंटा बांधे, अरगजा सुबासी ।
गिरिधर से सु नवल ठाकुर, मीरां सी दासी ।। २

१२२–२ (म): (दीना.मं.मी.पृ. ८)
१२३–१ (उ.): राम.स.गु.)
1 पाठान्तर—'गुणां' ।
१२४–२ (म.)

पद—१२५ : राग—आसा मांड : ताल—दादरा

गोपाल राधे कृष्न गोविंद गोविंद । (टेर)
बाजत झांझरी और मृदंग, और बाजे करताल ।। १
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजंती माल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भकतन के प्रतिपाल ।। ३

○

पद—१२६ : राग—सारंग : ताल—कहरवा
(प्रेम)

गोपाल रंग राची, मैं श्याम रंग राची । (टेर)
कहा भयो जल विष के खाये, तीनहु तें मैं बाची ।। १
तात मात अरु लोक कुटुंब सब, तिन कीनी उपहासी ।। २
नंद नंदन गोपीबल्लभ प्रभु, तिनके आगे नाँची ।। ३
और सकल बंधन छाडे मैं, भक्त काछ एक काछी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जानैं झूँठी साँची ।। ५

○

पद—१२७ : राग—सारंग : ताल—कहरवा
(विनय-प्रेम)

गोरस लीजे नंदलाल, रस मांगो रस लीजे । (टेर)
मैं तो हूं व्रषभान नंदिनी, तुम हो नंदजी के लाल ।। १
मोर मुकुट मुकताफळ कुंडळ, उर बैजंती माल ।। २
मैं दधि बेचन जाती वृन्दाबन, रोकत है बिन काज ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बांह गहे की लाज ।। ४

१२६—१ (उ.); (या.—सं.रा.क.से)
नोट—हमारे संग्रह में इस पद के पाठान्तर के पद ये हैं—
१ राणांजी मैं सांवरे रंग राची ।
२ सखीरी मैं गिरधर के रंग राची ।
१२७— (का. उ. २/३४७)

पद–१२८ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा
(प्रेमोत्सुकता)

गोविन्द कब रे[1] मिले पिय मेरा । (टेर)
चरण कँवल को हँसि कर देखूँ, राखूँ नैनन नेरा ।। १
निरखण रो मोहे चाव घणेरो, कब मुख देखूं तेरा ।। २
पिया मिलण कूँ हुई हूँ उदासी, मिलवू मिंत सवेरा ।। ३
व्याकुल तातें भई तनु देही,[2] सिर पर जम का घेरा[3] ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा ।। ५

○

पद–१२६ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–कहरवा
(विष-प्रयोग)

गोविन्द का गुण गास्यां । (टेर)
राणोजी रूसैला तो गांम राखैला, हरि रूठ्यां कुमलास्यां ।। १
राम नाम की जहाज चलास्यां, भवसागर तिर जास्यां ।। २
चरणामृत को नेम हमारो, नित उठि दरसण पास्यां ।। ३
बिषरा प्याला राणोजी भेज्या, इमरत करि गटकास्यां ।। ४
यो संसार विनास जानिकै, ताको संग छिटकास्यां ।। ५
लोक लाज कुल काणिहु तजिकै, निरभै निसाँण घुरास्यां ।। ६
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, चरणकमल बलि जास्यां ।। ७

○

१२८–१ (उ.); (दीना. मं.मी.प. ३२) (मी.ली.प.दूधू १८) (स.मा.भी.ली. १३)
1 पाठान्तर–'कबहूं' ।
2 पाठान्तर–'व्याकुल प्राण वल नहिं धीरज' ।
3 पाठान्तर–व्याकुल भई मैं बन बन डोलूँ ऊपर जम का घेरा ।
१२९–१ (उ.); क.ब. २०)
(देखो–राणाजी म्हे तो गिरधररा गुण गास्यां)

पद–१३० : राग–झिंझोटी : ताल–दादरा
(प्रेम-दृढ़ता)

गोविन्द सूं प्रीत करी, तब ही क्यों न हटकी । (टेर)
अब तो बात फैल गई, जैसे बीज बटकी ।
बीच को बिचार छांडि, पारि प्रीति अटकी ।। १
अबै चूकै ठौर नाहि, जैसे कला नट की ।
साँवरे को सीस धरे, सुरत प्रेम भटकी ।। २
घर घर में घणी होत, बाणी घट घट की ।
हरिजी सों प्रीति राखि, लोक लाज पटकी ।। ३
बाणी घुलि-गांठ परी, रसना गुण रटकी ।
अब छुटायें छूटे नहीं, भोत बार झटकी ।। ४
मदमांते हसती सम, फिरत प्रेम लटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधर बिन, कौन जाने घट की ।। ५

○

पद–१३१ : राग–परज : ताल–इकताला
(तन्मयता)

गोहने[1] गुपाल फिरूं, ऐसी आवत मन में ।
अवलोकत वारिज बदन, विवस भई तन में । (टेर)
मुरली कर लकुट लेऊँ, पीत बसन धारूँ ।
आछी गोप भेष मुकट, गोधन सँग चारूँ ।। १
हम भई गुल कामलता, वृन्दावन रैनां ।
पसु पंछी मरकट मुनी, श्रवन सुनत बैनां ।। २
गुरुजन कठिन कानि, कासों री कहिये ।
मीरां प्रभु गिरधर मिली, ऐसें ही रहिये ।। ३

१३०–१ (उ.); (क.ब. २५) (राम.स.गु.पृ. २२३)
१३१–३ (क.)
1 पाठान्तर–'जोहनें' ।

पद–१३२ : राग–मांड : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

घड़ी एक नहिं आवडे, तुम दरशण बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूं जीवन होय ।। १
धान न भावै नींद न आवै, विरह सतावै मोय ।
घायल-सी घूमत फिरूँ, मेरा दरद न जाणे कोय ।। २
दिवस तो खाय गमाइयो रै, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरतां रै, नैण गमाया रोय ।। ३
जो मैं ऐसा जानती रै, प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा फेरती रै, प्रीत करो मत कोय ।। ४
पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊभी मारग जोय ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ।। ५

○

पद–१३३ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

घर आँगन न सुहावे, पिया बिन मोहि न भावै । (टेर)
दीपक जोय कहा करूँ सजनी, हरि परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूं लागे, सिसक सिसक जिय जावे
नयन निद्रा नहिं आवे ।। १
कबकी ऊभी मैं मग जोऊं, निस दिन विरह सतावे ।
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे
हरी कब दरस दिखावे ।। २
ऐसो है कोई परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे ।
वा बिरियाँ कब होगी मुझको, हरि हँस कंठ लगावे
मीरां मिलि होरी गावै ।। ३

१३२–१ (उ.)
१३३–१ (उ.)

पद–१३४ : राग–अडाणा : ताल–तिताला
(लीला)

चंचल चवैया री आली, यशोदा को लाल देखो (टेर)
हों दधि बेचत जात रही ब्रज, नाहक रार मचाई ।
मेरी चेरी मेरे चेरे की चेरी, ऐसे नाँच नँचाई ।। १
हमरे संग की दूर निकस गई, मोहन बइयाँ मरोरी ।
सास ननदिया रिसावैगी मोसों, मुख मल दीनी रोरी ।। २
मैं तो हूँ बरसाने की ग्वालिन, तुम हलधर के बीर ।
मीरां के प्रभु फगुवा लीन्हों, मोहन श्यामशरीर ।। ३

○

पद–१३५ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा
(विरह)

चरण[1] रज महिमा मैं जानी (टेर)
येही चरण से गंगा प्रगटी,
भागीरथ कुल तारी ।। १
येही चरण से विप्र सुदामा,
हरि कंचन धाम दीन्ही ।। २
येही चरण से अहल्या उधारी,
गौतम की पटरानी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
येही चरणकमल लिपटानी ।। ४

○

पद–१३६ : राग–आसावरी : ताल–तिताला
(प्रेमोत्सुकता)

चलाँ वाही देस प्रीतम पावाँ, चलाँ वाही देस (टेर)

१३४–२ (म.); (या०–सं०रा०क०से)
१३५–३ (क,)
1 पा.–"चरणन की हे जी" ।

कहो तो कसूँबी सारी रँगावां, कहो तो भगवाँ भेस ।। १
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुनियो विरद के नरेस ।। ३

○

पद–१३७

(प्रेम-रहस्य)

चलो अगम के देश काल देखत डरे ।
(जहाँ) भरा प्रेम का हौज हंस केलाँ करे (टेर)
ओढन लज्जा चीर धीरज को घाघरो ।
छिमता काँकण हात सुमत को मूँदरो ।। १
काँचों है विस्वास चूड़ो चित ऊजलो ।
दिल दुलड़ी दरियाव साँच को दोवड़ो ।। २
दाँतां अमृत मेख दया को बोलणों ।
उबटन गुरु को ज्ञान ध्यान को धोवणों ।। ३
कान अखोटा ज्ञान जुगत को झूटणों ।
बेसर हरि को नाम काजल है धरम को ।। ४
जेहरि सील सँतोष निरत को घूँघरो ।
बिंदली गज और हार तिलक गुरु ज्ञान को ।। ५
सज सोलह सिंगार पहिरि सोने राखड़ी ।
साँवलिया सूँ प्रीत औरों से आखड़ी ।। ६
पतिबरता की सेज प्रभूजी पधारिया ।
गावे मीरां बाई दासी कर राखिया ।। ७

○

१३६–२ (म.)
१३७–१ (उ.) (आ. भ. पृ. ६२)

पद–१३८ : राग–भैरवी सिन्ध : ताल–तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

चालो मन गंगा जमुना तीर (टेर)
गंगा जमना निरमल पाँणी, सीतल होत सरीर ।। १
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिया बलबीर ।। २
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल झलकत हीर ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कँवल पै सीर ।। ४

○

पद–१३९ : राग–बहार : ताल–तिताला, कहरवा

(निश्चय)

चितनंदन[1] आगे नाचूंगी (टेर)
नाच नाच पिय तुमहिं रिझाऊं, प्रेमीजन को जाचूँगी ।। १
प्रेम प्रीति का बाँध घूँघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, यामें एक न राखूँगी ।। ३
पिय के पलँगां जा पोढूंगी, मीरां हरि रँग राचूँगी ।। ४.

○

पद–१४० : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

चितनंदन विलमायि, बदरा ने घेरि माई (टेर)
इत घन गरजै उत घन गरजै, चमकत बिज्जु सवाई ।। १
उमड घुमड चहुँ दिश से आया, पवन चलै पुरवाई ।। २
विरहनि तेरी प्राण झुरत है, दाधी बेलि सिंचाई ।। ३
मीरां[1] को प्रभु दर्शन दीजे, प्राण रखो सरणाई ।। ४

१३८–२ (म.)
१३९–१ (उ.)
1 पाठान्तर–'रघुनंदन' । 'नँदनंदन' ।
१०४–२ (म.), (वं.पु.पृ. २१)
1 पाठान्तर–'प्राण रहत मोकूं' । ऐसा पाठ बंगाली पुस्तक में है ।

पद–१४१
(भगवतलीला प्रेम)

चीर दीज्यो बिहारी, मुरारी काना (टेर)
ले कर चीर कदम चढ़ बैठो, हम जल माँहि उघारी ।। १
तेरो चीर हम जब ही देंगे, हो जाओ जल से न्यारी ।। २
जब हम जल से न्यारी होयँगी, जावैगी लाज तुम्हारी ।। ३
या तुम प्रभुजी कैसी बिचारी, तुम हो पुरुष हम नारी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ५

○

पद–१४२ : राग–सोरठ देश : ताल–कहरवा
(भगवतीलीला प्रेम)

छाँडो[1] लँगर मोरी बहियाँ गहो ना (टेर)
मैं तो नारि पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ।। १
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन[2] जोर मेरे प्राण हरो ना ।। २
बृन्दावन की कुञ्जगलिन में, रीत छोड़ अनरीत करो ना ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित[3] टारे टरो ना ।। ४

○

पद–१४३ : राग–भैरवी सिंध : ताल–तिताला
(विनय)

छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे (टेर)
चाल कुचाल चलो जिन चंचल, ऐसी अनीति तैंने करनी विचारी रे ।। १
सखी संग की देखत ठाडी, चरचा करेंगे सब पुर नरनारी रे ।। २

१४१–२ (म.)
नोट–ऐसा ही पद चन्द्रसखी का है ।
१४२–२ (म.), (बृ.रा.र. पृ. ३१)
1 पाठान्तर–'छोडो डगर' । 2 पाठान्तर–'मिलाय' ।
3 पाठान्तर–'टरयो टरो ना' ।
१४३–२ (म.), (गोपीराम ब्रजबासी से प्राप्त)

मैं सुकुमार खड़ी कांँपत हों, सिर पर दधि की मटुकिया भारी रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम्हरे चरणकमल बलिहारी रे ।। ४

○

पद–१४४ : राग–झामोद वा छाया : ताल–कहरवा
(प्रेम-विनय)

छोड मत जाज्यो जी महाराज (टेर)
मैं अबला बल नाँय गुसाँई, तुम मेरे सिरताज ।। १
मैं गुणहीन गुण नाँय गुसाँई, तुम समरथ महाराज ।। २
थाँरी होयके किणरे जाऊँ, तुम हिवड़ा रो साज ।। ३
मीराँ के प्रभु और न कोई, राखो अबके लाज ।। ४

○

पद–१४५ : राग–बहार : ताल–तिताला
(लीला-वर्णन)

छोड़ो चुनरिया, छोड़ो चीर, मनमोहन, मन मोह लिया रे (टेर)
नंदजी के लाल, संग चलै गोपाल, धेनु चरत चपाल,
बीन बाजै रसाल, चीर छोड़ो ।। १
कान्हा माँगत है दाँन, गोपी भई.........., सुनों उनका बयान,
घबरा गया उनका प्रान, चीर छोड़ो ।। २
मीरां के गिरधारी मुरारी, राखो लाज प्रभुजी हमारी,
मैं हूँ दासी सदा तुमारी, तुम हो भले बिहारी, चीर छोड़ो ।। ३

○

१४५–(का । उ. २ । ३४०)
नोट—इस पद के अंतरों में लेखन दोष थे सो सुधारे हैं । (मं०)

पद–१४६

(भगवतदर्शन-वर्णन)

जब तैं मोहि नंदनँदन दृष्टि परचो माई ।
तबतैं परलोक लोक, कछु नाँ सुहाई[1] (टेर)
मोरन की चंद्रकला[2], सीस मुकुट सोहै ।
केसर को तिलक भाल, तीन लोक मोहै ।। १
कुंडल की अलक झलक, कपोलन पर छाई ।
मानो मीन सरवर तजि, मकर मिलन आई ।। २
भृकुटि कुटिल चपल नयन[3], चितवन से टौना ।
खंजन अरु मधुप मीन, मोहै मृग छौना ।। ३
अधर विम्ब अरुणनयन[4], मधुर मन्द हाँसी ।
दसन दमक दाडिम द्युति[5], दमकै चपला सी ।। ४
कंबुकंठ भुज विसाल, ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर को भेष मानु, सकल गुण विसेखा ।। ५
छुद्रघंट[6] किंकिनी अनूप धुन सुहाई ।
गिरधर के अंग अंग, मीराँ बलि जाई ।। ६

○

१४६–१ (उ.); (ट.) (बृ. रा. र. पृ. ११९) । (दीना मं. मी. म. १) । (जमा. राम. ३) । (स. मा. मी. ली. ९) । (मी. प. २०) ।

नोट–इसी से मिलता-जुलता सूरदासजी का पद भी है ।

1 पाठान्तर-'कहा कहूँ सुंदरता बरणी नहिं जाई' ।

2 पाठान्तर-'चंद्रिकासु' । 3 पाठान्तर-'अति बिसाल' ।

4 पाठान्तर-'नासिकासु अति अनूप' ।

5 पाठान्तर-'दसन बरण दामिनिद्युति' । 6 पाठान्तर-'छुद्रघंटिका अनूप नूपुर धुनि सोहै । गिरिधर के चरणकमल मीरां मन मोहै' ।

पद—१४७ : राग—कामोद वा बडहंस : ताल—दीपचन्दी

(उपदेश)

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार[1] (टेर)
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दिया करतार ।। १
कांई रे खाइयो कांई रे खरचियो, कांई रे कियो उपकार ।। २
दियो रे लियो तेरे संग चलेगो, और नहीं चलै (थारी) लार ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भज उतरो भव पार ।। ४

○

पद—१४८ : राग—मालकोश : ताल—तिताला

(लीला-वर्णन)

जमुना में मैं कैसे जाऊँ मोरे सैयाँ, बीच खड़ा देखो लाल कन्हैया (टेर)
बृंदाबन से मथुरा नगरी, पानी भरन कैसे जाऊँ मोरे सैयाँ ।। १
हाथ में मेरे चूड़ा भरा है, कंगन लहेरा देत मोरे सैयाँ ।। २
दधि मेरा खाया मटकी फोडी, अब कैसे बुरी बात बोलूं मोरे सैयाँ ।। ३
सिर पर घड़ा घड़े पर झारी, पतली कमर लचकै मोरे सैयाँ ।। ४

○

पद—१४९ : राग—पटदीप : ताल—तिताला

(लीला-वर्णन)

जल भरन कैसे जाऊँ री जसोदा, जल भरन कैसे जाऊँ (टेर)
बाटेर घाटे पानी माँगे, मारग में कैसे धाऊँ ।। १
परली कोर गंगा, वोली कोर जमना, बीच सरस्वती में न्हाऊँ ।। २
बृंदाबन में रास रच्यो है, नृत्य करत मन भाऊँ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हेत हरीगुण गाऊँ ।। ४

१४७—२ (म.); (स्फुटपद) (रा. स. गुटका पृ. १३७)
1 पाठान्तर-'राम किन कहै रे गंवार' ।
१४८—(का., उ. २-३३४)
१४९—(का., उ. २-३३३)

पद–१५० : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(गोपी-संशय)

जल कैसे भरूं जमना तट री[1] । (टेर)
खडी भरूं तो कृष्ण दिखत है, बैठ भरूं तो भीजे चूनड़ी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, छुम छुम वाजत मुरली ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल की मैं चेरी ।। ३

○

पद–१५१ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(उपालंभ)

जसोदा मैया नित सतावे कनैया ।
वाकी हरकत क्या कहूं मैया ।। (टेर)
बैल लावे भीतर बांधे, छोर देवत सब गैयां ।। १
सोते बालक आन जगावे, असो ढीठ तेरो कनैया ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि लागूं तोरे पैयाँ ।। ३

○

पद–१५२ : राग–आसावरी : ताल–कहरवा
(उलहना)

जसोदा मैया तेरो लडको नीको । (टेर)
बछवा छुडाय मोरी गउवाँ चुखाय दीनी और उतारयो महीको ।। १
दूध दही की कमारी फोरी (मथनिया फोरी) माँट फोरवो गह छींको ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि विन सब जग फीको ।।

○

१५०–(का. ५।१९८)
1 पाठान्तर–'किनारा'
१५१–(का. ५।१९६)
१५२ ३ (क.), (या०–सं. रा. क. से)

पद–१५३ : राग–सोरठ वा धनाश्री : ताल–कहरवा

(राणा संवाद-प्रेमदृढ़ता)

जहर दियो सो जाँणी, राणाजी म्हाँने, (जहर दियो सो जाँणी) । (टेर)
हरष शोक म्हारे मन नांही, नहीं लाभ नहिं हानी ।। १
कंचन लेर अगन में राख्यो, निकस्यो बाराबानी ।। २
अबतो प्रभु तुमही पत राखो, छाणों दूधरु पाँणी ।। ३
राणाजी यो बचन उचार्‌यो, सुणज्यो म्हारी बाँणी ।। ४
साधाँ रो सँग परो निवारो, थाँनैं कराँ पटराँणी ।। ५
कोट भूप वाराँ संतन पर, जिनके हाथ बिकाँणी ।। ६
हथलेवो मैं थाँसू जोड्यो, गिरधररी पटराँणी ।। ७
पीहर म्हारो देश मेड़तो, छाँडी कुलकी काँणी ।। ८
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटाँणी ।। ९

○

पद–१५४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(राणा संवाद-प्रेमदृढ़ता)

जहर दियौ म्हे जानी राणाजी थे तो । (टेर)
अपने कुल को परदो कर लौ मैं अबला बौरानी ।। १
मेरो (तेरो) न्याव प्रभु के आगे, छाणैं दूध'र पाणी ।। २
जैसे कंचन कसत कसौटी, होत है बाराबानो ।। ३
कोटि नृपति वारू संतन पर, जिनके हाथ बिकानी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटानी ।। ५

○

१५३–२ (म.), (दीना. मं. मी. प. २३)

नोट–४-५ अंतरे विचारणीय हैं, पटराणी शब्द के कारण । और सब उत्तम है ।

१५४–१ (उ.), (मा. ह. ह. पु. २)

पद–१५५ : राग–सोरठ वा बागेश्वरी, कानड़ा : ताल–तिताला

(राणा संवाद)

जहर दियो म्हे जाणी, राणाजी म्हाँनैं । (टेर)
हरप सोग मेरे मन नाहीं, नहीं लाभ नहीं हानी ।। १
कंचन लेर अग्नि में राख्यो, निकस्यो बाराबाँनी ।। २
अबतो प्रभु तुमही पति राखो, छाणों दूध'र पाँणी ।। ३
राणों वचन उचारिया जी, सुणजो म्हारी वाँणी ।। ४
साधाँरो सँग परो निवारो, थाँने कराँ पटराँणी ।। ५
कोटभूप वारों साधाँ पर, संतां हाथ बिकांनी ।। ६
हथलेवो म्हे थाँसूं जोड्यो, गिरधररी पटराँणी ।। ७
पीहर म्हारो मेड़तो जी, छांडी कुलकी काँणी ।। ८
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल लिपटानी ।। ९

○

पद–१५६ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(उलहना-प्रेमोपालंभ)

जाओ हरि निरमोह डारे, जाणी थाँरी प्रीत । (टेर)
लगन लगी जब और प्रीत छी, अब[1] क्यों भये नचीत ।। १
अमृत पाय विष क्यूं दीजे, कौण गाँव की रीत ।। २
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, आप गरज के मीत ।। ३

○

पद–१५७

जाके मथुरा कहानाने गागरियां फोरी ।
गागरियां फोरी दुलरि मोरी तोरी ।। (टेर)

१५५–२ (म.), (मा. हरिना. जीकी पु ह.) (मी. ली. प. दूधू ९)
देखो–'राणाँजी जहर दियो म्हे जाणी' ।
१५६–२ (म.)
1 पा.–'अब कुछ अँवलीं रीत' ।
१५७–(का. ५।२०७)

ऐसी रीत तुझे कौन सिखावै, किसन करत बाराजोरी ।। १
सास हटेली, ननद चुगेली, दिवर देवत मुझे गारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल चित्त हारी ।। ३

○

पद—१५८ : राग—ललित : ताल—दादरा
(प्रार्थना)

जागिए गिरधारीलाल, भक्तन हितकारी । (टेर)
दासी हाजर खवास, कंचन ले झारी ।। १
सउच करो दंतधावन, स्नान की तयारी ।। २
वस्त्र और पुष्पमाल, तुलसी अति प्यारी ।। ३
रत्नजटित आभूषण, मुकुट लटक वारी ।। ४
धूप दीप नैवेद्य, आरती सँवारी ।। ५
मीरां प्रभु विधि विधान, चरणन चित धारी ।। ६

○

पद—१५९ : राग—माड : ताल—रूपक
(प्रेम-रहस्य)

जागो म्हारा जगपतिराइ, हँसि बोलो क्यूँ नहीं ।
हरि थे छो जी हिरदा मांहि, पट खोलो क्यूँ नहीं । (टेर)
तन मन सुरति सँजोइ, सीस चरणाँ धरूँ ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम, जहां सेवा करूँ ।। १
सदकै करूँजी सरीर, जुगै जुग वारणौं ।
छोड़ी छोड़ी कुल की लाज, साहिब तेरे कारणौं ।। २
थोड़ी थोड़ी लिखूं सिलाम, बहोत करि जाणज्यौ ।
बंदी हूं खानाज़ाद, महरि करि मानज्यौ ।। ३

१५८—२ (म.), (स. मा. मी. ली. ३)
१५९—२ (म.)

हां हो म्हारा नाथ सुनाथ, विलम नहि कीजियै ।
मीरां चरणां की दासी, दरस अव दीजियै ।। ४

○

पद–१६० : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा तिताला
(स्तुति)

जागो बंसीवारे प्रभुजी, जागो मोरे प्यारे । (टेर)
रजनी बीती भोर भयो है, घर घर खुले किंवारे ।। १
गोपी दधी मथत सुनियत है, कँगना के झनकारे ।। २
उठो लालजी भोर भयो है, सुर नर ठाड़े द्वारे ।। ३
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय जय शब्द उचारे ।। ४
माखन रोटी हाथ में लीन्हीं, गौअन के रखवारे ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सरण आये को तारे ।। ६

○

पद–१६१ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(उलहना)

जावा दे री जावा दे, जोगी किसका मीत । (टेर)
सदा उदासी मोरी सजनी, निपट अटपटी रीत ।। १
बोलत वचन मधुर से मीठे, जोरत नाहीं प्रीत ।। २
हूं जाणूं या पार निभैगी, छोड़ चला अधबीच ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, प्रेमपियारा मीत ।। ४

○

१६०–२ (म.)
१६१–२ (म.)

पद–१६२ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(विनय और उपालम्भ)

जावा दे गुमानी कृष्ण म्हारे घरे काम छै । (टेर)
थे हो लंगर नन्द महर के ब्रज बरसाने म्हारो गाम छै ।। १
जाणो नाही तो पूछ लीज्यो श्री राधा म्हारो नाम छै ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर नाम थांको बदनाम छै ।। ३

○

पद–१६३ : राग–कालँगड़ा : ताल–तिताला

(प्रेम-उलहना)

जावो (ला) कठेरे, रामा रैवो अठे, साँवलिया (रामा) । (टेर)
गोकुल बसबो फीकोई लागै, मथुरा में काँई (थारे) लाडू बटै[1] ।। १
नित काँई जावो नित काँई आवो, नितका जायाँ से मान घटै ।। २
गोकुल में काँई धेनु चरावो, मथुरा में काँई (थारे) राज लटै ।। ३
राधाई रुकमण और सतभामा, कुब्जा काँई (थारे) संग पटै[2] ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम सुमरां सूं म्हांको संकट कटै[3] ।।५

○

पद–१६४ : रागनी–पीलू : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

जो तुम तोड़ो पिया मैं नहिं तोड़ूं,
तेरी प्रीत तोड़ि प्रभु कौन सँग जोड़ूं । (टेर)
तुम भये तरुवर मैं भई पँखियाँ,
तुम भये सरवर मैं तेरी मछियाँ ।। १

१६३–२ (म.)

1 महावरा है । अर्थ लाभ होना ।
2 पाठान्तर–'कुवज्या दासी थारै आई पटै' ।
3 पाठान्तर–'थारे दरस म्हारो पाप कटै'

तुम भये गिरवर मैं भई मोरा,
तुम भये चंदा भई मैं चकोरा ।। २
तुम भये मोती, (तो) मैं भई धागा,
तुम भये सोना, भई मैं सुहागा ।। ३
बाई मीरां के प्रभु ब्रज के वासी,
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ।। ४

○

पद—१६५ : राग—बागीश्वरी : ताल—तिताला
(विरह विनय)

जोगिया छाड़ रह्या परदेस । (टेर)
जब का बिछड़या फेर न मिलिया, बहोरि न दियो संदेस ।। १
या तन ऊपर भसम रमाऊँ, खार करूँ सिर केस ।। २
भगवाँ भेष धरूं तुम कारण, ढूँढूँ चारूं देस ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जीवनि जनम अनेस ।। ४

○

पद—१६६ : राग—देश सोरठ : ताल—कहरवा धीमा
(विरह-कातरता)

जोगियाजी निसदिन जोऊं बाट ।
पांव न चाले पंथ दुहेलो, आज औघट घाट । (टेर)
नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ ।
मैं भोली भोलापण कीन्हो, राख्यौ नहीं बिलमाइ ।। १
जोगिया कूं जोवत बोहो दिन बीत्या, अजहूं आयो नांहि ।
विरह बुझावण अन्तर आवो, तपत लगी तन मांहि ।। २

१६४—२ (म.), (बं. पु. पृ. ३६)
१६५—२ (म.), (का. दो. ४४)
१६६—२ (म.), (मंजुपदावली ४५)

कै तो जोगी जग में नाँहीं, कँ'र बिसारी मोइ ।
काँई करूँ कित जाऊँ री सजनी, नैण गुमाया रोइ ।। ३
आरति तेरी अंतरि मेरे, आवो अपणी जाण ।
मीरां व्याकुल विरहिणीरे, तुम बिन तलफत प्राण ।। ४

○

पद–१६७ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उत्कंठा)

जोगियाजी आवो ने या देस ।
नैणज देखूँ नाथ मेरो, ध्याइ करूँ आदेस । (टेर)
आया साँवण मास सजनी, भरे जल थल ताल ।
रावल[1] कुण बिलमाइ राख्यो, बिरहनि है बेहाल ।। १
बिछड़ियाँ कोई भौ भयो (रे जोगी) ऐ दिन अहला जाइ ।
एक बेरी देहु फेरी, नगर हमारे आइ ।। २
वा मूरत मेरे मन बसे (रे जोगी) छिन भी रह्यौ न जाइ ।
मीरां के प्रभु हरि अविनाशी, दरसन द्यौ हरि आइ ।। ३

○

पद–१६८ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

जोगिया तू कब रे मिलैगो आई । (टेर)
तेरे हि कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई ।। १
दिवस न भूख, रैण नहिं निद्रा, तुझ बिन कुछ न सुहाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल कर तपत बुझाई[1] ।। ३

१६७–२ (म.), (मंजुपदावली ४९)
1 पाठान्तर–'साँई' ।

१६८–१ (शब्दावली) ।
1 पा०-दीर्घ ई के स्थान में ह्रस्व इ का भी पाठ है ।

पद–१६९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक कहरवा

(विरह)

जोगिया दरस दीज्यौ राज ।
कर जोड़्यां करुणा करूं म्हारी बांह गह्यां की लाज । (टेर)
लोकलाज विसारि डारी, छांड्यौ जग उपदेस ।
विरह अगनि में प्राण दाझै, सुणि लीज्यौ आदेस ।। १
पाँच मुद्रा भाव कंथा, नखसिख साजे साज ।
जोगणि होइ जग ढूंढिस्यूं, म्हारी घरि घरि फेरी आज ।। २
दरददिवांनी तन जानि अपनी, मिलिया राम दयाल ।
मीरां कै मन आनंद उपज्यौ, रोम रोम खुसियाल ।। ३

○

पद–१७० : राग–मांड : ताल–दादरा

(विरह)

जोगिया ने कहियो रे आदेस ।
आऊँगी मैं, नाँहि रहूँगी, कर जोगन को भेस[1] । (टेर)
चीर को फाड़ूं कंथा पहिरूं, लेऊँगी उपदेस ।
गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उंगलियां की रेख ।। १
मुद्रा माला भेष लूं रे, खप्पड़ लेऊँ हाथ ।
जोगिन होय जग ढूंढसूं रे, रावलिया के साथ[2] ।। २
[3]प्राण हमारा वहाँ वसत है, यहाँ तो खाली खोड़ ।
मात पिता परिवार सूं रे, रही जु तिनका तोड़[3] ।। ३

१६९–२ (म); (राम स० गु. पृ. १७३) ।
१७०–२ (म); (शब्दावली) । (मी. ली. प. दूधू. १७) ।

1 पा०-'कर जटाधारी भेस' । 2 पा०-यहां पर एक अंतरा यह है—
'दंड कमंडल गूंदड़ी रे बाला, कियो नवेलो नेह ।
प्रीतम औजूं न आइया, म्हारे हिवड़ै बडो संदेह ।।'

3 3 पा०-यहां यह अंतरा और भी है—
'गुरु का सबद कान में पहरूं, अंग विभूत रमाऊँ ।
जा कारण मैं जग तजो रे, बाला वाही पास मैं जाऊँ ।।

पांच पचीसों बस किये, मेरा पला न पकड़ै कोय ।
मीराँ व्याकुल विरहणी रे, कोई आन मिलावे मोय ।। ४

○

पद–१७१ : राग–पहाड़ी : ताल–दादरा
(विरह)

जोगिया नैं कहज्यो जी आदेस ।
जोगियो चतुरसुजांण सजनी ध्यावै संकर सेस । (टेर)
माला मुद्रा मेखला रे वाला, खपरा लागी हाथ ।
जोगण होइ जुग ढूंढसूं, म्हारा रावलिया री साथ ।। १
करि किरपा प्रतिपाल मो परि, राखै नैं अपनैं देस ।
आऊंगी मैं नां रहूंगी, म्हारा पीव बिना परदेस ।। २
सांवण आवण कह गयो रे वाला, करि गयो कोल अनेक ।
गिणतां गिणतां घसि गई सजनी, आँगलियाँ री रेख ।। ३
प्राण हमारा वहां बसै जी वाला, यहां है खाली खोड़ि ।।
मात पिता परिवार सूं जी, हूँ रही तिणका ज्यूं तोड़ि ।। ४
पीव कारण पीली पड़ी रे, जोबन गया वाली बेस ।
दासि मीरां राम भजि कैं, तन मन कीन्हौं पेस ।। ५

○

पद–१७२ : राग–खमाच : ताल–तिताला
(वेदना)

जोगिया प्रीतड़ी है, दुखड़ा रो मूल । (टेर)
हिल मिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ।। १
तोड़त देर करत नहिं सजनी, जैसे चमेली के फूल ।। २
मीरां के प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लगे हिवड़े में शूल ।। ३

१७१–(राम स० गु. पृ. १९०) ।
१७२–१ (उ) ।

पद–१७३ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(प्रेम विरह)

जोगियारी सूरत मन में बसी । (टेर)
नितप्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निसदिन होत खुसी ।। १
कंहा करूँ कित जाउँ मोरी सजनी, मानों सरप डसी ।। २
मीरां कहे प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली बसी ।। ३

○

पद–१७४ : राग–बिहाग : ताल–तिताला

(विरह)

जोगिया सों प्रीत कियाँ दुख होय । (टेर)
प्रीत कियाँ सुख नहिं मोरी सजनी, जोगी मींत न कोई ।
रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियां बिन मोई ।। १
ऐसी सूरत या जग माहीं, फेरि न देखी सोई ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, मिलियाँ आनँद होई ।। २

○

पद–१७५ : राग– कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(अनुराग)

जोगियो आँणि मिल्यो अनुरागी । (टेर)
ससा* सोक अंग नहिं त्रिसना, दुवध्या सब ही त्यागी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहै, स्यामबरण बडभागी ।। २
जनम जनम को साहिब म्हारो, वाही सों लो लागी ।। ३
अपणा पिव सों हिल मिल खेलां, हरि दरसण अनुरागी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, अब भई मैं सुभागी ।। ५

१७३–१ (उ) ।
१७४–२ (म); (राम स० गुटका) ।
१७५–१ (उ); (मी. ली. पा. दूधू २३) ।
* पा०-'संसय' । १ पा०-'मित्र' । २ पा०-'अधरसुधारस पागी' ।
३ पा०-'मीराँ तो गिरधर मन मानी' । ४ पा०–'अब तो भई है सुहागी' ।

पद–१७६ : राग–भैरव : ताल–तिताला ।
(विरह, विनय)

जोगी आ जा आ जा, जोगी पाँइ परूँ मैं हौ चेरी तेरी । (टेर)
प्रेम-भक्ति को पैंडो न्यारो, हमकूँ गैल बता जा ।। १
अगर चंदन की चिता बनाऊँ, अपने हाथ जला जा ।। २
जल बल भई भस्म की ढेरी, अपने अङ्ग लगा जा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ज्योति में ज्योति मिला जा ।। ४

○

पद–१७७ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(विरह)

जोगी म्हाँने दरस दियाँ सुख होइ ।
नातरि दुखी जग मांहि जीवड़ो, निसिदिन झूरै तोइ । (टेर)
दरस दिवानी भई बावरी, डोली सब ही देस ।
मीरां दासी भई है पंडुरी, पलटचा काला केस ।। १

○

पद–१७८ : राग खमाच तिलँग : ताल–धीमा तिताला
(संयोग)

जोसीड़ा ने लाख बधाई रे, अब[1] घर आये स्याम । (टेर)
आजि[2] आनंद उमँगि भयो है, जीव लहै सुख धाम ।। १
पांच सखी मिलि पीव परसि कैं, आनंद ठामूं ठाम[3] ।। २
बिसरि गई दुख निरखि पिया कूं, सुफल मनोरथ काम ।। ३
मीरां के सुखसागर स्वामी,[4] भवन गवन कियो राम ।। ४

१७६–१ (उ); (पुजा. नाथू पू. से), (शब्दावली पृ. १९) ।
१ पा०–शब्दावली में आगे लिखा पाठ एक अन्तरे में विशेष है—
'उलटो ही तू आ जा' ।
१७७–२ (म); (राम स. गु.) ।
१७८–२ (म); (राम स. गु. पृ. १४१) ।
1 पा०-'आज' । 2 पा०-'अति' । 3 पा०-'पंच सखी मिलि परसि पियाकू आनँद आठूं जाम' । 4 पा०-'मीरां के प्रभु सुख के सागर' ।

पद–१७९

(विरह)

ज्यां संग मेरा न्याहा लगाया, वांको मैं धूँडने जाऊंगी । (टेर)
जोगन बन के बन बन धूँडूँ, आंग बभूत रमाऊंगी ।। १
गोकुल धूँडूँ मथुरा धूँडूँ धूँड फिरूं कुछ बसियां रे ।। २
मीरां दासी सरण जो आई, श्याम मिले तहाँ जाऊँ रे ।। ३

○

पद–१८० : राग : प्रभाती ताल–कहरवा

(प्रेम-रहस्य)

ज्याँरा चित चरणां से लागा, वे ही सवेरे जागा । (टेर)
पहले भूप भरतरी जागा, शहर उजीणी त्यागा ।
सुँण सुँण बचन साहब सतगुरु का, गोपीचंद उठ भागा ।। १
साहबसैन बलख रा राजा, बांण बिरह रा लागा ।
आठूँ पहर कबीरा जागा, मरण जीवण भय भागा ।। २
राणाँ रूस्याँ भय मोरे नाहीं, चित साहब से लागा ।
मीरांबाई तो शरणे आया, लोक लाज भय त्यागा ।। ३

○

पद–१८१

(भक्ति)

ज्यूँ अमली से अमल अधारा ।
यूँ रमैया प्राण हमारा । (टेर)
कोई निन्दै बन्दै दुख पावै ।
मौकूँ तो रमैयो भावै ।। १

१७९–सा०–(का./उ. २/२७७) ।
१८०–२ (म); (नंवनिधि कुँवरबाईजी से प्राप्त) ।
१८१–३ (क); (बं. पु. पृ. ४१) ।

पद–१८२ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(प्रेमोत्कंठा)

ज्यूँ जाणूँ ज्यूँ लीज्यो सजन सुध, ज्यूँ जाणूँ ज्यूँ लीज्यो । (टेर)
हूँ तो दासी जनम जनम की, कृपा रावरी कीज्यो[1] ।। १
ऊठत बैठत जागत सोवत, कबहुँक याद करीज्यो । २
आवत ज़ावत जीमत सोवत, सुपने दरस मोये दीज्यो ।। ३
मैं पतिबरता नार प्रभूजी, काहू तैं न पतीजो ।। ४
साँचो प्रेम प्रीत को नाँतो, ताही तैं तुम रीझो ।। ५
रात दिवस मोये ध्यान तिहारो, आय दरस मोये दीज्यो ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चित चरणाँ में लीज्यो ।। ७

○

पद–१८३ : राग–विहाग सोरठ वा कानड़ा शंकरा : ताल–रूपक वा चौताल

(भक्ति)

ज्यो चित ल्याय हरि जप करै, ज्यो मन लाय हरि जप करै ।
अमर होय मरे न कबहूँ, काल जासै डरै । (टेर)
भक्ति तो प्रहलाद की सी, साँच उर में धरै ।
भक्ति के बस स्यामसुंदर, सिंह को बपु धरै ।। १
कोटि बैरी तृण बराबर, कहा वाको करै ।
ओट जिनकी नन्दनन्दन, कौन तासे अरै ।। २
भक्ति को परताप ऐसो, कुटिल गनिका तरै ।
दास मीरां लाल गिरधर, शरण हरि की परै ।। ३

१८२–१ (उ); (दीना. मं. मी. प. ३९) ।
(देखो शब्दावली का पद 'म्हारी सुध ज्यूं जानें')

1 पा०–एक अंतरा अधिक ऐसा मिलता है–'तुम बिन मेरे और न कोऊ, कृपा रावरी कीजै' । बासर भूख न रैन न निद्रा, यह तन पल पल छीजै । मीरां के प्रभु गिरधर नागर अब, मिल बिछुडन नहिं कीजै' । (राम स. गु. १/७ पृ. २५-२६) ।

१८३–१ (उ); (मी. प. जमा. राम. १) ।

पद–१८४ : राग–दुर्गा, विभास : ताल–कहरवा

(संयोग)

झकोलो लाग्यो जी रंग गिरधर को आन । (टेर)
गिरधर गिरधर काईं करो, कोई गिरधर स्याम सुजाण ।। १
मीरां तो चंदा भई कोई, गिरधर ऊग्यो भान ।। २
ऊदाँ थे तो बावली कोई, नहचै कर ल्यौ ध्यान ।। ३
आपाँ दोन्यूं मिल भजाँ कोई, ज्यों गोप्यां बिच कान ।। ४
मीरां नै गिरधर मिल्या जी, भगताँ रो राख्यो मान ५

○

पद–१८५ : राग–काफी : ताल–जैत

(झूला और फाग-लीला)

झूलत राधा संग गिरधर झूलत राधा संग । (टेर)
अबीर गुलाल की धूम मचाई, डारत पिचकारी रंग ।। १
लाल भयो बृंदावन जमुना, केसर चुवत अनंग ।। २
नाचत ताल आधारे सुर सुंदरी, डारी डारी बाजे ताल मृदंग ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की बहुत उमंग ।। ४

○

पद–१८६ : राग–पीलू : ताल–कहरवा

(राणा संवाद—प्रार्थना—प्रत्यक्षानुभव)

डब्बा में सालगराम बोलत क्यों नहिंयाँ । (टेर)
हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहे को मौन धरैयाँ ।। १
यह भवसागर अगम भरी है, काढ लेहु गहि बैयाँ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम ही मोरे सैयाँ ।। ३

१८४–१ (उ.); (स्फुट पत्र) ।
१८५ (का. /उ.१ ३१०) ।
१८६–२ (म); (स. मा. मी. ली. १९) ।

पद–१८७

(विरह)

डार गयो री मनमोहन पासी । (टेर)
बिरह दुखारी मैं तो बन बन दौड़ी, प्राण तजूंगी लूंगी करवत कासी ।। १
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन की दासी ।। २

○

पद–१८८ : राग–देश : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

डारि गयो मनमोहन फाँसी । (टेर)
आँबा की डाल कोइलि इक बोलै,
मेरो मरण अरु जग केरी हाँसी ।। १
विरह की मारी मैं बन बन डोलूँ,
प्राण तजूँ करवत ल्यूँ कासी । २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी,
तुम मेरे ठाकुर मैं तेरी दासी ।। ३

○

पद–१८९ : राग–सोरठ वा तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विनय)

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर । (टेर)
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर ।। १
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर ।। २
तुम से हमकूं तो तुम ही हो, हम सी लाख करोर ।। ३
ऊभी ठाढ़ी अरज करत हूं, अरज करत भयो भोर ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, दूंगी प्राण अकोर ।। ५

१८७–२ (म); (का./उ. ३/३६९) ।
१८८–२ (म); ।
१८९–१ (उ. ट.); (राम स. गु. ५६) ।

पद–१९० : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विरह-उत्सुकता)

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़्या, अब मोहि क्यों तरसाओ । (टेर)
विरह-व्यथा लागी उर अन्दर, सो तुम आय बुझाओ ।। १
अब छोड़्यां नहिं बनै प्रभूजी, हँस कर तुरत बुलाओ ।। २
मीरां दासी जनम जनम की, अंग सूं अंग लगाओ ।। ३

○

पद–१९१ : राग–देश : ताल–कहरवा

(विनय)

तुम आज्योजी रामा, आवत आस्याँ स्यामा । (टेर)
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरै मनोरथ कामा ।। १
तुम विच हम बिच अंतर नाहीं, जैसें सूरज घामा । २
मीरां मनकों और न मानै, चाहे सुन्दर स्यामा ।। ३

○

पद–१९२ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(विरह)

तुम आवो हो कृपानिधान नाथ वेग ही[1] । (टेर)
मेरे मिंदर आये प्रभू निकसे कही ।
महल हूं न आये मैं दीदार देख ही[2] ।। १
मेरे मिंदर आये प्रभू निकसी क्यूं गये ।
दीन के दयालजी कठोर क्यूं भये ।। २
दीपक मेरै हाथ लियां बाट जोवती ।
रांमहू न आये सारी रैंणि रोवती ।। ३

१९०–१ (उ); (वं. पु. पृ. २०) ।
१९१–१ (उ ट.); (वं. पु.) ।
१९२–२ (म.); (राम स. गु. पृ. १६७) ।
1 पा०–'बेगदी' । 2 'देखदी' ।

पीया के दरस बिनां फिरूं डोलती[3] ।
मीरां तो तुम्हारी दासी रांम बोलती ।। ४

○

पद–१९३ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(सेवा, राजभोग)

तुम जीमो गिरधरलालजी । (टेर)
मीरां दासी अरज करै छै, जीमूं परम दयालजी ।
छप्पन भोग छतीसों बिंजन, पावो जन-प्रतिपाल जी ।। १
राजभोग अरोगो गिरधर, सन्मुख राख्यो थाल जी ।
मीरां दासी चरण उपासी, कीजे बेग निहाल जी ।

○

पद–१९४ : राग–सारंग वा टोडी : ताल–कहरवा
(सेवा, भोग)

तुम जीमो गिरधरलाल जू । (टेर)
मीरां दासी अरज करै छै, मोकूं करो निहालजू ।। १
या बिरियाँ है बालभोग की, लीज्यो चित में धार जू ।। २
केसर अतर पुष्प के हरवा, इण विध करो सिंगार जू ।। ३
छप्पनभोग छतीसों बिंजन, लाई भर भर थाल जू ।। ४
पान गिलोरी सुगँध मिला कर, कीनी है सब त्यार जू ।। ५
मीरां दासी किई परिक्रमा, मोकूँ करो निहाल जू ।। ६

○

१९२–3 'झूरती' ।
१९३–(उ.ट); (स. मा. मी. ली.) ।

पद–१९५ : राग–जौनपुरी टोडी : ताल–दीप्चंदी आसावरी

(विरह)

तुम देख्यां बिनि कल न परत है,
भली ए बुरी कोई लाख कहो जी (टेर)
नेह को पैंडो बोहोत कठण है,
च्यारि कही दस और कहो जी ।। १
मीरां प्रभु हरि अविनासी,
प्रीत करो तौ बोल सहो जी ।। २

○

पद–१९६ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

तुम विन मेरी कौन खबर ले, गोबरधन गिरिधारी । (टेर)
मोरमुकट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की छबि न्यारी ।। १
भरी सभा में द्रोपदि ठाढ़ी, राखो लाज हमारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ३

○

पद–१९७ : राग–कालँगड़ा : ताल–धमाल

(विनय)

तुम बिन स्याम सुने (गो) कौ (न) मेरी । (टेर)
ठाढ़ी खेवटणी अरज करत है, मलवा ने नाव पछिम को फेरी ।। १
नदिया गहरी नाव पुराणी, अअपर बोच भँवर ने घेरी ।। २
बोदी है प्रभु पार लगावो, डूब जाय तो कहा रहै तेरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुल को त्याग शरण लई तेरी ।। ४

१९५–२ (म.ट.); (राम स. गु. पृ. १३३) ।
१९६–२ (म); (बृ. भ. र. पृ. १७) ।
१९७–२ (म); (मी. प. जमा. राम. ४) ।

पद–१९८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताल

(विनय)

तुम ह्यां ही रहो राम रसिया,
थारी साँवरी सुरति (में) मन बसिया । (टेर)
क्यांनें तो रामजी घोड़ा सिणगारो, क्यांनें पाषर कसिया ।। १
चुण चुण कलियाँ सेज सँवारूँ, ऊपर गादी तकिया[1] ।। २
बोहोत दिना की पंथ निहारूँ, तुम आयाँ रंग रचिया ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चरणकमल मन बसिया ।। ४

○

पद–१९९ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विनय)

तुम सुनों दयाल म्हारी अरजी । (टेर)
भोसागर में बही जात हूँ, काढो तो थारी मरजी[1] ।। १
यो संसार सगो नहिं कोई, साँचा सगा रघुबरजी ।। २
मात पिता और कुटुँब कबीलो, सब मतलब का गरजी ।। ३
मीरां के प्रभु अरजी सुन ल्यो, चरण लगाओ गिरधरजी ।। ४

○

पद–२०० : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा

(लीला–वर्णन)

तुमसों तो मन लाग रह्यो तुम जागो मोहन प्यारे । (टेर)
भोर भई चिडियाँ चहचईं, कागा बोले कारे ।
कामनियों ने चीर सँभाले, घर घर खुले किंवारे ।। १

१९८–(म); राम स. गु. पृ० २२१) ।
१ नोट—एक अंतरा 'भजनमंजरी' में यह है—
'सिरै गाय का दूध मँगाया चावल गेसां भर पसिया' ।
१९९–२ (म.ट.); (वं. पु. पृ. २९) ।
1 पा०–'चरण लगाऊं थारी मरजी' ।

सारी गउएँ निकस गईं यमुना, लेकर संग लवारे।
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाड़े, दाँईदार तिहारे।। २
घर घर ग्वालन दही बिलोवें, कर कंगन झनकारे।
वस्तर भूषण तन पर धारो, पगियाँ पेच सँवारे।। ३
या व्रज के प्रभु भूषण तुम हो, तुम ही प्राण हमारे।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आमीं शरण तिहारे।। ४

○

पद—२०१ : राग—प्रभाती : ताल—तिताला, कहरवा
(निहोरा)

तुमसों मनवा लागि रह्यो, तुम जागो मोहन प्यारे। (टेर)
रजनी बीती भोर भई है, घर घर खुले दुवारे।
घर घर गोपी दही विलोवे, करै कञ्चन झुनकारे।। १
गउ बछरा सब बन कूं ध्याये, लारे लाग लवारे।
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाढ़े, दाँईदार तुमारे।। २
गंगा जागी जमुना जागी, जागे नदी और नाले।
धरती को राजा वासग जागे, तुम जागो मोहन प्यारे।। ३
बन में तो चिडियाँ चूंचाई, कव्वा बोल्या कारे।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सब संतन रिछपाले।। ४

○

पद—२०२ : राग—काफी : ताल कहरवा
(राणा संवाद)

तुलसाँ की माला हिवड़ै लागा जी (मेवाडा राणा)।
राम तणा गुण गास्याँ। (टेर)

२००—२ (म. म.)।
२०१—३ (क.); (पुजा. ना. थू. पु. से)।
२०२ (सा०) (स्फुट पद)।

लिख पत्तर राणू मीरां नै भेज्यो,
संग साधाँ से पिसतास्यो जी ।। १
लिखरे पत्तर मीरां राणाजी ने भेज्यो,
साधूड़ाँ रे सँग सुख पास्यां जी ।। २
विष रा पियाला राणाजी भेज्या,
पिवताँ पिवताँ म्हाँनै आवै हाँसी जी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
हरि चरणाँ में चित लास्याँ जी ।। ४

○

पद–२०३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(कथोपकथन-चरित)

(तू तो) सांवलडी गोरी नार, मारग बिच क्यों खड़ी । (टेर)
(मीरां) काँई थारी दूखै छै आँख, कै घर सास लड़ी ।। १
(मीरां) काँई थारो पीयो परदेस, सँदेसै यों खड़ी ।। २
(तू तो) चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे तो मेरी क्या रे पड़ी ।। ३
(तू तो) उड़ रे हरिया बन का सूवटा, उड़ रे द्वारिका में जाय,
साँवरिया ने कहियो ओळमा ।। ४
(मीरां) क्याँ पर लिखोला सलाम, क्यां पर तो करड़ा ओळमा ।। ५
सूआ, चूँचाँ पै लिखूं ली सलाम, पंखां पै करड़ा ओळमा ।। ६
मीरां, ग्यारस ने करो जी निरार, बारस ने खोलो पारनो ।। ७
मीरां, तेरस ने चालै दीनानाथ, चौदस ने हरि आ मिलै ।। ८
राणा, थे छो म्हारा झूँठा भरतार, साँचा छै श्रीहरि साँवरा ।। ९

○

---

२०३ (सा०) (का. ह. नं. १)

पद–२०४ : राग–आसा माड : ताल–कहरवा

(विरह चरित)

तू मत बरजे माइडी, साधाँ दरसण जाती ।
राम नाम हिरदे बसे, माहिले मन माती । (टेर)
माइ कहे सुन धीहडी, काहे गुण फूली ।
लोक सोवे सुख नींदड़ी, तूं क्यूं रैंणज भूली ।। १
गेली दुनियाँ बावली, ज्याँकूं राम न भावे ।
ज्याँरे हिरदे हरि बसे, त्याँकूं नींद न आवे ।। २
चोमासा की बावड़ी, ज्याँको नीर न पीजे ।
हरि नाळे अमृत झरे, ज्याँकी आस करीजे ।। ३
रूप सुरंगा रामजी, मुख निरखत जीजे ।
मीरां व्याकुल बिरहणी, हरि अपणी कर लीजे ।। ४

○

पद–२०५ : राग–माढ वा सोरठ : ताल–दादरा

(रहस्य प्रेम)

तेरा कोई नहि रोकणहार, मगन होय मीरां चली । (टेर)
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी ।
मान अपमान दोऊ धर पटकें, निकली हूँ ज्ञान गली ।। १
ऊँची अटरिया लाल किंवड़िया, निरगुण सेज बिछी ।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली ।। २
बाजूबंद कड़ूला सोहे, माँग सिंदूर भरी ।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हां, सोभा अधिक भली ।। ३
सेज सुखमणा मीरां सोवै, धन सुभ आज घरी ।
तुम जावो राणा घर अपने, मेरी तेरी नाहिं सरी ।। ४

○

२०४–१ (उ. ट.); (शब्दावली-मंजु.) ।
२०५–२ (म. ट.) (शब्दावली–मंजु.) ।

पद–२०६ : राग–भँझोटी : ताल–त्रिवट

(राणा सम्बन्धी दुविधा)

तेरा मेरा जियड़ा यक कैसे होय, राम । (टेर)
हमने कहा सुरझावन राणाँ, तुम जातें उरझाय, राम ।
हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तो जात मोहाय, राम ।। १
तेल जले तो जलती है बाती, दिवरा झलमल सोय, राम ।
जल गया तेल रु बुझ गई बाती, लच्चर लच्चर होय, राम ।। २
हमने कहा आँखिन का देखा, तुम कानों सुनि सोय, राम ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, होनहार सो होय, राम ।। ३

○

पद–२०७ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(छवि-वर्णन)

तेरे साँवरे मुख पर वारी वारी बलिहारी । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबर शोभे, कुण्डल की छवि न्यारी ।। १
वृन्दावन में धेनु चरावे, मुरली बजावत प्यारी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ३

○

पद–२०८ : राग–अडाणा : ताल–तिताला

(उपालंभ)

तेरो कान्ह कालो माई, मेरी राधा गोरी । (टेर)
ऐसी राधे रूप बनी, कंचन-सी देह ठनी,
ऐसे काले कान्ह पर, कोटी राधे वारी ।। १
गोकुल उजाड़ दीनी, मथुरा बसाय लीनी,
कुबजा कूँ राज दीनों, राधे कूँ बिसारी ।। २

२०६–२ (म.) (आ. सा. १ भाग पृ. १३७) ।
२०७–२ (म.) ।
२०८– (का. उ. १।३१३) ।

विनती सुनो ब्रजराय, लागूँगी तुम्हारे पाय,
मीरां प्रभू सूँ कहियो जाय, सेवक तुम्हारी ।। ३

○

पद–२०९ : राग–कालँगडा : ताल–कहरवा

(रहस्य)

तेरो मरम नाहिं पायो, रे जोगी (टेर)
आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो ।। १
गल बिच सेली हाथ हाजिरियो, अंग बिभूति रमायो ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, भाग लिख्यो सोही पायो ।। ३

○

पद–२१० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

तैं दरद नहिं जान्यूं, सुनि रै बैद अनारी। (टेर)
तू जा बैद घर आपणैं रे, तुझे खबर मोरी नांहीं ।
मोरे दरद को तू मरम न जांणैं, करक कलेजा रै मांहीं ।। १
प्रांण जांण का सोच नहीं मोहि, नाथ दरस द्यौ आरी ।
तुम दरसण बिनि जीव यूं तरसै, ज्यूँ जल बिनि पनवारी ।। २
कहा कहूं कछु कहत न आवै, सुणिज्यौ आप मुरारी ।
मीरां के प्रभु कब 'र मिलोगे, जनम जनम की मैं थारी ।। ३

○

पद–२११

(प्रेम-लीला)

तैं मेरी गैंद चुराई, गुवालन । (टेर)

२०९–२ (म.) (मंजु. ६५) ।
२१०–२ (म.) (राम स. गु. पृ. ३४९) ।

अबही आन परी तेरे अंगना, अंगियाँ बीच छुपाई ।। १
ग्वाल बाल सब मिल कर आये, झगरत झोंका आई[1] ।। २
सांचे कनैया झूंठ मत बोलो, जाँण पड़ी चतुराँई[2] ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलि जाई ।। ४

○

पद—२१२ : राग—माढ : ताल—दादरा

(प्रेम-लीला)

तोती मैना राधा कृष्ना बोल । राधे कृष्ना बोल । (टेर)
एक हि तोती ढूंडत आई, लटक दिवानी मोल ।। १
दाना खावै तोती पानी पीवै, पिंजरे में करत कलोल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि के चरण चित डोल ।। ३

○

पद—२१३ : राग—कामोद : ताल—दीपचंदी

(विरह)

तोसों लाग्यो नेहरा, (तू) नागर नन्दकुमार ।
मुरली तेरी मन हरचौ, बिसरचौ घर ब्यौहार । (टेर)
जब तें स्रवननि धुनि परी, घर अँगना न सुहाइ ।
पारधि ज्यूँ चूके नहीं, मृग बेधि दई आइ ।। १
पानी पीर न जानई, मीन तलफि मरि जाइ ।
रसिक मधुप के मरम कों, नहिं समुझत कमल सुभाइ ।। २

२११-(सा.) (का. ।३०२।३५९) ।
1 पा. ग्वाल बाल सब ढूढ़न लागे, एक गई दो पाई' ।
2 पा. 'छूट पड़ी चतराई' ।
यह पद 'भजन रत्नावली' मोटी के पृष्ठ १६१ पर है । थोड़ा अंतरों में भेद है—सं. ।
२१२–३ (क.)
२१३–२ (म.); (राम स. गुटका से) ।

दीपक को जु दया नहीं, उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीरां प्रभु गिरधर मिले, (जैसे) पाणी मिल गयो रंग ।। ३

○

पद–२१४ : राग–अलैया : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

तोसों लाग्यो नेह रे प्यारे नंदकुमार ।
मुरली तेरी मन हरचो, बिसरचो घर ब्यौहार । (टेर)
जब तें श्रवननि धुनि परी, घर अँगणा न सुहाय ।
पारधि ज्यूं चूकै नहीं, मृगी बेधि दइ आय ।। १
पानी पीड़ न जानई ज्यूं मीन तड़फ मरि जाय ।
रसिक मधुप के मरम को नहिं समझत कमल सुभाय ।। २
दीपक को तो दया नहिं उड़ि उड़ि मरत पतंग ।
मीरां प्रभु गिरधर मिले जैसे पाणी मिलि गयो रंग ।। ३

○

पद–२१५ : राग–सारंग : ताल–तिताला

(विनय)

तोरी साँवरी सूरत नंदलालाजी । (टेर)
जमुना रे तीर तीर धेनु चरावत, काली कामलीवालाजी ।। १
मोर मुकुट पीताँबर सोहे, कुंडल झलकत लालाजी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भकतन के प्रतिपालाजी ।। ३

○

२१४–१ (उ.); (भजन सं. भा. ३ । पृ. ७९ । पद ७७ । ५वां सं.) ।
२१५– (कां. उ. १।३०३) ।

पद–२१६ : राग–सोरठ : ताल–इकताला

(उलाहना)

थाँकै दासी ही मनमानी, म्हांसैं अनबोलणा म्हाराज । (टेर)
हमकूँ कहै सिंगार उतारो, दृग अँजन सबही धो डारो ।
माँथे तिलक लगाओ, पहरो चोलणाँ म्हाराज ।। १
कुबज्या कँवर कंस की दासी, ज्याँ देख्याँ मोये आवत हाँसी ।
ज्यो पटराणी कीनी हँस बोलणाँ म्हाराज ।। २
कुबज्या के सँग भोग बणायो, हमको लिख कर जोग पठायो ।
मीरां भई दिवानी बन बन डोलणाँ म्हाराज ।। ३

○

पद–२१७ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(चरित्र–-ऊदां व मीरां संवाद)

(ऊदाँ) थाँने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानों बात हमारी । (टेर)
राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधाँ में मत जारी ।
कुलकै दाग लगै छै भाभी, निन्दा हो रहि भारी ।। १
साधाँ रे संग बन वन भटको, लाज गुमाई सारी ।
बड़ाँ घराँ थे जनम लियो छै, नाँचो दे दे तारी ।। २
वर पायो हिंदवाणो सूरज, थे कई मन में धारी ।
मीराँ गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ।। ३
(मीरां) मेरी बात नहीं जग छानी, ऊदाँबाई समझो सुघर सयानी ।
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी ।। ४
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूँ बानी ।
राणा नैं समझावो जावो, मैं तो बात न मानी ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर सन्तां हाथ बिकानी ।।
(ऊदाँ) भाभी बोलो बचन बिचारी
साधां की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ।

२१६–(उ.ट.) (स्फुट) ।
२१७–१ (उ.ट.); (शब्दावली) ।

छापा तिलक गलहार उतारो, पहरो हार हजारी ।। ६
रतन जड़ित पहरो आभूषण, भोगो भोग अपारी ।
मीरांजी थे चलो महल में, थांनैं सोगन म्हारी ।। ७
(मीरां) भावभगत भूषण सजे, सील संतोष सिंगार ।
ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधरजी भरतार ।। ८
ऊदांबाई मन समझ, जावो अपने धाम ।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूँ काम ।। ९

○

पद–२१८ : राग–माढ़ : ताल–कहरवा
(उत्सुकता)

थाँनै काँई काँई कह समझाऊँ म्हारा बाल्हा गिरधारी । (टेर)
पूरब जनम की प्रीति हमारी, अब नहीं जात निबारी ।। १
सुंदर बदन जोवते सजनी, प्रीति भई है भारी ।। २
म्हारै घराँ पधारो गिरिधर, मंगल गावै नारी ।। ३
मोती चोक पुराऊँ बाल्हा, तन मन तो पर वारी ।। ४
म्हारो सगपन तोसूँ साँवलिया, जग से नहीं बिचारी ।। ५
चरण शरण है दासी तोरी, पलक न कीजे न्यारी ।। ६
मीरां कहै गोपिन कों बाला, हमसूं भये ब्रह्मचारी ।। ७

○

पद–२१९ : राग–टोडी जोनपुरी : ताल–धीमा तिनाला
(उत्सुकता)

थाँरी छूँ रमईआ मोसूँ नेह निभावौ[1] । (टेर)
थाँरे कारण सब सुख छोड़्या, (अब) क्यूँ हमकूँ तरसावौ ।। १
बिरह बिथा लागी उर अंदर, सो तुम आय बुझावौ ।। २

२१८–१ (उ.); (बं. पु. पृ. २३) ।
२१९–१ (उ. ट.); राम स. गु. पृ. ३००) ।
1 पा०–'थारा छाँ' । 'म्हांसूं' ।

अब छोड़याँ नाहीं बणैं प्रभूजी, हँस कर तुरत बुलावौ ।। ३
मीरां दासी जनम जनम की, अग सूं अंग लगावौ ।। ४

○

पद–२२० : राग–सिंध भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(छवि-वर्णन)

थारी छवि प्यारी लागै राज, राधावर महाराज । (टेर)
रतनजटित सिरपेच कलंगी, केसरियाँ सब साज ।। १
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, रसिकाँ रा सिरताज ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, म्हाँने मिलग्या ब्रजराज ।। ३

○

पद–२२१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा
(प्रेम)

थारी बोली लागे म्हांने मीठी हो म्हारा साँवरिया । (टेर)
थे तो साँवरिया म्हारा सिरका जी सेवरा,
मैं थारे हाथ की अँगूठी ।। १
कुंजगली में म्हाँनें मोहन मिलिया,
किस विध फिरूं अपूठी ।। २
सास बुरी म्हारी ननद हठीली,
जलबल होयजाय अँगीठी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
भेजी मरम की चीठी ।। ४

○

२२०–१ (उ.); (या०–सं. रा. क. से) ।

पद–२२२ : राग–देस : ताल–कहरवा

(उलाहना)

थारे कुबजा ही मन मानी म्हाँसूं अनबोलना हो राज । (टेर)
हमसे कहै सुहाग उतारो, दृग अञ्जन सब ही धो डारो ।
माँथे तिलक चढावो, पहरो चोलना हो राज ।। १
हमरी कही विषै सम लागै, घर घर जाय भँवर रस पागै ।
उनही के सँग रहना, हँसना बोलना हो राज ।। २
बृन्दावन में धेनु चरावें, बंसी में कछु अचरज गावें ।
बाँकी तान सुनावें, छतियाँ छोलना हो राज ।। ३
हमरी प्रीत तुम्ही सँग लागी, लोकलाज सब कुल की त्यागी ।
मीरां के प्रभु गिरधर, बन वन डोलना हो राज ।। ४

○

पद–२२३ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

थारे रंग रीझी रसिक गोपाल[1] । (टेर)
निसवासर मैं रटूं निरंतर, दरसण द्यो नंदलाल ।। १
सो पतिव्रत टरै जिन टारचो, मति बिसरो नंदलाल[2] ।। २
कोउ कहै नंदो कोउ कहै बंदो, चलां भावती चाल ।। ३
सो मध भक्ति करो जिन साधो, म्हारो मणि उरमाल ।। ४
प्रेम भरी मीराँ जिन गरवै[3], हिरदै गिरधरलाल ।। ५

○

पद–२२४ : राग–प्रभाती : ताल–धीमा तिताला

(प्रेमोत्सुकता)

थे तो पलक उघाडो दीनानाथ, मैं हाजिर (नाजिर) कद की खडी । (टेर)

२२२–१ (उ. ट.); (स. मा. मी. ली. २४)
२२३–१ (उ ट.); (मी. ली. प. दूधू । ११) (मा. ह. ना. जी की पु०)
1 पा०–'थारे गुण' । 2 पा०–'हिरदै गिरधरलाल' 3 पा०–'गरजै' ।

साजनिया दुसमन होय बैठ्या, सब नें लगूं कड़ी[1] ।
तुम बिन साजन कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी समंद अड़ी ।। १
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदरा, सूकूं खड़ी खड़ी ।
बान बिरह का लग्या हिये में, भूलूं न एक घड़ी ।। २
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीरां में कहिये, सौ पर एक घडी[2] ।। ३

○

पद–२२५ : राग–कालँगड़ा : ताल–धीमा तिताला
(विनय)

थे म्हारै घर आज्यो जी, प्रीतम प्यारा । (टेर)
मो निगुणी में गुण नहिं एको, थेही बकसणहारा ।। १
तन मन धन न्यौछावर करस्यां, जतन करां म्हे थारा ।। २
मीरां को प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिन प्राण दुख्यारा ।। ३

○

पद–२२६ : राग–माढ : ताल–कहरवा
(पराभक्ति रहस्य)

थोड़ी थोड़ी पावो गिरधारीजी भोली[1] म्हांने आवै । (टेर)
नंदन बन सूं बूंटी आई, जोग ध्यान दरसावै ।
या बूंटी दुरलभ देवन कों, सेस सहसमुख गावै ।। १
शिव बिरंचि जाको ध्यान धरत हैं, वेद पुराण सुनावै ।
मीरां तो गिरधर रंग राची, भक्ति पदारथ पावै ।। २

२२४–१ (उ. ट.)
1 पा०–'थे' के स्थान में 'तुम' । 'साजथें' 'साजनिया' के स्थान में ।
2 पा०–यहां एक अन्तरा विशेष है –'गुरु रैदास मिले मोहि पूरे, धुर से कलम भिड़ी । सतगुरु सेन दिई तब आ के, जोत में जोत रली ।' (सं०)
२२५–१ (उ. ट.); (स. मा. मी. ली. ११), (दीना. मं. मी. प. १९) ।
२२६–१ (उ. ट); (स. मा. मी. ली. १४) ।
1 पा०–'आवै-चढ़ै' ।

पद–२२७ : राग–माढ़ : ताल–रूपक
(चरित)

द्वारिका को बास हो मोहि द्वारिका को बास। (टेर)
संख चक्र हुं गदा पद्म हूं, ते मिटै जम त्रास ।। १
सकल तीरथ गोमती में करत निवास ।। २
शंख झालरि झाँझ बाजे, सदा सुख की रास ।। ३
तज्यो देसौ वेस पति गृह, तज्यो सम्पति राजि ।। ४
दासि मीरां सरन आई, तुम्हें अब सब लाजि ।। ५

○

पद–२२८ : राग–खमाच विहाग : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

दरस विन दूखन लागे नैन। (टेर)
जबसे तुम बिछुड़े मोरे प्रभुजी[1], कबहु न पायो चैन ।। १
शब्द सुनत मेरी छतियाँ कंपै, मीठे लागे (तुम) बैन ।। २
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छ मासी रैन ।। ३
विरह विथा कासूं कहुँ सजनी, वह गई करवत ऐन ।। ४
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन ।। ५

○

पद–२२९ : राग–खमाच विहाग : ताल–धीमा तिताला
(विरह)

दरस बिन दूखन लागे नैन। (टेर)
पिया मिलन की है मन मांही, कल न पड़त दिन रैन ।। १
कबहु मिलैंगे प्रीतम प्यारे, अधर धरे मृदु बैन ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिन देखे नहिं चैन ।। ३

२२७–२ (म.); मीरांबा. जी च. (१८ द) पृ. २४)।
२२८–१ (उ. ट.); (बं पु. पृ. १५)।
1 पाठा० 'सांई'।
२२९–१ (उ.); (मा. ह. की पु. ह.)

पद–२३० : राग–सिन्ध : ताल–कहरवा

(लीला)

दसियो मोहन किस दानी । (टेर)
आवँदा जावँदा नजर न आवै, अजब तमाशा इस दानी ।। १
दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी, लोभी यह गोरस दानी ।। २
मात यशोदा दही बिलोवै, गोरस ले ले नसदानी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, लूं लूं दे विच रसदानी ।। ४

○

पद–२३१ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(सँदेशा)

दासी म्हारा म्हारूड़ा[1] मारुजी से कहना ।
मोय नींद न आवे नैना ।। (टेर)
जे मेरा गोबिंद दूर बसत है, मोय सँदेशो देना ।। १
जे मेरा गोबिंद गाली देवे, सनक सनक सुन लेना ।। २
जे मेरा गोबिंद वैन बजावै, प्रेम मगन होय कहना ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरन कमल चित देना ।। ४

○

२३०–२ (म.); (बृ. रा. र. पृ. ५१८) ।
२३१–२ (म.); भ. मं. पृ. १५८) ।

1 'म्हारूड़ा' के स्थान में स्यात 'मुजरा' होगा, लिपि-दोष से अथवा अन्य किसी दोष से अपभ्रंश हुआ ज्ञात होता है ।

पद–२३२ : राग–माढ़ : ताल–रूपक

(चरित्र)

दीज्यो म्हानैं द्वारिका को बास, रूडा रणछोडजी हो । (टेर)
सुथान बासो नाम हरि को, झालरिये[1] झुणकार ।
सकल तीरथ गोमती रे बाला, साँवरियो सिरदार ।। १
पपैया नैं मेघ प्यारो, मांछली मध नीर ।
म्हांनैं[2] तो गिरधर हि प्यारो, छांड्यो जगत सूँ सीर ।। २
तजियो पीहर सासरो, तजियो सह उपहास ।
राणाजी रो बास तजियो, राखो रावल बास[3] ।। ३
मथुरा[4] में हरि जनमिया जी, कियो द्वारिका बास ।
सहँस गोप्यांरो बालमो, गावै मीरां दास ।। ४

○

पद–२३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(मान)

दूरो रह रे कँवर नंदना रे, परो रह रे कँवर नंदना रे । (टेर)
कारी कामरी वारा तुमैं कानजी ओ ।
थे तो रीज्या रीज्या सालूड़ा री कोर (जी) पे ओ ।। १
गज मोत्याँ वारी राणी राधिकाजी रे ।
श्री राधा गोरी जी ज्याँको नाम छै रे ।। २
बाला हात जोड़ी ने कराँ बीनती रे ।
म्हारो अबला को खयोड़ो जादू मानजो रे ।। ३
मीरां मेड़तणी रा म्हैलां उमाड्या रे ।
वै तो रीज्या रीज्या साधूड़ां रा साथ में रे ।। ४

२३२–३ (क.) ।
1 पा०–'जिनरो मोज न पार' ।
2 पा०–'म्हांनै तो म्हारो साहिब प्यारो, छांडयो जगत को आस' ।
3 पा०–'पास' ।
4 पा०–'गोकुल के प्रभु मथुरा आये, भये द्वारका बास' ।
२३३–३ (क.) ।

पद–२३४ : राग–रेखता : ताल–कहरवा

(विरह)

देख्या कोई नंद के लाला, बता द्यौ बंसरी वाला । (टेर)
मेरो मन ले गयो हेली, लगी तन में तालाबेली । १
लगी कोई कान में दूती, तजी मोहि सेज में सूती ।
बिरह का बाण भर मारया, कलेजा छेद कर डारया ।। २
देख्यां विन जीव अति तरसै, नैनों में नीर अति बरसै ।
जहां ऊ कान्ह कारो री, मुझे ले जाय डारो री ।। ३
तज्या सब षांन पानी री, नहीं मेरी पीड़ जानी री ।
मोहन मोहन पुकारूं री, सोवन सिर केस सँवारूं री ।। ४
ढूंढ्या बन बाग सारा री, मिल्या नहीं प्राणप्यारा री ।
हेली हरिजन मिलावौ री, मीरां के प्राण बचावौ री ।। ५

○

पद–२३५ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(चरित)

देखत राम हँसे सुदामाँ कूं देखत राम हँसे । (टेर)
फाटी तो फुलडियां पांव उभाणे, चलतें चरण घसे ।। १
बालपणे का मित सुदामा, अब क्यों दूर बसे ।। २
कहा भावज ने भेट पठाई, ताँदुल तीन पसे ।।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरां मोती लाल कसे ।। ४
कित गई प्रभु मोरो गउ अरु बछिया, द्वारों बिच हस्ती फसे ।। ५
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, सरणैं तोरे बसे ।। ६

○

२३४–३ (क); (राम स. गु. पृ. २९२) ।
२३५–३ (क.) ।

पद–२३६ : राग–मलार : ताल–कहरवा

(प्रेमानन्द)

देखी बरषा की सरसाई, मोरे पियाजी की मन में आई । (टेर)
नन्ही नन्ही बूँदन बरसन लाग्यो, दामिन दमकै झर लाई ।। १
स्याम घटा उमडी चहुं दिस से, बोलत मोर सुहाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आनँद मंगल गाई ।। ३

○

पद–२३७ : राग–बिहाग, सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

देखो सइयाँ हरि मन काठो कीयो । (टेर)
आवन कह गयो अजहुँ न आयो, करि-करि बचन गयो ।। १
खांन पांन सुध बुध सब बिसरचा, कैसे करि न जियो ।। २
बचन तुम्हारे तुम हि बिसारो, मन मेरो हरि लियो ।। ३
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, तुम बिन फटत हियो ।। ४

○

पद–२३८ : राग–देस : ताल–कहरवा

(प्रेम)

देरी अब माई म्हांको गिरधरलाल । (टेर)
प्यारे चरन की आन करत हूँ, और न लूँ मनि माल ।। १
नातो सगो परिवारो सारो, मने लगे ज्यों काल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनलाल की, छबि लखि भई निहाल ।। ३

○

२३६–१ (म.) ।
२३७–१ (उ.); (वं. पु. पृ. ५) ।
२३८ (ट.); (स. मा. मी. ली. २) ।

पद–२३६ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(भक्ति दृढ़ता)

धत्ताँ लग्यो हे माय, राम रंग धत्ताँ लग्यो । (टेर)
किण विध कहूँ कहण नहिं आवै, रह्यो[1] घुमाय घुमाय ।। १
गुरु प्रताप साधाँ री संगत, हरिजन मिलिया आय ।। २
किरपा[2] करो तो प्रभु ऐसी कीज्यो, दूजी नाँहि सुहाय ।। ३
राणाँजी विष रो प्यालो भेज्यो, म्हे सिर लियो चढ़ाय ।। ४
चरणामृत को नाम ज लीन्हो, पी गी प्रेम अघाय[3] ।। ५
पीवत ही अति चढ़ी खुमारी, रह गई कहत लुभाय ।। ६
जिन मीरां मतवारी कीन्ही, पूरब जनम के भाय ।। ७

○

पद–२४० : राग–आसावरी : ताल–कहरवा

(ज्ञान-प्राप्ति)

धन आज की घरी, सतसंग में परी । (टेर)
श्रीमद्भागोत श्रवण सुनो, रसना रटत हरी ।।
मन डूबत लीलासागर में, देही प्रीती धरी ।। २
गुरु संतन की सोहनि सूरति, उर बिचि आइ अरी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, सरणै राखि हरी ।। ४

○

२३९–(उ. ट); (दीना. मं. मी. प. २४) (मी. ली. प. दूधू १०)
(देखो—'योतो रंग धत्ताँ लाग्यो हे माय')

1 पा.—'चढ्यो' ।
2 पा.—'कृपा करी मोही अपणाई, सब दुख दियो मिटाय
3 पा.—'बढ़ाय' ।
4 पा.—'अब थिर रह्यो न जाय' ।

२४०–१ (उ.ट.); (क.ब. ११) ।

पद–२४१ : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(प्रेम जोगी संवाद)

धूतारा जोगी एका सूँ हँसि बोल । (टेर)
जगत विदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल ।। १
अंग बिभूति गले मृगछाला, तू जन गुढियाँ खोल ।। २
बदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल ।। ३
सेली नाद विभूति न बटवा, अजूं मुनी मुख खोल ।। ४
चढ़ती वैस नैंण अणियारे, तूँ घरि घरि मत डोल ।। ५
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, चेरि भई बिन मोल ।। ६

○

पद–२४२ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(प्रेम)

नंद को बिहारी म्हारे हिवड़े बस्यो छै । (टेर)
कटि पर लाल काछनी काछे, हीरा मोती वालो मुकुट धरचो छं ।। १
गहि रह्यो डाल कदम की ठाडो, मोहन मो तन हेरि हरचो छे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निरखि दृगन में नीर भरचो छे ।। ३

○

पद–२४३ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

नंदजी के लाला ठाडी ब्रजबाला दरसन दीजिये । (टेर)
ब्रजबाला बिनती करे, सुनियो स्याम पुकार ।
बिन दरसन फीको लगै, सबही हार सिंगार ।। १
सुन्दर स्याम मनोहर मूरत, शोभा अधिक अपार ।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल, गल पुष्पन को हार ।। २

२४१–२ (म.) ।
२४२–१.(उ); (या०—प्रति सं. ३८६।४८)
२४३–१ (उ.); (पुजा. नाथू. पु. से) ।

शिव सनकादिक गन्धर्व गावै, कर रहे वेद पुकार ।
शेष सहसमुख रटत रात दिन, कोऽयन पावे पार ।। ३
नाम अनन्त नहिं आवै, हो सब के करतार ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुमरे ही आधार ।। ४

○

पद–२४४ : राग–खमाच : ताल–तिताला
(बधाई और आनन्द)

नंदजी रे आज वधावनो छै । (टेर)
गहमह हुई रंग रावल मैं, निरखि नैना पावनो छै ।। १
भाभीजी म्हे थाँसूँ पूछाँ, आजि रो द्योस सुहावनो छै ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर जनमिया, हुवो मनोरथ भावनो छै ।। ३

○

पद–२४५ : राग–मल्हार : ताल–तिताला
(विरह)

नंद नंदन विलमाई, बदरा ने घेरी माई । (टेर)
इत घन गरजे उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ।। १
उमड घुमड चहुँ दिस से आये, पवन चले पुरवाई ।। २
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल शब्द सुनाई ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चितलाई ।। ४

○

पद–२४६ : राग–आसावरी, भैरवी : ताल–तिताला
(अनन्य भक्ति)

नंद नंदन सूं मन मान्यौ मेरो, कहा करैगौ कोय री । (टेर)
अब तो चरणकमल रुचि बाढ़ी, जो भावै सोई होय री ।। १

२४४–२ (म.); (ब्रजनि. ग्रन्था. पृ. २३३) ।
२४५–१ (उ.) ।

पिता रसाय माय घर मारै, हँसै बटाऊ लोग री ।
अब तो जिय ऐसी बनि आई, विधना रची सोइ होय री ।। २
अरी जै मेरौ यह लोक जात है, वह परलोक जिन जाव री ।। ३
पिय अपने कूं तऊ न छांडूं, मिलूं निसान बजाय री ।। ४
बहुरि कहां यह तन धर पैहौं, बालम भये मुरार री ।
मीरां के प्रभु गिरधर के ऊपर, सरबस डारूं वार री ।। ५

○

पद–२४७ : राग–मांझ वा देश : ताल–तिताला

(भक्ति-दृढ़ता)

न भावै थारो देसड़लो (जी) रूड़ो रूड़ो[1] । (टेर)
हरि की भगति करै नहिं कोई, लोग[2] बसे सब कूड़ो ।। १
माँग और पाटी उतार धरूंगी, ना[3] पहिरूं कर चूड़ो[4] ।। २
मीरां हठीली कहे संतन सों, बर[5] पायो छै मैं पूरो ।। ३

○

पद–२४८ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(स्तुति)

नमो नमो तुलसी महारानी, नमो नमो हरि की पटरानी । (टेर)
जाके दरस परस अघ नासे, महिमा वेद पुराण बखानी ।। १
साखा पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति चरण कमल लपटानी ।। २
धन तुलसी पूरब तप कीन्हां, सालिगराम भई मनमानी ।। ३
छप्पन भोग धरे हरि आगे, बिन तुलसी प्रभु एक न मानी ।। ४

२४७–१ (उ.); (अ. सा. भा. १ पृ. १३५) ।
1 पा०—'लगे छै मन रूड़ो' ।
2 पा०—'राणाजी के देश भगति नहिं भावै' ।
3 पा०—'पाटी न पारूँ माँग नाँ सँवारूँ' ।
4 पा०—'नाँ बाँधूं सिर जूड़ो' ।
5 पा०—'मीराँ के प्रभु गिरधरनागर' ।
२४८–२ (म.); (मीराँबाई के भजन नं० १४) ।

धूप दीप नैवैद्य आरती, पुष्पन की बरषा बरषानी ।। ५
प्रेम प्रीति करि हरि बस कीन्हें, साँवरी सूरत हृदै समानी ।। ६
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, खोजत फिरें महा मुनि ज्ञानी ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्ति दान दीजे महारानी ।। ८

○

पद–२४६ : राग–सोरठ : ताल–रूपक
(चेतावनी)

नहिं ऐसो जन्म बारम्बार ।
क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानुषा अवतार । (टेर)
बढ़त पल पल घटत छिन छिन, चलत न लागे बार ।
बिरछ के ज्यों पात टूटें, लगे नहिं पुनि डार ।। १
भवसागर अति जोर कहिये, विषम ओखी धार ।
सुरत का नर बाँध बेड़ा, बेग उतरो पार ।। २
साधु सन्ता ते गहन्ता, चलत करत पुकार ।
दासी मीरां लाल गिरधर, जीवना दिन चार ।। ३

○

पद–२५० : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला
(लीला)

नहिं तेरी बरजोरी राधे, नहिं तेरी बरजोरी । (टेर)
जमुना के नीराँ तीराँ धेनु चरावै, छीनि लिई बंसी तोरी ।। १
सब गोपन हस खेलन वैठे, तुम रहत करि चोरी ।। २
हम नहिं चलें तुमारे घरन को, तुम हो बहुत लबारी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारी ।। ४

○

२४९–३ (म.)
२५०–(का.।उ. २।३३९) ।

पद–२५१ राग–खमाच वा सोरठ वा काफी वा माड : ताल–कहरवा

(अनन्य भक्ति रहस्य)

नहीं जाऊँ सासरै माई, म्हाँने मिलिया छै सिरजणहार । (टेर)
सासू हरि सुमरना रै सुसरो परम संतोष,
जेठ जुगांरो राजवी रै पीव रह्यौ निरदोष ।। १
देवर कै दोइ डीकरी रै दोन्यौं ही राजकुमारि,
एकैं सब जग मोहियौ रै एक रही ब्रह्मचारि ।। २
लख चौरासी चूड़लो रै बाला पहर्‌यो पियाज़ीरै काज,
बाँह पकड़ि हरि लैचल्या मोहि दीनों छै अविचल राज ।। ३
साधाँ मैं म्हारो सासरो रै पीया को बैकुंठाँ में बास,
फेरि न कल मैं आवस्याँजी यूँ गावै छै मीरां दास ।। ४

○

पद–२५२ : राग–विलावल : ताल–कहरवा

(महिमा)

नागरनंदा रे मुकुट पर वारी जाऊं, नागरनंदा । (टेर)
बनस्पती में तुलसी बड़ी है, नदियन में श्रीगंगा ।। १
सब देवन में शिवजी बड़े हैं, तारन में बड़ा चंदा ।। २
सब भक्त में भरथरी बड़े हैं, शरण राखो गोविन्दा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित फंदा ।। ४

○

पद–२५३ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(बिरह)

नातो हरिनाम को मोसूँ तनक न तोड्यो जाइ । (टेर)

२५१–१ (उ.ट.); (क. ब. ८) ।
२५२– (का० ३।१३२) ।
नोट–ऐसा पद 'चन्द्रसखी' का वृ० रा० र० में 'मुकुट पर वारी जाऊं, नागरनंदा' इस टेर से है, पृ. २०४ । अंतरों में थोड़ा अंतर है । सं०

पीया कांज पीरी पडी री, लोग कहैं पँडु रोग।
छानै लाँघन मैं किया री, सजनी राम मिलन के जोग ।। १
खिण आँगण खिण डागलै रे, (बाला) खिण खिण ऊभी होइ।
घाइल ज्यूं घूमत फिरूँ री, म्हारो मरम न जाँणैं कोइ ।। २
बाबल बैद बुलाइया, म्हारी पकड दिखाई बाँहिं।
मूरख बैद न जानईं, म्हारे करक कलेजा माँहिं ।। ३
जा जा बैद घर आपणें रे, म्हारो तू नाम न लेहि।
मैं तो दाधी बिरहकी रे, तू काँईं देखै देहि ।। ४
रे रे पापी पपीहरा रे, पिया को नाम न लेहि।
कोइक बिरहनि साम्हलै रे, तो पीव कारण जीव देहि ।। ५
काढ़ि करेजो मैं धरूँ रे, उड़ि कागा (कौवा) ले जाइ।
ज्याँ देसाँ म्हारो पी बसै रे, वै देखैं तू खाइ ।। ६
पीव मिल्याँ जीऊँ खरी रे, नाँतर तजिहूँ देह।
दासी मीराँ राम राती, हरि बिन किसो सनेह ।। ७

○

पद–२५४ : राग–सोरठ हुजाज

(विनय)

नाथ तुम जानत हो सब घट की, मीरां भक्ति करै सटपट की। (टेर)
राम मंदिर में मीरांजी नाँचै, ताल बजावै और चिटकी ।। १
बिषरा पियाला राणाँजी भेज्या,……………।। २
कर चरणामत पीगई मीरां, कर अमरत की गुटकी ।। ३

○

पद–२५५ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विनय)

निजर भर न्हालो, नाथजी, हूं तो थारै चरणांरी दासी। (टेर)

२५३–१ (उ.); (क. ब. १०)।
२५४–३ (क.); (मी. प. जमा राम.)।

मैं अबला तुम सबला स्वामी, नहीं मिलण कौ टालौ रे।
फूँक फूँक पग धरूँ धरणि पर, मती लगाज्यौ कोई कालौ रे ।। १
आप तो जाइ द्वारिका छाये, हमसूँ दे गया टालौ रे।
वालपणे की बाल सनेही, प्रीतिबचन प्रतिपालौ रे ।। २
च्यारि महीनाँ आयौ सीयालो, च्यार महीना ऊन्हालौ रे।
कृपा कर म्हाँनैं दरसण दीज्यौ, अब ऋतु आयौ बरसालौ रे ।। ३
सब जग म्हारी निन्दा करत है, कीन्हूँ मूँढौ कालौ रे।
सरण तुम्हारी लई साँवरा, तुम भी दियो छैं म्हाँसूं टालौ रे ।। ४
म्हारा घर में भयो अँधारौ, आँण करौ उजियालौ रे।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, विरह अगनि मति जालौ रे ।। ५

○

पद–२५६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(रूप-वर्णन)

निपट बंकट छवि नैना अटके। (टेर)
देखत रूप मदनमोहन को, पियत पियूष न मटके ।। १
वारिज भवाँ अलक टेढी मानो, अति सुगंध रस अटके ।। २
टेढी कटि टेढी कर मुरली, टेढी पाग लर लटके ।। ३
मीरां प्रभु के रूप लुभानी, गिरिधरनागर नटके ।। ४

○

पद–२५७ : राग–नट : ताल–तिताला

(अटल विश्वास)

निपट बिकट ठौर अटकै री, नैना मेरे (टेर)
सुख संपति के सब कोई साथी, विपति परे सब सटके ।। १

२५५–१ (उ.); (राम. स० गु. से)।
२५६–१ (उ); (बृ. रा. र. पृ. ५६०)।
२५७–(ब्रजनिधि ग्रन्थावली पृ. २२९)।

तजि खगराज छुड़ायौ हाथी, टेर सुने नाहीं कहुँ अटके ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, को तजि मूरख अननहि भटके ।। ३

○

पद–२५८ : राग–बिहाग : ताल–तिताला
(विरह)

निरमोहीड़ो नेह न जोड़ै[1] छै (टेर)
यो मन मस्त कह्यो नहीं मानै, अमृत में विष घोरै छै ।। १
आप तो जाइ द्वारिका में छाए, हमकूं बिरहा झोरै छै ।। २
कुबज्या दासी कंसराइ की, आप सरब सुख लोरै छै ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, लागी प्रीति क्यूँ तोड़ै[2] छै ।। ४

○

पद–२५९ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा
(उपदेश)

नित न्हाने से हरी मिलै तो, जल जंतु होई । (टेर)
फल मूल खाके हरी मिलै तो, बाँदर-बाँदरा होई ।। १
तिरन भखन से हरी मिलै तो, बहुत मृगी अजा ।
स्नेह छोड़के हरी मिलै तो, बहुत हैं खोजा ।। २
दूध पीके हरी मिलै तो, बहुत वत्स बाला ।
मीरां कहै बिन प्रेम के, नहीं मिलै नँदलाला ।। ३

○

पद–२६० : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(प्रेम-दृढ़ता)

निन्दा म्हारी भलाई करोनै सोनै काट न लागै । (टेर)

२५८–पा०–1 जोरै । 2 तोरै ।
२५९–३ (क); (बृं. पु. पृ. ४३) ।

जोग लियो जग जातौ देख्यौ, हरि भजवाकै काजै ।
जो कोई करणीं में चूक पड़ै तो, सतगुरु म्हारा लाजै ।। १
धन रे लोका थांरी करणां, कीड़ीरौ कुंजर बणायौ ।
अणदीठी अण सांमले रे, बद बद बाद उठायौ ।। २
कुल कूं छाँडि कड़ूंबो[1] छाँड्यौ, छांडी ममता माई ।
और दुनियां कौ दावौ छोड्यौ, छोडी लोभ बड़ाई ।। ३
पर गल दोई में पलो बिछायौ, मन भावै ज्यूं कहीयौ ।
यो जस मीरां बाई गावै, ज्यूं कहियौ ज्यौं सहियौ ।। ४

○

पद–२६१ : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला

(विरह)

नींद नहि आवै जी सारी रात । (टेर)
करवट लेकर सेज टटोलू (रूँ) पिया नहीं मोरे साथ ।। १
सगली रैन मोये तड़फत बीती, सोच सोच जिया जात ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आन भयो परभात ।। ३

○

पद–२६२ : राग–खमाच : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

नीदड़ली नहिं आवे सारी रात, किस विध होइ परभात । (टेर)
चमक उठी सुपने सुख भूली, चन्द्रकला न सुहात ।। १
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कब रे मिले दीनानाथ ।। २

२६०–१ (उ.); (राम स. गु पृ.) ।
1 कड़ूंबो = कबीलो ।
२६१–१ (उ.); (फु. प.) ।
२६२–१ (उ.) ।
1 पा०–पाल ।

भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी बात ।। ३
मीरां कहे बीती सोइ जाणे, मरण जीवण उन हात ।। ४

○

पद–२६३ : राग–जैजैवन्ती : ताल-धमार

(विनय)

नेहा समद बिच नाव लगी है, बाल[1] न लगत बही जात अकेली । (टेर)
लाज को लंगर छूट गयो है, बही जात बिन दाम की चेरी ।
मलहन कर से छाँड दई है, आस बड़ी गोपाल ज्यो तेरी ।। १
अब के पार लगावो नांतर, लोग हँसेंगे बजा के हतेरी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरी सुध लीज्यो प्रभु आन सवेरी ।। २

○

पद–२६४ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

नैणां मोरे बाण पड़ी, साँई मोहि दरस दिखाई । (टेर)
चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।। १
कैसे प्राण पिया बिन राखूँ, जीवण मूर जड़ी ।। २
कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूं, अपणे भवन खड़ी ।। ३
मीरां प्रभु के हात बिकानी, लोग कहे बिगड़ी ।। ४

○

पद–२६५ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

नणांरी हो पड़ गई याही बांण । (टेर)
बेर[1] बेर निरखूँ मुख सोभा, छूट गई कुल[2] कांण ।। १

२६४–१ (उ.) ।
२६५–१ (उ.); (दीना. मं. मी. प. ९) (मी. ली. प. दूधू ४) ।
1 पा०–'नैंक निहारें' । 2 पा०–'कुलकी' ।

कोई भलां कहो कोई बुरां कहो, मैं सिर लीनी तांण ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पूरवली पिछांण[3] ।। ३

○

पद–२६६ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(रहस्य)

नैनन बनज बसाऊं री, जो मैं साहिब पाऊँ री । (टेर)
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाँऊँ री ।। १
त्रिकुटी महल में बना है झरोका, तहां से झाँकी लगाऊँ री ।। २
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बार बार बलि जाऊँ री ।। ४

○

पद–२६७ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(दर्शन-लालसा)

नैनाँ अटके रूपसों, पल पल नहिं लागे ।
निसवासर यों ही रहै, सोये नहिं जागे ।। (टेर)
असन बसन भूषण तजे, पिय के अनुरागे ।
मदन मूरत हिरदै बसी, अलबेलोसी पागे ।। १
मीरां प्रभु गिरधर मिले, भल संत समाजे ।
छुटी छार तिन पर परो, जे या प्रणतें भाजे[1] ।। २

○

पद–२६८ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरह)

नैनां लोभी रे बहुरि सके नहिं आय । (टेर)

२६५–3 पाठान्तर—'पहिचांण' ।
२६६–१ (उ.) ।
२६७–(या०–प्रति सं. ६९८।४५ पृ. ७५ से) ।
पा०–1 'छुटी छार तिनकी परों जे या प्राण ते भाजे' ।

रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहे ललचाय ।। १
मैं ठाढ़ी गृह आपने रे, मोहन निकसे आय ।
सारंग ओट तजे कुल अंकुस, बदन दिये मुसकाय ।। २
लोक कुटंबी बरज बरज ही, बतियाँ कहत बनाय ।
चंचल चपल अटक नहिं मानत, पर हत गये बिकाय ।। ३
भली कहो कोइ बुरी कहो मैं, सब लई सीस चढ़ाय ।
मीरां कहे प्रभु गिरधर के बिन, पल भर रह्यो न जाय ।। ४

○

पद–२६९ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी
(विरह-विनय)

नैया मोरी हरि तुम ही खेवैया, तुम्हरी कृपा ते पार लगैया । (टेर)
गहरी नदिया नाव पुराणी, पार करो बलभद्र के भैया ।। १
अजामेल गज गणिका तारी, अहल्या द्रोपदी लाज रखैया ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, वार बार तुमरे बलि गइया ।। ३

○

पद–२७० : राग–बिहाग : ताल–धीमा तिताला
(विरह-विनय)

प्रभुजी थे कहाँ गया नेहड़ो लगाय । (टेर)
छोड़ गया विश्वास सँगाती, प्रेमकी बाती बराय ।। १
विरह समदमें छोड गया छो, नेहकि नाव चलाय ।। २
मीरां के प्रभु कबरे मिलोगे, तुम बिना रहा न जाय ।। ३

○

२६८–१ (उ.) ।
६६९–२ (म.) ।
२७०–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ६) ।

पद–२७१ : राग–भूपाली : ताल–तिताला

(उपालम्भ)

प्रभू तुम कैसे दीनदयाल, कैसे दीनदयाल । (टेर)
मथुरा नगरीमें राज करत है, बैठे नंदके लाल ।। १
भकतनके दुख जानत नांहीं, षेलै गोपी गवाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, भकतनके प्रतिपाल ।। ३

○

पद–२७२ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

प्रभु बिन ना सरै माई ।
मेरा प्राण निकस्या जात री, प्रभु बिन ना सरै माई । (टेर)
मीन दादुर वसत जलमें, जल से उपजाई ।
तनक जल से बाहर कीना, तुरत (ही) मर जाई ।। १
काठ लकरी वन परी, काठ घुन खाई ।
ले अगन प्रभु डार आये, भसम हो जाई ।। २
वन वन ढूंढ़त मैं फिरी, आली सुधि नहिं पाई ।
एक वेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई ।। ३
पात ज्यों पीरी परी अरु, विपत तन छाई ।
दास मीरां लाल गिरधर, मिल्यां सुख छाई ।। ४

○

पद–२७३

(विरह-विनय)

प्रीत मत तोड़ो गिरधरलाल । (टेर)
तुम ही साहूकार तुम ही वौहोरा, ब्याज मूल मत जोड़ो ।। १

२७१–२ (म.) ।
२७२–२ (म.) ।

साँवरियाकै कारणै मैंने बाग लगायो, काची कलियाँ मत तोड़ो ।। २
साँवरियाकै कारणै मैं सेज बिछाई, सूनी सेज मत छोड़ो ।। ३
मीरांके प्रभु हरि अबिनासी, इमरतमें बिष मत घोरो ।। ४

○

पद–२७४ : राग–भोपाली : ताल–कहरवा

(प्रेम)

प्रेमनी प्रेमनी प्रेमनी रे, मने लागी कटारी प्रेमनी रे । (टेर)
जल जमुना ना भरवा गया ताँ, हती गागर माथे हेमनी रे ।। १
काँचे ते ताँतणे हरिजी ये बाँधी, जेम खेंचे तेम तेमनी रे ।। २
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, साँवली सुरत शुभ एमनी रे ।। ३

○

पद–२७५ : राग–मीरां की मल्हार : ताल–चौताला

(शृंगार-वर्णन)

प्यारीके चिहुर[1] विथुरे मानो मानो धाराधर[2] की श्याम घटा उनई,
ता मध्य पहुप छुटि परे तैसें बड़ी बड़ी बूंदें । (टेर)
लाल सारि पहिरै हरी कोर मधायनिसी[3] घूँघट करि चली,
पीठ पाछेतैं तरकै कंचुकी तनीकी फूँदें ।। १
महँदीसों आरक्त नख बीरी[4] बहोरी ऐंसी पावस बनिता मिली,
मीरां लाल गिरधरको लें कामप्रीति काम हार गूँदें ।। २

○

२७३–३ (क.); (राम स. पृ.) ।
२७४–१ (उ.); (काव्यदोहन गु.) ।
२७५–१(उ.) । (यां०–ह. लि. पदमुक्तावली से)
1 'चिकुर-वाल' । 2 'मेघ' । 3 'मधयामिनीसी' । 4 'वीरवहूटी' ।
नोट—इस पद के पाठ में कई शब्द स्पष्ट नहीं । इसी से अर्थ और भाव समझने में कठिनता है—स०

पद–२७६ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(प्रेम)

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम, बाँसुरी बजावत गावत कल्यान । (टेर)
कबकी मैं ठाडी भैयाँ सुधबुध भूल गैयाँ, छोने जैसे जादू डारा भूले
मोसे काम ।। १
जब धुन कान पैया देह की न सुध रहिया, तन मन हर लीनो
बिरहो वाले कान ।। २
मीरांबाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया, देहसों विदेह भैया
लागो पग ध्यान ।। ३

○

पद–२७७ : राग–बिहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

प्यारी हट मांड्यो छै जी मांझल रात । (टेर)
कबकी ठाढ़ी अरज करत हूं, होइ जासी परभात ।। १
तलफत तलफत बौहो दिन बीते, कबहुँ न बूझी बात ।। २
जब के गये म्हारी सुधि नहीं लीनी, तुम बिन फीको (म्हारो) गात ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, कर मींडत पछितात ।। ४

○

पद–२७८ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

प्यारे दर्शन दीजो आय, तुम बिन रह्यो न जाय । (टेर)
जल बिन कमल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी ।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन, विरह कलेजा खाय ।। १

२७६–२ (म.) ।
२७७–२ (म.) ।
२७८–१ (उ.); (वं. पु पृ. १९) ।

दिवस न भूख नींद नहिं रैनां, मुख से कथन न आवै बैनां।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत बुझाय ।। २
क्यों तरसाओ अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।
मीरां दासी जनम जनम की, परी तुमारे पांय ।। ३

○

पद–२७९ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

पगे घूघरू बाँध मीरां नाची रे। (टेर)
मैं सपने तो नारायणकी, हो गई आपही दासी रे ।। १
विषका प्याला राणाजीने भेज्या, पीवत मीरां हाँसी रे ।। २
लोक कहे मीरां भई बावरी, बाप कहे कुलनासी रे ।। ३
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणांकी दासी रे ।। ४

○

पद–२८० : राग–जोनपुरी, टोडी : ताल–तिताला

(मान)

पतियाँनें कूण पतीजे, आणि[1] खबरि हरि लीजे। (टेर)
झूंठी पतियाँ लिख लिख भेजे, क्या लीजे क्या दीजे ।। १
ऐसा है कोई बांच सुणावें, मैं बांचूं तो[2] भीजे ।। ३
मीरांके प्रभु हरि अबिनासी, चरण कँवल चित दीजे ।। ३

○

२७९–२ (म.)।
२८०–१ (उ); (राम स. गु. पृ. ३२४)।
1 पा०–'म्हारो अंसुवां सूं अँचरो भीजे'।
2 पा०–'मैं वांचूं तन छीजे'।

पद–२८१ : राग–सोरठ : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यौये[1] न जाइ । (टेर)
बात कहूँ मोहि बात न आवै, नैन रह्या (छै) झर लाइ ।। १
कलम भरत मेरो कर कंपत है, हिरदो रह्यो घबराइ ।। २
किस विध चरणकमल मैं गहस्यूँ, सबही अग थरराइ ।। ३
मीरांके प्रभु हरि अविनासी, चरण रहूं लपटाइ ।। ४

○

पद–२८२ : राग–देश मल्हार : ताल–झूमरा

(विरह)

पपीया रे पीवकी बानी न बोलि ।
सुनि पावेगी बिरहनि रालैली पाँखाँ मरोड़ि । (टेर)
चोंच कटाऊँ पपीया रे, ऊपर कालो रे लोंण ।
पीव हमारे मैं पीवकी रे, तू पीव कहै सो कौण ।। १
थारा सबद सुहावणां रे, जै पीव मिलावै आज ।
चोंच मँढाऊँ थारी सोहनी, तू म्हारै सिरताज[1] ।। २
पीतमकूँ पतियाँ लिखूँ, कागा तू ले जाइ ।
पीतमकूँ तू यौं जाइ कहियौ, थारी विरहनि अन्न[2] न खाइ ।। ३
तुम मति जानो पीतमा हो, तुम बिछड़्यां मोहि चैंन ।
मोहि चैंन जब होइगो, भरि भरि देखूँ नैंन ।। ४
मीरां दासी वारणैं हो, पिव पिव करत विहाइ ।
बेगि मिलौ प्रभु अन्तरजामी, तुम बिन रह्यो न जाइ ।। ५

○

२८१–१ (उ.); (क. ब. १४) (वं. पु. पृ. ८) ।
1 पा०–'लिखिहि न जाइ' ।
२८२–१ (उ. ट.); (क. ब. ७) ।
1 पा०–'राज' । 2 पा०–'धान' ।

पद–२८३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

परम सनेही रामकी निति ओलूँ रे आवै । (टेर)
राम हमारे हम है रामके, हरि बिन कछु न सुहावै ।। १
आँवण कह गये अजहूं न आये, जिवड़ो अति अकुलावै ।। २
तुम दरसणकी आस रमइया, कब हरि दरस दिखावै ।। ३
चरण कमल की लगनि लगी नित, बिन दरसण दुख पावै ।
मीरांकूँ प्रभु दरसण दीज्यो, आनँद वरण्यूँ न जावै ।। ४

○

पद–२८४ : राग–वागीश्वरी : ताल–तिताला

(विरह)

पलक न लागै मेरी स्याम बिन । (टेर)
हरि बिन मथुरा ऐसी लागै, शशि बिन रैन अँधेरी ।। १
पात पांत बृन्दाबन ढूंढ्यो, कुंज कुंज ब्रजके री ।। २
ऊंचे खेड़ै मथुरा नगरी, तलै बहै जमुना गहरी ।। ३
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणान की चेरी ।। ४

○

पद–२८५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

पाछो रथ फेरो द्वारका-हारा (टेर)
सूरज तलफै चंदा तलफै, तलफै नौलख तारा ।। १
गऊ भी तलफै बच्छा भी तलफै, तलफै गुवाल बिचारा ।। २
जोगी भी तलफै जंगम तलफै, तलफै तपसी सारा ।। ३

२८३–१ (उ ट.) ।
२८४–२ (म.); (फु. ५८) ।
२८५–२ (म.); (राम. स. गु.) ।

गंगा भी तलफै जमुना भी तलफै, तलफै समदर खारा ।। ४
मीरांके प्रभु हरि अविनासी, तुम जीते हम हारा ।। ५

○

पद–२८६ : राग–जोगिया : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-रहस्य)

पानीमें मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवत हाँसी । (टेर)
आत्मज्ञान बिन नर भटकत है, कहां मथुरा कहां कहां कासी ।। १
भवसागर सब हार भरा है, ढूंढत फिरत उदासी ।। २
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, सहज मिले अविनासी ।। ३

○

पद–२८७ : राग–आसा, माड : ताल–कहरवा

(चरित-प्रेम)

पायो जी मैं तो राम रतन धन पायो । (टेर)
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो ।। १
जनम जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो ।। २
खरचै नहि कोई चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ।। ३
सतकी नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो ।। ४
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, हरष हरष जस गायो ।। ५

○

पद–२८८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(लीला)

पायो म्हारो ईडूंणीको चोर, सुणज्यो व्रजके बासी लोग । (टेर)

२८६–२(म)।
२८७–१ (उ.ट.)।

तू मत जाणे ईंडी घास फूसकी, ईंडी (म्हारी) सारी मथुरा को मोल ।। १
ए छै बड़े बड़े हीरा मोती जड़ियाजी, बिच (बिच) लाल लाख किरोड़।। २
मीरांके प्रभु गिरधरनागरजी, ईंडी लाये नागर नंद किशोर ।। ३

○

पद–२८९ : राग–सोरठ, देश : ताल–कहरवा

(विनय)

पिया अब घर आज्यो मोरे, तुम मोरे हूं तोरे । (टेर)
मैं जन तेरा पंथ निहारूँ मारग चितवत तोरे ।। १
अवध वदीती अजहुं न आये, दुतियनसूं नेह जोरे ।। २
मीरां कहे प्रभु कब रे मिलोगे, दर्शन बिन दिन दोरे ।। ३

○

पद–२९० : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

पिया इतनी विनती सुन सुन मोरी, कोई कहियो रे जाय । (टेर)
औरनसूं रस बतियां करत हो, हमसे रहे चित चोरी ।। १
तुम बिन मेरे और न कोई, मैं सरणागत तोरी ।। २
आवन कह गये अजहुं न आये, दिवस रहे अब थोरी ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करै कर जोरी ।। ४

○

पद–२९१ : राग–शंकरा : ताल–धीमा तिताला

(विरह)

पियाकी खुमार मैं तो बावरी भई ये माय । (टेर)
[1]अमल न खायो आयो मोकूं, यो इचरज देखो भार ।। १

२८८–२ (म.); (पुजा. नाथू. पु. से) ।
२८९–१ (उ.); (बं. पु. पृ. १२) ।
२९०–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ९) ।
२९१–१ (दीना. मं. मी. प., ३४) । पा.–'अपार' ।

या तन की मैं बीणा बजाऊं, रग रग बांधूं तार ।। २
समझ बूझ मिल जाय दुलारो, जद रीझै रिझवार ।। ३

○

पद–२९२ : राग–भैरव : ताल–कहरवा
(विरद)

पिया तेरे नाम लुभाणी हो ।
नाम लेत तिरता सुण्यां, जैसे पाहण पाणी हो । (टेर)
सुकरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी हो ।
गणिका कीर पढ़ावतां, बैकुण्ठ बसाणी हो[1] ।। १
अरध नाम कुंजर लियो, वाकी अवध घटाणी हो ।
गरुड छांडि हरि धाइयां, पशु जूण मिटाणी हो ।। २
अजामेल से ऊधरे, जम त्रास नसाणी हो ।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ।। ३
नाम महातम गुरु दियो, परतीत पिछाणी हो ।
मीरां दासी रावली, अपणी कर जाणी हो ।। ४

○

पद–२९३ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला
(विरह विनय)

पिया तैं कहां गयौ नेहरा लगाय । (टेर)
छांडि गयौ अब कहां विसासी, प्रेमकी बाती बराय ।। १
बिरह समुद्र[1] में छांडि गयौ पिव, नेहकी नाव चलाय ।। २
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, तुम बिनु रह्यो न जाय ।। ३

○

२९२–१ (उ.); 1 पा०–'सोही वेद बखाणी हो' ।
२९३–१ (उ.); 1 'समद'-लय के लिये उपयुक्त ।

पद–२९४ : राग–मालकोस : ताल–तिताला

(विरह)

पिया विन रह्यो न जाइ । (टेर)
तन मन मेरो पिया पर वारूं, बार बार बलि जाइ ।। १
निस दिन जोऊँ बाट पियाकी, कब र (रे) मिलोगे ग्राइ ।। २
मीरांके प्रभु ग्रास तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाइ ।। ३

○

पद–२९५ : राग–ग्रासावरी : ताल–धीमा तिताला

(चरित-विरह)

पिया विन सूनूं सारो[1] देस, जतन करो हे ग्राली हे । (टेर)
है कोई ऐसा पिया मिलावै, तन मन धन करूं भेट ।। १
तेरे कारण बन बन डोलूं, कर जोगिन को भेष ।। २
ग्रवधि विदीती ग्रजहुं न ग्राये, पीरे पड़ गये केस ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ध्यावैं शेष महेस[2] ।। २

○

पद–२९६ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विनय)

पिया म्हारै नैनां ग्रागै रहज्यो जी । (टेर)
नैनां ग्रागै रहजो म्हाने, भूल मत जाज्यो जी ।। १
भोसागर में बही जात हूं, वेग म्हारी सुध लीज्यो जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो जी ।। ३

○

२९४–२ (म.) ।
२९५ 1 पा.–'म्हारो देस' ।
2. पा०–'मीरां के प्रभु हरि ग्रबिनासी तजि दियो नगर नरेस ।
२९६–२ (मं.); (बं. पु. पृ. २७)

पद–२९७ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(बारहमासिया विरह)

पिया मोहि दरसण दीजै हो ।
वेर बेर मैं टेरत टेरत हूं, अहे कृपा (किरपा) कीजे हो । (टेर)
जेठ महीने जल बिना, पंछी दुख होई हो ।
मोर असाढ़ा कुरलहे, घन चात्रक सोई हो ।। १
सावण में झड़ लागियौ, सखि तीजाँ खेलै हो ।
भादरवै नदियाँ बहै, दूरी जिन मेलै हो ।। २
सीप स्वाति ही झेलती, आसोजां सोई हो ।
देव काती में पूजहे, मेरे तुम होई हो ।। ३
मंगसर ठंढ बहोत पड़ै, मोहि बेगि सम्हालो हो ।
पोस महीं पाला घणां, अबही तुम न्हालो हो ।। ४
माह महीं बसंत पंचमी, फागां सब गावै हो ।
फागुण फागां खेल हैं, वणराइ जरावै हो ।। ५
चैत चित्त में ऊपजी, दरसण तुम दीजै हो ।
वैसाख वणराइ फूलवै, कोइल कुरलीजै हो ।। ६
काग उडावत दिन गया, बूझूँ पिंडत जोसी हो ।
मीरां बिरहणि व्याकुली, दरसण कब होसी हो ।। ७

○

पद–२९८ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(विरह)

पिये मोहि आरत तेरी हो ।
आरत तेरे नामकी, मोहि साँझ सवेरी हो । (टेर)
या तनके दिवला करूँ, मनसा करूँ बाती हो ।
तेल जलाऊँ प्रेमका, बालूँ दिनराती हो ।। १

२९७–२ (म.)
२९८–१ (उ.)

पटिया पारूँ ज्ञानकी, मन माँग सँवारूँ हो ।
पिया[1] तेरे कारणै धन जोवन वाँरू हो ।। २
सेजड़िया बहुरंगिया, बहु फूल बिछाया हो ।
रैन[2] गई तारा गिनत, प्रभु अजहुं न आया हो ।। ३
आया सावन भादवा, वरसा ऋतु आई हो ।
मेहा घटा[3] घन घेरि, नैनन झर लाई हो ।। ४
मात-पिता तुमको दियो, तुमही भल गैलो हो ।
तुम तजि और भरतारको, मन मैं नहिं आनों हो ।। ५
तुमहो[4] पूरे साँइयाँ, पूरा सुख दीजे हो ।
मीरां ब्याकुल बिरहनी, अपनी कर लीजे हो ।। ६

○

पद–२९९ : राग–मांड वा मारू : ताल–दादरा

(चेतावनी)

पिरथिवी मायाजाल मैं पड़ी ।
तूं तो समझि सुहागरण सुरता नारि पलक मेरी रामसूं लगी । (टेर)
लगती लहँगो पहरि सुहागरण, बीतौ जाइ विव्हार ।
धन जोबन दिन च्यार का, जात न लागै बार ।। १
रामनाम को चुड़लो पहरौं, सुमरण काजल सार ।
माला ल्यौ हरिनांव की, उतरि चलौ पैली पार ।। २
ऐसा बर कौं काई बरांजी, जनमत ही मर जाय ।
बर बरस्यां म्हारो साँवरोजी, अमर चूड़ा होइ जाय ।। ३
जनमैं मरैं करैं घर केता, बिष राता नरनारि ।
मीरां राती रामसूँ जी, साँवरियो भरतार ।। ४

○

२९८–(उ.); 1. पा०–'तो पर मेरा सांइयां' । 2. पा०–'रैन गई मग जोवतां' । 3. पा०–'बीज झलाझल हो रही' । 4. पा०–'तुम पुरातम पूरवा' ।
२९९–३ (क.); (राम स. गु. पृ. २५७) ।

पद–३०० : राग–काफी : ताल–दीपचन्दी

(रहस्यवाद)

फागुन के दिन चार रे, होरी खेल मना रे। (टेर)
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकार रे।। १
बिन सुर राग छतीसूं गावे, रोम रोम रंग सार रे।। २
शील सन्तोष की केसर घोली, प्रेम-प्रीत पिचकार रे।। ३
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे।। ४
घटके सब पट खोल दिये हैं, लोकलाज सब डार रे।। ५
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहार रे।। ७

○

पद–३०१ राग–खमाच : ताल–कहरवा

(विनय)

व्रज में आवोलाजी व्रजबासी, रामाँ थां बिन भौमि उदासी। (टेर)
बृन्दावन थारी सूखण लागी, कुञ्ज कुञ्ज कुमलासी।
घन नख मुख मूर नही हैं, सखियाँ धर्म निभासी।। १
जन्मभौमि मथुरा की छोड़ी, अब हुये द्वारिका वासी।
सीतल जल जमुना को छोड्यो, अब खारो कैयाँ भासी।। २
बलदाऊ के भैया किरपा कीज्यो, जन्म जन्म की (मैं) दासी।
किरपा कीज्यो सुध मोरी लीज्यो, नाहि करो लोग में हाँसी।। ३
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल की छबि खासी।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटो जन्म की फाँसी।। ४

○

३००–१ (उ); (बं. पु. पृ. ३३)।
३०१–२ (म.); (पुजा. नाथू पु. से)

पद ३०२ : राग–प्रभाती : ताल–कहरवा

(प्रेम-प्रवाह)

बंसी बजावै नित जमुना तट आवै । (टेर)
हों जमुना जल भरन जात ही, चित दे चित्त चुरावै ।। १
भोर गईं वहैं बोरैं सजनी, बावरी-सी जाँनो मोहि बोरावै ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ठग पैं कौन ठगावै ।। ३

○

पद–३०३ : राग–माड : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

बंसी वारा आयो म्हारे देस, थारी साँवली सूरत बाली बेस । (टेर)
आऊँ आऊँ कर गया साँवरा, कर गया कोल अनेक ।। १
गिणताँ गिणताँ घिस गई उँगली, घिस गई उँगलीं की रेख ।। २
मैं बैरागण आद की, थारे म्हारे कद को सँदेस ।। ३
विन पाणी विन सावण साँवरा, हुई गई धुई सफेद ।। ४
जोगण हुई जंगल सब हेरूँ, तेरा नाम न पाया भेद ।। ५
तेरी सुरत कै कारणै, धर लिया भगवाँ भेस ।। ६
मोर मुकट पीताम्बर सौहै, घूँघर वाला केस ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधर मिलि गये, दूना बढ़ा सनेस ।। ८

○

पद–३०४ : राग–झँझोटी : ताल–अद्धा

(विनय)

बंसी वारा हो कान्हा मोरी रे गगरी उतार ।
गगरी उतार मोरो तिलक संभार । (टेर)
जमुना के नीरे तीरे बरसैलो मेह, छोटे से कन्हैयाजी से लाग्यो म्हारो नेह ।। १

३०२–१ (उ.); ('रागपद-संग्रह' से)
३०३–१ (उ.) ।

बृन्दावन में गउएं चरावै, तोड़ लियो मोरे गरवा को हार ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मैं तो तेरे गई बलिहार ।। ३

○

पद–३०५ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा

(प्रेम)

वंसीवारे की चितवन सालति है। (टेर)
मोरमुकुट मकराकृत कुण्डल, ता पर कलंगी हालति है ।। १
मैं तो छकी तुमरी छबि ऊपर, जो न छकै तेहि नाल[लान] ति है ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकँवल चित लागति है ।। ३

○

पद–३०६ : राग–कान्हड़ो : ताल–तिताला

(विरह)

बड़ी बड़ी अँखियन वारो साँवरो, मो तन हेरो हँसके री। (टेर)
मैं जमुनाजल भरन जात ही, सिर पै गागर लसके री[1]।
सुन्दर स्याम सलोनी मूरत, मो हियरे गई बसके री ।। १
जंतर मंतर लिख के लावै, औषद लावै घसके री।
जो कोई लावै स्याम वैद को, तो उठ बोलूं हँस के री ।। २
भृकुटी कमान बान वाके लोचन, मारत है तक कस के री।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कैसे रहूं घर बस के री ।। ३

○

पद–३०७ : राग–कामोद : ताल–कहरवा

(चरित)

बड़े घर ताली लागी रे, म्हारा मन री उणारथ भागी रे (टेर)

३०४–२ (म.); (या०—सं० रा० क० से)।
३०५–२ (म.)।
२०६–१ (उ.); (स. मा. मी. ली.)।
1 लसके = लचके।

छीलरिये म्हारो चित नहीं रे, डाबरिये कुण जाव ।
गंगा जमुनाँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूँ दरियाव ।। १
हाल्याँ मोल्याँ सूँ काम नहीं रे, सीख नहीं सिरदार ।
कामदाराँ सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब करूं दरबार ।। २
काच कथीर सूं काम नही रे, लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपा सूँ काम नहीं रे, म्हारे हीरां रो बोपार ।। ३
भाग हमारो जागियो रे, भयो समद सूं सीर ।
अमृत प्याला छाँडि कै, कुण पीवे कड़वो नीर ।। ४
पीपा कूँ प्रभु परच्यौ दीन्हौ, दिया रे खजीना भरपूर ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, धणी मिल्या छै हजूर ।। ५

○

पद–३०८ : राग–श्यामकल्याण : ताल–कहरवा

(उत्कंठा)

बता दे सखि साँवरिया को डेरो किती दूर । (टेर)
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच बहे यमुना-पूर ।। १
मथुराजी की मस्त गुवालिन, मुख पर बरसे नूर ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, साँवरे से मिलना जरूर ।। ३

○

पद–३०९ : राग–मल्हार : ताल–तिताला

(प्रेम)

बदला रे तू जल भरि ले आयो । (टेर)
छोटी-छोटी बूँदन बरसन लागी, कोयल सबद सुनायो ।। १
गाजै बाजै पवन मधुरिया, अबर बदरा छायो ।। २

३०७–२ (म.) ।
३०८–३ (क.); (प्रकीर्णक पद) ।
३०९–१ (उ.) ।

सेज सँवारी पिय घर आये, हिल मिल मंगल गायो ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, भाग भलो जिन पायो ।। ४

○

पद—३१० : राग—कनड़ी, तिलक, कामोद : ताल—दीपचंदी
(चेतावनी)

बन्दे वन्दगी मत भूल । (टेर)
चार दिनां की कर ले खूबी, ज्यूं दाड़िम दा फूल ।। १
आया था ए लोभ के कारण, मूल गमाया भूल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रहना वे हजूर ।। ३

○

पद—३११ : राग—हमीर : ताल—तिताला
(प्रेम)

बन जाऊँ चरण की दासी रे, दासी मैं भई उदासी रे । (टेर)
और देव कोई न जाणूं, हरि विन गई उदासी ।। १
न न्हाऊँ गंगा न न्हाऊँ जमना, न न्हाऊँ प्रयाग कासी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की प्यासी ।। ३

○

पद—३१२ : राग—मांड : ताल—कहरवा
(रूप-वर्णन)

बनाजी थाँरी अँखियाँ कामणगारी, हो बनाजी । (टेर)
मोही छे जी थारी लटक चाल पर बरसाने की नारी ।। १
जंतर मंतर जादू टोना, कर कर बहुत ही हारी ।। २
मीरां ने वकसियो गिरधारी, साँवरी सूरत प्यारी ।। ३

३१०—२ (म.) ।
३११— (म.) ।
३१२—१ (उ.) । (या०—सं० रा० के० से)

पद–३१३ : राग–विहाग : ताल–तिताला
(दृढ़ता)

बरजी नांही रहूंगी, म्हारो स्यामसुंदर भरतार । (टेर)
इक वर बरजी दोय बर वरजी, बरजी सो सो बार ।। १
सासू बरजी नणदी बरजी, राणोंजी दावादार ।। २
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, पूरणब्रह्म अपार ।। ३

○

पद–३१४ : राग–बिहाग : ताल–दीपचन्दी
(दृढ़ता)

बरजी मैं काहू की नांहिं रहूँ । (टेर)
सुनो री सखी तुम चेतन होइ के, मन की बात कहूँ ।। १
साध संगति करि हरि सुख लेऊँ, जगसूँ (मैं) दूरी रहूं ।। २
तन धन मेरो सब ही जावो, भल मेरो सीस लहूं ।। ३
मन मेरो लागो सुमरिन सेती, सबको (मैं) बोल सहूँ ।। ४
मीरां कहे प्रभु गिरिधरनागर, सतगुरु सरन रहूँ ।। ५

○

पद–३१५ : राग–बहार : ताल–तिताला
(प्रेमानन्द)

बरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की । (टेर)
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनी हरि आवन की ।। १
उमड़ घुमड़ चहुं दिश से आया, दामिन दमकै झर लावन की ।। २
नन्हीं नन्हीं बूँदन मेहा बरसे, शीतल पवन सोहावन की ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आनंद मगल गावन की ।। ४

३१३–२ (म.); (राम स० गु० पृ० १४३)
३१४–१ (उ.) ।
३१५–१ (उ.); (बं. पु. पृ. ३१)

पद–३१६ : राग–जोनपुरी : ताल–कहरवा

(विनय रूप-वर्णन)

बसो मेरे नेनन में नँदलाल । (टेर)
मोहनि मूरत साँवरि सूरति, नैना बने विशाल ।। १
अधर सुधारस मुरली राजित, उर वैंजन्ती माल ।। २
क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल ।। ३
मीरां के प्रभु संतन सुखदाई, भक्तवछल गोपाल ।। ४

○

पद–३१७ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(प्रेम-लीला)

बाँके साँवरिया ने घेरी मोहि आन के । (टेर)
हों जो गई जमुनाजल भरने, मारग रोक्यो मेरो आन के ।। १
बृन्दाबन की कुंजगली में, मुरली बजावै आन तान के ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, प्रीति पुरातन जान के ।। ३

○

पद–३१८ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

बांहड़ली जो गहो रामजी म्हारी बांहड़ली जो गहो । (टेर)
भवसागर की तीक्षण धारा, थेई हो न नीभो (निभो) ।। १
[1]मेहू तो छां ओगण का भरिया, थेई हो न सहो[1] ।। २
मीरां के प्रभु गिधरनागर, बिड़द की लाज गहो ।। ३

३१६–१ (उ.)
३१७–१ (उ.); (वृ. रा. र. पृ. ३९५)
३१८–१ (उ.); (सूर्यनारायणजी दाधीच से प्राप्त)
1–1 पा०–'म्हांमें ओगण घणा छै साँवरिया, थे ही सहो तो सहो' ।

पद–३१९

(प्रेमलीला)

बांसुरी सुनूंगी मैं तो बांसरी सुनूंगी ।
वा बंसी वाले को जाने न दूंगी । (टेर)
वह बंसी वाला मुझे एक कहेगा, एक की लाख सुनाऊँगी ।। १
बृन्दाबन की कुंजगलिन में, भ्रमर व्हे फूल चुनूंगी ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में जाय अड़ाऊँगी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, चरणकमल बलि जाऊँगी ।। ४

○

पद–३२० : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(वैराग्य)

बाई[1] म्हारै नैना[2] रावल भेष । (टेर)
वै स्यामी[3] वहो जटाधारी, अबही अंजन रेख ।। १
स्वेत वरण[4] रँग कंथा पहरचा[5] भिक्षा माँगा[6] देस ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, करहूं[7] अलख अलेख ।। ३

○

पद–३२१ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(प्रेम-लीला)

बाजन दे गिरधरलाल मुरली बाजन दे । (टेर)
सप्त सुरन मुरली बजी, कहुँ कालिन्दी के तीर ।

३१९–२ (म.); (का०।२।३३९)
३२०–२ (म.)
1. पा.–'बाई थारा नैन रावल भेष ।' 2. पा.–'नैण' । 3. पा.–'बरनी श्याम'। 'बिना श्याम सखी मैं जटाधारी' 4. पा.–'बिराजत' । 5. पा.–'अरुण' । 6. पा–'मांगत' । 'मांगू' । 7. पा.–'करत' । 'करूँगी' ।

श्रवन[1] सुनत सुध नां रही, मेरी कित गागर कित चीर ।। १
बैठ कदम के चौंतरा, सब ग्वालन लिये बुलाय ।
गैल[2] रोक ठाडो भयो, मेरो गोरस लियो छिनाय ।। २
पासा डारे प्रेम के, मेरो सब धन ले गयो लूट ।
मीरां के प्रभु साँवरे, तुम अब कित जावोगे[3] छूट ।। ३

○

पद–३२२ :

(उत्कंठा)

बाजे छे रे बाजे छे, पैला बन मांही मीठी वेणु बाजे छे ।
हाँ रे दुर्जन को डर लागे छे । (टेर)
सासू सूती म्हारी सुख निद्रा में, जाऊँ तो नणदल जागे छे ।। १
ससुरोजी म्हारो परम सोहागो, देवरियो दिल में दाभे छे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम मरण भय भागे छे ।। ३

○

पद–३२३ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेमोपालंभ)

पाटड़ली निहारूँ जी मैं[1] हारी ठाडी ठाडी । (टेर)
आप न आवै पतियाँ न भेजै, छतियाँ करी अति[2] गाढ़ी ।। १
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, जमुना बह रही[3] आडी ।। २
आप जाय मथुरा में बैठे, पीतड़ली[4] बोह बाढ़ी ।। ३

३२१–२ (म.); (स. मा. मी. ली. २६)
1. पा –'सोर' ।
2. पा.–'खेलत रोकत ग्वालिनी मुरली शब्द सुनाई' ।
3. पा.–'जैहो' ।
३२२–(का /उ /२/३५०)
३२३–१ (उ.); (दीना. मं. मी. प. २९)
1. पा–'हूँ हर घड़ी' । 2. पा.–'ह्रि' 3. पा.–'बहैछै' ।
4. पा.–'प्रीत हिये अति बाढी' ।

हमको लिख लिख जोग पठावै[5], आप[6] दूल्हे कुबजा लाडी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कहा[7] कहूं जमना आडी ।। ५

○

पद–३२४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(प्रेम)

बात क्या कहूं नागरनट की, नागरनट की नागर नट की । (टेर)
मैं दधि वेचन जात वृन्दाबन, छीन लिई मोरी दधि की मटकी ।। १
मोरमुकुट पीतांबर सोहे, अति सोभा उस कौस्तुभ मनि की ।। २
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, प्रीत लगी उस मुरलीधर की ।। ३

○

पद–३२५ : राग–देश मल्हार : ताल–कहरवा
(चेतावनी विरह)

वादल देख डरी हो, स्याम मैं वादल देख डरी । (टेर)
काली पीली घटा उमंगी, बरस्यो एक घरी ।। १
जित जाऊं तित पानि हि पानी, हुई सब भोम हरी ।। २
जाका पिव परदेस बसत है, भीजै वार खरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कीज्यो प्रीत खरी ।। ४

○

पद–३२६ : राग–मांड : ताल–कहरवा
(विरद)

बाना-रो बिडद दुहेलो रे । (टेर)
वानो पहर कहा गरवायो, मुक्ति ने हामी खेलो (रे) ।। १

३२३–5. पा.–'पठावत' 6. पा.–'कुबजा कीनी लाडी' । 7. पा.–'प्रीत में असी अडि कांई मांडी' ।
३२४–२ (म) ।
३२५–२ (म.) ।

बाना-रो प्राण प्रहलाद उबारचो, बैर पिता से झेल्यो (रे) ।। २
आगा धर पीछा मत ताको, दफतर नांहि चढैलो (रे) ।। ३
मीरांजी ने भक्ति कमाई, जहर पियालो झेल्यो (रे) ।। ४

○

पद–३२७ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(निगुंण प्रेम)

वाल्हा[1] मैं वैरागिण हूँगी हो ।
जीं जीं भेस म्हारो साहिब रीझे, सोई सोई भेस धरूँगी हो । (टेर)
सील संतोष धरूं घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो ।
जाको नाम निरंजण कहिये, ताको ध्यान धरूँगी हो ।। १
गुरू ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पैरूँगी हो ।
प्रेम प्रीत सूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी हो ।। २
या तन की मैं करूँ कींगरो[2], रसना नाम रटूँगी हो ।
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, साधाँ संग रहूँगी हो ।। ३

○

पद–३२८ : राग–माड : ताल–कहरवा
(प्रेम)

बावरी कहै रे साधो बावरी कहै (मीरां बाई ने दिवानी दुनियां
बावरी कहै) । (टेर)
बन के तमोलन कतरूँ पान, पान के खवैया मेरे श्याम सुजान ।। १
बन मालिन गूँथूँ बनमाल, उर पहरावै मीरां गिरधरलाल ।। २

दोहा

मीरां हर की लाडली, नित प्रति रहे हजूर ।
साधाँ रे सनमुख बसै, दगाबाज से दूर ।। ३

३२६–३ (क.); (फु. प.) ।
३२७–१ पा.–'लाला' ।
३२८–३ (क.) ।

पद–३२९ : राग–भैरवी वा काफी : ताल-कहरवा

(प्रेमानन्द)

बिक्या जी हरि प्यारीजी रे हाथ बिक्या । (टेर)
कृपा करो जी म्हे सोही सिरधारां, सोभा देखि छक्या ।। १
जा दिन ते मेरी लगन लगी है, और न द्वार थक्या ।। २
अनरागी मनमस्त है राणाजी, गरुड के अगड़ जुप्या ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ चित्त टक्या ।। ४

○

पद–३३० : राग–तिलक कामोद : ताल–रूपक

(विरहाधिक्य)

बिरहनी बावरी-सी भई । (टेर)
ऊँची चढ़ चढ़ अपने भवन में, टेरत हाय दई ।। १
ले अँचरा मुख अँसुवन पूंछत, उधरे गात सही ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिछुरत कछु नां कही ।। ३

○

पद–३३१ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(पुकार)

वेग पधारो सांवरा कठिन बनी है,
आप विना म्हारो कुण धनी है ? (टेर)
दुखिया कूं देख देर मत कीजो, देर की बिरियाँ और घनी है ।। १
दिन नहीं चैन, रैन नहिं निद्रा, दुशमन के हिये हरष घनी है ।। २
गहरी गहरी नदिया, नाव पुरानी, पार करो घनश्याम धनी है ।। ३
जमड़ाँ की फौजाँ प्रभु आन पड़ी हैं, बेग हटावो मोटा आप धनी हैं ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बिच आन खड़ी है ।। ५

३२९–१ (उ. ट.) (निज संग्रह से)
३३०–१ (उ.); (भक्त प्रहलादजी का पाना २)
३३१–२ (म.)

पद–३३२ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(विरह)

बैद को सारो नाँहि रे माई, बैद को नहिं सारो । (टेर)
कहत ललिता बैद बुलाऊँ, आवै नंद को प्यारो ।
वो आयाँ दुख नाहिं रहेगो, मोहिं पतियारो ।। १
बैद आय कर हात जो पकड़्यौ, रोग है भारो ।
परम पुरुष की लहर व्यापी, डस गयो कारो ।। २
मोर-चंदो हात ले हरि, देत है झारो ।
दासी मीरां लाल गिरधर, विष कियो न्यारो ।। ३

○

पद–३३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

बैद बण आयजो स्वामी म्हारा, व्याकुल भयो है सरीर । (टेर)
मोर मुकुट कट काछनी रे, बाला केसर खोर चढ़ायजो ।
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे, भुज भर अंग लिपटायजो ।। १
ओषद है हरिनाम की रे, म्हारे जोही अंग लगायजो ।
ज्याँ श्रीचरणाँ से म्हारो दुख जासी, चरण खोळ जल पायजो ।। २
दरद दिवानी मीरां बैद साँवलियो, सूती नै आण जगायजो ।
मीरां तो दासी थारी जनम जनम की, चरणकमल चित लायजो ।। ३

○

३३२–२ (म.)
३३३–२ (म.)

पद–३३४ : राग–झंझोटी : ताल–कहरवा

(विरह)

बोल मां बोल मां बोल मां रे,
राधा कृष्ण विना बीजुं बोल मां(रे) । (टेर)
साकर शेलड़ीनो[1] स्वाद तजीने, कड़वो लीवडो घोल मां रे ।। १
चांदा सूरजनुं तेज तजीने, आंगिया संगा थे प्रीत जोड़ मां रे ।। २
हीरा माणेक मूंगो तजीने, कथीर संगाते मलि तोल मां रे ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरिधरनागर, शरीर आप्युं सम लोल मां रे ।। ४

⊙

पद–३३५ : राग–गौड़ सारंग : ताल–कहरवा या धीमा

(विनय)

बोल सूवा राम राम बोलै तो बलि जाऊँ रे । (टेर)
सार सोना की सल्या मँगाऊं, सूवा पींजरो बणाऊँ रे ।
पींजरा री डोरी सूवा, हाथ सूं हलाऊँ रे ।। १
कंचन कोटि महल सूवा, माळिया बणाऊँ रे ।
माळिया में आय सूवा, मोतियाँ बंधाऊँ रे ।। २
चंपला री डार सूवा, पींजरो बँधाऊँ रे ।
घृत घेवर सोलमा, लापसी परसाऊँ रे ।। ३
आमला रो रस सूवा, वोलि घोलि पाऊँ रे ।
बैठक के तो कारणे सूवा, चानगी बिछाऊँ रे ।। ४
प्रेम के प्रताप सूवा (पाँव में पहरान सूवा) झाँझण बणाऊँ रे ।
केसर भरियो वाटको तेरे अंग सैं लगाऊँ रे ।। ५
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, सरणे आयाँ सुख पाऊँ रे ।। ६

३३४–२ (म.)
1 पा.–'शेरडीनों' ।
३३५–२ (म.) (क.व्र. ५)

पद–३३६ : राग–मल्हार : ताल–धीमा तिताला

(प्रेम)

बोलै झीणाँ मोर, राधे तारा डूंगरिया पर । (टेर)
ए मोर ही बोलै पपैया ही बोलै, कोयल करै घन शोर ।। १
आभा माँ भली बिजली चमकै, बादल हुवा घनघोर ।। २
झरमर झरमर मेहूलो बरसै, भीजै मारा सालूड़ा नी कोर ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरना गुण, प्रभु(जु) मारा चितड़ा नो चोर ।। ४

○

पद–३३७ : राग–एमन : ताल–तिताला

(विरह)

भई हों बावरी सुनके बांसुरी । (टेर)
श्रवण सुनत मोरी सुध बुध बिसरी, लगी रहत तामें मन की गांसु री ।। १
नेम धरम कोन कीनो मुरलिया, कौन तिहारे पासु री ।। २
मीरां के प्रभु वश कर लीने, सप्त सुरन ताननि फांसु री ।। ३

○

पद–३३८ : राग आसावरी : ताल–कहरवा

(लीला)

भज केशव गोविंद गोपाला, हरि राधे पहिने वनमाला । (टेर)
मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल भूले नंदलाला ।। १
गोपी के कन्हैया बलभद्रजी के भैया, वत्सल प्रभु रछपाला ।। २
पूतना को जननी गति अधम-उधार नंदलाला ।। ३
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ।। ४
यमुना के तीर धेनु चरावैं, मुरली बजावैं नंदलाला ।। ५
बृन्दावन हरि रास रच्यो है, मीरां जी को करो प्रतिपाला ।। ६

३३६–१ (उ.); (या.—का. दो. से)
३३७–२ (म.)
३३८–३ (क.) (भ. मी. बा. हि. पु. मथुरा)

पद—३३६ : राग—भैरवी : ताल—तिताला
(चितावनी)

भज मन चरन कँवल अविनासी । (टेर)
जेताइ दीसे धरनि गगन बिच, तेताइ सब उठि जासी ।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत कासी ।। १
इस देही का गरब न करना, माटी में मिल जासी ।
यो संसार चहर की बाजी, साँझ पड्यां उठि जासी ।। २
कहा भयो है भगवा पहर्यां, घर तज भये सन्यासी ।
जोगी होय जुगति नहिं जानी, उलटि जनम फिर आसी ।। ३
अरज करौं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काटो जम की फांसी ।। ४

○

पद—३४० : राग—भैरवी : ताल—कहरवा
(प्रेमानन्द)

भजि मन श्री राधे गोपाल । (टेर)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माल ।। १
वृन्दावन की कुंजगलिन में, बिन देखे वेहाल ।। २
मीरां (के) प्रभु गिरधरनागर, छवि देखि भई हूं निहाल ।। ३

○

पद—३४१ : राग—मांड : ताल—कहरवा
(प्रेम)

भर मारी रे बाना मेरे सतगुरु बिरह लगाय के । (टेर)
पाँवन पंगा कानन वहिरा, सूझत नाँही नैना ।। १
खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूं, मरम न कोई जाना ।। २

३३९—१ (उ.)
३४०—(या०—नागरीदासजी की ह. लि. पदसार सं. से)
३४१—२ (म.)

सतगुरु ओषध ऐसी दीन्ही, रूम रूम भई चैना ।। ३
सतगुरु जस्या बैद न कोई, पूछो वेद पुराना ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, अमंरलोक में रहना ।। ५

○

पद–३४२ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(विनय)

भरमायो म्हारो मारूडो, भरम रह्यो । (टेर)
अरज करूँ मथुरा मत जावो, मानो जी म्हारो कह्यो ।। १
हावभाव से बस कर लीना, बाँध्यौ छै जी नेहड़ो नयो ।। २
जुलम किया सोकँण कुबज्या ने, व्रजनँद मोह लियो ।। ३
चतुर नार के नैनभाल से, बाँध्यौ छै जी राज रो हियो ।। ४
सोलह सहस गोपिका तज कर, कुबज्या री लार भयो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुड़न क्यों कियो ।। ६

○

पद–३४३ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा
(विनय)

भवनपति तुम घरि आज्यौ हो । (टेर)
विथा लगी तन माहिने, म्हारी तपत बुझाज्यो हो ।। १
रोवत रोवत डोलताँ, सब रैण विहावै हो ।। २
भूख गई निदरा गई, पापी जीव न जावै हो ।। ३
दुखिया कूं सुखिया करो, मोहि दरसण दीजै हो ।। ४
मीरां व्याकुल बिरहणी, अब बिलम न कीजै हो ।। ५

○

३४२–१ (उ.) (पुजा. नाथू. पु. से)
३४३–१ (उ.)

पद–३४४ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(संभाषण)

भाभी बोलो वचन बिचारी । (टेर)
साधाँ की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ।
छापा तिलक गल माल उतारो, पहिरो हार हजारी ।। १
रतन जटित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी ।
मीरांजी थे चलो महल में, थानै सोगन म्हारी ।। २
(मीरां वचन) भाव भगत भूषण सजे, शील सन्तोष सिंगार ।
ओढ़ी चूनड़ प्रेम की, गिरधरजी भरतार ।। ३
ऊदाँ बाई मन समझ, जावो अपणे धाम ।
राजपाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूं काम ।। ४

○

पद–३४५ : राग–सोरठ : ताल–दादरा

(प्रकीर्णक)

(ऊदाँ) भाभी मीरां कुल ने लगाई गाल,
ईडरगढ़ का आया जी ओलंबा । (टेर)
(मीरां) बाई ऊदाँ थाँरै म्हांरे नातो नाहिं,
बासो बस्यां का आया जी ओलंबा ।। १
(ऊदाँ) भाभी मीरां साधां का संग निवार,
सारो सहर थारी निंदा करे ।
(मीरां) बाई ऊदाँ करे तो पडचा झक मारो,
मन लाग्यो रमता रामसूँ ।। २
(ऊदाँ) भाभी मीरां पहरो नी मोत्यां को हार,
गहणो पहरो रतन जडाव को ।
(मीरां) बाई ऊदाँ छोडचो मैं मोत्यां को हार,
गहणे तो पहरचो सील संतोष को ।। ३

३४४–३ (क.)

(ऊदाँ) भाभी मीरां ओराँ के आवे जी आछी रूडी जान,
थारे आवे छै हरिजन पावणा ।
(मीरां) बाई ऊदाँ चढ़ चोबारां झाँक,
साधाँ की मँडली लागे सुहावणी ।। ४
(ऊदाँ) भाभी मीरां लाजे लाजे गढ चीतौड़,
राणोजी लाजे गढ़ रा राजवी ।
(मीरां) बाई ऊदाँ तारचो तारचो गढ़ चीतौड़,
राणाजी तारचा गढ़ रा राजवी ।। ५
(ऊदाँ) भाभी मीरां लाजे लाजे थारा माय न बाप,
पीहर लाजे जी थांरो मेड़तो ।
(मीरां) बाई ऊदाँ तारचा मैं तो माय न बाप,
पीहर तारचो जी मेड़तो ।। ६
(ऊदाँ] भाभी मीरां राणाजी कियो छै थां पर कोप,
रतन कचोलो विष घोलियो ।
(मीरां) बाई ऊदाँ घोल्यो तो घोलणदो,
कर चरणामृत वाही मैं पीवस्यां ।। ७
(ऊदाँ) भाभी मीरां देखतड़ां ही मर जाय,
यो विष कहिये बासक नाग को ।
(मीरां) बाई ऊदाँ नहिं म्हांरे माय न बाप,
अमर डाली धरती झेलिया ।। ८
(ऊदाँ) भाभी मीरां राणाजी ऊभा छै थांरे द्वार,
पोथी मांगे छै थारा ज्ञान की ।
(मीरां) बाई ऊदाँ पोथी म्हारी खाँडा की धार,
ज्ञान निभावण राणो है नहीं ।। ९
(ऊदाँ) भाभी मीरां राणाजी रो बचन न लोप,
उन रूठयां भीडी कोउ नहीं ।
(मीरां) बाई ऊदाँ रमापति आवे म्हारी भीड़,
अरज करूं छूं तासूं बीनती ।। १०

○

पद–३४६ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(प्रकीर्णक)

भाभी मीरां हो साधां को संग निवारि, थाहरी लोक निन्दा करै । (टेर)
बाई ऊदाँ हो लोकाँ ने लोकाँ रो भाव, म्हे म्हांको राम लडावस्यां ।
भाभी मीरां हो लाजै सैंस मेवाड़, लाजै कुंभाजी रो बैसणो ।। १
भाभी मीरां हो लाजै नोकोटी मारवाड़, लाजै दूदाजी रो मेड़तो ।
भाभी मीरां हो लाजै माई मोसाल, लाजै हो पीहर थारो सासरो ।। २
भाभी मीरां हो थांपरि राणों कोपिया, बाटकडे बिष घोलने ।
बाई ऊदाँ हो थे दीज्यो माहरै हाथ, म्हे अमरत करि आरोगस्यां ।। ३
बाई ऊदाँ हो साथरि सेज बिछाइ, नैणां में बिष संचरचौ ।
बाई ऊदाँ हो मंदर हुओ छै उजास, सही साधाँ रो तारण आवई ।। ४
बाई ऊदाँ हो दूधां पखालूं हरि रा पाँव, रतनजड़ित गोविन्दजीं नै बैसणो ।
बाई ऊदां हो मोत्यां थाल भराइ, करस्यां गोबिन्दजी री आरती ।। ५
राणाजी रा वाघेला थे ल्यो ने मीरांजी री खबरि, मुईक जीवै मीरां मेड़ती
राणा सोसोद्या बाजै छै ताल मृदंग, बाजै छै गोविन्दजी रा घूघरा ।
राणा सोसोद्या झालर रो झणकार, नारद संग मीरां निरत करै ।। ६
भाभी मीरां हो खोलो ने धरमदुवार, ऊभो राणोजी बीनती करै ।
बाई ऊदाँ हो राणा नै रावले मेल्हि, कुल रो तो नातो म्हारै कोई नहीं ।। ७
भाभी मीरां हो खोलो ने धरमदुवार, पंथीडो दिखावो तांहरा देवरो ।
बाई ऊदाँ हो पंथड़ो खांडा री धार, पंथड़ो निवाहन हारो कोई नहीं ।। ८
साँचा साहिबजी यह दुख सह्यो न जाइ, हीवड़ो तो सूभर भरचो ।
साँचा साहिबजी बहुतैं बिंड़द री लाज, कर जोरै मीरां बीनती करै ।। ९

○

पद–३४७ : राग–काफी : ताल–कहरवा

भावना को भूखो सांवरो म्हारो भावना को भूखो । (टेर)
शबरी के बोर सुदामा के तन्दुल, भर भर मूठचा ठूंको ।। १

३४६–(क. ब. २३)
३४७–(आनन्दस्वरूपजी से प्राप्त)

दुर्योधन का मेवा त्यागा, साग विदुर घर लूखो ।। २
करमा के घर खीच आरोग्यो, लूखो गण्यो नहीं सूखो ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भजन बिना नर फीको ।। ४

○

पद–३४८ : राग–सोरठ मल्हार : ताल–रूपक

(विरद)

भीजे म्हारो दांवनचीर, सांवणियो लूम रह्यो रे । (टेर)
आप तो जाय विदेसां छाये, जिवड़ो धरत न धीर ।। १
लिख लिख पतियाँ सँदेसा भेजूँ, कब घर आवे म्हारो पीव ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दरसन दो ने बलबीर ।। ३

○

पद–३४९ : राग–पीलू बरवा : ताल–तिताला

भीजे मेरी नवरंग चूनरी, कान्हा लागूं तोरे पाय । (टेर)
गोरस ले कर चाली मथुरा, सिर पर घड़ा झोला खाय ।। १
त्रिभंगी चालन गोवर्धन धर लियो, छिन भर मुरली बजाय ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित लागो मन भाय ।। ३

○

पद–३५० : राग–देश : ताल–कहरवा

(विरह)

भीड़ छाँडि बीर बैद मेरै पीर न्यारी है । (टेर)
करक कलेजै भारी वोषद न लागै कारी,
तुम घर जावो बैद मेरै पीर भारी है ।। १

३४८–१ (उ.)
३४९–(का. । उ. २ । ३३६)
३५०–१ (उ.)

बिरहिन बिरह बाढ्यौ तातैं दुख भयो गाढ़ो,
बिरह के बान ले ले बिरहिनी मारी है ।। २
चितही पिया की प्यारी नैंकहू न होवै न्यारी,
मीरां तो आजारबंध बैद गिरधारी है ।। ३

○

पद–३५१ : राग–छाया, कामोद : ताल–कहरवा
(व़िरह विनय)

भूल मत ज़ाना मेरी ओर निभाना ज़ी काना । (टेर)
हमरी तुमरी लगन लगी है, नित प्रति आना जाना ।
मन भावैं सो कहै जगत सब, नेक नहीं सरमांना ।। १
घट-घट बासी अन्तरयामी, प्रेम का पन्थ पिछांना ।
जो तू मेरो नाम न जाने, मेरो नाम दिवांना ।। २
सूरज सांमी पोर हमारी, चन्दन-चौक निसांना है ।
हमरे अँगना में तुलसी का बिरवा, जाके हरे हरे पांना ।। ३
जो कान्हा मेरो गाम न जाने, मेरो गाम बरसांना ।
कै तो ठाकुर दर्शन दीज्यो, नातर लीज्यो प्राना ।। ४
जब से सुनी भनक मुरली की, तब से जिव घबरांना ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, लगे प्रीत के बांना ।। ५

○

पद–३५२ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

भूली मोतिन नो हार, सखी तट जमना किनारे । (टेर)
एक एक मोती मारूँ लाख टका नूँ, परोव्यूँ सुवरण केरे तार ।। १
सासु अमारी अति बढकारी,[1] वाल्हा नणदल बिषड़ा नूँ भार ।। २
परण्यो अमारो परम सोहागी, वाल्हा मारचा छैं मोह ना बाँण ।। ३
बाई मीरां के प्रभु गिरधरना गुण, चरण कमल चित ध्यान ।। ४

३५१–१ (उ.) (पुजा. नाथू. पु. से)
३५२–1 'लड़ोकड़ी' (या०—का. दो से)

पद–३५३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

भोलानाथ दिगंबर ये दुख मेरो हरो रे । (टेर)
शीतल चंदन बेल पतरवा, मस्तक गंगा धरो रे १
अर्धांगी गौरी पुत्र गजानन, चन्द्र की रेख धरो रे ।। २
शिव शंकर के तीन नेत्र हैं, अद्भुत रूप धरो रे । ३
आसन मार सिंहासन बैठे, शान्त समाधी धरो रे ।। ४
मीराँ के प्रभु का जस गावत, शिवजी के पैंयाँ परो रे ।। ५

○

पद–३५४ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी-धमार

(मान-लीला)

मत कर माधोजी की बात, ए जी तुम सुण ऊधो महाराज । (टेर)
ज्यो कोई बात करे माधो की, हिये (में) करोत बहजात ।। १
एक समै हरी रास रचायो, छै महिनां की रात ।। २
एक समै कालिन्दी तट पर, ग्वाल बाल सब लार ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरनकमल बलिहार ।। ४

○

पद–३५५ : राग–जँगला : ताल–कहरवा

(मान)

मत आव रै नंद का म्हांकी गली । (टेर)
म्हाँकी गली की बाँकी गुवालिन, मतना लोग हँसावै रे ।। १
सास बुरी मेरी नंणद हटीली, पाड़ोसण लख जावै रे ।। २
कोउ गलियों में लुकतो छिपतो, म्हांके कानी आवै रे ।। ३
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, झूँठी ही जी ललचावै ।। ४

३५३–१ (उ.) ।
३५४–(म.); (२५) (पुजा. नाथू पु. से) ।
३५५–(क.) (फु. प.) ।

पद—३५६ : राग—काफी : ताल—दीपचंद

(फाग)

मत डारो पिचकारी मैं सगरी भीज गई सारी । (टेर)
जिन डारो सो सनमुख रहियो, नहिं तो मैं देऊँगी गारी ।। १
भर पिचकारी मोरे मुख पर मारी, भीज गई तन सारी ।। २
लाल गुलाल उडावन लागे, मैं तो मन में विचारी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरनकमल बलिहारी ।। ४

○

पद—३५७ : राग—मल्हार : ताल—तिताला

(विरद)

मतवारो बादल आयो रे, हरि को सँदेशो नहिं लायो रे । (टेर)
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल शब्द सुनायो रे ।। १
कारी अँधियारी बिजरी चमकै, बिरहन अति डर पायो रे ।। २
गाजै बाजै पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लायो रे ।। ३
फूकै (काली) नाग बिरह की जारी, मीरां मन हरि भायो रे ।। ४

○

पद—३५८ : राग—सोरठ : ताल—कहरवा

(प्रेम)

मदरो सो बोल मोरा, मोरा स्याम बिना जीव दोरा । (टेर)
दादुर मोर पपैया बोले, कोयल कर रही शोरा ।। १
झरमर झरमर मेहा बरसे, गाजत है घनघोरा ।। २
मीरां के प्रभु राधा वोले, स्याम मिल्या जीव सोरा ।। ३

○

३५६—इस पद का द्वितीय अन्तरा अनेक होलियों में मिलता है ।
३५७—(उ.) (वं. पु. पृ. १३)
३५८—(उ.) (भजनमंजरी पृ. ९६१)

पद–३५९ : राग–बहार : ताल–तिताला

(रूपलीला)

मन अटकी मेरे दिल अटकी हो मुकुट की लटक मेरे मन अटकी । (टेर)
माथे मुकुट कोर चंदन की सेला है पीरे पट की ।। १
शंख चक्र गदा पद्म विराजे गुञ्जमाल मेरे हिये अटकी ।। २
अन्तर्धान भये गोपियन में सुध न रही जमुना तट की ।। ३
पातपात वृन्दावन ढूंढं कुञ्ज कुञ्ज राधे लटकी ।। ४
जमुना के नीर तीर धेनु चरावै सुरत रही बंसीबट की ।। ५
फूलन के जामा कदम की छैयां गोपियन की मटुकी पटकी ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर जानत हो सब घट की ।। ७

○

पद–३६० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मनखा जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुरि न आती । (टेर)
अबके मोसर ज्ञान विचारो, राम राम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया सूंज पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ।। १
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरी प्यासी जाती ।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोविंद का गुण गाती ।। २
साहब पाया आदि अनादी, ना तर भव में जाती ।
मीरां कहे इक आस आपकी, औरां सूं सकुचाती ।। ३

○

पद–३६१ : राग–भैरवी चाल ख्याल : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

मन तू कह्यो हमारो मान, मैं देती हूं तोहे ज्ञान । (टेर)

३५९–(उ.)
३६०–(उ)
३६१–(निज संग्रह से)

लाखां बातां तोहे समझाऊँ, तेरे नहीं कणे की कांण ।
हामल भर कर पाछो बगदै, तू है बेईमान ।। १
सैल दिखाऊँ माल खवाऊँ और चबाऊँ बीड़ा पान ।
मेरो कह्यो एक तू कर ले, हरि(जी) सूं कर पहचान ।। २
हरि मंदिर में हरि गुण गा लै, मीठी सुणा दे (तीखी) तान ।
स्वास चढ़ाय समाधि लगा ले, कर ले प्रभु को ध्यान ।। ३
भजन कियां सूं तेज बधैलो, जैसे (ऊग्यो) सूरज भान ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, अब तू थारी जान ।। ४

○

पद–३६२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

मन माने जब तार प्रभुजी मन जब माने तार । (टेर)
नदियां गहरी नाव पुरानी कैसे उतरूँ पार ।। १
पोथी पुरातन सब कुछ देखी अंत न लागे पार ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर नाम निरन्तर सार ।। ३

○

पद–३६३ : राग–परज : ताल–रूपक

(प्रभु-महिमा)

मन मेरे परसि हरि के चरन । (टेर)
सुभग सीतल कमल कोमल, त्रिविधि ज्वाला-हरन ।। १
अधम-तारन तरन-तारन, सब के पोषन भरन ।। २
सो चरन प्रहलाद परसे, दुःख दारिद हरन ।। ३

३६२–(३)
३६३–(या.–ना. दा. जी के पदसार-संग्रह ह. लि. से)
यह पाठ प्रचलित पाठ से बहुत भिन्न है इसलिये लिखा गया ।––सं. ।
यह पद ता. ११-१२-४७ को स्वामी आनन्दस्वरूपजी ने जयपुर में बताया । उन्होंने यह पद ब्राह्मणों की सरेरी ग्राम में एक वृद्ध पुरुष से मेवाड़ में सुना ।

सोई चरन ध्रुव अटल कीने, इन्द्र पदवी धरन ।। ४
जिन चरन बलि बाँध पठये विप्र रुपज धरन ।। ५
जिन चरन ब्रह्मांड वेध्यो, नख सुर सुरीय झरन ।। ६
जिन चरन बन गऊ चारी, गोपलीला करन ।। ७
सोई चरन काली के मस्तक, कूबरी आभरन ।। ८
दासि मीरां लाल गिरधर, राखो अपनी सरन ।। ९

○

पद–३६४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मन मोह्यो रे बंसी वाला । (टेक)
कांधे कमरिया हाथ लकुटिया, मारि गयो नैनों भाला ।। १
यक बन ढूंढि सकल बन ढूंढे, कहूँ नहीं पायो नंदलाला ।। २
मोर मुकुट पीताम्बर राजै, कानन कुंडल छबि बिसाला ।। ३
मीरां प्रभु गिरधरजू की प्यारी, आनि मिल्यो प्यारो गोपाला ।। ४

○

पद–३६५ : राग–दुरगा : ताल–तिताला

(विनय, रूप-वर्णन)

मनमोहन गिरिवरधारी । (टेर)
मोरमुकुट पीतांबरधारी, मुरली बजावै कुंजबिहारी ।। १
हाथ लियो गोवरधन पर्वत, लीला नाटकी वाके गत है न्यारी ।। २
ग्वाल बाल सब देखन आये, संग लीनी राधा प्यारी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आज आई जी हमारी बारी[1] ।। ४

○

३६४–(म.) (रासपद-संग्रह से पृ. १३)
३६५–(का./उ. १/३१२)
1 पा.–'अजी आई जी हमारी फेरी' ।

पद–३६६ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(लीला)

मनमोहन दिल का प्यारा । (टेर)
माता जसोदा पालना हलावे, हलावे हाथ में लेकर दोरा ।। १
कब से आंगन में खड़ी है राधा, देखे किसन का चहरा ।। २
मोर मुकट पीतांबर सोहे, गले मोतिन का गजरा ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलिहारा ।। ४

○

पद–३६७ : राग–जोनपुरी : ताल–रूपक

(विरद चेतावनी)

मन रे परस हरि के चरण । (टेर)
सुभग शीतल कमल कोमल, त्रिविध ज्वाला हरण ।
जे चरण प्रहलाद परसे, इन्द्र पदवी धरण ।। १
जिन चरण ध्रुव अटल कीने, राखि अपनी शरण ।
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेटचो, नख शिखौ श्री भरण ।। २
जिन चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण ।
जिन चरण काली हि नाथ्यो, गोप लीला करण ।। ३
जिन चरण धारचो गोवर्धन, गरब मघवा हरण ।
दासि मीरां लाल गिरधर, अगम तारण तरण ।। ४

○

पद–३६८ : राग–मारू : ताल–कहरवा

(विरह-वेदना)

मन हमारा बाँध्यो माई, कँवल नैन अपने गुन । (टेक)
तीखण तीर बेध शरीर दूरि गयो माई ।
लाग्यो तब जान्यों नहीं, अब न सह्यो जाई री माई ।। १

३६६–(क)
३६८–(उ.) (ग्रन्थसाहिब गाईवन्दे की बीड़)

तंत मंत औषद करउ, तऊ पीर न जाई ।
है कोऊ उपकार करे ? कठिन दर्द री माई ।। २
निकटि हो तुम दूर नहीं, वेगि मिलो आई ।
मीरां गिरधर स्वामी दयाल, तन की तपति बुझाई री माई ।
(कँवल नैन आपने गुन बांध्यो माई ।) ।। ३

○

पद–३६९ : राग–पीलू : ताल–कहरवा
(चेतावनी)

मनुआ वावा रे सुमर ले सीताराम । (टेक)
वड़े वड़े भूपति सुलतान, उनके डेरे भये मैदान ।। १
लंका के रावण काल ने खाया, तू क्या है कंगाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरलाला, भज गोपाल त्यज जंजाल ।। ३

○

पद–३७०
(निर्गुण प्रेम)

मन्दरिये पधारो श्याम ! मन भगती में ।
सोने की थाली में भोजन परोसो,
धीरे धीरे जीमो श्याम ! मन भगती में ।
सोने की झारी में गंगाजल पानी,
धीरे धीरे पीवो श्याम ! मन भगती में ।
चुन चुन कलीयां सेज बिछाई,
धीरे धीरे पोढ़ो श्याम ! मन भगती में ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर,
शरण में लीज्यो श्याम ! मन भगती में ।

○

३६९–(क)

पद–३७१ : राग–भैरवी : ताल–रूपक

(विरद)

माई तेरो मोहन ने मन हरचो । (टेर)
काह करूँ कित जाऊँ सजनी, प्रान पुरुष सूं बरचो ।। १
हूँ जल भरने जात थी सजनी, कलस माथे धरचो ।। २
सांवरी-सी किसोर मूरत मुरली ने कछु टोनो करचो ।। ३
लोक लाज सब बिसार डारी, तब ही कारज सरचो ।। ४
दासी मीरां लाल गिरधर, छान ये वर वरचो ।। ५

○

पद–३७२ : राग–खमाच : ताल–धीमा

(प्रेम)

माई मोरे नयन बसे रघुवीर । (टेर)
कर सर चाप कुसुम सर लोचन ठाड़े भये मन धीर ।। १
ललित लवंग लता नागर लीला (जब) पेखो तब अंग पीर ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर बरसत कांचन नीर ।। ३

○

पद–३७३ : राग–सोरठ : ताल तिताला

(विरह)

माई म्हांने मोहन मित्र मिलाय । (टेर)
रसियो है उर अंतर बसियो या बिनु कछुन सुहाय ।। १
पातलियो सांवरियो लोभी राखूं कंठ लगाय ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर तन की तपत बुझाय ।। ३

○

३७१–(म)
३७२–(उ)
३७३–(उ) (दीना. मं मी. प. ६)

पद–३७४ : राग–काफी : ताल–जत

(प्रेम)

माई म्हारै निरधन रो धन राम । (टेक)
खाय न खूटे चोर न लूटै, विपति पड्या आवै काम ।। १
दिन दिन प्रीत सवाई दूणी, सुमरण आठों याम[1] ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल विसराम ।। ३

○

पद–३७५ : राग–काफी : ताल–तिताला

(प्रेमचरित)

माई म्हारै साधाँ रो इकत्यार है । (टेक)
साधु ही पीहर साधु ही सासरो, सांवरियो भरतार है ।। १
जात पाँत कुल कुटम कबीलो, साधू ही परवार है ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, रमस्यां साधाँरी लार है ।। ३

○

पद–३७६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

माई म्हांने मिलिया छै मित्र गोपाल, नहीं जावां सासरे । (टेर)
सास हमारी सुषमा नारी ससुरो परम संतोष ।
जेठ जुंगत कर जाणियो रे बाला पीव रह्यो निरदोष ।। १
देवर के रै दोय डीकरी रे सो वै अखन कंवारि ।
दासि मीरां लाल गिरधर आवागमन निवारि ।। २

○

३७४–(उ.); 1 पा.–सुमरण सूं म्हारै काम ।
३७६–(उ.) (दीना. मं. मी. प. ३)

पद–३७७ : राग–माड : ताल–दीपचंदी

(चरित)

माई म्हांने सुपना में परणी गुपाल । (टेक)
राती पीरी चूनर पहरी मँहदी पान रसाल ।। १
कांई करां और सँग भाँवर म्हांने जग जंजाल ।। २
मीरां प्रभु गिरधरनलाल सूं करी सगाई हाल ।। ३

○

पद–३७८ : राग–तीलंग : ताल–कहरवा

(चरित)

माई म्हांने सुपना में परणी गोपाल । (टेक)
गैली ये मीरां भई बावरी सुपनूं छै आल जंजाल ।। १
जो तूं ने सुपना में गिरधर मिलिया तो कछुक सैनाण बताय ।। २
हलदी तो पीठी म्हारे अंग लिपटाई मँहदी सूं राच्या म्हारा हाथ ।। ३
छपन कोड़ जादू जान पधारया दूल्हो श्रीनन्दकँवार ।। ४
सेवरियो सिरपेच कलंगी सोरठड़ी तरवार ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर पूरबले भरतार ।। ६

○

पद–३७९ : राग–देस : ताल–कहरवा

(चरित)

माई म्हांने सुपने में परण गया जगदीस । (टेक)
सोती को सुपणा आविया जी सुपणा बिस्वा बीस ।। १
गैली दीखै मीरां बावली सुपणां आलजंजाल ।
माई म्हाँने सुपणों में परण गया गोपाल ।। २

३७८–(म.) (सर. मा. मी. ली. से १)
(दीना. मं. मी. प. ५)
३७९–(वि. कु. पृ. ६७)

अंग अंग हलदी में करी जी सुधे भीज्यो गात ।
माई म्हाँने सुपणे में परण गया दीनानाथ ।। ३
छप्पन कोट जहां जान पधारे दूल्हो श्रीभगवान ।
सुपणे में तोरण बांधियो जी सुपणे में आई जान ।। ४
मीरां को गिरधर मिल्या जी पूरब जनम के भाग ।
सुपणे में म्हांने परण गया जी हो गया अचल सुहाग ।। ५

○

पद–३८० : राग–सोरठ : ताल कहरवा

(विरह)

माई म्हांने रमइयो है दे गयो भेष । (टेक)
हम जाणें हरि परम सनेही पूरब जनम को लेष ।। १
अंग बिभूत गले मृगछाला घर घर जपत अलेष ।। २
मीरां के प्रभु हरि अविनासी रामजी मिलन की टेक ।। ३

○

पद–३८१ : राग–बिहाग सोरठ : ताल–रूपक

(विरह)

माई मेरी हरि न बूझी बात ।
या पिंड मांही प्राण पापी निकसि क्यों नहिं जात ।। (टेक)
मुख न बोलै पट न खोले सांझ तैं परभात ।
बोलनै जुग बीतन लागौ काहे की कुसलात ।। १
आवन आवन कह गये हरि आवन ही की बात ।
रैनि अंधेरी बीज चमकै तारा गिनत बिहात ।। २
कै कटारी कंठ सारूं कै मरूं विष खात ।
दासि मीरां लाल गिरधर (मन) लालची ललचात ।। ३

३८०–(उ.) (राम स. गु. पृ. २९८)
३८१–(उ.) (क.ब. २६)

पद–३८२ : राग–पूरबी : ताल–इकताला

(विरह)

माई मेरे नैनन बान परी री । (टेक)
जा दिन नैना स्याम न देखों बिसरत नाहीं घरी री ।। १
चित बस गई सांवरी सूरत उर तें नांहि टरी री ।। २
मीरां हरि के हाथ बिकानी सरवस दे निबरी ।। ३

○

पद–३८३ : राग–जोनपुरी : ताल–इकताला

(प्रेम)

माई मैं तो गिरधर के रँग राची । (टेक)
मेरे बीच पड़ो मत कोई, बात चहूँ दिस माँची ।। १
जो मन सार मेरे मन उपज्यो, ज्यों कंचन मणि साँची ।। २
और सबही हो-हो सिर ऊपर, मैं परगट होय नाँची ।। ३
मुलक निसान बजावां कृष्ण के, जो कोइ कहो सोई साँची । ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मो मति नाहीं काची ।। ५

○

पद–३८४ : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

ठुमरी

माई मैं तो गोविन्द सों अटकी । (टेक)
चकित भये हैं दृग दोउ मेरे लखि शोभा नट की ।। १
शोभा अंग अंग प्रति भूषण वनमाला तट की ।
मोर मुकुट कटि किंकिनि राजै दुति दामिनि पट की ।। २
रमित भई हौं सांवरे के संग लोग कहै भटकी ।
छुटी लाज कुलकानि लोग डर रह्यो न घर हट की ।। ३

३८२–(उ.)

बिना गोपाल लाल बिन सजनी को जानै घट की ।
मीरां प्रभु के संग फिरेगी, कुञ्ज कुञ्ज लटकी ।। ४

○

पद–३८५ : राग–काफी वा पहाड़ी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-प्रवाह)

माई मैं तो लियो है साँवरियो मोल[1] । (टेक)
कोई कहै सोंघो कोई कहै महँगौ, (मैं तो) लियो है हीरा सूं तोल ।। १
कोई कहै हळको कोई कहै भारी, (मैं तो) लियो री ताखड़ियाँ[2] तोल ।। २
कोई कहै छाने कोई कहै चोड़े[3], (मैं तो) लियो री बाजताँ ढोल ।। ३
कोई कहे घटतो कोई कहे बढ़तो, (मैं तो) लियो है बराबर तोल ।। ४
कोई कहे काळो कोई कहे गोरो, (मैं तो) देख्यो है घूँघट पट खोल ।। ५
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, (म्हारे) पूरब जनम रो कोल[4] ।। ६

○

पद–३८६

(प्रेमानन्द)

माई मैं तो सपना में परनी गोपाल । (टेक)
हाथी भी लायो घोड़ा भी लायो और लायो सुखपाल ।। १

○

३८५–(उ.) (मीरांबाई का जीवन चरित्र मु. देवी. पृ. ३४)
(मीरां प. जमा. राय. २)
1 पा.–गोविन्दो । रमैयो । 2–तराजू । 3–छुरके ।
4–(रा. स. गु. में) 'मीरां के प्रभु हरि अविनासी, पूरब जनम के कोल' । (यह अंतरा रा. स. गु. में अधिक है) 'या कूं तो सब लोग जाणत हैं, लियो अमोलक मोल' ।
३८६–(मीरां. जी. च. मु. देवी. पृ. ३४)

पद–३८७ : राग–मांड : ताल–दीपचंदी
(प्रेमानन्द)

माई री मैं तो लीनो गोविंदो मोल । (टेर)
कोई कहै छाने कोई कहै छुपकै, लियो री बजंता ढोल ।। १
कोई कहै महँगो कोई कहै सोंघो, लियो री तराजू तोल ।। २
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो री अमोलिक मोल ।। ३
याही कूं सब लोग जाणत हैं लियो री आँखी खोल ।। ४
मीरां कूँ प्रभु दरसण दीज्यो पूरब जनम का कोल ।। ५

○

पद–३८८ : राग–दुरगा : ताल–तिताला (कहरवा)
(चरित्र)

माई री मैं सवलिया जान्यो नाथ । (टेक)
लेन परिचो अकबर आयो तानसैन ले साथ ।। १
राग तान इतिहास श्रवन करि नाय नाय महि माँथ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर कीन्ह्यों मोहि सनाथ ।। ३

○

३८७–(मीरां मंदाकिनी/पद १८)
इसका पाठ वैल्वेडीयर प्रेस की 'शब्दावली' में यों है—
"माई मैं तो लियो रमैयो मोल । (टेर)
कोई कहै छानी कोई कहै चोरी, लियो है बजंता ढोल । १
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियो है मैं आँखी खोल । २
कोई कहै हलको कोई कहै भारी, लियो है तराजू तोल । ३
तन का गहना मैं सब कुछ दीन्हा, दियो है बाजूबंद खोल । ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पुरब जनम का है कौल । ५
३८८–(क.) (मीरांबा. जी. का. प्र. पृ. १४)

पद–३८९ : राग–सोरठ, देस : ताल–कहरवा
(चरित)

माई हूँ सपना में परणी गोपाल । (टेक)
मति करो म्हारी ब्याव-सगाई क्यूं बांधो जंजाल ।। १
झूंठा मात पिता सुत बंधू बंध्यो अबध्या ख्याल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर सांचो पति नंदलाल ।। ३

○

पद–३९० : राग–बीलावल : ताल–झुमरा
(प्रेम)

माई हूँ स्याम कै रँग राची । (टेक)
मेरे बीज परो मत कोऊ, बात चहूँ दिशि मांची ।। १
जगत रैनि रहै उर ऊपर, ज्यूं कञ्चन मणि खाँची ।। २
होय रही सब जग में जाहर, फेरि प्रगट होइ नाँची ।। ३
मिली निसान बजाय कृष्ण सूं ज्यो कछु कहो सो साँची ।। ४
जन मीरां गिरधर की प्यारी, मोहोबत है नहिं काची ।। ५

○

पद–३९१ : राग–सोरठ, : ताल–कहरवा
(विरद, विनय)

माधोजी आयाँ ही सरैंगो राणी रुकमणि का भरतार । (टेर)
लिखि पतिया द्विज हाथ पठावो द्वारका नै गमन करैंगो ।। १
बड़े बड़े भूप महाबल जोधा कुणसैं कोंण घटैंगो ।। २
यो सिसपाल चंदेरी को राजा कूड़ी साखि भरैंगो ।। ३
मीरां कहै यूं रुकमणि कहत है थांको ही बिड़द लजैंगो ।। ४

३८९–(मी. ली. प. दूधू ५)
३९०–(उ.) (मी. ली. दूधू १)
३९१–(क.) (राम स. गु. पृ. ३२२)

पद–३९२ : राग–विहाग : ताल–तिताला
(रहस्यवाद)

माधो बिना बसती उजार, मेरे भाँवे । (टेक)
एक समै मोतियन के धोके, हंसा चुगत जुवार ।। १
सरवर छाँड तलैया बैठे, पंख लपट रही गार ।। २
सरवर सूक तरवर कुम्हलाये, हंसा चले उड़ार ।। ३
मीरां के प्रभु कब ज्यो मिलोगे, लाँबी भुजा पसार ।। ४

○

पद–३९३ : राग–माँड : ताल–कहरवा
(चरित)

मान ल्यो जी म्हारी, अब मीरां म्हारी, थानै सखियाँ वरजै सारी । (टेक)
राजा बरजै, राणी वरजै, बरज बरज सब हारी ।। १
सीसफूल सिर ऊपर सोहै, बिंदली मोत्यां वारी ।। २
हाथ गूजरी कर में कंकण, नेवर पद झुँणकारी ।।३
साधाँ के सँग बैठ बैठ कर, लाज गुमा दइ सारी ।। ४
नित प्रति जाय साध सँग बैठो, कुल के लावो गारी ।। ५
बड़ा घरां का छोटा कहवो, नाँचो दै दै तारी ।। ६
वर पायो हिंदवाणू सूरज, अब मन काँई धारी ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ८

○

पद–३९४ : राग–प्रभाती : ताल–दादरा
(रूप-वर्णन)

मानू मीन सरवर जप तप कर मिलन आई । (टेक)
भृकुटी कुटिल बिसाल चितवन में टोना ।
खंजन और म[....]पान मोये मृगछोना ।। १

३९२–(म.) (फु. प.)
३९३–(म.) (दीना. मं. मी. प. १५)
३९४–(प्रभुना. गुटका से)

नासिका अधर अनूप मंद मंद हासी ।
दसनन दामिनी चिमकत चपला-सी ।। २
कंबु कंठ भुज बिसाल ग्रीव तीन रेखा ।
नटवर का भेष मानों सकल गुण विशेषा ।। ३
छुद्रघंटिका अधर अनूप किंकिनी धुन सवाई ।
उस गिरधर के अंग अंग मीरां बलि जाई ।। ४

○

पद–३९५ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(मीरांबाई ऊदाँबाई सम्वाद)

ऊदाँ–माया थे तो क्यूं तजी भाभी, मीरां क्यूं रे लियो बैराग,
कांईं थारै मन बसी । (टेक)
मीरां–याही म्हारै मन वसी बाई ऊदाँ, यूं र लियौ बैरांग,
माया म्हे यूँ र तजी ।। १
ऊदाँ –ऊँचा नीचा बैसणां ये भाभी, उत्तम तिहारी जात ।
राणां सो वर पाइयो हे भाभी, नोकूंटां में थारो राज ।। २
मीरां–ऐसा तो मोती ओस का ये, बाई जैसो यो संसार ।
लगै झकोलो पौन को ये, बाई छिन मैं सब ढल जाइ ।। ३
ऊदाँ –खीर खाँड को भोजन जीमूं, भाभी ओढ़ो दिखणी चीर ।
राणाँ सो बर पाइयो ये, भाभी सब महलाँ में थारो सीर ।। ४
मीरां–खीर खाँड को भोजन त्याग्यो ये, बाई त्याग्यो दिखणी चीर ।
राणाँ सो बर त्यागियो ये, बाई (सब) संतन में म्हारो सीर ।। ५
ऊदाँ –बास्या कूस्या टूकड़ा ये, भाभी और मिलेगी खाटी छाय ।
भैं सोवो भूखाँ मरो ये, भाभी नहीं मिलैगो हरि आय ।। ६
मीरां–बास्या तो खास्यां टूकड़ा ये, बाई पीस्यां खाटी छाय ।
भैं सोवां भूखाँ मराँ ये, बाई जब रे मिलेगो हरि आय ।। ७
माया म्हे तो यूँ तजी. ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल लिपटाय ।। ८

३९५–(क.) (दीना. मं. मी. प. ३३)

पद–३९६ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा
(होरी लीला)

मारत मेरे नैन में पिचकारी, मैं तो ईं साँवराजी सूं हारी । (टेक)
नैन बचा कर डारो साँवरा, ओर बदन सब सारी ।
भर पिचकारी गोरा मुख पर मारी, भीज गई सब सारी ।। १
रतन कटोरा में केशर घोरी, हाथ लियें पिचकारी ।
अबके तो रङ्ग डार दियो है, अबके डारो दूंगी गारी ।। २
घर मेरा दूर गागर सिर भारी, मैं नाजुक पनिहारी ।
पनघट घाट छाँड दे कनैया, बोइयाँ मरे थारी प्यारी ।। ३
बृन्दावन की कुञ्जगलिन में, भीड़ भई अति भारी ।
मैं तो साँवरा ने पाई अकेली, चूरमूर कर डारी ।। ४
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंडल की छबि न्यारी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीते हम हारी ।। ५

○

पद–३९७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला
(वात्सल्य)

माँगत माखन रोटी, गोपाल प्यारे । (टेर)
मेरे गोपालजी कूं रोटी बनाय देऊं, एक छोटी दूजी मोटी ।। १
मेरे गोपालजी का ब्याह करूंगी, बिरषभान की बेटी ।। २
मेरे गोपालजी के झबला सिलाऊंगी, मोतिन की लड़ छूटी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल में तो जोती ।। ४

○

३९६–(भ.सं.) । (२३) (पुजा: नाथू. पु. से)
३९७–(का./उ. १/३०६)

पद–३९८ : राग–मांड : ताल–कहरवा
(विनय)

म्हांने चाकर राखो जी, साँवरिया म्हांनें चाकर राखो जी । (टेक)
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ, नित उठि दरसन पास्यूँ ।
वृन्दावन की कुंजगलिन में, तेरी लीला गास्यूँ ।। १
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तीनूँ बाताँ सरसी ।। २
हरे हरे सब बलहि [महल] बनाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी ।
साँवरिया के दर्शन पाऊँ, पहिर कुसुंमी सारी ।। ३
जोगी आया जोग करन कूं, तप करने सन्यासी ।
हरी भजन कूं साधू आये, वृन्दावन के वासी ।। ४
मीरां के प्रभु गहिर गँभीरा, हिर्दे रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दर्शन दीन्हे, प्रेम नदी के तीरा ।। ५

○

पद–३९९ : राग–मांड : ताल–दादरा
(विरह)

म्हांनै भी ले चालो ऊधो ! साँवरा रै देस । (टेक)
लिख लिख पतियाँ भेजती रे वाला, भलो जणायो अपनेस ।। १
सज्या सिणगार उतारस्यूँ, करस्यूँ भगवाँ भेस ।। २
थारै कारण बन बन डोलूँ, कर जोगण रो भेस ।। ३
थारे कारण सब ही छोडयो, छोड़्यो मेड़त्यो देस ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तन मन हर की भेट ।। ५

○

३९८–(उ.) (बं.पु. पृ. २९) (भ.र.मी. पृ. २०८)
३९९–(म.)

पद–४०० : राग–हमीर : ताल–तिताला

(इष्ट-प्राप्ति)

म्हारा ओलगिया घर आया जी । (टेक)
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल-मिल मंगल गाया जी ।। १
घन की धुनि सुनि मोर मगन भया, यूँ मेरे आणंद आया जी ।। २
मगन भई मिलि प्रभु अपणा सूं, भौ का दरद मिटाया जी ।। ३
चंद कूँ देखि कमोदणि फूलै, हरखि भया मेरी कायाजी ।। ४
रंग रग सीतल भई मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधाया जी ।। ५
सब भगतन का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी ।। ६
मीरां बिरहिण सीतल होई, दुख दुन्द दूरि न्हसाया जी ।। ७

○

पद–४०१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

'म्हारा गिरधर'[1] रसिया छैल, मैं तो चालूं थारी गैल । (टेक)
पुरी द्वारिका वास करूंली, और समद की ल्हैर ।
सब राण्यां सैं रहूं निराली, जुदा चुणाद्यो म्हैल ।। १
राणों म्हाँसूं करी अनीती[2], भोत मचाया फैल ।
मैं तो थाँकी संग चलूंली, भोत करूंली ठैल ।। २
राज पाट राणां का छोड्या, और कृंचन का म्हैल ।
हाती घोड़ा माल खजाना, और दुनियां की सैल ।। ३
मैं गिरिधर की भक्ती करस्यूं, कटे जनम का मैल ।
आनँद धर मीराँ गिरिधर को, कच कंचन का म्हैल[3] ।। ४

४००–(म.)
४०१–(म) (फु.प)
1. पा –गोविंद । 2. पा –कुटिलता ।
3. पा.–"आनँदघन मैं चली सासरे चढ़ कञ्चन की भैल ।"

पद–४०२ राग–सारंग रसिया : ताल–कहरवा
(प्रार्थना)

म्हारा जनम मरण का साथी, थाँने नहिं बिसरूं दिनराती । (टेक)
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती ।। १
यो संसार सकल जन झूँठो, झूँठा कुल रा नाती ।
दोऊ कर जोड़्याँ अरज करत हूं, सुन लीजो मेरी बाती ।। २
पल पल तेरा पंथ निहारूं, निरख निरख सुख पाती ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणाँ चित राती ।। ३

○

पद–४०३ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(चरित)

म्हारा नटनागर गोपाललाल बिन, कारज कौन सुधारे । (टेक)
घूम रह्यो दुरयोधन राजा, जैसे गज मतवारो ।
सिंह होय कर हस्ती मारे, बड़ो भरोसो थारो ।। १
मीरां ने राणाँजी बरजे, मतना जन्म विडारे ।
थे संगत साध की सीख्या, मत आवो म्हैल हमारे ।। २
म्हे संगत साधां की सीख्या, थारे कछुयन सारे ।
तन में रीस भई राणाँ के, ऊठ खडग ले मारे ।। ३
प्याला में विष घोल राणाँजी, मन में कपट विचारे ।
अमृत कर के मीरां पी गई, जहर साँवरो झारे ।। ४
जब जब भीड़ परी भक्तन पर, आपहि कृष्ण पधारे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि भक्तां ने त्यारे ।। ५

○

४०३–(क) (भजनमंजरी, पृ. ३८)

पद–४०४ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हारा सतगुर बेगा आज्योजी, म्हारे सुख री सीर वुवाज्यो जी । (टेक)
तुम बीछड़ियाँ दुख पाऊं जी, मेरा मन माँही मुरझाऊं जी ।। १
मैं कोइल कुरलाऊं जी, कछु बाहरि कहि न जणाऊं जी ।। २
मोहि बाघण विरह सतावे जी, कोई कहियां पार न पावै जी ।। ३
ज्यूं जल त्यागा मीना जी, तुम दरसण बिन खीना जी ।। ४
ज्यूं चकवी रैण न भावै जी, वा ऊगो भाण सुहावै जी ।। ५
ऊ दिन कबै करोला जी, म्हारे आँगण पांव धरोला जी ।। ६
अरज करै मीरां दासी जी, गुरुपद-रज की प्यासी जी ।। ७

○

पद–४०५ : राग–मांड : ताल–दादरा

(प्रार्थना)

म्हारा हरिजी, चाकरी री चाह म्हारे मन राखोला सरण हजूरी । (टेक)
बैल बँधावो भांवें घोड़ा बँधावो, चाहै करावो मजूरी ।। १
खाबा पीबा की म्हांकी चिन्ता मत कीज्यौ, कंगनी दीज्यो भाँवैं कूरी ।। २
ओढनकूं कारी कामरिया दीज्यो, और चटाई खजूरी ।। ३
जो थे देशी सो म्हे लेशी, योई मत म्हारे पूरी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निज चरणन की धूरी ।। ५

○

पद–४०६ : राग–पीलू पाछमर : ताल कहरवा

(चरित)

म्हारी बात जगत सूं छानी, साधाँ सूं नहि छानी री । (टेक)

४०४–(म)
४०५–(म.) (प्रहलाद भक्तजी का पाना १)
४०६–(म.) (दीना. मं. मी. प. २०)

साधू मात पिता कुल मेरे, साधू निरमल ग्यानी री ।। १
राणाँ नें समझाग्रो बाई (ऊदाँ), मैं तो एक न मानी री ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, संतन हाथ विकानी री ।। ३

○

पद–४०७ : राग–ग्रासा मांड : ताल–कहरवा, धीमा
(विनय)

म्हारी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी । (टेक)
पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी ।। १
मैं तो हूं बहु ग्रौगणहारी, ग्रौगण चित्त मत दीजो जी ।। २
मैं तो दासी थारे चरण-जनाँ की, मिल बिछुरन मत कीजो जी ।। ३
मीरां तो सतगुरु के सरणे, हरिचरणाँ चित दीजो जी ।। ४

○

पद–४०८ : राग–मांड
(प्रेम-उत्सुकता)

म्हारी सेजड़ल्यां रँग माणूँजी, म्हारी कुञ्जन का प्यारा पलाड़ूजी । (टेक)
ग्राम्हाँ साम्हाँ महल झुकाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी ।
बारी में झाँकत म्हांरे निजर पड़्या गिरधारी ।। १
ग्राम्हाँ साम्हाँ बाग लगाऊं, बिच बिच राखूं गुल-क्यारी ।
ग्रावेलो नंदजी को लाला, टाँके फूल हजारी ।। २
ग्रोछा पायां ढोलणी, रेसम डोर बणावूं ।
तुम विना नंदजी का लाला, जरा नींद नहिं ग्रावे ।। ३
हरी जरी का लहँगा सोवै, फूलझड़ी की सारी ।
ग्रनवट ऊपर बिछिया सोवै, नथ सोवे भलकाँ-री ।। ४
मथुरा वृन्दावन बिच नाँव लगाऊं, सब सखियन को भेलो ।
मीरां के प्रभु तुम सुख पोढ़ो, यो निजराँ रो मेलो ।। ५*

४०७–(उ.)
४०८–(म्रं.) (क.) (२७) (पुजा. नाथू. पु. से)
*वर्णन-शैली से भ्रम होता है ।

पद–४०९ : राग–आसा मांड : ताल–झूमरा

(विनय)

(थे) म्हारे घर आज्यो जी प्रीतम प्यारा । (टेक)
औगुण है मोमैं गुण नहिं एक हुं, थे ही बकसणहारा ।। १
तन मन धन निवछावर करस्यां, जतन करां म्हे थारा ।। २
मीरां को प्रभु कब'र मिलोगे, तुम बिन नैन दुख्यारा ।। ३

○

पद–४१० : राग–मलार : ताल–कहरवा

(निहोरा)

म्हारे घर आवो जी राम रसिया, थारी साँवरी सुरत मन बसिया । (टेक)
घुड़ला जीन करावो (मन) मोहन, बखतर खासा कसिया ।। १
चुन चुन कलियाँ सेज बिछाई, ऊपर रखिया तकिया ।। २
सिरे गाय को दूध मंगायो, चाँवल गेरचा (भर) पसिया ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरन-कमल मन बसिया ।। ४

○

पद–४११ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(भक्ति)

म्हारे आज रँगीली रात, मनड़ा रा म्हरम आइया । (टेक)
या छवि निरखण सुगन मनावण, अतर सुगंध लगावणां ।। १
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मन-अंछ्या वर पावणां ।। २

○

४०९–(म) (मा. हरिना. पु. ह.) (मी. ली. प. दूधू १६)
४१०–उ.(७) (पुजा. नाथू. पु. से)
४११–(क.)

पद–४१२ : राग–कामोद छाया : ताल–झूमरा

(विनय)

म्हारैं घर आजो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग लागैं खारा । (टेक)
तन मन धन सब भेंट करूं, अर भजन करूं मैं थारा ।। १
तुम गुणवंत बड़े गुणसागर, मैं हूं औगनहारा ।। २
मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुझ में जी गुण सारा ।। ३
मीरां कहै प्रभु कबहिं मिलोगे, बिन दर्शन दुखियारा ।। ४

○

पद–४१३ : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(विनय)

म्हारै घर रमतो ही आई रे, तू जोगिया । (टेक)
कानाँ बिच कुंडल गले बिच सेली, अंग भभूत रमाई रे ।। १
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, गृह अँगणों न सुहाई रे ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, दरसण द्यो मोकूं आई रे ।। ३

○

पद–४१४ : राग–सोरठ, तिलक-कामोद : ताल–दीपचंदी

(विनय)

म्हारै घर होता जाज्यो राज । (टेक)
अब के जिन टाला दे जावो, सिर पर राखूं बिराज ।। १
म्हे तो जनम जनम की दासी, थे म्हाँका सिरतांज ।। २
पावणड़ा म्हांके भला ही पधारो, सब ही सुधारण काज ।। ३
म्हे तो बुरी थांके भली छै घणेरी, तुम हो एक रसराज ।। ४
थांने हम सबहिन की चिंता, तुम हो गरीबनिवाज ।। ५
सब के मुकट-सिरोमनि सिर पर, मानूं पुज्य की पाज ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बांह गहे की लाज ।। ७

४१२–(म.) (बं. पु. पृ १०)
४१३–(म.)

पद–४१५ : राग–काफी, मांड : ताल–झूमरा

(विरद-विनय)

म्हारै नैणां आगे रहीजो जी, स्याम गोविन्द । (टेक)
दास कबीर वालद जो लाया, नामदेव की छान छवंद ।। १
दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनंद ।। २
भीलनी का बेर सुदामा का तंदुल, भर मूठड़ी बुकंद ।। ३
करमाँ बाई को खीच अरोग्यो, होई परसण पावंद ।। ४
सहस गोप बिन स्याम बिराजे, ज्यों तारां बिच चंद ।। ५
सब संतों का काज सुधारा, मीरां सूं दूर रहंद ।। ६

○

पद–४१६ : राग–देश, मांड : ताल–कहरवा

(चरित)

म्हारै सिर पर सालिगराम, राणाँजी म्हारो कांई करसी । (टेक)
मीरां सूं राणां ने कही रे, सुण मीरां मोरी बात ।
साधों की संगत छोड़ दे रे, सखियां सब सकुचात ।। १
मीरां ने सुन यों कही रे, सुन राणाजी बात ।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियां क्यों अकुलात ।। २
विष का प्याला भेजिया रे, दीजो मीरां हाथ ।
अमृत कर के पी गई रे, भली करें दीनानाथ ।। ३
मीरां प्याला पी लिया रे, बोली दोउ कर जोर ।
तैंतो मारण की करी रे, मेरो राखणहारो और ।। ४
आधे जोहड़ कीच है रे, आधे जोहड़ हौज ।
आधे मीरां एकली रे, आधे राणाँ की फौज ।। ५
काम क्रोध को फेंक के रें, सील लिये हथियार ।
जीती मीरां एकली रे, हारी राणाँ की धार ।। ६
काचगिरी का चौंतरा रे, बैठे साध पचास ।
जिनमें मीरां ऐसी दमके, लख तारों में प्रकास ।। ७

४१६–(क.)

टांडा मीरां लादिया रे, बेगी दीना जाण ।
कुलकी तारण अस्तरी रे, चली है पुष्कर न्हाण ।। ८

○

पद–४१७ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

म्हारै हिरदै लिख्यो हरि नांव, अब मैं ना बिसरूं । (टेक)
मीरां गढ़ सूं ऊतरी जी, छापा तिलक बणाय ।
पगां बजावत घूंघरा जी, हाथ बजावतं ताल ।। १
माला कंठी दोलड़ी जी, सीलबरत सिंणगार ।
जो कोई हिरदै बसै जी, जो कोई आवणहार ।। २
राणूँ मन मैं कोपियो जी, मारो याके सेल ।
मारयां तो पिराछित लगै जी, पीहर दो याकों मेल ।। ३
रथड़ा बहल जुपाइया जी, ऊँटां कसिया भार ।
डावो छोड़ो मेड़तो जी, पेलां पोषर जाय ।। ४
राणां साँड्या मोकल्या जी, पाछा ल्यावो मोड़ ।
कुल की माँडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठोड़ ।। ५
मीरां बचन उचारियों जी, गिरधर म्हारो मोड़ ।
थे पाछा जावो साँडिया जी, काँने मोड़ो जोड़ ।। ६

○

पद–४१८ : राग–हमीर, बहार : ताल–तिताला

(दृढ़ता, प्रेम)

म्हारो मनड़ो राजी राजी जी । (टेक)
कांईं करैला म्हारो दुरजन पुरजन, कांईं करैला झूँठा पाजी जी ।। १
कांईं करैला म्हारो राजा-राणी, कांईं करैला मुल्ला काजी जी ।। २

४१७–(दीना. मं. मी. प. १४)
४१८–(उ) (रामस. गु. पृ. १४६)

राम प्रीतम सूं हिलिमिलि खेलूं, परतन छांडूं वाजी जी ।। ३
मीरां के प्रभु प्रीति पूरबली, तुम मत जाणों आजी जी ।। ४

○

पद–४१९ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(विनय)

म्हारो मनड़ो लाग्यो हरि सूं, मैं अरज करूं अंतर सूं । (टेक)
माधो री मूरति पलक न विसरूं, सो ले हिरदै धरसूं ।। १
आवन कह गये अजहुं न आये, बिन दरसण मैं तरसूं ।। २
म्हारो जनम सुफल हो जा दिन, हरि के चरणां परसूं ।। ३
मीरां के प्रभु दरसण दीज्यो, तन मन अरपण करसूं ।। ४

○

पद–४२० : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(प्रेम)

म्हारो मन मोह्यो छै जी स्यांम सुजांण । (टेक)
माधुरी मूरत सुंदरी सूरत, जाणैं कोटिक भाँन ।। १
पाग कसूमल केसरचां जामूं, सोहै कुंडल काँन ।। २
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, तुम बिन तलफत प्रांण ।। ३

○

पद–४२१ : राग–परज : ताल–तिताला

(विरह)

म्हारो मन मोहि लीनों माई हे जसोधा के नन्दन । (टेक)
तनक बांसुरिया श्रवननि में धुनि परी अधिक दुख दंदन ।। १

४१९–(उ.) (रामस. गु. पृ. १५४)
४२०–(राम स. गु.)
४२१–(उ.) (रास-पद-संग्रह से)

कछु न रही सुधि बुधि मति सजनी, परी हों प्रेमरस फंदन ।। २
आठ जाम मोहि कल न परत है, ज्यों भुजंग बिन चंदन ।। ३
भूली लाज काज सुनि सजनी, परचो अधिक रस फंदन ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, करि राखो भुजबंधन ।। ५

○

पद ४२२ : राग–मांड : ताल–कहरवा

(चरित)

म्हांने बोल्यां मति मारो जी राणाँ, यो लै थारो देस ।* (टेक)
मीरां म्हलां सें ऊतरी, कोई सात सहेल्याँ माँय ।
खेलत पायो काँकरो, कोई सेवा सालगराम (गिरधरराय) ।। १
साधजी आया पावणां, कोई मीरां कै दरबार ।
जाजम दीनो बेसणो, कोई ढोल्यो दीनो ढाल (र) ।। २
जैर पियालो राणाँजी भेज्यो, द्यो मीरां नै प्याय (हाथ) ।
कर चिरणामृत पी गई मीरां, थे जाणों दीनांनाथ ।। ३
सांप पिटारो राणाजी भेज्यो, दीज्यो मीरां नै जा'र ।
कर खँगवालो पहरियो, कोई हो गयो नोसर हार ।। ४
राणांजी कागद भेजियो, कोई द्यो मीरां नै जाय ।
साधां की संगत छोड़ द्यो, मीरां बैठो राण्यां रै मांय ।। ५
काढ कटारो राणाजी भेज्यो, दूजी भेजी तरवार ।
एक मीरां की दो करां कोई, दो की हो गई च्यार ।। ६
राणों मीरां सें यों कहे जी, कस्यो थारो भगवान ।
राज पाट सब छोड़स्याँ कोई, म्हे भी भजां भगवान ।। ७
कच्चो रँग उड़ जाय छै जी, पक्को रँग नहिं जाय ।
मीरां कै रंग गोपाल को जी, अब छूटण को नांय ।। ८

○

४२२–(क.) (का. ह. नं. १)
*म्हांनै तानां मत मारो हो राणां, यो ले थारो देस ।

पद–४२३ : राग–मांड : ताल–दीपचंदी

(चरित)

म्हांनै गुरु गोबिन्द री आण, गोरल नाँ पूजां । (टेक)
(सास) ओर ज पूजै गोरजा जी, थे क्यूँ पूजो न गोर ।
मन-बंछित फल पावस्यो जी, थे क्यूँ पूजो ओर ।। १
(मीरां) नहिं हम पूजां गोरज्यां जी, नहिं पूजां अन देव ।
परम सनेही गोविन्दो थे, काँई जाणो म्हारो भेव ।। २
(सास) बाल सनेही गोविन्दो, साध संताँ को काम ।
थे बेटी राठोड़ की, थाँने राज दियो भगवान ।। ३
(मीरां) राज करै ज्याँना करणै दीज्यौ, मैं भगताँ री दास ।
सेवा साधू-जनन की म्हारे, राम मिलण की आस ।। ४
(सास) लाजै पीहर सासरो, माई तणो मोसाल ।
सब ही लाजै मेड़तिया जी, थाँसूँ बुरा कहे ससार ।। ५
(मीरां) चोरी कराँ न मारगी, नहिं मैं करूं अकाज ।
पुन्न कै मारग चालतां, झक मारो संसार ।। ६
नहिं मैं पीहर सासरे, नहिं पियाजी री साथ ।
मीरां ने गोविन्द मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास ।। ७

○

पद–४२४ : राग–भैरवी : ताल–धीमां

(उलहना, विनय)

म्हांसूं मुखड़ै क्यूं नहिं बोलो (राम) ।।
म्हांसूं काँई गुना लियो छै अबोलो । (टेक)
पहली प्रीति करी हरि हमसूं, प्रेम प्रीति कौ झोलो ।। १
प्रेम प्रीति की गांठ्यां घुलि गई, याने कुँण बिध खोलो ।। २
कुबज्या दासी कंसराय की, ऊँकी सरभर तोलो ।। ३
मीराँ के प्रभु कब'र मिलोगे, हिवड़ा री गांठ्यां खोलो ।। ४

४२३–(क.)
४२४–(२ म.) (रामस. गु. पृ. १४७)

पद–४२५ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा, तिताला

(प्रेम)

मिथुला, कर पूजन की त्यारी । (टेक)
धूप दीप नैवेद्य ग्रारती सब ही सौंज ले ग्रा री ।। १
बहु विध सूं पकवान बना कर, करो भोग की त्यारी ।। २
जीमैलो म्हारो पिया गिरधर, साधाँ ने बेग बुला री ।। ३
(मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ पर बलिहारी) ।। ४

○

पद–४२६ : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(लीला)

मिथुला, सुन यह बात हमारी । (टेक)
राजभोग को समै हुई है बेग थाल सज ला री ।। १
छप्पन भोग छतीसों विंजन सीतल जल की झारी ।। २
धूप दीप नैवेद्य ग्रारती कीजे बेग तयारी ।। ३
धरिये भोग विलंब न करिये मेरी मान पियारी ।। ४
जीमें म्हारो प्यारो गिरधर साधां ने बेग बुला री ।। ५

○

पद–४२७ : राग–गौड़ सारंग वा छाया : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

मिलता जाज्यो हो गुर ज्ञानी*, थाँरी सूरत देखि लुभानी । (टेक)
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूं बिरह दिवानी ।। १
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन बिन पानी ।। २
दरस बिना मोहि कछु न सुहावे, तलफ़ तलफ़ मुरझानी ।। ३
मीरां तो चरणन की चेरी, सुन लीजो सुखदानी ।। ४

४२६–(स. मा. मी. ली. ५)
४२७–(उ.)
*पाठान्तर–मिलता जाज्यो हो जी गुमानी ।

पद–४२८ : राग–ईमन : ताल–कहरवा वा तिताला

(विनय)

मीरां को प्रभु सांची दासी बनाउ ।
झूठे धंधाँ रे मेरा फंदा छुड़ाउ । (टेक)
लूटेहि लेत विवेक का डेरा,
बुद्धिबल यदपि करूं बहुतेरा ।।
हाय राम नहिं कछु बस मेरा,
मरत हूं विवस प्रभु धाउ सवेरा ।। १
धरम उपदेश नितप्रति सुनती हूं,
मन कुचाल से भी डरती हूं ।।
सदा साधु सेवा करती हूं,
सुमरन ध्यान में चित करती हूं ।।
भक्तिमार्ग दासी को दिखाउ,
मीरां को प्रभु साँची दासी बनाउ ।। २

○

पद–४२९ : राग–खम्माच : ताल–कहरवा

(मीरांजी को ब्याहुलो)

मीरां तो जनमी मेड़ता सजनी म्हारी हे ।
आन लियो औतार पिय म्हारो गिरधारी ।। (टेक)
और सहेली पूजे गौरजा सजनी म्हारी हे ।
थे भी पूजो बाई गौरी पिय म्हारो गिरधारी ।। १
और तो पूजे गौरजा हे सजनी म्हारी हे ।
सो म्हांको सालिगराम पिय म्हारो गिरधारी ।। २
पिरोहित उरे बुलायके हे सजनी म्हारी हे ।
मीरां की लगन लिखाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ३

४२८–(म.) (वं. पु. पृ. २६)

पिरोहित बैसो बिच जाय कै हे सजनी म्हारी हे ।
पौंच्यो छै गढ चित्तौर हे पिय म्हारो गिरधारी ।। ४
गहली भई मीरां बावली सजनी म्हारी हे ।
अकल[न] कुमारी बाई बसै पिय म्हारो गिरधारी ।। ५
कागद मीरां मोकल्यो हे सजनी म्हारी हे ।
थारी खुसी परै तो राणा आव पिय म्हारो गिरधारी ।। ६
हाथी सिंघारे राणा सातसै सजनी म्हारी हे ।
घुड़ला वार न पार पिय म्हारो गिरधारी ।। ७
नेजे तो आवै चमकता सजनी म्हारी हे ।
उड़ती आवै छै खेह पिय म्हारो गिरधारी ।। ८
कांकड़ आयो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
कांकड़ां करहा झुकाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ९
आन पौहुंच्यो राणा मेड़तै सजनी म्हारी हे ।
बाजो बहोत बजाय पिय म्हारो गिरधारी ।। १०
बाग तो आयौ राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
तँबुवा दिये हैं तनाय पिय म्हारो गिरधारी ।। ११
तोरण आयो राणां राजई सजनी म्हारी हे ।
कांमनि कलस सँवारि पिय म्हारो गिरधारी ।। १२
फेरां तो आयौ राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
एक मीरां की मीरां दोय पिय म्हारो गिरधारी ।। १३
हथलेवां में आयो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
हथलेवां में सालगराम पिय म्हारो गिरधारी ।। १४
परण पधारचो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
पहुंच्यो गढ़ चित्तौर पिय म्हारो गिरधारी ।। १५
महेलां पधारचो राणा राजई सजनी म्हारी हे ।
एक मीरां की मीरां चारि पिय म्हारो गिरधारी ।। १६
सद्दां उरै बुलाय कै सजनी म्हारी हे ।
मीरां कूं समझाय पिय म्हारौ गिरधारी ।। १७
समझायें समझै नहीं सजनी म्हारी हे ।
बजर-सिला बिष बांट पिय म्हारौ गिरधारी ।। १८

बज्रर-सिला बिष बांटियौ सजनी म्हारी हे ।
पट फैंटा बिष छानि पिय म्हारौ गिरधारी ।। १९
पट फैंटा बिच छानियौ सजनी म्हारी हे ।
देवो मीरांजी कूं जाय पिय म्हारौ गिरधारी ।। २०
चरणोदक आरोगियौ सजनी म्हारी हे ।
दूनौ बढ़यौ है सनेह पिय म्हारौ गिरधारी ।। २१
पगां जु बांधे घूघरा सजनी म्हारी हे ।
गावै छै गुन गोविन्द पिय म्हारौ गिरधारी ।। २२
पटका खोल पगां परचो सजनी म्हारी हे ।
अपनौ गुरु जु बताय पिय म्हारौ गिरधारी ।। २३
म्हांको गुरु रैदास है सजनी म्हारी हे ।
जिन सेयो है सालगराम पिय म्हारौ गिरधारी ।। २४
गावै से मीरां दासनी सजनी म्हारी हे ।
पढ़ै सुनै फल होय पिय म्हारो गिरधारी ।। २५

○

पद–४३० : राग–भैरवी : ताल–तिताला धीमा

(चरित)

मीरां मगन भई हरि के गुण गाय । (टेक)
साँप पिटारा राणा भेज्या, मीरां हात दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय ।। १
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो गई अमर अँचाय ।। २
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरां सुलाय ।
साँझ भई मीरां सोवण लागी, मानों फूल बिछाय ।। ३
मीरां के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाय ।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ।। ४

४२९–(क.); (मा. ह. पु. ह. ३)।
४३०–(उ.); (मीराँबाई के भजन नं. २३)।

पद–४३१ : राग– कालिगड़ा : ताल–कहरवा

(चरित)

मीरां मन मानी सुरत सैल असमानी । (टेक)
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ।। १
ज्यों हिये पीर तीर सम लागत, कसक कसक कसकानी ।। २
रात दिवस मोहि नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ।। ३
ऐसी पीर बिरह तन भींतर, जागत रैन बिहानी ।। ४
ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी ।। ५
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नहिं भरमो खानी ।। ६
खोजत फिरूं भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ।। ७
रैदास सन्त मिले मोहि सतगुरु, दीन्हीं सुरत सहदानी ।। ८
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ।। ९
मीरां खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ।। १०

○

पद–४३२ : राग–धनाश्री : ताल–कहरवा

(चरित)

मीरां रंग लाग्यो हो नांम हरी, और रंग अटकि परि । (टेक)
गिरधर गास्यां[1] सती न होस्यां, मन मोह्यो घण[2] नामी ।
जेठ बहू को नहिं[3] राणाजी, थे सेवक म्हे स्वामी ।। १
चोरी करां नहिं जीव सतावां, काँई करैगौ म्हांको कोई ।
गज सूं उतरि गधे नहिं चढ़स्यां, या तो बात न होई ।। २
चूड़ो तिलक दोवड़ो माला, सील वरत सिणगारां ।
और वस्त रत नहीं मुहि भावै (हो राणाजी !) यह गुरग्यान हमारा ।। ३

४३१–(उ.)
४३२ (म.); (क. व. २४) ।
1 पा०—भजस्यां सही ये न होस्यां । 2 पा०—गिरधारी ।
3 पा०—नांतो नहीं छै राणा ।

भावै कोई निन्दो भावै कोई बिन्दो, म्हे तो गुण गोविन्दजी रा गास्यां ।
जीं मारग वै संत गया छै, जीं मारग म्हे जास्यां ।। ४
राज करंता नरक पड़ंता, भोगी जोरै लीया ।
जोग करंता मुकति पहुंता, जोगी जुग जुग जीया ।। ५
गिरधर धनी धनी मेरे गिरधर, मात पिता सुत भाई ।
थे थांकै म्हे म्हांकै हो राणाजी, यूं कहै मीरां बाई ।। ६

○

पद–४३३ : राग–झंझोटी-वागेश्वरी : ताल–तिताला

(विनय)

मीरां हरि में लीन भई । (टेक)
सब कूं छांड भज्यो साहिब कूं गुरु की सरण गई ।। १
राणाजी रो राज त्याग्यो संत मुख आइ गई ।। २
राम कृष्ण द्वारका नगरी परकर मांहि रही ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरणां लीन भई ।। ४

○

पद–४३४ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

मुक्ति को ग(ह)णों पहरस्यां काँई पहरचो हे हरि गुरु परताप । (टेक)
म्हारै भाव भगति का कं(क)ण वण्यां, सांवलड़ो हे म्हारै हतफूल ।। १
म्हारै सील को बाजूबंद थिरक रह्यो, सांवलड़ो हे बाजूबँद री लूम ।। २
म्हारै च्यारूँ जुग चुड़लो वण्यूं, सांवलड़ो हे चुड़ला री चूंप ।। ३
म्हारै जप तप अँगियां भली बणी, सांवलड़ो हे अँगियां री लूम[1] ।। ४
म्हारै तन को तिमण्यों बण्यों, सांवलड़ो हे हिवड़ा रो हार ।। ५
म्हारै नवधा नथ सुहावणी, सांवलड़ो हे मोत्यां बिचली लाल ।। ६

---

४३३ (उ.); (दीना. मं. मी. प. ४०) ।
४३४–(म.) ।
1 पा०—तनक ततमूल ।

म्हारै फूलझूमका फब रह्या, सांवलड़ो हे झूमर री लूम ।। ७
म्हारै करणी रो काजल घुळ रह्यो, सांवलड़ो हे (म्हारै) तिलक लिलाट ।। ८
म्हारै रामनाम की चूनड़ी, सांवलड़ो हे स्यालूड़ा री कोर ।। ६
म्हे तो नखसिख गहणों पहरियो, म्हे तो जास्यां सांवलड़ा री सेज ।। १०
बाई मीरां रँग में भली रँगी, सांवलड़ो हे (म्हारा) सिर को मोड़ ।। ११

○

पद–४३५ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मुरली ए मोह्या मोहन थारी मुरली ए मन मोह्या । (टेक)
थारे कारण शामलिया व्हाला, त्रण भुवन मैंने जोयां रे । मोहन०
थारा सरखा प्रभु कोई नह दीठा, त्रण भुवन मनड़े मन मोह्या रे । मोहन०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित प्रोयां रे । मोहन०

○

पद–४३६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(चरित)

मेड़तिया रा कागद आया, बाई मीरां ने जा खीज्यो जी । (टेक)
बोहत भांति से लिख्या ओलँभा, कुल कै दाग मत दीज्यो जी ।। १
साधां को सँग परो निवारो, वेद साख सुण लीज्यो जी ।। २
मीरां प्रभु को संग छांडचो, पति आज्ञा में रीज्यो जी ।। ३

○

पद–४३७ : राग–पीलू, बरवा : ताल–कहरवा

(प्रार्थना)

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभुजी अरज करूँ छूँ (टेक)
या भव में मैं बहु दुःख पायो, संसा सोग गिमार ।। १

४३५–(म.) ।
४३६–(म.); (दीना. मं. मी. प. २६) ।
४३७–(उ.) ।

अष्ट करम की तलब लगी हैं, दूर करो दुख पार ।। २
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी धार ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आवागवन निवार ।। ४

○

पद–४३८ : राग–सवैया की पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(विरहाधिक्य)

मेरा मन कों वैरागी कर गयो रे । (टेक)
हाथ लकुटिया कांधे कमलिया, जमुना पार उतर गयो रे ।। १
बारा बरस से सेवा कीन्हीं, रमती बिरयाँ रम गयो रे ।। २
सुण सुण हे मेरी पाड़ पड़ोसन, जलती में पूलो दे गयो रे ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, धूकती धूनी धर गयो रे ।। ४

○

पद–४३९ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार

(लीला)

मेरी चूनर भिजोवै मैं रे भिजोऊंगी पाग । (टेर)
नंद महरजी को कुँवर कन्हैया, जान न देऊंगी (मैं) आज ।। १
फैंट पकर के फगुवा ल्योंगी, मुख मींडोंगी व्रजराज ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सदा रहो सिरताज ।। ३

○

पद–४४० : राग–सिंध काफी : ताल–तिताला

(ऊदाँ सम्वाद, चरित)

मेरी बात नहीं जग छानी, ऊदाँ बाई समझो सुघर सयानी । (टेक)
साधू मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ग्यानी ।
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूं बानी ।। १

४३८—(उ) (१) (पु. नाथूनारायणजी की पु. से)
४३९–(उ.) (या० सं. रा. क. से)
४४०–(म.) (स. मा. मी. ली. ७)

राणा ने समझावो जावो, म्हे तो बात न मानी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, संतां हाथ बिकानी ।। २

○

पद–४४१

मेरी लाज तुम रखवैया, नंदजी का कुँवर कन्हैया । (टेर)
पैठ पतालाँ कालीनाग नाथ्यो, फरण फरण नृत्य करैया ।। १
जमुना के नीर तीर धेनु चरावै, मुख से मुरली बजैया ।। २
मोर मुकुट पीतांबर सोहैं, कानाँ कुंडल झलकैया ।। ३
बृन्दाबन की कुञ्ज गलिन में, नाचत है ता थैया[1] ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल परसैया[2] ।। ५

○

पद–४४२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा
(भक्ति)

मेरे तो एक राम सिया जजमान । (टेक)
कौन वने जन जन का भिक्षुक, घर घर करत बखान ।। मे. ।। १
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, अगवाणी हनुमान ।। मे. ।। २
मीरां के प्रभु राम सियावर, तुम ही कृपानिधान ।। मे. ।। ३

○

पद–४४३ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा
(वैराग्य)

मेरे तो* गिरधर गोपाल दूसरा न कोई । (टेक)

४४१–(म.)–(क. । उ. २ । उ ६३)
1 पा. 'दो मैया' । 2 पा. 'परेया'
४४२–(क.) (भ. मीरांबाई हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा)

जाके शिर मोर मुकुट मेरे पति वोई[1] ।
शंख चक्र गदा पद्म कंठ माला सोई[2] ।। १
आई[3] मैं भक्त जान जगत देख मोई ।
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम वेल बोई ।। २
भाई छोड़े बंधु छोड़े छोड़े सगा सोई ।
संतन सँग[4] बैठ बैठ लोक लाज खोई ।। ३
प्रेम की मथनिया कर जुगत सों विलोई ।
दधि मथ घृत काढ़ लियो छाछ रही छोई ।। ४
अब तो बात फैल गई जानत सब कोई ।
मीरां हरि लगन लगी होनी हो सो होई ।। ५

○

पद–४४४ : राग–झंझोटी : ताल–दादरा

(वैराग्य)

मेरे तो येक राम नाम दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई साधो[1], सकल लोक जोई ।। (टेक)
भाई छोड़्या बंधु छोड़्या छोड़्या सगा सोई ।
साध्र संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई ।। १
भक्त देख राजी हुई जगत देख रोई ।
प्रेम नीर सींच सींच विष-बेल धो[बो]ई ।। २
दधि मथ घृत काढ़ लियो, डार दई छोई ।
राणा विष को प्यालो भेज्यो, पीय मगन होई ।। ३

४४३–(उ.) (सरसमाधुरी मीराँ ली. से. ४) गाया-रामचन्द, जैपुर
1–पा. = सोई । 2–पा. = जोई । 3–पा. = मैं तो पार भक्ति जान ।
4–पा. = ढिंग । (मी. जी. का. म. पृ. १८-१९) का ही उपर्युक्त पाठान्तर है और एक अंश भी भिन्न प्रतीत होता है "लोकत्रास छोड़ दियो कहा करे कोई" । पा. = माथे पै ।

४४४–१ पा. = माधो
नोट—यह पद बदनोर के संग्रह में (४६ पदों में) था । सो कुछ पाठभेद होने से लिखा गया । वस्तुत: "मेरे तो गिरधर गुपाल दूसरा न कोई"....इस पद का पाठ ठीक है और उसही के यह भी आश्रित है वा उसकी छाया ही है ।

अब तो बात फैल पड़ी, जानै सब कोई ।
मीरां राम लगन लगी, होनी होय सो होई ।। ४

○

पद–४४५ : राग–काफी : ताल–कहरवा
(विरह-प्रेम)

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूड़ी आवैं । (टेक)
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कुछ न सुहावै ।। १
आवण कह गये अजहूँ न आये, जिवड़ो अति उकलावै ।। २
तुम दरसण की आस रमइया, निस दिन चितवत जावै ।। ३
चरण कँवल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावै ।। ४
मीरां कूं प्रभु दरसण दीन्हा, आनँद बरण्यौ न जावै ।। ५

○

पद–४४६ : राग–मांड : ताल–कहरवा
(दर्शनानंद)

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूंड़ी आवै । (टेक)
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछु न सुहावै ।। १
आवन कह्यो अजहूं नहि आये, जिवड़ो अति अकुलावै ।। २
तुम दरसण की आस सांवरिया, निस दिन चितवत जावै ।। ३
चरणकमल की लगन लगो अति, बिन दरसण दुख पावै ।। ४
मीरां कूं प्रभु दरसरा दीन्हों, आनँद बरण्यों न जावै ।। ५

○

पद–४४७ : राग–परज : ताल–कहरवा
(विरह-प्रार्थना, विरद)

मेरे प्यारे गिरधारीजी, दासी क्यों बिसार डारी । (टेर)

४४५–(उ.)
४४६–(उ०)
४४७–(म) (या०—प्रति सं. ७८६ । ४८ पद ५२)

द्रोपदी की लाज राखी, दुख सों उबारी ।
नरसिंह रूप धारंचो, प्रह्लाद पैज पारी ।। १
भीलनी के बेर खाये, (कछु) जाति नां बिचारी ।
कुबज्या सों नेह कीनो, गोतम नारि तारी ।। २
व्याकुल भई तुम बिना, तरसूं रैन सारी ।
मीरां कूं दरस दीजे टुक, सांवरे बिहारी ।। ३

○

पद–४४८ : राग–झंझोटी : ताल–तिताला

(विरह)

मेरे प्रीतम प्यारे राम ने लिख भेजूं री पाती । (टेक)
श्याम सनेसो कबहु न दीनो, जान बूझ गुझ बाती ।। १
ऊंची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं, रोय रोय अँखियां राती ।। २
तुम देख्यां बिन कल न परत है, हियो फटत मोरी छाती ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।। ४

○

पद–४४९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम, भक्ति)

मेरे मन राम नामा बसी । (टेक)
तेरे कारण स्यामसुन्दर, सकल लोगां हँसी ।। १
कोई कहे मीरां भई बौरी, कोई कहे कुल नसी ।। २
कोई कहे मीरां दीप आग री, नाम पिया सूं रसी ।। ३
खांडे धार भक्ती की न्यारी, काटिहै जम की फँसी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सब्द सरोवर धसी ।। ५

○

४४८–(उ.) (वं. पु. पृ. ७)
४४९–(उ.)

पद–४५० : राग–भैरव : ताल–कहरवा

(चरित)

मेरे राणाजी मैं गौविन्द गुण गाना । (टेक)
राजा रूठे नगरी राखे अपनी, हर रूठे कहां जाना ।। १
राणा भेज्या जहर प्याला, मैं अमृत कर पी जाना ।। २
डिबिया में काला नाग जो भेज्या, मैं सालिग्राम कर जाना ।। ३
मीरां बाई प्रेम दिवानी, मैं सांवरिया बर पाना ।। ४

○

पद–४५१ : राग–बडहंस सारंग : ताल–तिताला

(लीला)

मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सों । (टेक)
मोरमुकुट पीताम्बरो गल बैजन्ती माल ।
गउवन के संग डोलत हो जसुमति को लाल ।। १
कालिन्दी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय ।
सीतल कदम की छहियाँ हो मुरली बजाय ।। २
जसुमति के दुवरवां ग्वालिनि सब जाय ।
बरजो आपन दुलरुवाँ हमसों अरुझाय ।। ३
वृन्दाबन क्रीड़ा करै गोपिन के साथ ।
सुर नर मुनि सब मोहे, हो ठाकुर जदुनाथ ।। ४
इन्द्र कोप घन वरखो मूसल जलधार ।
बूडत बृज को राखेऊ मोरे प्राण अधार ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधर हो सुनिये चित लगाय ।
तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहि कछु न सोहाय ।। ६

○

४५०–(क) (का. ह. नं. १)
४५१–(क.)

पद–४५२ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(चरित)

मेरो मन मैं हरि सूं जोरयो, हरि सूं जोर सकल सूं तोरयो । (टेर)
मेरी प्रीत निरंतर हरि सूं, ज्यूं खेलत बाजीगर गोरयो ।
जब मैं चली साध के दरसण, तब राणो मारण कूं दौरयो ।। १
जहर देन की घात बिचारी, निरमल जल में ले विष घोरयो ।
जब चरणोदक सुण्यो सरवणां, राम भरोसे मुख में ढोरयो ।। २
नाचन लगी जब घूंघट कैसो, लोकलाज तिणका ज्यूं तोरयो ।
नेकी बदी हूं सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुस दै मोरयो ।। ३
प्रगट निसान बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोरयो ।
मीरां सबल धणी के सरणे, कहा भयो भूपति मुख मोरयो ।। ४

○

पद–४५३ : राग–खमावती आसावरी : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

मेरो मन राम हि राम रटै रे । (टेक)
राम नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ।। १
जनम जनम के खत जु पुराने, नाम हि लेत फटै रे ।। २
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे ।। ४

○

पद–४५४ : राग–पीलू : ताल–दीपचंदी

(निश्चय)

मेरो मन लाग्यो सखी संवलिया सों, काहु की बरजी नाहिं रहोंगी । (टेक)
जो कोउ मोको एक कहेगो, एक की लाख कहोंगी ।। १

४५२–(उ.)
४५३–(उ.)
४५४–(उ.) (मी. जी. का. प्र. पृ. १८)

सासु बुरी है ननद हठीली, यह दुख काहे बहोंगी ।। २
मीरां प्रभु गिरधर के कारण, जग उपहास सहोंगी ।। ३

○

पद–४५५ : राग–ईमन : ताल–कहरवा

(विनय)

मेरो मन हर लीनो राजा रणछोड़ ।
राजा रणछोड़, प्यारा रंगीला रणछोड़ ।। (टेर)
[1]केशव माधव श्री पुरुषोतम, कुबेर कल्याण की जोड़ ।। १
शंख चक्र गदा पद्म बिराजे[2], माधुरी मुरली किशोर ।
मोरमुकुट शिर छत्र बिराजे, कुण्डल की छवि ओर ।। २
[3]चार पास रत्नागर गाजे, गोमतीजी है शिरमोर ।
धजा पताका बहुत्यां फरके, झालर करत झकझोर ।। ३
सब भक्तन के भाग्य हि प्रकटे, नाम धरचो रणछोड़ ।
जे कोई तेरो नाम सुणावे, पावे युगल-किशोर ।। ४
मीरां (बाई) के प्रभु गिरधरनागर[4], कर ग्रहो नंदकिशोर ।। ५

○

पद–४५६ : राग–पीलू : ताल–तिताला

(चरित)

मेरो मन लाग्यो हरिजी सूं, अब न रहूंगी अटकी । (टेक)
गुरु मिलिया रैदासजी, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी ।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हारे हिवड़े खटकी ।। १

४५५–(म.) (का. उत । ४ । ४०६ ।)
1 पा०–"विक्रम माधव श्री पुरुषोत्तम, कुंवर कल्याणी जोड़ ।
राधा रुकमणी श्री सत्यभाभा, जंबुकबरणी रे जोड़ ।
2 पा०–"मुख मुरली घनघोर" ।
3 पा०–"आसपास रत्नाकर सागर, गोमती करे कलोल" ।
4 पा०–"हरि मारा दिलडाना चोर" ।
४५६–(उ)

माणक मोती परत न पहिरूँ, मैं कब की ही नटकी ।
गेणो तो म्हारे माला दोवड़ी, और चंदन की कुटकी ।। २
राजकुल की लाज गमाई, साधां के संग मैं भटकी ।
नित उठ हरिजी के मंदर जास्यां, नाचां दे दे चुटकी ।। ३
भाग खुल्यो म्हारो साध संगत सूँ, साँवरिया की बटकी ।
जेठ बहू की काण न मानूँ, घूँघट पड़ गइ पटकी ।। ४
परम गुराँ के सरण में रहस्याँ, परणांम करां लुटकी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम मरण सूँ छुटकी ।। ५

○

पद–४५७ : राग–सोरठ मलार : ताल–तीलवाड़ा

(तुष्टि)

मेहा बरसवो कर रे, आज तो रमिया मेरे घर रे । (टेक)
नान्हीं नान्हीं बून्द मेघ घन बरसे, सुख सरवर भर रे ।। १
बहुत दिनां पै प्रीतम पायो, बिछुरन को मोहिं डर रे ।। २
मीराँ कहे अति नेह जुड़ायो, मिलीयो पूर्वलो बर रे ।। ३

○

पद–४५८ : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा

(लीला)

मैया मोरे भाग जागे साधू आये पावना । (टेर)
चुवा चंदन घिस लियो आंग को लगावना ।। १
मथुरा मां कंस मारा लंकापति रावणा ।। २
राजा बलि द्वारे ठहरी रूप लिया भावना ।। ३
गोकुल में जाके ठहरी द्वारका बसावना ।। ४
मीरां बाई हरि की दासी पद को लगावना ।। ५

○

४५७–(उ.) (वं पु. पृ. ३२)
४५८–(ग)

पद–४५६ : राग बहार : ताल–तिताला

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं अपने सैय्याँ सँग साँची । (टेक)
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट ह्वै ह्वै नाची ।। १
दिवस भूख न चैन कबहिन, नींद निसु नासी ।
वेध वार को पार ह्वै गो, ज्ञान गुह गाँसी ।। २
कुल कुटुम्ब सब आनि बैठे, जैसे मधु मासी ।
दास मीरां लाल गिरधर, मिटी जग-हाँसी ।। ३

○

पद–४६० : राग–आसावरी वा आसा : ताल–कहरवा

(विरद-प्रेम-भक्ति)

मैं अमली हरिनांव की मुझि बाइड आवै ।
पीया पियाला प्रेम का कुछि और न भावै । (टेक)
या तन की कूंडी करूं मन पोसत भेऊं ।
ग्यांन गलणीयां हाथि ले इम्रतरस पीऊं ।। १
पीया जोगी भरथरी गुर गोरष पायो ।
धन माता मैंणावती सुत पैं राज छुड़ायो ।। २
और अमल किस काम का, चढ़ि उतर जावै ।
अमल करो इक नांम का अमरापुर जावै ।। ३
अमल किया मावा भया सुष रैन बिहावै ।
अमलनु कल हरि पुरवै जस मीरां गावै ।। ४

○

४५९-(उ)
४६०–(क.) (रामस. गु. पृ. ४७६)

पद–४६१ : राग–वसंत : ताल–तीन ठाह

(प्रेम-रहस्य)

मैं गिरधर रँग राती, ग्वैया । (टेक)
पचरँग चोला रँगा दे सखी, मैं झुरमुट खेलन जाती ।
ओहि झुरमुट मेरा सांईं मिलेगा, खोल तनी गल गाती ।। १
चंदा जायगा सूरज जायगा, जायगी धरन अकासी ।
पवन पानी दोनूं ही जायगा, अटल रहे अविनासी ।। २
सुरत निरत का दिउड़ा सँजोले, मनसा की करले बाती ।
प्रेम हटा का तेल मँगा ले, जग रह्या दिन तैं राती ।। ३
जिनके पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती ।
मेरे पिया मेरे मांहि बसत हैं, कहूं न आती जाती ।। ४
पिहरे बसूं न बसूं सास घर, सद्‌गुरु शब्द सुनासी ।
नाँ घर तेरा नाँ घर मेरा, कह गई मीरां दासी ।। ५

○

पद–४६२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मैं जांण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होइ री । (टेक)
आये मेरे सजना फिरि गये अंगना, मैं अभागण रही सोइ री ।। १
फारूंगी चीर करूं गल-कंथा, रहूंगी वैरागण होइ री ।। २
चुरिया फोरूं, मांग बखेरूं, कजरा मैं डारूं धोइ री ।। ३
निस बासर मोहि विरह सतावै, कल न परत पल मोइ री ।। ४
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, मिलि बिछुरो मति कोइ री ।। ५

○

४६१–(म.) (बृ रा र. पृ. १२२)
४६२–(उ.)

पद–४६३ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेम)

मैं तेरै रंग राती गुसंइयां, मैं तेरे रंग राती । (टेक)
औरां के पिया परदेस बसत हैं, लिष लिष भेजै पाती ।
मेरा पिया मेरै निकट बसत है, मैं कह न सकूं सरमाती ।। १
सुवा सुवा चोला पहर सषी मैं, झरमट षेलन जाती ।
षेलत षेलत मिले सांवरे, षोल मिली हिय गाती ।। २
मदवा पी पी सब मदमाती, मैं त्रिन पीयाँ मदमाती ।
प्रेम भटी का मैं रस चाष्या, (मैं) छकी रहूं दिन राती ।। ३
वह दूल्हौ मोहि व्याहन आवै, आप कृष्ण व्रजबासी ।
मीरां कै गिरधर मन मान्यों, मैं स्यामसुन्दर की दासी ।। ४

○

पद–४६४ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विनय)

मैं तो तेरी सरण परी रे रामाँ, ज्यूँ जाणे ज्यूँ तार । (टेर)
अड़सठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयो, मन नाहीं मानी हार ।। १
या जग में कोई नहीं अपणां, सुनियौ श्रवण कुमार ।। २
मीरां दासी राम भरोसे, जम का फंद निवार ।। ३

○

पद–४६५ : राग–भैरवी :-ताल–दीपचंदी

(विनय)

मैं तो थारे दामन लगी जी गोपाल । (टेक)
किरपा कीजो दरशण दीजो, सुध लीजो तत्काल ।। १

४६३–(म) राम स. गु.)
४६४–(उ.)
४६५–(उ.) (वृ. रा. र. पृ. ५४७)

गल वैजंतीमाल बिराजै, दर्शण कर भई हूं निहाल ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्तन के रछपाल ।। ३

○

पद–४६६ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह विनय)

मैं तो थारे बिड़द भरोसे अविनासी, मैं तो थारे. । (टेक)
या जग माहीं स्वामी तुम पत राखो, मत नै कराज्यो जग हाँसी ।। १
तंत्र न जानूं स्वामी मंत्र न जानूं, वेद पढ़ी नहिं कासी ।। २
अब तो सांवरिया मोहे दरसण दीज्यो, मत नैं कराज्यो म्हारी हाँसी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण-कंवल की मीरां दासी ।। ४

○

पद–४६७ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहि पिया मिले इक छिन में । (टेक)
पिया मिलया मोहि किरपा कीन्ही, दीदार दिखाया हरि ने ।। १
सतगुरु सबद लखाया अंसरी[1], ध्यान लगाया धुन में ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मगन भई मेरे मन में ।। ३

○

पद–४६८ : राग–बहार : ताल–तिताला

बिहारी भाषा

(विरह)

मैं तो लागि रही नँदलाल से ।। (टेक)

४६६–(उ.)
४६७–(म.)
1 पा० = अंतरी ।
४६८–(क.)

हमरे बांटहिं दूज न यार, लाल लाल पगिया झिन झिन वार ।। १
सांकर खटुलना दुइ जन वीच, मन कइले वरषा तन कइले कीच ।। २
कहां गइलें बछरू कहां गईलीं गाय, कहां गइलें धेनु चरावन राय ।। ३
कहां गइलीं गोपी कहां गइलें बाल, कहां गइले मुरली बजावनहार ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरलाल, तुम्हरे दरस विनु भइल वेहाल ।। ५

○

पद–४६९ : राग–देश : ताल–तिताला

(प्रेम-कामना)

मैं तो म्हारा रमिया नें देखवो करूँ री । (टेर)
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूँ री ।। १
जहां जहां पांव धरूं धरणी पर, तहां तहां निरत करूँ री ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणां लिपट परूँ री ।। ३

○

पद–४७० : राग–मालकोश : ताल–तिताला

(प्रेम)

मैं तो सांवरे रँग राची । (टेक)
सजि सिंगार बांध पग घुंघरूँ, लोकलाज तजि नांची ।। १
गई कुमति लई साधु-संगति, भगत रूप भई सांची ।। २
गाय गाय हरि के गुन निस दिन, काल व्याल सों बांची ।। ३
उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब कांची ।। ४
मीरां श्री गिरधरनलाल सूं, भगति रसीली जांची ।। ५

○

४६९–(उ.) (वं. पु पृ २५)
४७०–(उ.) (मीरां प. वि. कु. मुं. पृ. ७७)

पद—४७१ : राग—सारंग : ताल—कहरवा

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं तौ सुमरचा छे मदनगोपाल, राणांजी म्हारो कांई करसी । (टेक)
मीरां बैठचा महल में जी, छापा तिलक लगाय ।
आया राणांजी महल में जी, कोप करचो छै मन मांय ।। १
मीरां महलां सें ऊतरचा जी, ऊंटां भार कसाय ।
डावो छोडचो मेड़तो, कोई सूदा द्वारका जाय ।। २
राणांजी सांडचों भेजियो जी, पाछा लावो मोड़ ।
घर की नार इस्तरी चाली (छै) मुड़ राठोड़ ।। ३
लाजै पीहर सासरो जी, लाजै माय'र बाप ।
लाजै दूदाजी रो मेड़तो जी, कोई चोथी गढ़ चीतोड़ ।। ४
त्यारूं पीहर सासरो जी, त्यारूं माय'र बाप ।
त्यारूं दूदाजी रो मेड़तो, कोई चोथी गढ़ चीतोड़ ।। ५
(राणांजी) विष का प्याला भेजिया जी, द्यो मीरां के हाथ ।
कर चरणामृत पी गया जी, आप जानो दीनानाथ ।। ६
पेयां नाग छोड़िया जी, छोड़ो मीरां के महल ।
हिवड़े हार हिंडोलिया, कोई तुम जानो रघुनाथ ।। ७

○

पद—४७२ : राग—ब्रहार : ताल—तिताला

(प्रेम)

मैं तो हरि गुण गावत नांचूंगी । (टेक)
अपने महल में बैठ कर प्रभुजी, गीता भागवत बांचूंगी ।। १
ज्ञान-ध्यान की गठरी बाँधकर, हिरदे मन में राचूंगी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सदा प्रेम रस चाखूंगी । ३

○

४७१—(का. ह. नं. १)
४७२—(उ.) (ब्रह्मानन्द भजनलहरी पृ. ५—६)

पद–४७३ : राग–नट : ताल–पश्तो

(भक्ति-महिमा)

मैं तो हरि चरणन की दासी, अब मैं काहे को जाऊं कासी । (टेक)
घट ही में गंगा घट ही में जमना, घट घट हैं अबिनासी ।
घट ही में पुसकर औ लोधेश्वर, लछिमन कंवर बिलासी ।। १
जगंनाथ गंगासागर हैं साखी गुपाल ब्रजवासी ।
सेतुबंध रामेश्वर ईश्वर, मूल वटी सुरजा सी ।। २
अवधपुरी मधुपुरी द्वारिका, चित्रकूट यमुना सी ।
गोवरधन गोकुल बृन्दावन, बीच मंडल चौरासी ।। ३
हरिद्वार कुरुखेत जनकपुर, गोदावरी हुलासी ।
तीरथ बड़े प्रयाग गयाजी, कासी तरुवर वासी ।। ४
बिंध्याचल रु ग्रिनार रंग हैं, सुघर कपिल दुखनासी ।
बदरीनाथ केदार गंगोतरि, बैजनाथ कैलासी ।। ५
पंचवटी पंपापुर रुक्मिणि, देव कपिल युवरासी ।
नैमषार श्रृंगी रिष मिसरिष, कासी पाप-बिनासी ।। ६
मटुकनाथ अरु मानसरोवर, मानलता अरु हाँसी ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सहज कटै यम फाँसी ।। ७

○

पद–४७४ : राग–परज : ताल–धीमा

(प्रेम)

मैं थारे गुण रीझी हो रसिक गोपाल । (टेर)
निस बासर मोय आस तिहारी, दरसन द्यो नंदलाल ।
सो मद भगत करो जनि सादो, मत बिसरो नंदलाल ।। १
काहू के चंदो काहू के मंदो, काहू के उर में माल ।
प्रेम भरी मीरां जिन गरजै, हिरदै गिरधरलाल ।। २

४७३–(म.) (आं. सा. भा. १ पृ. १३४–३५)
४७४–(प्रभुनारायणजी के गु. से सं. १९)

(येक) घड़ी घड़ी पल मोये जुग सम बीतत, हो गई हाल बेहाल ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, छुट गई जग जंजाल ।। ३

○

पद–४७५

(बाल-लीला)

मैं नाहीं दधि खायो जसोदा मैया । (टेर)
प्रात समय गौवन के पीछे, मधुबन मोहि पठायो ।। १
सारे दिन (मैं) बंसीवन भटक्यो, सांझ पड़े घर आयो ।। २
ले ले अपनी लकुटि कटुलिया, बहुत हि नाच नचायो ।। ३
मैं ढोटो पावन को छोटो, ये बिन कैसे पायो ।। ४
ग्वाल बाल सब द्वारे ठाड़े, माखन मुख लपटायो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जसुमत कंठ लगायो ।। ६

○

पद–४७६ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

मैंने सारा जंगल ढूंढा रे जोगीड़ा न पाया । (टेर)
कानूं बिच कुन्डल (जोगी) गले बीच सेली ।
घर घर अलख जगाया रे ।। जोगीडा०
अगर चंदन की (जोगी) धूणी धवाई ।
अंग (बीच) भभूत लगाया रे ।। जोगीड़ा०
(बाई) मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
शब्द का ध्यान लगाया रे ।। जोगीड़ा०

○

४७५–(चि.) (का.। उ. ४।३६६)

नोट—इस वर्णन का पद सूरदासजी का है । संभवतः उस ही की छाया लेकर यह रचा गया हो, अथवा कुछ हेरफेर से मीरां नाम धर दिया हो । सं० ।।

४७६–(उ.)

पद–४७७ : राग–बीलावल : ताल–तिताला

(विरह)

मैं बिरहिन बैठी जागूं, जगत सब सोवै री आली । (टेक)
बिरहिन बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पोवै ।। १
इक विरहिन हम ऐसी देखी, अँसुवन की माला पोवै ।। २
तारा गिन गिन रैन बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल के बिछुड़ न जावै ।। ४

○

पद–४७८ : राग–पीलू बरवा : ताल–दीपचंदी

(प्रेम-दृढ़ता)

मैं मेरो हरि सैं जोड़यो, हरि सैं जोड़ सकल सैं तोड़यो । (टेक)
हरि भक्तन की संगत कीनी, राणूं लै मारण कूं दौड़यो ।
मेरो मन गिरधर सूं लाग्यो, ज्यूं बाजीगर नाचत दौड़यो ।। १
बिष हि दैन को मतो उपायो, माही लै तुलसी जल छोड़यो ।
जब मैं श्रवण सुण्यो चरणामृत, राख भरोसो मुख में डारयो ।। २
नाच नची जब घूँघट कैसो, लोकलाज तुणका ज्यूं तोड़यो ।
मीरां सरण सबल गिरधर की, कहा भयो किण ने मुख मोड़यो ।। ३

○

पद–४७९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम)

मैं हरि बिन क्यों जीऊँ री माय । (टेक)
पिय कारन बौरी भई, जस काठहि घुन खाय ।
औषध मूल न संचरे, मोहि लागो बोराय ।। १

४७७–(उ.)
४७८–(म.) (दीना. मं. मी. प. २१)
४७९–(म)

कमठ दादुर बसत जल महँ, जल हि तें उपजाय ।
मीन जल के बीछुरे तन, तलफि के मर जाय ।। २
पिय ढूंढ़न बन बन गई, कहुं मुरली धुन पाय ।
मीरां के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ।। ३

○

पद–४८० : राग–भैरवी : ताल–कहरवा, तिताला
(विनय)

मोरी गलियन में आवो जी घनश्याम । (टेक)
पिछवाड़े आय हेला दीजो, ललिता सखी है मेरो नाम ।। १
हा हा करत हूं पैयां परत हूं, मत करो मान गुमान ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तव चरनन में ध्यान ।। ३

○

पद–४८१ : राग–काफी वा घुमर : ताल–कहरवा
(चरित)

मोरी ज्यान मोहोब्बत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सों । (टेक)
मीरां गढ सूं ऊतरी जी, छापा तिलक लगाय (बनाय) ।
पगां बजावै घूघरा जी, हात बजावै ताल ।
दोन्यां की जोड़ी मिल गई रे ।। १
सेज रमां और सुख करां जी, करस्यां रँग मतवाल ।
मीरां नै गिरधर मिल्या जी, आवागमन निवार ।
रूप में रल गई रे ।। २

○

४८०–(मीरांबाई के भजन नं० २६)
४८१–(क)

पद–४८२ : राग–कालंगड़ा : ताल–कहरवा

(विरद विनय)

मोरे प्यारे गिरीवरधारीजी दासी क्यों विसार डारी ।
द्रोपदी की लाज राखी सब दुख से निवारी ।।
प्रह्लाद पैंज पारी, नृसिंह देह धारी ।
भिलणी के झूंटे बेर खाये, कछु जात ना विचारी ।।
कुवजा सों नेह लाया और गोतम की नारि तारी ।
प्यासी फिरौं दरस बिन तलफौं मोहे काहे विसारी ।।
मीरां को दरसन दीजे गिरिधर अपनी ओर निहारी ।।

○

पद–४८३ : राग–बागीश्वरी : ताल–झपताल, चोताला

(विरहाधिक्य)

मो-सी दुखिया कूं लोग सुखिया कहत हैं ।. (टेक)
ऐसो री अड़ीलो कंथ दीयो है विधाता मोकूं ।
सेज हू न आवै प्यारौ न्यारौ ही रहत है ।। १
तारा तौ अंगारा भया सेज भई भाषसी ।
पीया को पिलंग मांनूं आगि जू रहत है ।। २
जरि बरि षाष मैं तो भीतर बेहाल भई ।
विरह की करवत मेरा हीया में वहत है ।। ३
द्यौस तो यूं ही गयौ रैंनि हू विहानी है ।
मीरां तो वेहाल भई दरस कूं चहत है ।। ४

○

४८२–(म.)
४८३–(क.) (राम स. गु. पृ. २२५)

पद–४८४ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

मोहन आवन की कोई कीजो रे, आवन की मनभावन की । कोई०
आप न आये पतियां न भेजे, ये बात ललचावन की । कोई०
बिन दरसन व्याकुल भई सजनी, जैसी बिजलियां सावन की । कोई०
कहा करूं कित जाऊँ मोरी सजनी, पांख हुये तो उड जावन की । कोई०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, इच्छा लागी हरि पायन[1] की ।। कोई०

○

पद–४८५ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–तिताला

(विरह-वेदना)

मोहन मुसक्याने सखी, लागे सोही जाणे । (टेक)
मैं जल जमुना जात बृन्दाबन, वो पीछे से आणे ।
काँकरी दे मोरी गगरी गिराई, जोरी से बैंयां मरोरी,
सखी कोई रीत न जाणे ।। १
मैं दधि बेचन जात बृन्दाबन, वो सामे से आणे ।
दधि की मटकी सिर से गिराई, लूट लूट दधि खाणे,
सखी कोई मरम न जाणे ।। २
घायल की गति घायल जाणे, जे कोई निकसे आणे ।
मीरां को कह्यो बुरो न मानो, आखिर जात अहीर,
सखी ये प्रीत न जाणे ।। ३

○

४८४–(उ.)
पा.–१ बतलावन की
१४–(देखो–कोई कहियो रे)
४८५–(क.) (पु. स्व. ना.)

पद–४८६ : राग–खमाच : ताल–तिताला

(भक्ति-दर्शन)

मोहन लागत प्यारा राजाजी, मोहन लागत प्यारा । (टेर)
जिन की कला से हालत चालत, धरण अकास अधारा ।
जिनको कल में सब जग भूल्यो ये ही पुरुष है न्यारा ।। १
तुम भी झूँठे, हम भी झूंठे, झूंठे सब संसारा ।
नारि पुरुष के सम्बन्ध झूँठे तो फूटचा हिया तुम्हारा ।। २
तुम ही कहो अरधंगा हमारी, हम हूँ लगाया कारा ।
कोटि ब्रह्मांड में व्यापि रह्यो है, सो निज वर है हमारा ।। ३
सालू पीतांबर मोतिन की माला, लेई अगन में जारा ।
छाप तिलक तुलसी की माला, साधु संग निसतारा ।। ४
हरि के भजन बिन जो दिन खोये, धिक मनषा जनम जमारा ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर शरण को विरद संभारा ।। ५

○

पद–४८७ : राग–हमीर : ताल–तिताला

(भक्ति)

मोहे लागी लगन गुरु-चरनन की । (टेक)
चरन बिना कछुवे नहिं भावै, जग-माया सब सपनन की ।। १
भवसागर सब सूखि गयौ है, फिकर नहीं मोहि तरनन की ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आस वही गुरु-सरनन की ।। ३

○

पद–४८८ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(प्रेम-लीला)

यदुवर लागत है मोहिं प्यारो । (टेक)

४८६–(का./उ. १/३१९)
४८७–(उ.)
४८८–(म.)

मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पग धारो ।
जन्मत ही पूतना गति दीनी, अधम उधारन हारो ।। १
यमुना के तीरे धेनु चरावे, ओढे कामल कारो ।
सुन्दर बदन कमल दल लोचन, पीताम्बर पटवारो ।। २
मोरमुकट मकराकृत कुण्डल, कर में मुरली धारो ।
शंख चक्र गदा पद्म विराजै, संतन को रखवारो ।। ३
जल डूबत व्रज राखि लियौ है कर पर गिरिवर धारो ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जीवन प्राण हमारो ।। ४

○

पद–४८९ : राग–सोरठ : ताल–रूपक
(चेतावनी)

यहि विधि भक्ति कैसे होय ।
मन की मैल हिय तें न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ।। (टेक)
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहि चंडाल ।
क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिले गोपाल ।। १
बिलार विषया लालची रे, ताहि भोजन देत ।
दीन हीन व्है छुधा-रत से, राम नाम न लेत ।। २
आप ही आप पुजाय केरे, फूले अँग न समात ।
अभिमान टीला किये वहु, कहु जल कहाँ ठहरात ।। ३
जो हिये अन्तर की जानै, तासों कपट न बनै ।
हिरदे हरि को नाम न आवै, मुख तें मनिया गनै ।। ४
हरो हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग ।
दास मीरां लाल गिरधर, सहज़ कर बैराग ।। ५

○

४८९–(२ म.)

पद–४९० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(लीला)

या व्रज में कछु देख्यो री टोना । (टेक)
ले मटुकी शिर चली गुजरिया, आगे मिले बाबा नन्द के छौना ।। १
दधि को नाम बिसर गई ग्वालनि, ले लेहु री कोउ श्याम सलौना ।। २
वृन्दाबन की कुंज गलिन में, आँख लगाय किया कित गौना ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुन्दर श्याम सुघर रस लौना ।। ४

○

पद–४९१ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

या मोहन के मैं रूप लुभानी । (टेक)
हाट बाट मोहि रोकत टोकत, या रसिया की मैं सारी न जानी ।। १
सुन्दर बदन कमलदल लोचन, बाँकी चितवन'रु मंद मुसकानी ।। २
यमुना के नीरे तीरे धेनु चरावै, वंसी में गावै आली मीठी-मीठी बानी ।। ३
तन मन धन गिरधर पै वारूँ, चरण कमल मीरां लपटानी ।। ४

○

पद–४९२ : राग–कल्याण : ताल–दादरा, तिताला

(प्रेम-विरह-वर्णन)

यों आवति मन मैं री मोहि न गोपाल फिरों री ।
निरखत ही बारिज बदन अति विवस भई हों री । (टेर)
कर मुरली लुकटी लै (अरु) पीत वसन धारो ।
काछ खुभी गोपबेष गोधन बन चारो ।। १

४९०–(२ म.) (वृ. रा. र. पृ. १२४)
४९१–(उ.) (वृ. रा. र. पृ. ५४७)
४९२–(उ.) (या०—प्रति सं. ७०५/४२ का पद २३८)
नोट—इस पद के अंतरे 'ताल दादरा' में बैठते हैं परन्तु स्थाई उक्त ताल में नहीं बैठती । इससे अनुमान होता है कि दो भिन्न-भिन्न पदों का भूल या अज्ञान से मिश्रण हुआ है ।

हमहुं भई गुल्मलता बृन्दाबन रैनो ।
खग मृग पसु मर्कट मिलि श्रवन सुनत बैनो ।। २
गुरजन गृह लाज कठिन कासों दुख कहिये ।
मीरां के प्रभु गिरधर बिन कैसे ब्रज जीये ।। ३

○

पद–४९३ : राग–सारंग घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेमदृढ़ता)

यो तो रँग धत्ताँ हि लाग्यो हे माय । (टेक)
पिया पियाला अमरत[1] रस का, चढ़ गई घूम घुमाय ।
यो तो अमल म्हारो कवहु न उतरै, कोट करो न उपाय ।। १
साँप पिटारा में राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार ।
हँस हँस मीरां कंठ लगायो, यो तो म्हारे नोसर हार ।। २
विष को प्यालो राणाजी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविन्द रा गाय ।। ३
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सुहाय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, काचो रंग उड़ जाय ।। ४

○

पद–४९४ : राग–झंझोटी वा गंधारी टोडी : ताल–तिताला

(प्रेमप्रवाह)

रघुनन्दन आगे नाचूंगी ।[1] (टेक)

४९३–(म.) 1 पा.–राम हि रस ।
[1]"यो तो रँग म्हारा स्यामसुन्दर को जनम जनम नहिं जाय" (ऐसा भी पाठ है)
(देखो "धत्तां लाग्यो हे माय-राम रंग···· ···" ।)

४९४–(उ.)
1 पाठान्तर–(१) मैं गिरधर आगे नांचूंगी ।
(२) चितनंदन आगै नांचूंगी ।
(३) नंदनंदन आगे नांचूंगी ।

नाँच नाँच रघुनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ।। १
प्रेम प्रीत का बाँध घूघरा, सुरत की कछनी काछूँगी ।। २
लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी ।। ३
पिया के पलँगा जा पौढ़ूंगी, मीराँ हरि रँग राचूँगी ।। ४

○

पद–४६५ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

रटता क्यों नहिं रे हरिनाम, तेरे कौडी लगे नहीं दाम । (टेर)
नर देह सुमिरन कूं दीन्ही, बिन सुमिरे बेकाम ।। १
बालपणो हँस खेल गुमायो, तरुण भयो बस काम ।। २
पाँव दिया तोहे तीरथ करने, हाथ दिये कर दान ।। ३
नयन दिये तोहे दरसन करने, श्रवण दिये सुन ज्ञान ।। ४
दाँत दिये तेरे मुख की शोभा, जीभ दिई भज राम ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, है जीवन बेकाम ।। ६

○

पद–४९६ : राग–तिलंग : ताल–दीपचंदी

(ज्ञानोपदेश)

रमइया बिनि यो जिवड़ौ दुख पावै, कहौ कुण धीर बँधावै । (टेक)
यौ संसार कुबधि को भांडो, सांध सगति नहीं भावै ।। १
राम नाम की निन्दा ठाँणै, करम अकरम हि कुमावै ।। २
राम नाम बिन मुकति न पावै, फिर चौरासी जावै ।। ३
साध संगत में कबहुँ न जावै, मूरख जनम गँमावै ।। ४
जन मीरां सतगुर के सरणैं, जीव परमपद पावै ।। ५

○

४९५–(उ.)
४९६–(म.)

पद–४६७ : राग–विहाग : ताल–कहरवा
(विरह)

रमइया बिन रह्यो ही न जाई । (टेक)
खान पान मोहि फीको सो लागै, नैणाँ रहे मुरझाई ।। १
बार बार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाई ।। २
मीराँ कहै हरि तुम मिलियाँ बिन, तरस तरस तन जाई ।। ३

○

पद–४६८ : राग–बरवा वा सोरठ : ताल–तिताला ठाह
(चरित और दृढ़ता)

रमस्यां सादूड़ां री लार, यो तो मन लाग्यौ वैराग में । (टेक)
रमती जोयो मीरां कांकरो, सेवा सालगराम ।
धूप दीप्र ले मैं पूजती, यो बर म्हारो सरदार ।। १
सादूड़ा तो आया मीरां बाग में, कानाँ सुणी छै अवाज ।
आयोड़ा सादाँ नै दीज्यौ बैसणो, पंखा पवन डुलाय ।। २
लिख रे पत्र राणे भेजियो, दीजो मेड़तणी रे हात ।
सादूड़ाँ रो सँग राणी छोड़ द्यो, करो नी उदियापुर रो राज ।। ३
लिख रे पत्र मीरां भेजियो, दीज्यो मेवाड़चां रे हात ।
सादूड़ाँ रो सँग राणा ना छुटै, काँईं कराँला थारो राज ।। ४
सिंघ पकड़ राणो जुड़ दियो, मीरां सेवा करबा जाय ।
खोल किंवाड़ी मीरां देखियो, हो गया निरसँघ औतार ।। ५
विड़द छांडूं तो लाजै मेड़तो, लाजै राणूं सिरदार (साथ) ।
मीरां तो दासी थारी जनम की, थे जाणूं दीनानाथ ।। ६

○

४६७–पा. =जाय, मुरझाय, दिन जाय, तन जाय ।
४६८–(सं.) (३ क.)

पद–४९९ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह)

रमैया बिन नींद न आवै, (बिरह सतावै), प्रेम की आँच ढुलावै । (टेक)
बिन पिया जोत मँदिर अँधियारो, दीपक दाय न आवै ।
पिया बिना मेरी सेज अलूनी, जागत रैन बिहावै,
पिया कबरे घर आवै ।। १
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोयल शब्द सुनावै ।
घुमड घटा ऊलर होइ आई, दामिन दमक डरावै,
नैन मोरे झर लावै ।। २
कहा करौं कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कोन मिटावै ।
विरह नागिन मोरी काया डसी है, लहर-लहर जिय जावै,
जडी घसि लावै हि लावै ।। ३
को है सखी सहेली सजनी, पिया कूं आनि मिलावै ।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, मनमोहन मोहि भावै,
कबै हँस कर बतलावै ।। ४

○

पद–५०० : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम, विरह)

रमैया मैं तो थारे रँग राती । (टेक)
अउरां[1] के पिय परदेस बसत हैं, लिख-लिख भेजें पाती ।
मेरे पिया मेरे हिये बसत हैं, गुंज करूँ दिन राती ।। १
चूवा[2] चोला पहिर सखी री, मैं झुरमुट रमवा जाती ।
झुरमुट में मोहि मोहन मिलिया, खेल मिलूँ गलबाँही[3] ।। २
अउर[4] सखी मद पी पी माती, मैं विन पियाँ मदमाती ।
प्रेम-भटी को मैं मद पीयो, छकी फिरूं दिन राती ।। ३

४९९–(ट.) (१ उ.) (बं. पु. पृ. १४)
५००–(म) (बं. पु. पृ. ३५)
पाठान्तर (१. उ), 1 औरां । 2 चूडा । 3 गलछाही । 4 और ।

सुरत निरत का दिवला सँजोया, मनसा पूरन बाती ।
अगम-घानि का तेल सिंचाया, वल[1] रही दिन राती ।। ४
दासी मीराँ के प्रभु गिरधर, हरि चरणाँ की दासी[2] ।। ५

○

पद–५०१ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(विरह)

रस भरिया महाराज, मोकूं आय सुनाई बांसुरी । (टेक)
सुन बांसुरी भई बावरी, निकसन लाग्यो सांस री ।। १
रकत रती भर नां रह्यो री, नांहि मांसा भर मांस री ।। २
तन तिनका सो व्है गयो, रही निगोरी सांस री ।। ३
मैं जमुनाजल भरन जात ही, मांसा ननद की त्रास री ।। ४
मीरां कूं प्रभु गिरधर मिल गये, पूजी मन की आस री ।। ५

○

पद–५०२ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

रसिक गुपाल मैं थारे गुण रीझो हो (रसिक गुपाल) । (टेक)
निस बासर म्हारै आस तिहारी, दरसण द्यो नंदलाल ।। १
सो मद भगत करो जिन साधो, मत बिसरो नंदलाल ।। २
काहू के चंदो काहू को मंदो, काहू के उर माल ।। ३
प्रेम-भरी मीरां घन गरजे, हिरदै गिरधरलाल ।। ४

○

पाठान्तर–1 बली । 2 राती ।
५०१–(१ उ.) (म. मा. मी. ली. २५)
५०२–(उ.) (दीना. मं. मी. प. १८)

पद–५०३ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार

(लीला)

रँग भरी रँग भरी रँग सूँ भरी री ।
होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री । (टेक)
उड़त गुलाल लाल भये बादल,
पिचकारिन की लगी झरी री ।। १
चोवा चन्दन और अरगजा,
केसर गागर भरी धरी री ।
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर,
चेरी होय पायन में परी री ।। ३

○

पद–५०४ : राग–मारू : ताल–एकताला

(जीवदशा, उपदेश)

राणाँजी कर्मां रो सँगाती, कुल में कोई नहीं । (टेक)
एक तो माता रै दोय दोय डीकरा, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत
वाँकी न्यारी न्यारी करमां रेष । राणाँ० ।। १
एक तो राजाजी री गद्दी बैठिया, दूजो हल'र बैल भरतो पेट ।
राणाँ० ।। २
एक तो माता रै दोय दोय डीकरी, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
ज्याँकी न्यारी न्यारी करमाँ रेष । राणाँ० ।। ३
एक तो मोतियन मांग भरावती, दूजी घर-घर की पनिहार ।
राणाँ० ।। ४
एक तो गऊ रे दो-दो बाछड़ा, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
वाँकी न्यारी न्यारी करमाँ रेष । राणाँ० ।। ५
एक तो महादेवजी रै मंदिर नादियो, दूजो बणजारा रे हाथ ।
राणाँ० ।। ६

५०३–(उ.)
५०४–(सं०, ३ क.)

एक तो कुम्हार रे दोय दोय मटकियाँ, ज्यांकी न्यारी न्यारी भाँत,
ज्याँकी न्यारी न्यारी करमां रेष । राणाँ० ।। ७
एक तो महादेवजी रे मंदिर जल चढै, दूजी चमाराँ रे हाथ,
राणाँजी करमाँ रो सँगाती, जग में कोई नहीं ।। ८

○

पद–५०५ : राग–बागेश्वरी, कानड़ा : ताल–तिताला

(राणां-संवाद)

राणाँजी तें जहर दियो मैं जाणी (टेक)
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबांणी ।। १
लोकलाज कुलकाण जगत् की, दी बहाय ज्यूँ पांणी ।। २
अपने घर का[1] परदा कर लो, मैं अबला बौरांणी ।। ३
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक गयो सनकांणी ।। ४
सब संतन पर तन मन वारों, चरणकमल लपटांणी[2] ।। ५
मीरां के प्रभु राख लई है, दासी अपनी जाणी ।। ६

○

पद–५०६ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणांजी थारो देसड़लो रँग रूड़ो । (टेक)
थांरे[1] मुलक में भक्ति नहीं छै, लोग बसे सब कूड़ो ।। १
पाट[2] पटंबर सब ही मैं त्यागा, सिर बांध्यो छै जूड़ो ।। २

५०५–(भक्त-चरितावली पृ. १४८)
1 पा०—कुल का ।
2 पा० —"स्वपच भक्त वारों तन मन तैं हौं हरि हाथ बिकानी ।
मीरां के प्रभु गिरधर भजिवे को, संत-चरण लपटानी ।।"
देखो —"राणाँजी जहर दियो म्हे जाणो ।।
५०६–(१ उ.)
1 पा०—रामनाम की भक्ति न भावै ।
2 पा० – गहणो तो गांठो मीरां सब ही त्याग्यो, त्याग्यो छै वैया रो चूड़ो ।

माणिक[3] मोती सब ही मैं त्यागा, तज दियो कर को चूड़ो ।। ३
मेवा मिसरी[4] मैं सब ही त्यागा, त्याग्या छै सक्कर बूरो ।। ४
तन की मैं आस कबहु नहिं कीनी, ज्यूं रण मांही सूरो ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बर पायो मैं पूरो ।। ६

○

पद–५०७ : राग–ईमन, बिलावल : ताल–कहरवा
(आत्मेतिहास)

राणाँजी थे क्याने राखो मोसूं बैर । (टेक)
राणाँजी[1] म्हाँने ऐसा लगत है, ज्यूं बिरछन में कैर ।। १
मारू[2] धर मेवाड़, मेरतो, त्याग दियो थांको सैर ।। २
थारे रूस्याँ राणाँ कुछ नहिं बिगड़ै, अब हरि कीनी म्हैर ।। ३
मीरां के[3] प्रभु गिरधरनागर, हट कर पी गई ज्हैर ।। ४

○

पद–५०८ : राग–आसा मांड : ताल–कहरवा
(आत्मेतिहास, पूर्वजन्म)

राणाँजी म्हारी प्रीत पुरबली मैं क्या करूं ? (टेक)
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हारा हियरा ठराय ।
भोजनिया नहिं भावे म्हाँने, नींदड़ली नहिं आय ।। १
विष का प्याला भेजिया जी, जावो मीरां पास ।
कर चरणामृत पी गई, म्हारे रामजी को विश्वास ।। २

५०६–3 पा०—पाल दुसाला मीरां सब सोई, त्याग्या, सिर पर बाँध्यो छै जूड़ो ।
4 पा० – मेवा मिठाई मीरां सब ही त्यागे, त्याग्यो छै साग और बूरो ।
५०७–(म.)
1 पा० —"आप राणाजी म्हाँने इसड़ा लागो, जैसा जंगल कैर ।"
2 पा० —"मारे घर मेवाड़, मेड़त्यो, सारा छोड्या सहर ।"
3 पा०—कहै ।
4 पा० –रामभरोसै पियो जहर ।
५०८–(३ क.)

विष का प्याला पी गई जी, भजन करे राठोर ।
थाँरी मारी ना मरूँ, म्हारो राखणहारो ओर ।। ३
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निश्चय धार ।
रामजी काज सँवारिया जी, म्हाँने भावें गरदन मार ।। ४
पेयाँ बासक भेजिया जी, ये है चन्दनहार ।
नाग गले में पहरिया जी, म्हारे महलाँ भयो उजार ।। ५
राठोडाँ की धीयड़ी जी, सीसोद्यां के साथ ।
ले जाती बैकुंठ को जी, म्हारी नेक न मानी बात ।। ६
मीरां दासी राम की जी, राम गरीबनिवाज ।
जन मीराँ की राखजो जी, बाँह गहे की लाज ।। ७

○

पद–५०९ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हारे गिरधर प्रीतम प्यारो,
हो राणाँजी म्हारे गिरधर प्रीतम प्यारो । (टेक)
व्यापक होय रह्यो घट-घट में, है सब ही से न्यारो ।
अन्तर घट की सब ही जाणे, सब ही को सरजणहारो ।। १
आप तो भेज्या बिषरा प्याला, दे मीरां ने मारो ।
कर चरणामृत पी गई जी, गिरधर संकट टारो ।। २
जन्म-जन्म रो पति परमेश्वर, राणोंजी कोन बिचारो !
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, साँचो बँसरीबारो ।। ३

○

पद–५१० : राग–सारंग : ताल–कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हारो काँईं करसी, मैं तो सेया छै श्री भगवान । (टेक)

५०९–(१ उ) (मी. प. जमा. राम. ८)
५१०–(३ क) (मीराँबाई के भजन नं. १९)

पगां बजावै मीरां घूघरा, हाथां बजावै झाँझ ।
साँवरियो म्हाँने दरसण देसी, परभाताँ और साँझ ।। १
नाग-पिटारी राणाँजी भेजी, हो गयो सालगराम ।
विष रो प्यालो राणाँजी भेज्यो, चरणामृत कियो पान ।। २
साधाँ री संगत मीरांजी छोड़ो, साधां रो संत सुभाव ।
साधाँ री संगत राणाँजी नै छोड़ाँ, गहरो लाग्यो छै घाव ।। ३

○

पद-५११ : राग-सारंग : ताल-कहरवा

(आत्मेतिहास)

राणाँजी म्हे तो गिरधर रा गुण गास्याँ । (टेक)
गुरु-प्रताप साधां री संगत, सहजैं ही तिर जास्याँ ।। १
कथा कीरतन सुण निसबासर, महाप्रसाद ले पास्याँ ।। २
म्हारे तो पण चरणामृत को, नित उठि मन्दिर जास्याँ ।। ३
लोक वेद की काण न मानाँ, राम तणाँ गुण गास्याँ ।। ४
नाँव अमोलिक अमृत पीकै, सिर के साटे लास्यां ।। ५
तुम हठ माँड्यो म्हारे ऊपर, बिष रो प्यालो पास्याँ ।। ६
जन मीरां गिरधर के ऊपर, पीवत मन नाँ डुलास्याँ ।।[1] ७

○

५११-(१ उ.) (दीना. मं. मी. प. १२) (मी. ली. प. दूधू ८)
1 पा०—"राणाँजी मैं तो गोविंद रा गुण गास्याँ ।" (टेक)
चरणामृत का नेम हमारे, नित उठ दरसण जास्याँ ।। १
हरि मन्दिर में निरत करास्याँ, घूँघरिया घमकास्याँ ।। २
राम नाम का जहाज चलास्याँ, भवसागर तर जास्याँ ।। ३
यह संसार बाड़ का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ ।। ४
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, निरख परख गुण गास्याँ ।। ५

पद–५१२ : राग–सोरठ, कानड़ा : ताल–झुमरा
(राणाँ-संवाद)

राणाँजी (म्हाँने) जहर दियो म्हे जाणी । (टेक)
अपना[1] कुल का पड़दा कर ल्यो, म्हे[2] अबला बहौराँणी ।। १
जब लग कंचन कसिये नांही, होत न बाराबाँनी ।। २
प्रभुजी मेरो न्याव कियो है, छाँण्यों दूध'र पाँणी ।। ३
कोटिक भूप वारौं संतन परि, जिनके हाथ बिकाँनी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, संत चरण लपटाँणी ।। ५

○

पद–५१३ : राग–बिहाग : ताल–दीपचंदी
(भक्ति-दृढ़ता)

राणाँजी[1] म्हाँनैं याही बदनामी मीठी । (टेक)

५१२–(१ उ.) (क. ब. २७)

1 पा०—हम ।

2 पा०—"अपने घर का परदा कर लो मैं अबला बौराँनी ।"

3 सिवाय पा०—"राणाँजी परधान पठायो सुनजो जी थे राँणी ।
जो साधन को संग निवारो करूँ तुमें पटराँणी ।।"

4 सिवाय पा०—"हथलेवो राणाँ सँग जुड़ियो, गिरधर घर पटराणी ।
कोड़ भूप साधाँ पैं वारूँ जिनकी सरण रहाँणी ।।"

5 पा०—मीरां को पति एक रमैयो, चरण कमल लपटाँनी ।
(मुन्शी देवीप्रसादजी की पुस्तक से पा. १ से ५ तक)

५१३–(१ उ.) (क. ब. २१)

नोट—पाठ भिन्न-भिन्न होने के कारण पूरा पद लिखा गया ।

१ पा०--"याही बदनाँमी मीठी हो,
राणाँजी (थारी) याही बदनामी मीठी । (टेक)
रावली डयोढ्यां मैं सतगुरु मिलीया, किस विधि फिरूं जी अफूटी ।। १
सतसंगति मैं ग्यांन सुणै छी, दुरजन लोगाँ मोहि दीठी ।। २
यो मन मेरी हरिमैं बसीयो, जैसैं रंग मजीठी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, दुरजन जलो ज्यूँ अँगीठी ।। ४
(रामस. गु. पृ. ३१८)

साँकड़ली सेर्‌याँ मैं म्हाँनें साधूजन मिलिया, क्यूं कर फिरूं अपूठी ।। १
रामजी सूं मैं तो बात करै छी, दुरजन लोगाँ दीठी ।। २
बुराँजी कहो नैं कोई भलाँजी कहो नैं, नैं मानो किसी की बसीठी ।। ३
जन 'मीरां' कहै निन्दक प्राणी, जल बलि होइ (न) अँगीठी ।। ४

○

पद–५१४ : राग–आसावरी वा सोरठ : ताल–दीपचंदी
(राणाँ-सम्वाद)

राणाँजी मैं साँवरे रँग राची । (टेक)
साज सिंगार बाँध पग घुंघरू, लोक लाज तज नाची ।। १
गई कुमति लई साधन संगति, भक्त रूप भई सांची ।। २
गाय गाय हरि के गुन निसदिन, काल व्याल सूं बाची ।। ३
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची ।। ४
मीरां श्रीगिरधरनलाल सूं, भक्ति रसीलो जांची ।। ५

○

पद–५१५ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी
(आत्मेतिहास)

राणाँजी हूं अब न रहूंगी तोरी हटकी ।
साध-संग मोहि प्यारा लागै, लाज गई घूंघट की । (टेक)
पीहर मेड़ता छोड़ अपना, सुरत निरत दोउ चटकी ।
सतगुरु मुकर दिखाया घटका, नाचूंगी दे दे चुटकी ।। १
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी ।
मेरा सुहाग अब मोकूं दरसा, और न जाने घट की ।। २
महल किला राणाँ मोहिं न चहिये, सारी रेसम पट की ।
हुई दिवानी मीरां डोलै, केस लटा सब छिटकी ।। ३

५१४–(उ.)
५१५–(१ उ.)

पद–५१६ : राग–बिहाग वा सोरठ : ताल–तिताला बिलंबित
(राणाँ-सम्वाद)

राणाँजी हूं गिरधर रै घर जाऊँ । (टेक)
गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ ।। १
रैन पड़े तबही उठ जाऊँ, भोर भये उठ आऊँ ।। २
रैन दिनाँ वाके सँग खेलूं, रीझै त्योंहि रिझाऊँ ।। ३
ज्यो पहरावे सोई पहरूँ, ज्यो दे सोई खाऊँ ।। ४
मेरे उनके प्रीत पुराणी, वाँ बिन पल न रहाऊँ ।। ५
जहाँ बैठावै तहां ही बैठूं, बेचै तो बिक जाऊँ ।। ६
जन[1] मीरां गिरधर रै ऊपर, बार बार बलि जाऊँ ।। ७

○

पद–५१७ : राग–मांड : ताल–कहरवा
(पूर्वजन्म-चरित)

राणाँजी हूं तो गिरधर कै मन भाई । (टेक)
जैमल कै घरि जनम लियो है, राणाँ नैं परणाई ।
साँचा सनेही म्हारै रामसंतजन, जासूं प्रीति लगाई ।। १
पुरबै जनम की होती गोपक्या, चूक पड़ी मुझि मांहीं ।
जगत लाज उपजी घट भींतर, तब हरि नैं छिटकाई ।। २
जै पकड़ोगा हाथ हमारो, खबरदार मन माँहीं ।
साँचा मनसूं सराप ज द्यूंली, बलि'र भसम होई जाई ।। ३
जनम-जनम की मैं दासी राम की, थारी नाँहि लुगाई ।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी, संत चरण बलि जाई ।। ४

○

५१६–(उ.) (मी: ली. प. दूधू २८)
1 पा०–मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
५१७–(३ क.) (राम. स. गु. पृ. १७६)

पद–५१८ : राग–धनाश्री वा खमाच : ताल–कहरवा

(प्रकीर्णक, निज निश्चय)

राणाँजी हो जाति रो कारण म्हारे को नहीं,
लागो म्हारो हरि भगताँ सूं हेत । (टेक)
बिदुर कुलां घरि जनमिया, ज्यांकै पावणां हुआ गोपाल ।
बंदि छुड़ाई बसुदेव की, कंस कियो खोकाल ।। १
पाँचूं पाण्डू छटी द्रोपदी, ज्याँकी न्यारी न्यारी जात ।
सहस अठचासी मुनि आविया, ज्याँकी पण राखी रघुनाथ ।। २
वन में हुती स्योरी भीलणी, ज्याँका आरोग्या ठाकुर बोर ।
ऊंच नींच हरि नां गिणैं, ऐसी म्हारा हरिभगतां री कोर ।। ३
येक बेल दोय तूंबड़ा, ज्याँहूं की न्यारी न्यारी जात ।
येक तूंबो जंतर चढ़ै, दूजो हरि भगतां कै हाथ ।। ४
संख समदाँ नीपजै, ज्याँहूं की न्यारी न्यारी जात ।
एक संख सेवा चढ़ै, दूजो भोयड़लां के हाथ ।। ५
एक माटी दोय कलस हैं, ज्याँहूं की न्यारी न्यारी जात ।
एक कलस सेवा चढ़ै, दूजो कलालाँ रै हाथ ।। ६
कनक कटोरे विष घोलियो, दीयो मीरां के हाथ ।
हरिचरणोदक करि पी लियो, हरिजी भयो सुनाथ ।। ७
सब मिली मतो उपाड्यौ, मीरां नै विष थौह ।
कह्यौ सुण्यौं मानैं नहीं, नीच लग्यौ हठ यौह ।। ८
नगर बसै बामण बाणियाँ, भीतर शुद्र पंवार ।
मुंह मोड़ै मुलक्याँ हंसै, समझै नहीं गंवार ।। ९
गढ़ चित्तोड़ नां रहाँ, नहीं रहण जोग ।
बसस्याँ रूड़ी द्वारिका, जहाँ हरि भगताँ कां भोग ।। १०
परख लेत परचो भयो, मन उपज्यो विसवास ।
सिर पर सिरजनहार है, पूगी (म्हाँ) मन की आस ।। ११
कुंभ स्याम कै देवरै, मिली है राणों राण ।
मीरां नैं गिरधर मिल्या, कोई पूरबली'र पहिचाँण ।। १२

५१८–(३ क.) (क. ब. २२)

पद–५१६ : राग–भैरों वा सोरठ : ताल–धीमा तिताला
(भक्ति-दृढ़ता-रहस्य)

राणाँजी (हो) मैं साधुन रँगराती। (टेक)
काहू को पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजत पाती।
मेरो पिया मेरे माँहि बसत है, कहि न सकूँ सरमाती ।। १
सूहो कसूंभी ओढ़ डुपट्टो, झुरमट खेलन जाती।
झुरमुट खेल मिले यदुनंदन, खोल मिली मिल[1] छाती ।। २
और सखी मद पीवन आई[2], मैं मद की मदमाती।
मैं मद पीयो पंचबटी को, छको रहूँ दिन राती ।। ३
सुन्न सिखर के द्वारे[3] आकै, मोहि मिले अविनासी।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जनम-जनम की दासी[4] ।। ४

○

पद–५२० : राग–देश मांड : ताल–कहरवा
(प्रेम)

राणूँ म्हारो कांईं करैलो राज, म्हे तो छाँडी कुल की लाज। (टेक)
पगाँ तो वाँध्या घूघरा जी, हाथ बजावाँ ताल ।। १
भोसागर म्हारो माहिरो जी[1], हरि चरणां सूँ प्यार[2] ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, जास्याँ दुवारकानाथ[3] ।। ३

○

५१९–(१ उ.) (आ. सा. भा. १ पृ. १३६)
1 पा०—'दुई'। 'भर'।
2 पा०—'पी पी आई'। 'रही प्यासी'।
3 पा०—'पौरे'।
4 पा०—'मीरां के प्रभु·········गावत मीराँ दासी'।
५२०–(म.) (दीना मँ. मी.. प. ३७)
1-2 पा०—तुम हरो जी। सुसराल। पीहर छै जी।
3-पा०—मीराँ कहै जास्याँ द्वारका जी वैकुंठां रा वास।

पद–५२१ : राग–भैरवी : ताल–धीमा तिताला

(आत्म-इतिहास)

राँणैं म्हाँनैं ऐसी कही महाराज । (टेक)
मगतरण होय मीरां जगत लजायो कीन्हौं सारो राज ।
जावो नैं मीरां म्हाँनैं मुख न दिखावो म्हाँनै आवै थारी लाज ।। १
लाजै मीरां पीहर सासरो और लाजै म्हारो साज ।
गोपीचंदरण तुलसी की माला भीख माँगरण रो साज ।। २
धन मीरां धनि मेड़तौ धनि राठोड़ौ राज ।
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी चलि आयो व्रजराज ।। ३

○

पद–५२२ : राग–घूमर : ताल–कहरवा

(प्रेम)

राणोंजी मेवाड़ो म्हारै दाय न आवै,
गिरधर म्हारै मन भाया, भोलि माय । (टेक)
राणोंजी म्हाँसूं रूस रह्यो छै कूड़ा वचन सुनाया, भोलि माय ।। १
गुरु कृपा सूं संत पधारचा संताँ स्याम मिलाया, भोलि माय ।। २
बाँधि घूघरा नृत्य कराँ म्हे हरिगुरण गाय रिझावाँ, भोलि माय ।। ३
मीराँ के प्रभु आस पुराई गिरधर सेजाँ आया, भोलि माय ।। ४

○

५२१–(३ क.) (राम स. गु. पृ. १७४)
५२२–(२ म.) (मा. हरिना. एम. ए की पु.)

पद–५२३ : राग–काफी : ताल–दादरा

(आत्मेतिहास)

राणोंजी[1] मेवाड़ो म्हारो काईं करसी,
म्हे तो गोबिंदरा गुण गास्याँ, हे माय । (टेक)
राणोंजो रूससी गाँव राखसी, हरी रूस्याँ कुमलास्याँ,[2] हे माय ।। १
म्हारो तो प्रण चरणामृत रो, नित उठ मन्दिर जास्याँ, हे माय ।। २
मदिरया में माधुरी मूरति, निरख निरख गुण गास्याँ, हे माय ।। ३
हाथाँ से करताल बजावाँ घूघरिया धमकास्याँ, हे माय ।। ४
राणोंजी भेज्या विष रा प्याला, कर चरणामृत पीस्याँ, हे माय ।। ५
राणोंजी भेज्या साँप टिपारा (पिटारा), तुलसी की माला कर पैराँ, हे माय ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणाँ चित ल्यास्याँ, हे माय ।। ७

○

पद–५२४ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल–तिताला

(चरित)

राणोंजी हट मांड्यो म्हाँसू , गिरधर प्रीतम प्यारी जी । (टेक)
वो तो मद माया रो आँधो, थे मत होज्यो न्यारा जी ।। १
साँची प्रीत लगी है तुमसूँ, झक मारो संसारा जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, थाँनै भक्त पियारा जी ।। ३

५२३-(१ उ.) (मी. प. जमा. राम. ५)
नोट --पाठ भिन्न भिन्न होने से पूरा पद ही लिख दिया गया है ।
1 पा०—मर जास्याँ ।
2 पा०—"रसियो राम रिझास्याँ हे मा,
राणोंजी मेवाड़ो म्हारो काउ करसी । (टेक)
राणाँ रूससी गाँव राखसी, हरि रूस्याँ कुमलास्याँ, हे मा ।। १
गोपीचंदन गंगा री माटी, घसि घसि अंग लगास्याँ, हे मा ।। २
श्री तिलक तुलसी की माला, नित उठ मंदिर जास्याँ, हे मा ।। ३
बाँध घूघरा नित कराँ म्हे, करसूँ तार बजास्याँ, हे मा ।। ४
राणों भेज्यो विष रो प्यालो, चरणामृत कर पीस्याँ, हे मा ।। ५
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणां लास्याँ, हे मा ।। ६
५२४-(उ)

पद–५२५ : राग–काफी : ताल–कहरवां
(चरित)

राणों म्हारो काँई करिहै मीरां छोड़ दई कुल लाज ।
विष को प्यालो राणाँ ने भेज्यो मीरां मारन काज ।। (टेक)
हँस के मीरां पीय गई है प्रभु प्रसाद पर राग ।
डब्बो एक राणाँजी भेज्यो उसमें कारा नाग ।। १
डब्बो खोल मीरां जब देख्यो व्है गयो सालिगराम ।
जै जै धुनि सब सन्त सभा भई कृपा करी घनश्याम ।। २
सजि सिंगार पग बाँधि घूंघरू दोउ कर देती ताल ।
ठाकुर आगे नृत्य करत ही गावत श्रीगोपाल ।। ३
साधु हमारे हम साधुन के साधु हमारे जीव ।
साधुन मीरां मिलि जो रही है जिमि माखन में घीव ।। ४

○

पद–५२६ : राग–सोरठ वा काफी : ताल–कहरवा
(प्रेम-दृढ़ता)

राजा रूठै नगरी राखै, हरि रूठ्या कहँ जाणा । (टेक)
राणाँ भेजा जहर पियाला, इमरत कर पी जाणाँ ।। १
डिबिया में भेजा जु भुजंगम, सालिगराम करि जाणाँ ।। २
मीरां तो अब प्रेम दिवानी, साँवलिया बर पाणा ।। ३

○

पद–५२७ : राग–सोरठ : ताल–झूमरा
(रूप-वर्णन)

राधा तेरी बोली माँहीं, मुडक घणी । (टेक)

५२५–(३ क.) (मीराँ बा. जी. का. प्र. पृ. १५)
५२६–(म.) (मीरांपदावली वि. मुं. पृ. ७६)
५२७–(उ. सं) (१०) पुजा. नाथू. पु. से)

तीखा तीखा नैन भुँवारा बाँका, मानों कवाण तणी ।। १
आप ही बाँकै नैन ही बाँके, कोन चटसाल भणीं ।। २
कोटी भान प्रकास भया है, चिमकत शैली भणीं ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निरखत श्याम धणीं ।। ४[1]

○

पद–५२८ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी
(लीला)

राधा तेरी मँहदी रो माणक रंग । (टेक)
कनक कटोरे मँहदी घोली, तामें अद्भुत रङ्ग ।। १
राधा प्यारी मँहदी माँडी, सब सषियन के संग ।। २
मीरां[1] के प्रभु मँहदी निरषै, श्रीबृन्दाबनचंद ।। ३[1]

○

पद–५२९ : राग–श्याम कल्याण : ताल–तिताला
(लीला)

राधा प्यारी दे डारो जी वंसी हमारी ।
या बंसी में मेरा प्रान वसत है,
वो बंसी ले गई मेरी ।। राधा०
ना सोने की वंसी ना रूपे की ।
हरे हरे बाँस की पेरी ।। राधा०
घड़ी एक मुख में घड़ी एक कर में ।
घड़ी एक अधर धरी ।। राधा०
मीरां के प्रभू गिरधरनागर,
चरण कमल पर वारी ।। राधा०

1–यह पद विशेषतया भाषा की दृष्टि से ठेठ जयपुरी किसी कवि का ज्ञात होता है। स्यात् 'ब्रजनिधि' या अमृतराम अथवा अन्य ।
५२८–(ज. सं.) (११) (पुजा. नाथू. पु. से)
1–यह भी किसी 'ब्रजनिधि' के समसामयिक कवि का ज्ञात होता है ।
५२९–(क.)

पद–५३०

(वृन्दावन-प्रेम)

राधे जी को लागे बृन्दावन नीको । (टेक)
बृन्दावन में तुलसी का बिड़ला, जाके पान चरी को ।। १
बृन्दावन में धेनु बहुत हैं, भोजन दूध दही को ।। २
बृन्दावन में रास रच्यो है, दरसण कृदमाजी को ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिना रंग सब फीको ।। ४

○

पद–५३१ : राग–कल्याण : ताल–कहरवा

(लीला)

राधे दे दो बाँसरी, हमारी मुरली ।
पात पात सब वृन्दावन ढूंढचो ।
कुञ्ज गलिन में सब हेरी ।। राधे०
बँसरी बिन मोहे कल न परत है ।
पैया लागत तोरी ।। राधे०
काहे से गाऊँ काहे से बजाऊँ ।
काहे से लाऊँ गवाँ घेरी ।। राधे०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ।
चरण की मैं तो चित्त चेरी ।। राधे०

○

पद–५३२ : राग–आसावरी : ताल–तिताला

(चरित)

राम तणें रँग राची, राणाँ मैं तो साँवलिया रँग राची रे । (टेक)
ताल पखावज मिरदँग बाजा, साधों आगे नाँची रे ।। १

५३०–(म.) (क. । उ० २ । ३६२)
५३१–(क.)
५३२–(२ म)

कोई कहे मीरां भई बावरी, कोई कहे मदमाती रे ।। २
विष का प्याला राणाँ भेज्या, अमृत कर आरोगी रे ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी रे ।। ४

○

पद–५३३ : राग–भैरवी : ताल–तिताला
(चरित)

राम नाम उर धार्‌यो मेड़तणी ने, राम नाम उर धार्‌यो । (टेक)
कह्यो न मानूं राणाँजी को, देसपती पच हार्‌यो ।। १
कोप कियो राणाँजी जब ही, साँप गला में डार्‌यो ।। २
मीरां ने हँस पहर लियो है, हो गयो नोसर-हारो ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, अबके मोय उवारो ।। ४

○

पद–५३४ : राग–सारंग, घूमर : ताल–कहरवा
(प्रेम)

राम-नाम म्हारे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय । (टेक)
मैं मँदभागँण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ।। १
बिरह-पिंजर की बाड़ सखी री, उठ कर जी हुलसाऊँ ए माय ।। २
मन कूँ मार सजूँ सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गमाऊँ ए माय ।। ३

५३३–(क) (२) (पुजारी नाथूना. पु. से)
५३४– (१ उ.)
नोट—पाठ भिन्न-भिन्न होने से पूरा पद लिखा जाना है—
"रसियो राम रिझाऊँ ए माइ, रांम नाम मेरे मन बसियो । (टे०)
बिरहै पीड़ की बात सखी री, कासूँ कहूं समझाइ ।। १
तन करि ताल'र मन करि मिरदँग, सुणत हि सुरति जगाऊँ ए माइ ।। २
सील सिंगार साज तन ऊपर, प्रभु के सनमुख जाऊँ ए माइ ।। ३
लोक लाज कुल संक निवारी, राम (जो) मिल्याँ सुख पाऊँ ए माइ ।। ४
मीरां के प्रभु तुमरे मिलन कूं, चरण कमल बलि जाऊँ ए माइ ।। ५
(क. ब. ९)

डाको नाम सुरत की डोरी, कडयाँ प्रेम चढ़ाऊँ ए माय ।। ५
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय ।। ५
तन करूँ ताल मन करूँ मोचँग, सोती सुरत जगाऊँ ए माय ।। ६
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तो अमरापुर जाऊँ ए माय ।। ७
मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोबिंद का गाऊँ ए माय ।। ८

○

पद–५३५ : राग–भैरवी : ताल–तिताला

(चेतावणी)

राम नाम रस पीजे मनुआ, राम नाम रस पीजे । (टेक)
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ।। १
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित्त से बहाय दीजे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ताहि के रँग में भीजे ।। ३

○

पद–५३६ : राग–खमाच : ताल–कहरवा

(विनय)

राम म्हारी बाहड़ली जो गहो । (टेक)
भवसागर की तीषण धारा, तुम ही लेर निभहो ।। १
मोमैं औगुण घणां छै साँवरा, तुम हो सब ही सहो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बिरद की लाज गहो ।। ३

○

५३५–(२ म) (मीरांबाई के भ. नं. ३३)
५३६–(२ म) (मी. ली. प. दूधू ३)

पद–५३७ : राग–भीम पलासी : ताल–तिताला

(विरह)

राम मिलण के काज सखी, मेरे आरति उर जागी री । (टेक)
तलफत तलफत कल न परत है, विरह-बाण उर लागी री ।
निस दिन पंथ निहारूं पीव को, पलक न पल भरि लागी री ।। १
पीव पीव मैं रटूं रात-दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री ।
विरह-भवंग मेरो डसो है कलेजो, लहरि हलाहल जागी री ।। २
मेरी आरति मेटि गुसाँई, आइ मिलौ मोहिं सागी री ।
मीरां ब्याकुल अति अकुलाणी, पिया की उमंग अति लागी री ।। ३

○

पद–५३८ : राग–जोगिया-आसावरी : ताल–तिताला

(विरह)

राम मिलण रो घणों उमावो, नित उठ जोऊं बाटड़ियाँ ।
दरसण बिन मोहि पल न सुहावै, कल न पड़त है आँखड़ियाँ ।। (टेक)
तलफ़ तलफ़ के बहु दिन बीते, पड़ी विरह की फाँसड़ियाँ ।
अब तो वेगि दया कर साहिब, मैं हूं तेरी दासड़ियाँ ।। १
नैण दुखी दरशण को तरसै, नांभि न बैठे साँसड़ियां ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखै पासड़ियाँ ।। २
लगी लगन छूटण की नाँही, अब क्यों कीजे आटड़ियाँ ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, पूरो मन की आसड़ियाँ ।। ३

○

५३७–(१ उ)
५३८–(१ उ)

पद–५३९ : राग–सारंग घूमर : ताल–कहरवा

(उपदेश, चेतावणी)

राम रतन धन पायो मैया, मैं तो राम रतन धन पायो । (टेक)
खरचे ना घू [खू]टे, वाकूँ चोर न लूटे, दिन दिन होत सवायो ।। १
नीर न डूबै वाकूं, अग्नि न जाले, धरनी धरचो न समायो ।। २
नाँव को नाँव भजन की बतियाँ, भवसागर से तारचो ।। ३
मीरां प्रभु गिरधर के सरनें, चरण-कमल चित लायो ।। ४

○

पद–५४० : राग–बिहाग : ताल–कहरवा

(चरित)

राम-रँग लाग्यो, म्हारा मन को धोखो भाग्यो जी । (टेक)
पीपा(के) लागि सुदामा(के) लाग्यो, कञ्चन महल बणागो जी ।। १
ध्रुव के लागि प्रहलाद के लाग्यो, नरसी के कारज सारचो जी ।। २
साँचो रङ्ग नामदेव के लाग्यो, छिन में छाँन छवागो जी ।। ३
मुलक भुखारा का बादशाह के लाग्यो, राज मुलक को त्याग्यो जी ।। ४
गोपीचंद भरथरी के लाग्यो, तन में खाक रमागो जी ।। ५
सांचो रँग मीरां[1] के लाग्यो, ज्योति में ज्योति समागो जी ।। ६

○

५३९–(१ उ) (वं. पु. पृ. ३०)
५४०–(क. सं) (२८) (पुजा. नाथू. पु. से)

1 आत्मश्लाघा के कारण मीरांजी का नहीं जँचता ।

पद–५४१ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(रहस्य)

राम-सनेही साँवरियो म्हारी नगरी में उतरचौ आइ । (टेक)
प्रांण जाय पणि प्रीत न छांडू रहौं चरण लपटाय ।। १
तीन लोक झोली में डारै धरती कौ कीयौ निपांन ।। २
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी रहौ चरण लिपटाय ।। ३

○

पद–५४२ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(उपदेश)

रामा रामा कहिये रे गोबिन्द गोबिन्द कहिये रे । (टेक)
कंकर हीरा एक सारसा, हीरा किस कूँ कहिये रे ।
हीरापण तो जद ही जाणूं, महँगा मोल बिकइये रे ।। १
कोयल कागा एक सरीसा, कोयल किसको कहिये रे ।
कोयलपण तो जब ही जाणूं, मीठा बचन सुणइये रे ।। २
हंसा बुगला एक सरीखा, हंसा किसकूं कहिये रे ।
हंसापण तो जद ही जाणूं, चुग चुग मोती खइये रे ।। ३
जगत भगत के आसरे है, भगत किसकूं कहिये रे ।
भगतपणों तो जब ही जाणूं, बोल सभी का सहिये रे ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणाँ चित दइये रे ।
द्वारिका के ठाकुर के सरणे में, जा कर रहिये रे ।। ५

○

५४१–(३ क) (राम स. गु. पृ. २८२)
५४२–(२ क)

पद–५४३ : राग–गिरनारी-सोरठ : ताल–रूपक

(विनय-प्रार्थना)

राय श्री रणछोड़, दीजे द्वारका को बास । (टेक)
सँख चक्र गदा पद्म दरसे, मिटे जग की त्रास ।। १
सकल तीरथ गोमती के, रहत नित्त निवास ।। २
संख झालर झाँझ बाजे, सदा सुख की रास ।। ३
तज्यो देस'रु वेस पतिग्रह, तज्यो रानां-राज ।। ४
दासी मीरां सरन आवत, तुम्हें अब सब लाज ।। ५

○

पद–५४४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(विनय)

रावलो बिड़द मोहि रूड़ो लागे, पीडित पराये प्राण । (टेक)
सगो सनेही मेरो और न कोई, बैरी सकल जहान ।। १
ग्राह गह्यो गजराज उबारयो, बूड न दियो छै जान ।। २
मीरां दासी अरज करत है, नहिं जी सहारो आन ।। ३

○

पद–५४५ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी-कहरवा

(विरह)

री मेरे पार निकस गया, सतगुरु मारया तीर । (टेक)
विरह-भाल लागी उर अंतरि, ब्याकुल भया सरीर ।। १
इत उत चित चलै नहिं कब हूं, डारी प्रेम-जँजीर ।। २
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो, और न जाणै पीर ।। ३

५४३–(१ उ.) (स. मा. मी. ली. २८)
५४४–(१ उ.)
५४५–(१ उ)

कहा करूँ मेरो बस नहिं सजनी, नैन झरत दोउ नीर ।। ४
मीरां कहे प्रभु तुम मिलियाँ बिनि, प्राण धरत नहिं धीर ।। ५

○

पद—५४६ : राग—भोपाली : ताल—धीमा
(विरद-विनय)

रुकमणी री लाज राषो, राषोला म्हाराजि ।
आजि, रुकमण की लाज राषौ । (टेक)
माता कै मैं घणीं पियारी, नाहीं दोस पिता को ।। १
रुकमइयौ सिसपाल बुलायौ, नहिं मुष देखूं वाको ।। २
थांका बिड़द कूं लोग हँसैगो, जिव जावैंगो म्हांको ।। ३
मेरा स्याम कूँ कृष्ण बतावै, नारद मुनि यों भाषो ।। ४
मीरां कहै यूं रुकमणि कहत है, ऊंच नीच मति राषो ।। ५

○

पद—५४७ : राग—मारू : ताल—तिताला
(प्रेम-प्रवाह)

रूप देख अटकी, तेरो रूप देख अटकी । (टेक)
देह तैं विदेह भई ढुरि परि सिर मटकी ।। १
मात, पिता, भ्रात, बन्धु सब ही मिलि हट की । २
हिरदा थैं टरत नाँहि मूरति नागरनट की[1] ।। ३
प्रगट भयौ पूरन नेह लोक जानें भटकी ।। ४
मीरां प्रभु गिरधर बिन कौन लहै घट की ।। ५

○

५४६— (३ क.) (राम स. गु. पृ. ३२२)
५४७—(उ.) (प्राचीन गु. ह. लि: सं. १७४३) में से ।
1 पा०—'सूरति वा नट की' ।

पद–५४८ : राग–सोरठ : ताल–तिताला
(विरह)

रे पपैह्या प्यारे कब को बैर चितार्‌यो (टेक)
मैं सूती छी अपने भवन में पिय पिय करत पुकारचौ ।। १
दाध्या ऊपर लूण लगायो, हिवड़ै करवत सारचौ ।। २
आइ बैठ्यो बृक्ष की डारी, बोल बोल कइ सारचौ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरिचरणां चित धारचौ ।। ४

○

पद–५४९ : राग–चैती गोरी वा सोरठ : ताल–दादरा
(प्रेम-विनय)

रे साँवलिया म्हारे आज रँगीली गणगोर छे जी । (टेक)
काली पीली बादली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छे जी ।। १
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छे जी ।। २
आप रँगीला, सेज रँगीली और रँगीलो सारो साथ छे जी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरनाँ में म्हारो जोर छे जी ।। ४

○

पद–५५० : राग–भैरवी : ताल–धीमा
(विनय)

लटपटी पेचा बांधी राज ।
सास बुरी घर ननद हटीली ।
तुम जे आगे कियो काज ।। लटपटी० ।
निस दिन मोहे कल न परत है ।
बंसी ने सारो काज ।। लटपटी० ।

५४८–(१ उ.) (ब. पु. पृ. १६)
५४९–(२ म.)
५५०–(म.)

मीरां के प्रभु गिरिधरनागर ।
चरण कमल सिरताज ।। लटपटी० ।

○

पद–५५१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(चरित)

लाग्यो थारो नैणाँ रो सलूणों रंग लाग्यो, लाग्यो महाराज । (टेक)
एक रंग लाग्यो नारदमुनि जिनके, असली बैरागी बाज्यो रे ।। १
एक रंग लाग्यो भरतरी राजा के, शहर उजीणी त्याग्यो रे ।। २
एक रंग लाग्यो मेड़तणी राँणी के, देस मेवाड़ो त्याग्यो रे ।। ३
मीरां[1] के प्रभु गिरधरनागर, डर असुरन को भाग्यो रे ।। ४

○

पद–५५२ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा
(विरह)

लाग रही औसेर कान्ह तोरी, लाग रही औसेर । (टेक)
दरसण दीजे किरपा कीजे, कहाँ लगाई (ऐती) बेर ।। १
दिन नहिं चैंन, रैंन नहिं निद्रा, बिरह बिथा लई घेर ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सुनजो म्हारी टेर ।। ३

○

पद–५५३ : राग–सोरठा : ताल–कहरवा
(अनन्य प्रेम)

लागी मोहि राम खुमारी हो । (टेक)

५५१–(क. स.) (१४) (पुजा. नाथू. पु. से)
1 आत्मश्लाघा के कारण मीराँजी का ज्ञात नहीं होता है ।
५५२–(उ.)
(या०—ना० दा० जी के पदसार संग्रह की ह० लि० प्रति से ।)
५५३–(२ म.)

रिमझिम बरसै मेहड़ा, भीजै तन सारी हो ।
चहुँ दिस चमकै दामणी, गरजै घन भारी हो ।। १
सतगुर भेद बताइया, खोली भरम किवारी हो ।
सब घट दीसै आतमा, सब ही सूं न्यारी हो ।। २
दीपक जोऊं ज्ञान का, चढ़ ज्ञान-अटारी हो ।
मीरां दासी राम की, इमरत बलिहारी हो ।। ३

○

पद—५५४ : राग—देस : ताल—कहरवा

(विरह)

लागी सोही जाणै कठण लगन दी पीर । (टेक)
विपद पड़्याँ कोई निकटि न आवै, सुख में सब को सीर ।। १
बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम-रोम दी पीर ।। २
जन मीरां गिरधर के ऊपर, सदकै करूँ सरीर ।। ३

○

पद—५५५ : राग—कालँगड़ा वा जँगला वा काफी : ताल—कहरवा

(विरह)

लिख भेजूँ री पाती, मेरे प्रीतम प्यारे राम कूँ । (टेक)
स्याम संदेसो कछू न दीनों, जानि बूझि गुझि बाती ।। १
डगर बुहारूँ पंथ सुधारूँ[1], जोइ जोइ[2] अँखियाँ राती ।। २
रात द्योस मोहि कल न परत है, हियो फटत मेरी छाती ।। ३
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।। ४

○

५५४—(१ उ.)
५५५—(१ उ.) (क. ब. १६)
1 पा०—'निहारूँ' ।
2 पा०—रोइ-रोइ ।

पद–५५६ : राग–सिन्ध भैरवी : ताल–कहरवा

(उपदेश)

लेताँ-लेताँ राम नाम रे, लोकड़ियाँ तो लाजे मरे छे । (टेक)
हरि-मंदिर जाताँ पावलिया रे दूखे, फिर आवें सारो गाम रे ।। १
झगड़ो थाय त्याँ दौड़ी ने जाय रे, मूकी ने घर का काम रे ।। २
भाँड भवैया गनिका नृत्य करताँ, बेसी रहे चारे जाम रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल चित हाम रे ।। ४

○

पद–५५७ : राग–जोनपुरी : ताल–तिताला

(बाल-लीला)

लेने तुरी[1] लकड़ी रे, लेने तुरी कामली,
गायो तो चराववा नहिं जाऊं मावड़ली[2] । (टेक)
माखन तो बलभद्र ने खायो, हम ने पायो खाटी हो रे छाशड़ली[3] ।। १
वृन्दावन ने मारग जातां, पाऊं में बुचे[4] झीणी कांकड़ली ।। २
मीरांबाई के प्रभु गिरधर ना गुण, चरणकमल चित राखड़ली ।। ३

○

पद–५५८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

लेह लागी मने तारी अल्याजी, लेह लागी मने तारी । (टेक)
काम काज मूक्यूं ने धामज मूक्यूं, मन माँ चाहूँ छूँ मोरा री ।। १
खभे छे कामली ने हात माँ छे बाँसली, गोकुल माँ गायो चारी ।। २
सोळ सहस्र गोपियों ने तमे वरिया, तोय तमे बाल ब्रह्मचारी ।। ३
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल बलिहारी ।। ४

५५६–(३ क.)
५५७–(काव्य दो. भा. ७ पृ. ७२३)
1 पा०--तेरी । 2 माता । 3 छाछ । 4 चुभना ।
५५८–(३ क.) (काव्य-दोहन गु.)

पद–५५६ : राग–कामोद : ताल–कहरवा
(प्रेम)

वारियाँ वे लाल वारियाँ । (टेक)
तुसा आमना फेरा पामना कुन्ज हमारियाँ ।। १
कोन सखी के तुम रँगराते, हमसे अधिक पियारियाँ ।। २
ऊंची अटारियां ते लाल किंवारियां तक, रहियाँ वाट तिहारियाँ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरिधरनागर, या छबि पर बलिहारियाँ ।

○

पद–५६० : राग–पीलू बरवा : ताल–कहरवा
(प्रेम)

वारी वारी हो राम हूं वारी, तुम आज्यो गली हमारी । (टेक)
तुम देख्यां बिन कल न पड़त है, जोऊं बाट तुमारी ।। १
कूंण सखी सूं तुम रँग-राते, हमसूं अधिक पियारी ।। २
किरपा कर मोहि दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ।। ३
तुम सरणागत परम दयाला, भव जल तार मुरारी ।। ४
मीरां दासी तुम चरणन की, बार बार बलिहारी ।। ५

○

पद–५६१ : राग–होरी-काफी : ताल–कहरवा
(लीला)

वाह वाह रे मोहन प्यारे कहां चले जादू करि कैं । (टेक)
रूप सरूप सलूनी सी डारी मेरो मन लीनूं हर कैं ।
मोर मुकट सिर छत्र बिराजै नख पर गिरवर धर कैं ।। १

५५९–(२ म.) (बृ. रा. र. पृ. ६५)
५६०–(१ उ.)
५६१–(३ क.) (राम स. पृ. ३४८)

दमन कियो नाग काली को आप घुसे मध सर कैं ।
फण-फण निरत करत यदुनन्दन अभै कियो षगवर कैं ।। २
सब ब्रज लोग छांडि निज घर कूं जाइ बसे तर गिर कैं ।
सात दिवस लग सूँड धार जल इन्द्र परचौ पग डर कैं ।। ३
कातिगमास वाल सब मिल कै नांचें जल मैं तिर कैं ।
चीर चोर पुनि बगल डार कैं जाय चढ़े छल करि कैं ।। ४
बृन्दावन की कुंजगलिन मैं रास रच्यो छल बल कैं ।
मीरां के प्रभु हरि अविनासी पानैं पड़ी गिरधर कैं ।। ५

○

पद—५६२ : राग—भैरव : ताल—कहरवा

(लीला)

वहियां जो गही रे मेरी सुध न रही रे,
काना वहियां जो गही रे ।
जगमग ज्योत जडाव को गहनो,
गज मोतियन की सर लटकी रही रे ।। काना०
मैं दधि वेचन जाती गोकुल में,
पकडी री पाल व मेरो जलको मही रे ।। काना०
जाई पुकारूं कंस के आगे रे,
तेरी नगरी में मेरो बसबो नही रे ।। काना०
मीरां के प्रभु गिरधर नागर,
झगडत झगडत सारी रैन गई रे ।। काना०

○

पद—५६३ : राग—भैरवी : ताल—तिताला

(विरह)

विरहनी वावरी-सी भई । (टेक)

५६२—(म.)
५६३—(१ उ.)

ऊंची चढ़-चढ़ अपने भवन मैं टेरत हाय दई ।। १
ले अँचरा मुख अँसुवन पूँछत उघरे गात सही ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर बिछुरत कछु नाँ कही ।। ३

○

पद–५६४ : राग–देश : ताल–कहरवा
(विरह)

वै न मिले जिनकी हम दासी । (टेक)
पात पात वृन्दाबन ढूंढ्यौ ढूंढि फिरी सगरी मैं कासी ।। १
कासी कौ लोग बड़ो बिसवासी मुख मैं राम बगल मैं फांसी ।। २
आधी कासी मैं बाँमण बणियाँ आधी कासी बसे सन्यासी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अविनासी हरिचरणां की रहाँ मैं दासी ।। ४

○

पद–५६५ : राग–विहाग : ताल–दीपचंदी
(विरह)

श्याम बजावत बीणाँ, री आली । (टेर)
आठ मास कात्रिक लों न्हाई दान पुन्य बहु कीना ।
ऐ रे दई तेरो कहा बिगड़्यो, छोटो कंत मोहे दीना ।। १
करके सिंगार पलंग पर बैठी, रोम रोम रस भीना ।
चोली के मेरे बंद तरक गये, श्याम भये परवीना ।। २
अब तो आन पड़ी फंदे बिच, लोक लाज तज दोना ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन चित लीना ।। ३

○

५६४–(क ३) (रामस. गु. पृ. १६०)
५६५–(क) (या०----सं. रा. क. से)

पद–५६६ : राग–भूपाली : ताल–तिताला

(विरह)

श्याम बताव रे मुरली वाला । (टेर)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, भाल तिलक गले मोहनमाला ।। १
एक बन ढूंढ सब बन ढूंढे, कहीं न पायो नंदलाला ।। २
जोगन होऊंगी बैरागन होऊंगी, गले बीच बांधूंगी मृगछाला ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, माँग लियो पिया प्रेम की माला ।। ४

○

पद–५६७ : राग–देस : ताल–तिताला

(उपालंभ)

श्याम बंसी वाला कनैया, मैं नाँ बोलूँ तुमसे रे । (टेर)
घर मेरा दूरा, गगरी मेरी भारी, पतली कमर लचकाय रे ।। १
सास ननँद की लाज से मरत हूं, हमसे करत बरजोरी रे ।। २
मीरां दासी तुमसे झगरी, चरण कमल की उपासी रे ।। ३

○

पद–५६८ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

श्याम म्हांनै चाकर राखो जी, गिरधारीलाल चाकर राखो जी । (टेक)
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरशण पासूँ ।
बृन्दावन की कुन्ज गलिन में, गोविन्द का गुण गासूँ ।। १
चाकरी में दरशण पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति में जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ।। २

५६६–(म.)
५६७–(का. उ०/२/३३८)
५६८–(१ उ०)

मोर मुकट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला ।
बृन्दावन में धेनु चरावै, मोहन मुरली वाला ।। ३
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूं बारी ।
साँवरिया के दरशन पाऊँ, पहिर कुसूँमल सारी ।। ४
जोगी ग्राया जोग करनें कूँ, तप करने सन्यासी ।
हरी भजन को साधू ग्राये, बृन्दावन के बासी ।। ५
मीरां के प्रभु गहिर गँभीरा, हृदै रहो जी धीरा ।
ग्राधी रात प्रभु दर्शन दीज्यो, प्रेम-नदी के तीरा ।। ६

○

पद–५६९ : राग भैरवी : ताल–तिताला

(प्रेमलीला)

श्याम सुंदर मुरली वाला, कोई देखो रे भैया । (टेर)
जमना के तीराँ तीराँ धेनु चरावत, दधि घट चोर चुरैयाँ ।। १
बृन्दावन की कुंज गलिन में, हमको देखत झुकैयाँ ।। २
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, पकड़त मोरी बहियाँ ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल बलि जैयाँ ।। ४

○

पद–५७० : राग–मालकोस : ताल–तिताला

(प्रेम)

श्री गिरिधर ग्रागे नाचूँगी । (टेक)
नाँचि नाँचि पिय रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ।। १
प्रेमप्रीति के बाँधि घूंघरू, सुरत कछनी काछूँगी ।। २
लोकलाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूँगी ।। ३
पिय के पलँगा जा पौढूँगी, मीरां हरि-रँग राचूँगी ।। ४

५६९–(सा०) (का. । उ०२।३५४)
५७०–(१ उ)

पद–५७१ : राग–झँझोटी गारा : ताल–कहरवा

(तुलसीदासजी को पत्र । आत्म-व्यथा-कथा)

श्री तुलसी सब गुण निधान दुख हरन गुसांई ।
बारहि बार प्रणाम करूं अब हरो सोक-समुदाई । (टेक)
घर के स्वजन हमारे जेते सबन उपाध बढ़ाई ।
साधु संग अरु भजन करत मोहे देत कलेस महाई ।। १
वालपने से मीरां कीनी गिरधरलाल मिताई ।
सो तो अब छूटत नहिं क्योहूं लगी लगन बरियाई ।। २
मेरे मात पिता के सम हो हरिभक्तन सुखदाई ।
हमको कहा उचित करबो है सो लिखियो समझाई ।। ३

○

पद–५७२ : राग–जौनपुरी टोडी : ताल–धीमा तिताला

(स्वरूप-वर्णन-दर्शनाभिलाषा)

श्री द्वारका में राज करे जी रणछोड़ (टेर)
लाल पाग केसरिया जामा, टेढी धरत मरोर ।। १
बारे (बारे) कोस की* लगत है, तू मन डारे फोर ।
बारे (बारे) कोस की खाड़ी पड़त है, मल्लाह[1] बड़ा है कठोर ।। ३
मंदिर मंदिर झालर बाजै, घंटन[2] की घनघोर ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दरसण द्यो चितचोर ।। ५

○

५७१–(३ क) (स. मा. मी. ली. २१)
५७२–(या०—प्रति सं० ३८६। पद ४८।)
1. पा०—'काबा' । 2. पा०—'संखन' ।
नोट–इस पद का अन्य पाठ भी सुना है परन्तु पूर्ण स्मरण नहीं । [हृ.ना.]
* यहां 'झाड़ी' शब्द का भी अन्य अतिरिक्त पाठ है ।

पद–५७३ : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(विरह विनय)

शरणागत की लाज तुमकूं, शरणागत की लाज। (टेर)
नाना पात में चीर मिलाये, पांचाली के काज। तुम०
प्रतिज्ञा छांडी भीष्म के आगे, चक्र धरे यदुराज। तुम०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, दीनबंधु महाराज। तुम०

○

पद–५७४ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

शाम रे की दृष्ट मानूं प्रेम की कटारी थे। (टेक)
लगत बेहाल भई, गोरस की शुध न रही।
तनहू थे व्यापो काम, मनू मतवारी थे ।। १
चकोर चाहत चंद, दीपक जले पतंग।
जल बिन मीन मरे, अेसी प्रीत चारी थे ।। २
सखी मिल दोउ चार, मन थे करचो वेचार।
मैं तो वाकूं जान्यों नाहि, कुंज को बिहारी थे ।। ३
तूं मोहो सूं जाना शाम, मेरे तो तुहारो ध्यान।
अशरणशरण प्रभु, मीरां दास तुहारी थे ।। ४

○

पद–५७५ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(विरह)

शिवशंकर मोपे कृपा कीज्यो, मैं आधीन तुमारा। (टेक)
बांई भुजा ऋधिसिधि को बासो, दहनी भुजा गंगधारा ।। १

५७३–(उ)
५७४–(काव्यदो० भा० ७ पृ. ७१९)
५७५–(क–सं.) (१७ पुजा. नाथू पु. से.)

सेवा कर भागीरथ ल्यायो, कुल अपने कूँ त्यारा ।। २
शिवजी थे काशी के बासी, गले रुण्डन की माला ।। ३
बाहन थारे भिषम नाँदियो, गौराँ के भरतारा ।। ४
आक धतूरा को भोग लगत है, बिष का करो अहारा ।। ५
केहरि को बाघम्बर सोहे, सरपन के सिणगारा ।। ६
गहरी नदियाँ अथाह जलपानी, भवसागर की धारा ।। ७
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मेरो करो निस्तारा ।। ८*

○

पद–५७६ : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेमोपालंभ)

स्याम को सँदेसो आयो पतियाँ लिखाय माय । (टेक)
पतियाँ अनूप आई, छतियाँ लगाय लीनी ।
अंचल की दे दे ओट, ऊधो पै बँचाई है ।। १
बालों की जटा बनाऊँ, अंग तो बिभूत लाऊँ ।
फाड़ूँ चीर पहरूँ कंथा, जोगण बण जाऊँगी ।। २
इन्द्र के नगारे बाजे, बादर की फोज आई ।
तोपखाना, पेसखाना, उतरा आय बाग में ।। ३
मथुरा उजाड़ कीन्हीं, गोकुल बसाय लीन्हीं ।
कुबजा सूँ बाँध्यो हेत, मीरां गाय सुनाई है ।। ४

○

पद–५७७ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

स्याम तेरी आरति लागी हो ।
गुरु परतापे पाइया, तन दुरमति भागी हो । (टेक)

---

* वर्णनशैली और विषय को देखते यह 'मीरांजी का नहीं लगता है । टेर में लिंगप्रयोग के कारण किसी पुरुष कवि का हो सकता है ।

५७६–(३ क)
५७७–(१ उ)

या तन को दियना करूँ, मनसा करों बाती हो ।
तेल भरावों प्रेम का, बारों दिनराती हो ।।
पाटी पारों ज्ञान की, मति माँग सँवारों हो ।
तेरे कारन साँवरे, धन जोबन वारों हो ।। २
यह सेजिया बहु रंग की, बहु फूल बिछाया हो ।
पंथ मैं जोहों स्याम का, अजहूँ नाहिं आये हो ।। ३
सावन भादों ऊमड़ो, बरषा-ऋतु आई हो ।
भोंह घटा घन घेरि के, नैनन झरु लाई हो ।। ४
मात पिता तुमको दियो, तुम ही भल जानों हो ।
तुम तजि और भरतार को, मन में नहि आनों हो ।। ५
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो, पूरन पद दीजे हो ।
मीरां ब्याकुल बिरहनी, अपनी करि लीजे हो ।। ६

○

पद–५७८ : राग–सिंदूरा : ताल–धमार

(प्रेमोपालम्भ)

स्याम मोसूं ऐंडो डोले हो । (टेक)
औरन सूं खेलत धमार, म्हांसूं मुखहूँ न बोले हो ।। १
म्हारी गलियाँ ना फिरे, वाके आँगण डोले हो ।। २
म्हारी अँगुली ना छुवे, वाकी बहियाँ मोरे हो ।। ३
म्हारे अँचरा ना छुवे, वाको घूँघट खोले हो ।। ४
मीरां के प्रभु साँवरो, रँग रसिया डोले हो ।। ५

○

पद–५७९ : राग–गारा : ताल–कहरवा

(विनय)

स्वामी सब संसार के, साँचे श्री भगवान । (टेक)

५७९–(२ म)

स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती बीच समान ।
सब में महिमा तेरी देखी, कुदरत के कुरबान ।। १
सूदामा के दारिद खोये, बारे की[1] पहिचान ।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी, दीन्हो द्रव्य महान ।। २
भारत में अर्जुन के आगे, आप भये रथवान ।
उनने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ।। ३
ना कोई मारे, ना कोई मरता, तेरा यह अज्ञान ।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यह गीता को ज्ञान ।। ४
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बंदी अपनी जान ।
मीराँ गिरधर सरण तिहारी, लगे चरण में ध्यान ।। ५

○

पद–५८० : राग–मांड : ताल–कहरवा

(विरह)

स्यामसुन्दर पर वार, जिवड़ा में वार डारूँगी । स्याम० (टेक)
तेरे कारण जोग धारणा, लोकलाज कुल डार ।
तुम देख्याँ विन कल न पड़त है, नैन चलत दोउ वार । स्याम० ।। १
कहा करूँ कित जाऊँ सजनी, कठिन विरह की धार ।
मीरां कहै प्रभु कब रे मिलोगे, तुम चरणाँ आधार । स्याम० ।। २

○

पद–५८१ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(उलहना)

सखी अपणां स्यांम खोटा, दोस नहीं कुबज्या नैं । (टेक)
आपन हाथ नहीं लिखि भेजै, क्या कागद का टोटा ।। १

५७९–1 पा०—पांडे की ।
५८०–(२ म)
५८१–(२ म) (राम स. गु. पृ. ३२३)

खारी बेल कैं कड़ा फल लागा, कहा छोटा कहा मोटा ।। २
कुबज्या दासी कंसराय की, वै नंदजी का धोटा ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, हरि चरणां का वोटा ।। ४

○

पद–५८२ : राग–कालँगड़ा : ताल–कहरवा

(विरह)

सखी तैने नैना गमाय दिया रोय । (टेक)
वालापन की चटक चुँदरिया, दिन दिन मैली होय ।। १
वालपने लड़किन सँग खेली, रंग रूप दियो खोय ।। २
वाही सोच मीराँ भई दिवानी, दरद न जानै कोय ।। ३
लेनहार लेने कूं आये, ले चल, ले चल, होय ।। ४
मीरां कहै प्रभु गिरधरनागर, वैद साँवरिया होय ।। ५

○

पद–५८३ : राग–झँझोटी : ताल–तिताला

(प्रेम)

सखी नन्द को गुमानी मेरे मन बस्यो । (टेक)
गह द्रुम-डार कदम की ठाडो, मृदु मुसकाय मेरी ओर हस्यो ।। १
पीताम्बर की कछनी काछै, रतन-जटित माथै मुकट कस्यो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निरख बदन मोरे हिरदै फस्यो ।। ३

○

पद–५८४ : राग–सोरठ : ताल–रूपक

(प्रेम)

सखी मन स्याममूरत बसी । (टेक)
मुकट कुंडल करन बंसी मंद मुख पर हँसी ।। १

५८२–(२ म)
५८३–(१ उ) (प्रहला. भ. पा ३)
५८४–(१ उ) (भ. प्रहलादजी का पा. ४)

बावरी कोउ कहै मोकों कोई कहै कुल-नसी ।। २
हस्ती की असवारी पाछै लाख कुतिया भुसी ।। ३
तज्यो घूंघट, लई गाती, संत देख्यां खुसी ।। ४
सील चोला पहर गल में भक्त मारग घुसी ।। ५
ओस पानी नाहिं पीयो छाँह बादर किसी ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर प्रेम-फंदे फसी ।। ७

○

पद—५८५ : राग—सोरठ : ताल—दीपचंदी

(प्रेम)

सखी मेरो कानूड़ो कलेजे-कोर । (टेक)
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुंडल की झकझोर ।। १
बृन्दावन की कुंजगलिन में, नाचत नन्दकिशोर ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण कँवल चितचोर ।। ३

○

पद—५८६ : राग—बिहाग : ताल—रूपक

(विरह)

सखी मोहे लाज बैरन भई । (टेक)
चलत गुपाल लाल पिय के संग क्यों ना गई ।। १
चलन चाहत गोकुल ही ते रथ सजायो नई ।। २
विरह व्याकुल होय सजनी हाथ मल मल[1] रही ।। ३
कठिन छाती श्याम बिछुरत बिदर क्यों ना गई ।। ४
लेन अब संदेस पिय को काहे पठऊं दई[2] ।। ५

५८५-(१ उ)
५८६-(१ उ) (स. भा. मीं. ली. २७)
1 पा०—"रुकमिनी संग जाइबे को हाथ मीजत रही" (क. १९ । ६)
2 पा० "तुरत लिख संदेस पिय को काहि पठऊं गई ।"

कूबरी संग प्रीत कीनी मोहे माला दई ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर प्रान दछना दई ।। ७

○

पद—५८७ : राग—आसावरी : ताल—दीपचंदी

(प्रेम)

सखी री में तो गिरधर के रंग राती । (टेक)
पचरँग मेरा चोला रँगा दे, मैं झुरमुट खेलन जाती ।। १
झुरमुट में मेरा साँई मिलेगा, घोल अडंबर पाती ।। २
चंदा जायगा, सूरज जायगा, जायगा धरण अकासी ।। ३
पवन पानी दोनों ही जायँगे, अटल रहे अविनासी ।। ४
सुरत निरत का दिवला सँजो ले, मनसा की करि बाती ।। ५
प्रेम हरी का तेल वना ले, जगा करे दिन राती ।। ६
जिनके पिय परदेश बसत हैं, लिखि लिखि भेजें पाती ।। ७
मेरे पिया मो माहिं बसत हैं, कहूं न आती जाती ।। ८
पीहर वसूं न सास घर, सतगुरु शव्द सँगाती ।। ९
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां हरि रँग राती ।। १०

○

पद—५८८ : राग—बिहाग : ताल—रूपक

(विरह)

सखी री लाज बैरन भई । (टेक)
श्रीलाल गोपाल के सँग, काहे नाहिं गई ।। १
कठिन क्रूर अक्रूर आयो, साजि रथ कहँ नई ।। २

५८७—(ऊ)
नोट—पदों में वहुत अंतर रहने से तीनों न्यारे २ पाठ दिये हैं—
1 "मैं गिरधर रँग राती रवैयाँ" । ह.ना.
2 "रमैया मैं तो थारे रँग राती" । ह.ना.
५८८—(ऊ)

रथ चढ़ाय गोपाल लै गयो, हात मींजत रही ।। ३
कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह में तन तई ।। ४
दासि मीरां लाल गिरधर, बिखर क्यों ना गई ।। ५

○

पद–५८९ : राग–विहाग : ताल–कहरवा
(विरह)

सखी री मेरी नींद नसानी हो । (टेक)
पिया को पंथ निहारतें, सब रैन बिहानी हो ।। १
सखियन मिल के सीख दई, मन एक न मानी हो ।। २
बिन देखें कल ना पड़ै, जिय ऐसी ठानी हो ।। ३
अंग क्षोण व्याकुल भई, मुख पिय पिय वानी हो ।। ४
अंतर वेदन विरह की, वह पीय[1] न जानी हो ।। ५
ज्यों चातक घन को रटै, महरा[2] जिमि पानी हो ।। ६
मीरां व्याकुल रहिनी, सुध बुध बिसरानी हो ।। ७

○

पद–५९० : राग–शंकरा भरण वा सोरठ : ताल–धीमा
(विरह)

सजन घर आवो जी मीठा बोलां । (टेक)
बिन देखे मोहे कल न पड़त है, कर धर रही कपोलां[1] ।। १

५८९–(१ उ)
1 पा०—पीर ।
2 पा०—मछली बिन पानी हो ।

५९०–(ऊ)
1 पा०—यहां बंगाली पुस्तक में ये तीन अंतरे हैं—
"कब की ठाडी पंथ निहारू..........
"तन मन वार.... ......
"आतुर बहुत विलंब नहीं.... ......

आवो निसंक संक नहिं कीजे, हिल मिल के रंग घोलां ।। २
तेरे कारन सब रँग तजिया, काजल तिलक तमोलां ।। ३
मीरां दासी जनम जनम की, दिल की घुंडी खोलां[2] ।। ४

○

पद–५९१ : राग–केदारा : ताल–तिताला
(विनय)

सजन सुध ज्यों जानों त्यों लीज्यो । (टेक)
हूं तो दासी जनम जनम की, कृपा रावरी कीज्यो ।। १
ऊठत बैठत जागत सोवत, कब हूं याद करीज्यो ।। २
आवत जावत जीमत पीवत, सुपने सुध धरीज्यो ।। ३
रात दिवस प्रभु ध्यान तिहारो, आप ही दरसण दीज्यो ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो ।। ५

○

पद–५९२ : राग-केदारा : ताल-तिताला
(विनय)

सजन सुध ज्यों जानो त्यों लीजे । (टेक)
तुम बिन मेरे और न कोई, कृपा रावरी कीजे ।। १
द्योस न भूख रैन नहिं निद्रा, यह तन पल पल छीजे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, (अब) मिल बिछुरन नहिं कीजे ।। ३

○

५९०–2 पा०—"मीरां तो गिरधर बिन देख्यां छिन मासां छिन तोलां" ।
(ह. ना. की निजी. में)

५९१–(ऊ)
५९२–(ऊ.)

पद–५९३ : राग–काफी : ताल–कहरवा

(विरह)

सजन वेगा घर आइए हो ।
आदि अंत के मित हो हमकूं सुष लहिए हो । (टेक)
हरि बिन सूरति कहां धरूं निस मारग जोऊँ हो ।
तेरै कारण सांइयाँ भरि नींद न सोऊँ हो ।। १
अबिनासी आया सुणूं जब नोंति धिपाऊँ[1] हो ।
साहिब सूं मन मांहिलो दुख टेरि सुणाऊँ हो ।। २
वा बिरियाँ कब होयगी कोइ कहै सनेसा हो ।
मीरां के या बात का मन घणाँ अँदेसा हो ।। ३

○

पद–५९४ : राग–देस : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सतगुर म्हारा प्रीत निभाज्यो जी । (टेर)
थे छो म्हारा गुण रा सागर, औगण म्हारे मति जाज्यो जी ।। १
लोक न धीजै (म्हारो) मन न पतीजै, मुखड़ा रा सबद सुणाज्यो जी ।। २
मैं तो दासी जनम जनम की, (म्हारे) आँगणि रमता आज्यो जी ।। ३
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी, बेड़ो पार लगाज्यो जी ।। ४

○

पद–५९५ : राग–परज : ताल–कहरवा

(प्रेम)

सहेलियाँ साजन घर आया हो । (टेक)

५९३– (२म.) (रामस. गु. पृ. १९१)
1. पा०---जिमाऊं ।
५९४–(१उ.)
५९५–(२म.)

बहोत दिनां की जोवती, विरहणि पिव पाया हो ।। १
रतन करूँ नेवछावरी, ले आरति साजूं हो ।। २
पिया का दिया सँनेसड़ा, ताहि बहोत निवाजूं हो ।। ३
पाँच सखी इकठी भई, मिलि मंगल गावै हों ।। ४
पिय की रली बधावणाँ, आणँद अंगि न मावै हो ।। ५
हरिसागर सूँ नेहरो, नैणाँ बँध्या सनेह हो ।। ६
मीरां सखी के आँगणैं, दूधाँ बूठा मेह हो ।। ७

○

पद–५९६ : राग–विहाग : ताल–कहरवा

(उलहना)

सहेल्यो उद्धौजी आया हे ।
आया पठाया स्याम का, मेरै मन नहिं भाया हे । (टेक)
एक निमिष कै कारणै, षटमास लगाया हे ।
पहली प्रीत करी हमसूं, पीछे पछिताया हे ।। १
जमुना जल में न्हावताँ, सखि चीर चुराया हे ।
कुबज्या दासी कंस की, जिणी स्यांम भुराया हे ।। २
मुरली तो मोहण लई, जिणि स्यांम रिझाया हे ।
देखो सखी सहेलियो, नैणाँ कर ल्याया हे ।। ३
सुख दुख अपणां करम का, गोबिंद बर पाया हे ।
दोस कुणी कौं दीजिये, मीराँ गुन गाया हे ।। ४

○

पद–५९७ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(विनय)

सतगुर म्हारा चतर सुजाण, रतन का हो पारषी ।
दीन्हां दीन्हां रामजी बताइ, संगति साधां सारषी । (टेक)

५९६–(२म.) (रामस. गु.)
५९७–(रामस. गु.)

लागौ लागौ बिषियां रो पांन, देही छै काचा चाम की ।
वोषदि है हरिनांव, लगाऊं प्रभू नाम की ।। १
सदा सुहागणि नारि, डगर सिर क्यूं षड़ी ?
कै थारो पीव परदेस, कै घर सासू लड़ी ।। २
नहीं म्हारो पीव परदेस, नैं घर सासू लड़ी ।
चल्यो जा रे मूरष गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ।। ३
सरवरिया री ऊंची नीची पाल क मुषड़ो जोवती ।
हरि बिन सूनी म्हारी सेज नैंण भर रोवती ।। ४
उड़ि उड़ि म्हारा बन का रे काग, स्यांम थारी पाषड़ी ।
रांमजी मिलन कब होय, फरूकै म्हारी आंषड़ी ।। ५
उड़ि उड़ि म्हारा ऊं सरवरिया रा हंस, सुरंग थारी पांषड़ी ।
सोनें मँढाऊं थारी चूँच, रूपा की दोइ आंषडी ।। ६
त्यारचा त्यारचा संत अनेक, बिड़द लीयां छाप की ।
बाँह गह्यां की लाज, मीरां छै प्रभू आप की ।। ७

○

पद–५९८ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(चरित और दृढ़ता)

साध आया वो राणा म्हे सुण्यां, श्रवणां सुणी जी अवाज ।
म्हारो मन लाग्यौ बैराग सूं, रमस्यां साधां री साथि । (टेक)
साध संगति राणी छोडि द्यौ, बैठो राणां रै पास ।
साध हमारै सिर धणी, साधू माय'र बाप ।। १
इक कुल लाजै राणी आपणौ, दूजौ राय राठोड़ ।
तीजो लाजै राणी मेड़तो, चौथो गढ़ चीतोड़ ।। २
इक कुल राणा त्यारू आपणाँ, दूजो राइ राठोड़ ।
तीजो त्यारूं राणा मेड़तो, चौथो गढ़ चीतोड़ ।। ३
बागां तो बोली कोइली, गिर पर बोल्या जी मोर ।
मीरां नै सतगुरु मिल्या, नागर नंदकिसोर ।। ४

५९८– (म) (रामस. गु. पृ. ३५७)

पद–५९९ : राग–चैती गोरी वा सिंधु : ताल–दादरा

(आत्मेतिहास)

साधाँ रो संग निवारो राई, भाभीजी गोरल पूजो जी राज । (टेर)
सइयाँ पूजे गोरने, थे पूजो गनगोर ।
मनबांछित फल पावस्यौ, जै तूठै गनगोर ।। १
नै पूजूं गनगोर ने, नहिं पूजूं आनदेव ।
बालसनेही सांवरो, जाको थे नहिं जानो भेव ।। २
सेवा सालगराम की, साध संत रो काम ।
थे बेटी राठोड़ की, थानै राज दियो भगवान ।।
राज करै ज्याँनै करन द्यो, मैं सन्तन की दास ।
भगति कराँ भगवान की, म्हारै राम मिलन की आस ।। ४
लाजै पीहर सासरो, लाजै मा मोसार ।
नितरा आवै बोलमा, थानै बुरो कहै संसार ।। ५
चोरी न करूं कुमारगी, नहीं कुमाऊं पाप ।
पुन के मारग चालताँ, म्हांसूं कांई हठ लाग्या छो आप ।। ६
कदि ठाकर परचो दियो, कदि मानी परतीति ।
कुल को नांतो तोड़ियौ, भाभीजी नहीं छै राजां की रीति ।। ७
नहीं जाऊं पीहर सासरै, नहीं पिया के पास ।
मीरां सरणैं राम के, म्हांनै गुर मिलिया हरिदास ।। ८

○

पद–६०० : राग–झँझोटी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

साधू म्हारै आइया हेली वे गिरधरीजी रा प्यारा । (टेक)
चरण धोय चरणामृत लेस्यां (हे) कल-मल मेटनहारा ।। १
प्रांण ते अति प्रिय लागै (हे) कबहुं न करस्यां न्यारा ।। २
प्रभु कृपा कीनी अति (मो) पर सुधरचा जन्म हमारा ।। ३

५९९– (क ब.)
६००– (म)

पद–६०१ : राग–आसावरी जोगिया : ताल–दीपचंदी

(विरह)

साधो मैं बैरागण हर की ।
भूषण वस्तर सब ही त्यागे खानपान बिसरानूं ।
ये व्रजबासी कहत बावरी, मैं दासी गिरधर की ।। १
ऊधोजी तुम जाओ द्वारका, बिपती कहो गोपीन की ।
जैसे जल बिन मीन जो तड़पै, सो गति भई सखियन की ।। २
पात पात बृंदाबन ढूंढ फिरी व्रज घर की ।
मीरां के प्रभू गिरधरनागर मैं दासी गिरधर की ।। ३

○

पद–६०२ : राग–मल्हार : ताल–कहरवा

(विरह)

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आवोजी स्याम मोरा रे (टेक)
उमड़ घुमड़ चहुं दिस से आया, गरजत है घनघोरा रे ।। १
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा रे ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, ज्यो वारूं सो ही थोरा रे ।। ३

○

६०१– (या०—सं. रा. क. से)
नोट–इस पद के ३रे अंतरे में यह अंश अधिक था और वेमेल था—
'आप तो जाय द्वारका छाये पीर मोटी बिरहन की'—सो निकाल दिया गया । पहिले और तीसरे अंतरे में 'मैं दासी गिरधर की' पदांश की द्विरावृत्ति भी चिंत्य है । ह.ना.

६०२–(ऊ.)

पद–६०३ : राग–शंकरा : ताल–दीपचंदी

(प्रेमलीला)

साँचो प्रीति[1] ही को नातो । (टेर)
कै जाने वृषभाननंदिनी, कै(मदन)मोहन रँगरातो ।। १
यहै सृंखला अति बलवंति, बंध्यो प्रेम गज मातो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कुंजनि महल बसातो ।। ३

○

पद–६०४ : राग–सोरठ : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

साँवराजी हो, चूड़ें रंग लाग रह्यो छे, लाग रह्यो छै व्रजराज । (टेर)
रंग चूड़ो रंग चूनड़ी जी काँई रंगीलो साज रंग बृंदावन कुंजलता जी ।
काँई सहस गोप्यां रा सिरताज ।। १
रंग छे थारी बाँसरली जी काँई रंग छे सबही समाज ।
मीरां गिरधर रंग रंगी छे बाँह गहे की लाज ।। २

○

६०३–(उ.)
(या० ना. दा. जी के पद प्रसंग माला से).
नोट–याज्ञिकजी का नोट है कि 'यह पद गाते २ नारायणदास नटवाने, हांकिया सराय में, प्रेमावेश में देह त्यागी थी । (उक्त प. प्र. माला में) —ह. ना.
1. पा०—'प्रेम' ।
६०४–(उ. सं.)
(या०—सं रा. क. से.)
नोट–याज्ञिकजी ने इस पद के साथ नोट देकर लिखा है कि किसी अज्ञात कवि ने दो चरण इसमें बढ़ाये थे जिनको कृष्णानन्द व्यासदेव ने मिला दिये थे सो ये हैं—
'थारी २ नैननडी मन रंजन खंजन मीन मृग मोह्या छे ।
मनमथ गंजन भंजन दुखड़ो मुखड़ो मनमोहन सोह्या जोया छे ।'
नोट–स्यात् व्रजनिधि अथवा उनके सहयोगी अन्य कवि का हो ।

पद—६०५ : राग—भैरवी : ताल—कहरवा

(विरह)

साँवरा ठाडी रहूं घर जाऊँ रे । (टेक)
कब की खड़ी मैं तोरे द्वार पर, खड़ी खड़ी कुमलाऊँ रे ।। १
भाल तिलक तुलसी की माला, मैं तो जपती आऊँ रे ।। २
पाँव घूघरा रिमझिम बाजे, नाँचत गाती आऊँ रे ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, गुण गोबिन्द का गाऊँ रे ।। ४

○

पद—६०६ : राग—काफी : ताल—दीचंपदी

(विरह)

साँवरा बिन नींद न आवै, न आवे री, मेरो जीवड़ो अति अकुलावे (टेक) ।
स्याम बिना मेरा जग में अँधेरो, दीपक दाय न आवे ।
स्याम बिन मेरी सेज अलूंणी, जागत रैंन डरावे ।।
दृगन झर ल्यावे री, ल्यावे ।। १
बिरह की मारी सब जग हेरूँ, जे कोई स्याम मिलावैं ।
बिरह नाग मेरी काया डसत है, लहर लहर जिया जावे ।।
जड़ी घस ल्यावे री, ल्यावे ।। २
सुंण सुंण री मेरी बगड़ पडोसँण, जे कोई स्याम मिलावे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मोहन मोहन आवे ।।
कदे घर आवे री, आवे ।। ३

○

पद—६०७ : राग-झँझोटी : ताल—धीमा

(दर्शन, उत्सुकता)

साँवरा (सजनी) सूँ मिलना जरूर । (टेक)

६०५—(म) (१६) (पुजा. नाथू. पु. से)
६०६—(उ) (१८) (पुजा. नाथू. पु. से)
६०७—(म) (३) (नाथू. पु. से)

गहरी नँदिया नाव पुरानी, खेवटिया है दूर ।। १
इत मथुरा उत गोकुलनगरी, जमुना बहै भरपूर ।। २
काहे करूं कित जाऊं सजनी, रही बसूर बसूर ।। ३
जमना के नीराँ तीराँ बंसी बजावे, मोरमुकुट छबिपूर ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, निसदिन रहूंगी हजूर ।। ५

○

पद–६०८ । राग–सोरठ : ताल कहरवा

(विनय)

साँवरिया म्हारी प्रीतड़ली तो न्हिमाज्यो । (टेक)
प्रीत करो तो स्वामी ऐसी कीज्यो, अधबिच मत छिटकाज्यो ।
तुम तो हो स्वामी गुण रा सागर, म्हारा औगण चित मत ल्याज्यो ।। १
काया गढ़ घेरा ज्यो पड़चा छै, ऊपर आप रखाज्यो ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरणाँ चित्त रखाज्यो ।। २

○

पद–६०९ : राग–सोरठ : ताल–कहरबा

(विनय)

साँवरिया मोरे नैना आगे रहिज्यो जी । (टेक)
म्हांने भूल मत जाज्यो जी, मोहन लागी लगन निभाज्यो जी ।। १
राणाँजी भेज्यो विष रो पियालो, सो अम्रत कर पीज्यो जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, मिल बिछुड़ण मत कीज्यो जी ।। ३

○

६०८–(ऊ)
६०९–(२ म) (मीराँबाई के भजन नं० २३)

पद–६१० : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

साँवरियो म्हांनै भाँग पिलाई, मेरी अँखियाँ में लाली छाई ।
काहे री कूँडी (राधे) काहे रा घोटा, काहे री सुवाफी बणाई । (टेक)
तन कर कूँडी, प्यारे मन कर घोटा, सुरतो री सुवाफी बणाई,
कदम नीचे छाँण पिवाई ।। १
पांचाँ गुवाल मिल घोटन बैठे, श्रीगंगा जल झारी भर ल्याई ।
प्रेम करि (राधेजी को) अछक चखाई ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, प्रेम की रीत निभाई
चरण मांहि मनड़ो लगाई ।। ३

○

पद–६११ : राग–जैजेवंती : ताल–कहरवा

(प्रेमानंद)

साँवरे की दृष्टि मानों प्रेम की कटारी है । (टेर)
लागत बिहाल भई, गोरस की सुधि गई
मनहू में व्याप्यो प्रेम भई मतवारी है ।। १
चंद तो चकोर चाहै, दीपक पतंग दाहै
जल बिना मरै मीन ऐसी प्रीति प्यारी है ।। २
सखी मिलि दोइ चारि सुनो री सयानी नारि
उनको हौं नीके जानौं कुंज को बिहारी है ।। ३
मोर को मुकट माथे छवि गिरधारी है ।
माधुरी मूरति पर मीरां बलिहारी है ।। ४

○

६१०–(क ३)
६११–(उ सं.) (ब्रजनिधि ग्रन्थावली पृ. २३०)

पद–६१२ : राग–देश : ताल–दादरा

(विरह)

साँवरे दी भालन माये सानू प्रेम दी कटारियाँ । (टेक)
सखी पूछे दोऊ चारे व्याकुल क्यो भैया नारे ।
रँग के रँगीले मोसे दृग भर मारियाँ ।। १
व्याकुल वेहाल भैया सुध-बुध भूल गैया ।
अजहू न आये श्याम कुञ्जबिहारियाँ ।। २
यमुना की घाटी बाटी असाँ तेरी चाल पछाती ।
बसियाँ वजावी कान्हा भैया मतवारियाँ ।। ३
मीरांबाई प्रेम पाया गिरधरलाल ध्याया ।
तू तो मेरो प्रभुजी प्यारा दासी हों तिहारियाँ ।। ४

○

पद–६१३ : राग–कालिंगड़ा : ताल–कहरवा

(प्रेम)

साँवरे रँग राची, राणाँजी हू ँ तो ।
बाँध घूघरा प्रेम का, हू ँ हरि आगे नाची । (टेक)
इक निरखत है इक परखत है, एक करत मोरी हाँसी ।
और लोग म्हारा कांई करसी हू ँ हरिजी की दासी ।। १
राणों विष रो प्यालो भेज्यो, हू ँ नहिं हिम्मत काची ।
मीरां चरणाँ लाग रही छै, या तो न्हिमसी साँची ।। २

○

पद–६१४ : राग–माढ : ताल–दीपचंदी

(प्रेम)

साँवरो बसे छै पैली तीर, आछयो म्हारो धीरो रे भारूडो घीर । (टेक)

६१२–(क) (बृ. रा. र. पृ. ११९)
६१३–(२ म)
६१४–(क.) (२४) (पुजा. नाथू. पु. से.)

गहरी नदियाँ नाव पुरानी, खेवटियो बेपीर ।। १
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कानाँ कुंडल सिर चीर ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, आखिर जात अहीर ।। ३

O

पद–६१५ : राग–काफी, होरी : ताल–धमार, दीपचंदी
(लीला)

साँवरो होरी खेलन आयो, आयो । (टेक)
नंदगाँव से संग सखा ले, बरसाने में ध्यायो ।
इतसे निकसी कुंवरि राधिका, सखियन साज बनायो ।।
मानो सखी, मन भावन आयो ।। १
ताल पखावज मृदँग बाजे, मेघन ज्यूं घररायो ।
दादुर मोर पपैया बोले, मोरन डौर लगायो ।।
सखी जाने सावन आयो ।। २
उड़त गुलाल अरुण भये अम्बर, अबीरन घटा घन छायो ।
दामिनि ज्यूं दमके सब गोपी, पिचकारिन भर ल्यायो ।।
केशर को कीच मचायो ।। ३
व्रजमंडल में फाग रच्यो है, सखियन मोद बढ़ायो ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, केसर रँग करायो ।।
सखी मन आनँद छायो ।। ४

O

पद–६१६ : राग–बिलावल : ताल–कहरवा
(आत्मेतिहास)

सीसोद्या राणां प्यालो म्हाँने क्यूं रे पठायो । (टेक)
भली बुरी तो मैं नहिं कीन्हीं, क्यूं है रिसायो ।
थाँने म्हाँने देह दिवी है, ज्याँ रो हरिगुण गयो ।। १

६१५–(उ) (१९) (पुजा. नाथू. पु.|से)
६१६–(उ. ,,)

कनक कटोरे ले विष घोल्यो, दयाराम पंडो लायो ।
ऊठी उठी तो मैं नहिं देख्यो, कर चरणामृत पायो ।। २
आज काल की मैं नहिं राणाँ, जद यह ब्रह्मंड छायो ।
मेड़तिया घर जन्म लियो है, मीरां नाम कहायो ।। ३
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड़ ब्रेगो धायो ।
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, जन को बिड़द बढ़ायो ।। ४

○

पद–६१७ : राग–काफी : ताल–अद्धा

(प्रेम)

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हारो काईं कर लेसी,
म्हे तो गुण गोविंद का गास्यां, हो माई । (टेक)
राणाँजी रूठ्यो तो वाँरो देस रखासी,
हरिजी रूठ्याँ किठे जास्यां, हो माई ।। १
लोक लाज की तो काण न मानां,
निरभै निसांण घुरास्यां, हो माई ।। २
राम नाम की झचाझ चलास्यां,
भवसागर तिर जास्यां, हो माई ।। ३
मीरां शरण साँवले गिरधर की ।
चरण कमल लपटास्यां, हो माई ।। ४

○

पद–६१८ : राग–तिलंग : ताल–धीमा

(विनय)

सुणजो जी थे भाभी मीरां, थाँ पै राणाँजी कोप कियो छै जी । (टेक)
भाभी थारै मारण कारण, प्यालो हाथ लियो छै जी ।। १

६१७–(उ. १)
देखो—राणाँजी म्हे तो गोविन्द का गुण गास्याँ ।
६१८–(३ म) (दीना. म. मी. प. २२)

उठ उठ भाजै रोस रो मांतो, हाथाँ खड्ग लियो छै जी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, इमरत पान कियो छै जी ।। ३

○

पद–६१९ : राग–जोगिया : ताल–कहरवा
(चरित)

सुण लीज्यो बिनती मोरी, मैं शरण गही प्रभु तोरी । (टेक)
तुम(तो) पतित अनेक उधारे, भवसागर से तारे[1] ।। १
मैं सब का तो नाम न जानूं, कोई कोई नाम[2] उचारे ।। २
अंबरीष सुदामा नामा, तुम पहुंचाये निज धामा ।। ३
ध्रुव जो पांच वर्ष के बालक, तुम दरश दिये घनश्यामा ।। ४
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा (का) बैल चराया ।। ५
शबरी का झूठा फल खाया, तुम काज किये मन भाया ।। ६
सदना औ सेना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई ।। ७
करमा की खिचड़ी खाई तुम, गणिका पार लगाई ।। ८
मीरां प्रभु तुमरे रँगराती, या जानत सब दुनियाई ।। ९

○

पद–६२० : राग–आसावरी वा भैरवी : ताल–दीपचंदी वा कहरवा
(उलहना)

सुण लीजे हे जसमत अम्मा ।
अम्मा ए म्हारा प्याराजी ने घणी ए खम्मा ।। (टेर)
आप न आये द्वारिका छाये लिख लिख भेजै म्हांने दम्मा ।। १
हमें न बुलावै पतियाँ न भेजै कब लग राखाँ म्हे गम्मा ।। २
मीठा बोला छाती छोला, साँच नहीं छे वाँ में जम्मा ।। ३

६१९–(म.)
1. पा० तारयो । 2. पा०—भक्त बखानौं ।
६२०–(उ.) (निज संग्रह से ।)

घुण चुण कलियां सेज बिछाई कुवज्या के संग रम्मा ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधर नागर बावाँ जी पग ने नम्मा ।। ५

○

पद–६२१ : राग–पीलू : ताल–धीमा
(प्रेमप्रभाव)

सुनिनी ग्रमानी अँखियाँ निमाँनी । (टेर)
मन मोहन दे रूप लुभानी साढी गल नैंकहू न माँनी ।। १
लोकाँ दे डर छपि के छिपावाँ, भरि भरि ग्रावत पाँनी ।। २
मीरां प्रभु गिरधर गल साढी, ढँकी छिपी सब जाँनी ।। ३

○

पद–६२२ : राग–विहाग, सोरठ, मल्हार : ताल–धीमा
(प्रेम)

सुनी मैं हरि ग्रावन की ग्रावाज । (टेक)
महल चढ़ी जोऊं मोरी सजनी, कव ग्रावै महाराज ।। १
दादुर मोर पपीहा बोलै, कोइल मधुरै साज ।। २
उमग्यो इन्द्र चहूं दिस बरसै, दामिन छोड़ी लाज ।। ३
धरती रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र मिलन के काज ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, बेंग मिलो महाराज ।। ५

○

६२१–(या०—ह. लि. पदमुक्तावली से)
नोट—यही एक पद पंजाबी भाषा का इस संग्रह में मिला है। नहीं कहा जा सकता कि मीराँजी का यह पद इस भाषा में कैसे बना। (सं०)
६२२–(१ उ) (बं. पु. पृ. २२)

पद–६२३ : राग–बागेश्वरी : ताल–तिताला

(प्रेम)

सुमन आयो बदरा, शाम बिना । सुमन०
सोवत सपन में देखत शाम को ।
भरायो नयन निकस गयो कजरा ।।
मथुरा नगर की चतुरा गौलन ।
शाम को हार हमको गजरा ।।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर ।
समय गयो पीछे मिट गये ऊगरा ।।

○

पद–६२४ : राग–मांड : ताल–दीपचँदी दादरा

(चेतावनी)

सूरत दीनानाथ से लगी,
तू तो समझ सुहागण सुरता नार । (टेक)
लगनी लहँगो पहर सुहागण, बीती जाय बहार ।
धन जोबन है पावणा री, मिलै न दूजी बार ।। १
राम नाम को चुड़लो पहिरो, प्रेम को सुरमो सार ।
नक बेसर हरि नाम की, उतर चलो नी परले पार ।। २
ऐसे बर को क्या बरूँ, जो जन्मे और मर जाय ।
बर बरिये एक साँवरो री, (मेरो) चुड़लो अमर हो जाय ।। ३
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो री, हरि ठग ले गयो मोय ।
लख चोरासी मोरचा री, छिन में गेरचा (छै) बिगोय ।। ४
सुरत चली जहाँ मैं चली री, कृष्ण नाम झनकार ।
अविनाशी की पोल पर जी, मीराँ करे छै पुकार ।। ५

○

६२३–(म)।
६२४–(१उ)।

पद—६२५ : राग—बिलावल : ताल कहरवा

(प्रेम)

सेजड़ली'र सुधार गिरधर आँवणां ये ।
बाईजी सेजड़ली'र सुधार ।। (टेक)
आँवण री विरियां भई हे, बाई, महलि ढोल्यो ढाल ।। १
अतर सुगंध मिलायके री, बाई, घिव रो दिवलो जाल ।। २
जा ये जुही और मोगरो चंपा कलियाँ सुधार ।। ३
पलकाँ सैं कराँ पाँवडा, अँचरा सैं मग झार ।। ४
गिरधर म्हारो परम सनेही, मीरां उनकी नार ।। ५

○

पद—६२६ : राग-सोरठ : ताल—कहरवा

(राँणा-सम्वाद)

सो मीराँ रँग लाग्यौ राम हरी । (टेक)
कंठी तिलक दोवड़ो माला, सीलवरत सिणगारो ।
और सिंगार सोहै नहिं राणाँजी, यो गुर ग्यान हमारो ।। १
भलि कोइ निन्दो भलि कोइ बिन्दो गुण गोबिंदजी का गास्यां
जिण मारग मेरा संत पधारचा, जीं [उण] मारग म्हे जास्याँ ।। २
भजन करस्याँ सती न होस्याँ, मन मोह्यो घण नामी ।
जेठ बहू को नांतो नहीं हो, थे सेवक म्हे स्वामी ।। ३
राज न करस्याँ जीव न सतास्याँ, काँई करैलो म्हारो कोई ।
हस्ती चढ़ म्हे खर नहिं चढ़स्याँ, ऐ तो बात न होई ।। ४
ना कोई मेरै मात पिता है, नाँ कोई बन्धू भाई ।
थे थाँकै म्हे म्हाँकै राणाँजी, यूं गावै छै मीराँ बाई ।। ५

○

६२५—(१उ) (दीना. मं. मी. प. २७)
६२६—(२म) (क. व. १२)

पद—६२७ : राग—आसावरी : ताल—दीपचंदी

(विरह)

सोवत ही पलका में मैं तो, पलक लगी पल में पिउ आये । (टेक)
मैं जु उठी प्रभु आदर दैन कूं, जाग परी पिउ ढूंढ न पाये ।। १
और सखी पिउ सोइ गमाये, मैं जु सखी पिउ जागि गमाये ।। २
आज की बात कहा कहौं सजनी, सुपना में हरि लेत बुलाये ।। ३
वस्तु एक जब प्रेम की पकरी, आज भये सखि मन के भाये ।। ४
वो माहरो सुने अरु गुनि है, बाजे अधिक बजाये ।। ५
मीरां कहे सत्त करि मानो, भक्ति मुक्ति फल पाये ।। ६

○

पद—६२८ : राग पीलू : ताल—दीपचंदी

(विरद विनय)

हमने सुनी छै हरि अधम-उधारण ।
अधम उधारण सब जग-तारण । (टेक)
गज की अरजि गरजि उठि ध्यायो, संकट पड़यो तब कष्ट निवारण ।। १
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो, दूसासन को मान-मद-मारण ।। २
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, हिरणाकुस नख उदर विदारण ।। ३
ऋषि पत्नी पर किरपा कीन्हीं, विप्र सुदामा की विपति विदारण ।। ४
मीराँ के प्रभु मो बंदी परि, एती वेरि भई किण कारण ? ५

○

पद—६२९ : राग—पहाड़ी : ताल—कहरवा

(प्रेम)

हमरी प्रणाम श्री बांकेबिहारी को । (टेक)

६२७—(ऊ) ।
६२८—(१उ) ।
६२९—(उ) ।

मोरमुकट माथे तिलक बिराजै, कुण्डल अलकां कारी को ।। १
अधर मधुर धर वंसी बजावै, रीझ रिझावे राधा प्यारी को ।। २
यह छबि देखि मगन भई मीरां, मोहन गिरवरधारी को ।। ३

○

पद–६३० : राग–झंझोटी ताल–तिताला

(प्रेम)

हमरे रौरे लागिल कैसे छूटै । (टेक)
जैसे हीरा हनत निहाई, तैसे हम रौरे विन आई ।। १
जैसे सोना मिलत सोहागा, तैसे हम रौरे दिल लागा ।। २
जैसे कमलनाल बिच पानी, तैसे हम रौरे मन भानी ।। ३
जैसे चंद्रहिं मिलन चकोरा, तैसे हम रौरे दिल जोरा ।। ४
जैसे मीरां पति गिरधारी, तैसे मिलि रहु कुञ्जबिहारी ।। ५

○

पद–६३१ : राग–भैरवी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हमारे मन राधा स्याम बसी । (टेक)
कोई कहे मीरां भई बावरी, कोइ कहे कुल नसी ।। १
खोल के घूंघट पार के गाती, हरि ढिग नाचत गसी ।। २
बृन्दांबन की कुंजगलिन में, भाल तिलक उर लसी ।। ३
विष को प्यालो राणाजी ने भेज्यो, पीवत मीरां हँसी ।। ४
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, भक्ति मार्ग में फँसी ।। ५

○

६३०–(क)
६३१–(२म) (मीरां. जीव. का. प्र. जी. पृ. ९)

पद–६३२ : राग–भोपाली : ताल–तिताला

(चेतावनी)

हरि को भजन नित करिए भोरी । (टेक)
देख पराई सुख संपति कूं काहे झरकर मरिये री भोरी ।। १
नदिया गहरी नाव पुरानी समझ समझ पग धरिये री भोरी ।। २
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरनकँवल चित धरिये री भोरी ।। ३

○

पद–६३३ : राग–सोरठ : ताल–कहरवा

(चेतावनी)

हरिजी सों मिलना कैसे होय ?
पांच पहर धंदा में बीते, तीन पहर गये सोय ।।
बालपनो तो खेल गमायो, तरुणपणो नारी संग सोय । हरिजी०
वृद्ध भये चिंता बहु बाढी, गये जनम सब खोय ।।
आगे पीछे नाहन चेत्यो, माया मोह में गयो विलोय ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, होनी होय सो होय ।। हरिजी०

○

पद–६३४ : राग–तिलंग : ताल–धीमा तिताला

(विनय, उलहना)

हरि तुम काहे को प्रीत लगाई ?
प्रीत लगाई पर दुख दीनो कैसी लाज न आई ।। हरि तुम०
गोकुल छांडि मथुरा को जाओ वा में कौन बडाई ? हरि तुम०
मीरां के प्रभु गिरधरनागर तुमको नंद दुहाई ।। हरि तुम०

○

६३२–सं. (२म) (मा. हरिनारायणजी की पु. ह.)
६३३–(म)
६३४–(उ)

पद–६३५ : राग–गिरनारी सोरठ : ताल–दीपचंदी

(प्रार्थना)

हरि तुम हरो जन की पीर । (टेक)
द्रोपदी की लाज राखी, तुम बढ़ायो चीर ।। १
भक्त कारण रूप नरहरि, धरचो आप सरीर ।। २
हिरनकश्यप मार लीनो, धारचो नाहिन धीर ।। ३
बूडते गज ग्राह मारचो, कियो बाहर नीर ।। ४
दासि मीरां लाल गिरधर, दुःख जहां तहां पीर ।। ५

○

पद–६३६ राग–देश : ताल–रूपक

(विरह)

हरि बिन कूंण गती मेरी ? (टेक)
तुम मेरे प्रतिपाल कहिये, मैं रावरी चेरी ।। १
आदि अंत निज नांव तेरो, हीया में फेरी ।। २
बेरि-बेरि पुकारि कहूं, प्रभु आरति है तेरी ।। ३
यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी ।। ४
नाव फाटी प्रभू पालि बांध्यो, बूडत है बेरी ।। ५
बिरहणि पिव की बाट जोवै, राखि ल्यौ नेरी ।। ६
दासि मीरां लाल गिरधर, सरणि हूं तेरी ।। ७

○

पद–६३७ : राग–बिलावल : ताल–रूपक

(विरह)

हरि बिनु क्यों जीऊं री माय । (टेक)

६३५–(१उ) (म. मा. मी. ली. २९)
६३६–(२म)
६३७–वि.भू.पु.

हरि कारन बौरी भई, जस काठ हि घुन खाय ।। १
औषध मूल न संचरै, मोहिं लागो बौराय ।। २
कमठ दादुर बसत जल महँ, जल हि ते उपजाय ।। ३
हरी ढूंढन गई बन बन, कहुँ मुरलि धुन पाय ।। ४
मीरां के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ।। ५

○

पद—६३८ : राग—सोरठ : ताल—तिताला वा कहरवा

(विनय)

हरि मेरे जीवन प्राण-अधार । (टेक)
और आसिरो नाहिन तुम बिन, तीनूं लोक मँझार ।। १
आप विना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यौ सब संसार ।। २
मीरां कहै मैं दासी रावरी, दीज्यौ मती बिसार ।। ३

○

पद—६३९ : राग—सारंग : ताल—कहरवा

(विनय)

हरि मेरे नयनन में रहियो ।
रात दिवस आगे आगे डोलो, घड़ि पल अलग मत रहियो ।। हरि०
कोई को प्यारे लड़का रे लड़की, कोई को प्यारे व्हेन और भैय्या ।
कोई को प्यारी अजब सुन्दरी, हमरे प्यारो नन्दलालाजी को छोरैयो ।। हरि०
कोई को बल है मात-पिता को, कोई को बल कुटंब की सेवयो ।
कोईक कहे में आप बलियो, हमारे बल है राजा रामैयो ।। हरि०
कोई के होसी कोपीन धारण की ल्यो, कोई कपडा पहेरी बेडेयो ।
कोई होसिक धन मालन को, हमरो होसी हरि चरण को छैयो ।। हरि०
कोई पढत चतुर भयो, कांके राज रंग की गवैयो ।
मीरां के प्रभु तुम्हरे मिलन को, प्रेम सहित कृष्ण कृष्ण कहियो ।। हरि०

६३८—(१उ) ।
६३९—(क) ।

पद–६४० : राग–जङ्गला-जोगिया ग्रासावरी : ताल–दीपचंदी वा कहरवा

(चेतावनी)

हरि से गरब किया सोई हारा ।। (टेक)
गरब किया रतनागर सागर, जल खारा कर डारा ।
गरब किया लंकापति रावण, टूक टूक कर डारा ।। १
गरब कियां चकवे चकवी ने, रैन बिछोहा डारा ।
गरब किया वन की चिरमी ने, मुख कारा कर डारा ।। २
इन्दर कोप किया वृज ऊपर, नख पर गिरवर धारा ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, जीवन-प्राण हमारा ।। ३

○

पद–६४१ : राग–वहार : ताल–तिताला

(प्रार्थना)

हरि सों विनती करों कर जोरी । (टेक)
वरबस रचल धमारी हम घर मा सू पिता मारे गारी ।। १
निपट ग्रलप बुधि दिन गति थोरी, प्रेम मगन रस ले बल भारी[1] ।। २
मोरां के प्रभु सरण तिह्यारी, ग्रवचक ग्राय मिलहु[2] गिरधारी ।। ३

○

पद–६४२ : राग–भैरव सिन्ध : ताल–दादरा

(लीला)

हाँ रे कोई माधव ल्यो माधव ल्यो, वेचती ब्रजनारी रे । हाँ रे० ।। (टेक)
माधव ने मटुकी माँ घाली, गोपी लटके लटके चाली रे ।। १
हां रे गोपी घेलूं शूं बोलती जाय, कान मटुकि माँ नव समाये रे ।। २

६४०–(१ उ) (फु. प.)
६४१–(का०।उ०।३१०)
(क०) । पाठ शोधनीय है । सं० ।
पा०—1. बरजोरी 2. मिल (३ म) ।
६४२–(३ क) (का. दो. गु)

नव मानों तो जुम्रो उतारी, माँही जुए तो कुञ्जविहारी रे ।। ३
बृन्दाबन माँ जाता धारी, वालो गौ चारे छे गिरधारी रे ।। ४
गोपी चाली वृन्दावन माटे, सौ व्रज नी गोपियो साथे रे ।। ५
मीरां कहे प्रभु गिरधरनागर, जे ना चरण-कमल सुख-सागर रे ।। ६

O

पद–६४३
(प्रेम)

हाँ रे चालो डाकोर माँ जाइ बसिये,
हाँ रे मने लेहे* लगाडी रँग रसिये रे । (टेर)
हाँ रे प्रभात ना पहोर माँ नोबत वाजै,
हाँ रे अमे दरसन करवा जइये रे ।। १
हाँ रे अटपटी[1] पाघ केसरियो वाघो, हाँ रे कानें कुंडल सोइये रे ।। २
हाँ रे पीलो पीतांवर जरकसी जामो, हाँ रे मोतिन माला थी मोहिये रे ।। ३
हाँ रे चंद्रवदन अणियारी आँखाँ, हाँ रे मुखडो सुंदर सोहिये रे ।। ४
हाँ रे रुमझुम रुमझुम नूपुर बाजै, हाँ रे मारो मन मोह्यो मोरलियो रे ।। ५
हाँ रे मीराँबाई कहै प्रभु गिरधरनागर, हाँ रे अंगो अंग जई मलिये रे ।। ६

O

पद–६४४ : राग–पहाडी : ताल–कहरवा
(प्रेम)

हाँ रे सखी देख्यो री नन्द किशोर ।
मोर मुकुट मकराकृति कुन्डल, पीतांबर झनक हरोल० हाँ रे ।
ग्वाल-बाल सब संग में लीनो, गोवर्धन की ओर० हाँ रे ।
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हरि भये माखनचोर० हाँ रे ।

O

६४३–(या०—का० दो० से) ।
*लेह-प्रेम—पा० 1. 'लटपटी'
६४४–(म) ।

पद—६४५ : राग—सोरठ : ताल—तिताला

(विरह-वेदना)

हे ओ सहिया ! हरि मन काठ कियो । (टेर)
आवन कह गयो, अजहूं न आयो, करि करि वचन गयो ।। १
खानपान सुधबुध सब विसरा, कैसे करन जियो ।। २
वचन तुम्हारे तुम ही बिसारो, मन मेरो हर लियो ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो ।। ४

○

पद—६४६ : राग—बहार : ताल—तिताला

(विरह)

हे मेरो मन मोहना, आयो नहीं सखी री । (टेक)
कै कहुँ काज किया संतन का, कै कहुँ गैल भुलावना ।। १
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, लाग्यो है विरह सँतावना ।। २
मीरां दासी दरसण प्यासी, हरि चरणां चित लावना ।। ३

○

पद—६४७ : राग—झंझोटी : ताल—तिताला

(चरित)

हे री माँ नंद को गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो । (टेर)
गहे द्रुम-डार कदम की ठाड़ो मृदु मुसक्याय म्हारी ओर हँस्यो ।। १
पीतांबर कटि काछनी काछे, रतन जटित सिर मुकुट कस्यो ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, निरख बदन म्हारो मनड़ो फस्यो ।। ३

○

६४५—(२ उ) ।
६४६—(२म) ।
६४७—(या०—सं० रा० क. से) ।

पद–६४८ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(विरह-वेदना)

हे री मैं तो दरद दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय ।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोणा होय ।
गगन मँडल पे सेज पिया की, किस विध मिलणा होय ।।
हे री मैं तो दरद०

घायल की गत घायल जाने, के जिन घायल होय ।
जौहर की गत जौहरी जाने, के जिन जौहर होय ।।
हे री मैं तो दरद०

दरद की मारी बन बन ढूंढूं, वैद मिल्यो नहि कोय ।
मीरां के प्रभु पीर मिटेगी, वैद साँवलिया होय ।
हे री मैं तो दरद०

○

पद–६४९ : राग–सोरठ : ताल–तिताला

(प्रेम)

हेली म्हाँसूं हरि बिन रह्यो न जाय । (टेक)
सासु लड़ै मोरी ननद खिजावै, राणाँ रह्यो रिसाय ।। १
पहरो भी राख्यो चोकी बिठाइयो, ताला दियो जुड़ाय ।। २
पूर्बजन्म की प्रीति पुरानी, सो क्यों छोड़ी जाय ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, और न आवै म्हारी दाय ।। ४

○

६४८–(पु०) (यह पद निज संग्रह में है) ।
६४९–(१क) (बं. पु. पृ. ४५) ।

पद–६५० : राग–आसावरी : ताल–दीपचंदी

(चेतावनी)

हेली सुरत सोहागिन नार, सूरत मेरी राम से लगी । (टेक)
लगनी लहँगा पहिर सोहागिन, बीती जाय बहार ।
धन जोबन दिन चार का हे, जात न लागे बार ।। १
झुठे वर को क्या बरूँजी, अधबिच में तज जाय ।
वर तो बराँला रामजी म्हे, म्हारो चुड़लो अमर हो जाय ।। २
राम नाम को चूड़लो हो, निरगुन सुरमो सार ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणां बलिहार ।। ३

○

पद–६५१ : राग–पहाड़ी : ताल–कहरवा

(प्रेम)

हो कानाँ किन गूंथी जुलफाँ कारियाँ । (टेक)
सुधर कला-प्रवीन हाथन सूं, जसुमतिजू ने सँवारिया ।। १
जो तुम आओ मेरी बाखरियाँ, जुरि राखूं चन्दन किंवारियाँ ।। २
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, इन जुलफन पर वारियाँ ।। ३

○

पद–६५२ : राग–वडहंस : ताल–कहरवा

(उल्हना)

हो गये श्याम दूज के चन्दा । (टेक)
मधुबन जाय भये मधुबनियाँ, हम पर डारो प्रेम को फंदा । १
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, अब तो प्रेम परयो कछु मन्दा ।। २

○

६५०–(२म) ।
६५१–(३म) ।
६५२–३(म) (बृ. रा. र. १४९) ।

पद–६५३ : राग–खम्माच : ताल–तिताला वा कहरवा

(विनय)

हो जी म्हाराज छोड़ मत जाज्यो । (टेक)
मैं अबला बल नाहिं गुसाईं, तुमहि मेरे सिरताज ।। १
मैं गुण हीन गुण नाहिं गुसाईं, तुम समरथ महाराज ।। २
रावली होइ के किण रे जाऊँ, तुम हो हिवड़ा रो साज ।। ३
मीरां के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज ।। ४

○

पद–६५४ : राग–बिहाग : ताल–धीमा तिताला

(विरह-विनय)

हो जी हरि कित गये नेह लगाय । (टेक)
नेह लगाय मेरो मन हर लीयो, रस भर टेरि सुनाय ।
मेरे मन में ऐसी आवे, मरूं जहर बिष खाय ।। १
छाँडि गयो बिसवास घात करि, नेह केरी नाव चढ़ाय ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, रहे मधुपुरी छाय ।। २

○

पद–६५५ : राग–माड : ताल–कहरवा

(चरित)

हो जी हो सीसोद्या राजा, मनड़ो बैरागी धन रो क्या करूं । (टेक)
जहर का प्याला राणाँजी भेज्या, कोई द्यो मीरां के हाथ ।। १
कर चरणामृत मीरां पी गई, कोई आप जानो रघुनाथ ।। २
सांप टिपारा राणाँजो भेज्या, कोई द्यो ने मीरां ने जाय ।। ३
कर खँगवालो पहरियो, कोई आप जानो दीनानाथ ।। ४

६५३–(२म) ।
६५४–(मी. प्र. बि. कु. मु.-पृ. ११२) ।
६५५–(३ क) (का. ह. नं. १) ।

राणांजी दासी भेजिया, कोई जावो ने मीरां पास ।। ५
मर गया होय तो जलाय दीज्यो, नातर नदी में बहाय ।। ६

○

पद–६५६ : राग–खम्माच : ताल–दादरा

(विनय)

होता जाजो राज हमारे महलों, होता जाजो राज । (टेक)
मैं औगनी मेरा साहिब सगुना, संत सँवारें काज ।। १
मीरां के प्रभु मँदिर पधारो, करके केसरियाँ साज ।। २

○

पद–६५७ : राग–काफी : ताल–दीपचंदी

(होरी)

होरी खेलत है गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्यारौ, सँग जुवती ब्रजनारी ।। (टेक)
चन्दन केसर छिरकत मोहन, अपने हात बिहारी ।
भरि भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ।। १
छैल छबीले नवल कान्ह सँग, स्यामा प्रान-पियारी ।
गावत चारु धमार राग तहँ, दै दै कल (कर) कर तारी ।। २
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यौ रस ब्रज भारी ।
मीरां के प्रभु गिरिधर मिलिया, मोहनलाल बिहारी ।। ३

○

६५६–(३क)
६५७–(२म)

पद—६५८

(होरी-लीला)

होरी खेलन को आये राधे प्यारी, हाथ लिये पिचकारी । (टेर)
कितने बरस के कुंवर कन्हैया, कितने बरस की राधा प्यारी ।। १
सात बरस के कुंवर कन्हैया, बारा बरस की राधा प्यारी ।। २
उँगली पकड़ मेरा पहुँचा भी पकड्या, बैयां पकडि झकझोरी ।। ३
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, तुम जीते हम हारी ।। ४

○

पद—६५९ : राग—काफी : ताल—कहरवा

(होरी)

होरी खेलन चलो बृजनारी, नन्द-पौर ठाढे हैं मुरारी (टेक)
राधा चन्दभागा चन्द्रावली, भामा ललित सुशीले ।
शुभसूचक सुवर्ण-घट सिर धरि, अम्ब बोर जब ही ले ।। १
नई २ चीर कुसूमी सारी, भूषण बहु बिधि सजिये ।
नागर केलि करव मोहन सँग, नवल कान्ह प्रिय भजिये ।। २
चोवा चन्दन बुक्का बदन पै, उड़त गुलाल अबीर ।
खेलत फाग भाग बड़े गोपी, छिरकत श्याम शरीर ।। ३
चँग मृदंग ढोल डफ, महबर बेण रसाल ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, रसिकराय द्विजपाल ।। ४

○

६५८—(म.) (का०।उ०२।३६५)
६५९—(२म) (मीरां बा. भज. पृ. १८ प्रकीर्णक)

पद—६६० : राग—काफी : ताल—सिन्दूरा

(विरह, होली)

होली पिया बिन मोहि न भावै, घर आँगन न सुहावै । (टेक)
दीपक जोय कहा करूं हेली, पिय परदेश रहावै ।
सूनी सेज जहर जूं लागै, सुसक सुसक जिया जावै ।
नींद नैन नहिं आवै ।। १
कब की ठाडी मैं मग जोऊँ, निसदिन विरह सतावै ।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, हिवडो अति अकुलावै ।
पिय कब दरस दिखावै ।। २
ऐसा है कोई परम सनेही, तुरत सनेसा लावै ।
वा बिरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावै,
मीरां मिल होली गावै ।। ३

○

पद—६६१ : राग—काफी : ताल—दीपचंदी

(चेतावनी)

होली खेल मना रे, फागुन के दिन चार रे । (टेक)
बिन करताल पखावज बाजै, अनहद की झनकार रे ।। १
बिन सुर राग छतीसूं गावै, रोम रोम रंग सार रे ।। २
शील संतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ।। ३
उड़त गुलाल लाल भये बद्दल, बरषत रंग अपार रे ।। ४
घट के सब पट घो(खो)ल[1] दिये हैं, लोक लाज सब डार रे ।। ५
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ।। ६
मीरां के प्रभु गिरधरनागर, चरण-कमल बलिहार रे ।।

○

६६०—(१ उ) (बं. पु. पृ. १७)
६६१—(१उ)
१. पा०—घोल लियो हूँ ।

पद–६६२ : राग–सिन्दूरा : ताल–धमार व दीपचंदी

(विरह)

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी, मेरी प्यारी। (टेक)
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहन बन बन डोलै, तज दई पीव पियारी।
भई हूँ या दुख कारी ।। १
देस बिदेस सँदेस न पहुँचै, होय अँदेसा भारी।
गिणतां गिणतां घस गइँ रेखा, आंगरियां की सारी।
अजहूँ नहिं आये मुरारी ।। २
बाजत झांझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी[1]।
आई बसंत कंत घर नाहीं, तन मन जर भई छारी।
स्याम मन कहा ये विचारी ।। ३
अब तो म्हैर करो मुझ ऊपर, चित्त दे सुणो हमारी[2]।
मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की मैं थारी।
लगी दरसन की तारी ।। ४

○

६६२–(वि. भू. सं.)